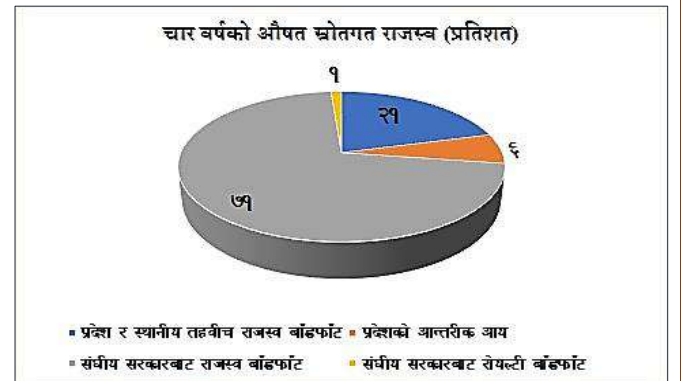
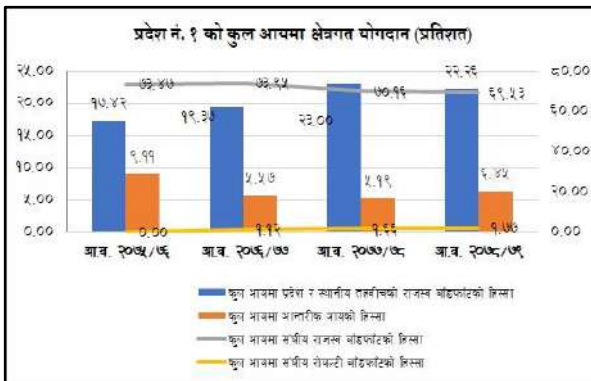
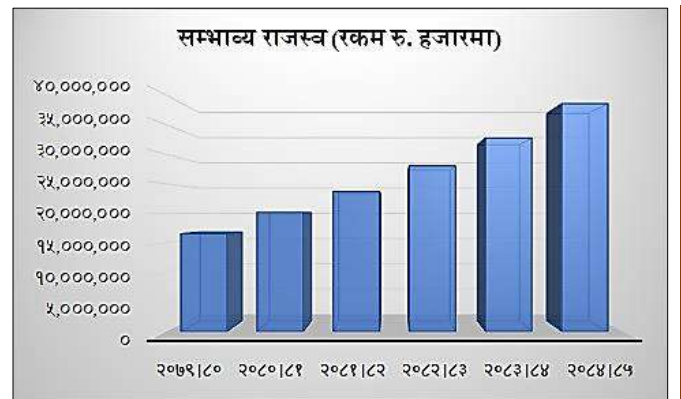
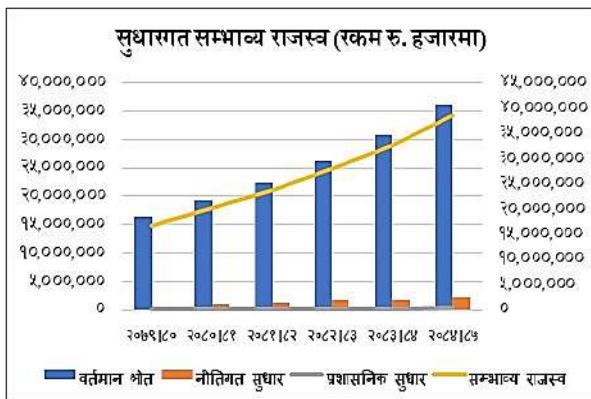


आन्तरिक राजस्व सम्भाव्यता अध्ययन प्रतिवेदन



प्रदेश सरकार

आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय

प्रदेश नं. १, विराटनगर, नेपाल

फागुन, २०७९

प्रस्तुति



मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय

प्रदेश नं. १, विराटनगर

प्रदेश सहयोग कार्यक्रम (PSP)

तयार गर्ने:



सुशासन तथा विकास अनुसन्धान केन्द्र प्रा.लि.

कोटेश्वर, काठमाडौं

इमेल : sbakcenter@gmail.com

विषय सूची

| | | |
|------|---|----|
| १ | खण्ड एक: परिचय | १ |
| १.१ | प्रदेशको संक्षिप्त परिचय | १ |
| १.२ | अध्ययनको पृष्ठभूमि..... | ३ |
| १.३ | अध्ययनको महत्व/औचित्य | ४ |
| १.४ | अध्ययनको क्षेत्र | ४ |
| १.५ | अध्ययनको उद्देश्य | ५ |
| १.६ | अध्ययन विधि | ६ |
| १.७ | तथ्याङ्क सङ्कलन र विश्लेषण | ८ |
| १.८ | मस्यौदा प्रतिवेदनमा परिमार्जन..... | ९ |
| १.९ | अध्ययनको सीमा | ११ |
| १.१० | प्रतिवेदन ढाँचा..... | ११ |
| २ | खण्ड दुई: वित्तीय संघीयताको सैद्धान्तिक पक्ष र राष्ट्रिय/अन्तर्राष्ट्रिय अभ्यास | १३ |
| २.१ | पृष्ठभूमि | १३ |
| २.२ | सैद्धान्तिक पक्ष | १३ |
| २.३ | अन्तर्राष्ट्रिय अभ्यासहरु | १६ |
| २.४ | नेपालमा वित्तीय संघीयता..... | २५ |
| २.५ | नेपालमा वित्तीय संघीयता कार्यान्वयनको अवस्था..... | २९ |
| २.६ | राजस्वको लैङ्गिक विश्लेषण..... | ३२ |
| ३ | खण्ड तीन: प्रदेश तहमा राजस्व अधिकार र अभ्यास | ३९ |
| ३.१ | घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क..... | ३९ |
| ३.२ | सवारी साधन कर..... | ४५ |
| ३.३ | मनोरञ्जन कर..... | ५३ |
| ३.४ | प्राकृतिक स्रोत सङ्कलन तथा बिक्री शुल्क..... | ५५ |
| ३.५ | वन पैदावर बिक्री शुल्क | ५८ |
| ३.६ | पर्यटन शुल्क | ६० |
| ३.७ | विज्ञापन कर..... | ६१ |
| ३.८ | कृषि आयमा कर | ६४ |
| ३.९ | दस्तुर तथा दण्ड जरिवाना | ६६ |
| ४ | खण्ड चार: राजस्व परिचालनको अवस्था र सम्भाव्यताका क्षेत्रहरु | ६७ |
| ४.१ | राष्ट्रिय परिवेश | ६७ |
| ४.२ | प्रदेश परिवेश | ७० |
| ४.३ | प्रादेशिक कुल प्राप्ति..... | ७२ |
| ४.४ | कुल राष्ट्रिय गार्हस्थ उत्पादनमा प्रदेशगत योगदान | ७३ |
| ४.५ | राजस्व अनुमान र प्राप्ति | ७४ |
| ४.६ | प्रदेशगत आन्तरिक स्रोत परिचालन | ७४ |
| ४.७ | प्रदेश नं. १ को सम्भाव्य राजस्वका क्षेत्रहरु | ७६ |

| | | |
|-----------|--|------------|
| ४.८ | विषयगत राजस्व सम्भाव्यता | ८१ |
| ५ | खण्ड पाँच: राजस्व परिचालन र बाँडफाँट सम्बन्धी स्थानीय तहको अनुभव र अभ्यास | ८७ |
| ५.१ | पृष्ठभूमि | ८७ |
| ५.२ | इलाम नगरपालिका, इलाम | ८७ |
| ५.३ | पाथीभरा याङवरक गाउँपालिका, ताप्लेजुङ | ९० |
| ५.४ | इटहरी उपमहानगरपालिका, सुनसरी | ९२ |
| ५.५ | विराटनगर महानगरपालिका, मोरङ | ९४ |
| ५.६ | सोलुदुधकुण्ड नगरपालिका, सोलुखुम्बु | ९५ |
| ५.७ | मानेभञ्ज्याङ गाउँपालिका, ओखलढुङ्गा | ९७ |
| ५.८ | स्थानीय तहहरुबाट प्राप्त सवाल तथा सुझावहरु | ९९ |
| ६ | खण्ड छ: प्राकृतिक स्रोत र राजस्व परिचालन | १०२ |
| ६.१ | पृष्ठभूमि | १०२ |
| ६.२ | संवैधानिक तथा कानूनी व्यवस्था | १०२ |
| ६.३ | नदीजन्य पदार्थको भौगोलिक सूचना नक्सा | १०६ |
| ७ | खण्ड सात: राजस्व अधिकार सम्बन्धी कानूनी ढाँचा | ११० |
| ७.१ | वर्तमान कानूनी व्यवस्था | ११० |
| ७.२ | संशोधन प्रस्तावहरु | १११ |
| ७.३ | संशोधन सम्बन्धी तीन महले ढाँचा | १२० |
| ८ | खण्ड आठ: निष्कर्ष, सुझाव तथा सुधार कार्ययोजना | १२४ |
| ८.१ | निष्कर्ष तथा सुझावहरु | १२४ |
| ८.२ | रणनीति तथा कार्यनीति | १४० |
| ८.३ | सुधार कार्ययोजना | १४२ |
| ९ | खण्ड नौ: अनुगमन तथा मूल्याङ्कन | १५१ |
| ९.१ | पृष्ठभूमि | १५१ |
| ९.२ | अनुगमन संयन्त्र | १५१ |
| ९.३ | अनुगमन विधि | १५४ |
| १० | खण्ड दश: राजस्व प्रक्षेपण | १५५ |
| १०.१ | राजस्व प्रक्षेपणका आधार | १५५ |
| १०.२ | राजस्व प्रक्षेपण | १५९ |

तालिकाहरु

| | | |
|------------|---|----|
| तालिका १ : | प्रदेश अन्तर्गतका गाउँपालिका तथा नगरपालिकाहरुको विवरण | २ |
| तालिका २ : | स्थलगत अध्ययनका लागि छनौट गरिएका स्थानीय तहहरु | ८ |
| तालिका ३ : | तहगत सरकारहरुबीच वित्तीय अधिकार बाँडफाँट | १४ |
| तालिका ४ : | अष्ट्रेलियाको तहगत सरकारको राजस्व अधिकार | १७ |
| तालिका ५ : | क्यानडामा तहगत सरकारको राजस्व अधिकार | १८ |
| तालिका ६ : | जर्मनीमा तहगत सरकारको राजस्व अधिकार | १८ |
| तालिका ७ : | दक्षिण अफ्रिकामा तहगत सरकारको राजस्व अधिकार | २० |

| | |
|--|-----|
| तालिका ८ : स्विट्जरल्याण्डमा तहगत सरकारको राजस्व अधिकार | २० |
| तालिका ९ : संयुक्त राज्य अमेरिकामा राज्य सरकारहरूको वित्तीय अधिकार | २३ |
| तालिका १० : संयुक्त राज्य अमेरिकामा स्थानीय सरकारहरूको वित्तीय अधिकार | २३ |
| तालिका ११ : ब्राजिलमा तहगत सरकारको राजस्व अधिकार..... | २५ |
| तालिका १२ : तहगत सरकारको आर्थिक अधिकारको सूची..... | २७ |
| तालिका १३ : प्रदेशले लगाउन सक्ने कर तथा गैरकर, जिम्मेवारी र बाँडफाँट हिस्सा | २७ |
| तालिका १४ : प्राकृतिक स्रोतको रोयल्टीको बाँडफाँट (प्रतिशतमा) | २८ |
| तालिका १५ : मूल्य अभिवृद्धि कर तथा अन्तःशुल्कको बाँडफाँट..... | २९ |
| तालिका १६ : वित्तीय संघीयता कार्यान्वयन सम्बन्धी सुझावहरू..... | २९ |
| तालिका १७ : घर जग्गा रजिष्ट्रेशनसँग अन्तर-सम्बन्धित विषयहरू | ३९ |
| तालिका १८ : घर जग्गा रजिष्ट्रेशन सेवा शुल्कको वार्षिक वृद्धि सम्बन्धी विश्लेषण | ४१ |
| तालिका १९ : भूमिसुधार तथा मालपोत कार्यालयहरूको विवरण..... | ४३ |
| तालिका २० : सवारी साधन करका दरहरू..... | ४९ |
| तालिका २१ : प्रदेश नं. १ को मनोरञ्जन करको दर..... | ५३ |
| तालिका २२ : मनोरञ्जन करबाट राजस्व सङ्कलन (रु.)..... | ५४ |
| तालिका २३ : ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवाको उपयोगको अवस्था सम्बन्धी विवरण..... | ५७ |
| तालिका २४ : वन सम्बन्धी विवरण | ५८ |
| तालिका २५ : वन पैदावारको उत्पादित परिमाण | ५९ |
| तालिका २६ : वन पैदावार बिक्रीबाट प्राप्त राजस्वको विवरण (रकम रु. हजारमा)..... | ६० |
| तालिका २७ : प्रदेश नं. १ को पर्यटन शुल्कको दर | ६१ |
| तालिका २८ : विज्ञापन करबाट राजस्व सङ्कलन (रु.)..... | ६२ |
| तालिका २९ : नेपाल सरकारको आय व्ययको विश्लेषण | ६८ |
| तालिका ३० : नेपाल सरकारको यथार्थ राजस्व प्राप्ति सम्बन्धी विवरण (रु. लाखमा) | ६८ |
| तालिका ३१ : प्रदेश नं. १ को कूल राजस्व प्राप्ति (रु.) | ७३ |
| तालिका ३२ : कुल गार्हस्थ उत्पादन (उपभोक्ताको मूल्यमा) मा प्रदेशगत योगदान (प्रतिशतमा)..... | ७३ |
| तालिका ३३ : आर्थिक वर्ष २०७७/७८ मा राजस्व अनुमान र यथार्थ प्राप्तिको स्थिति | ७४ |
| तालिका ३४ : आर्थिक वर्ष २०७७/७८ मा कुल खर्चमा आन्तरिक स्रोतको योगदान | ७५ |
| तालिका ३५ : आ. व. २०७९/८० मा प्रदेश सरकारले प्राप्त गर्ने अनुमानित रोयल्टी (रु. हजारमा)..... | ७५ |
| तालिका ३६ : आर्थिक वर्ष २०७७/७८ को बजेट तथा खर्च (रु. लाखमा)..... | ७६ |
| तालिका ३७ : राजस्व कानूनमा समेटिनु पर्ने न्यूनतम विषयहरू..... | ७७ |
| तालिका ३८ : विषयगत कानून बनेपछि मात्र राजस्व सम्भाव्यता भएका क्षेत्रहरू | ७८ |
| तालिका ३९ : संघीय कानूनसँग तादम्यता भएका प्रदेश राजस्वका सम्भाव्य स्रोतहरू..... | ७९ |
| तालिका ४० : प्राविधिक प्रशासनिक रुपले जटिल राजस्वका स्रोतहरू | ८१ |
| तालिका ४१ : प्राकृतिक स्रोतसँग सम्बन्धित अधिकारहरू..... | १०३ |
| तालिका ४२ : आ.व. २०७८/७९ को रोयल्टी सम्बन्धी रकम | १०५ |
| तालिका ४३ : तालतलैया सम्बन्धी संक्षिप्त विवरण..... | १०६ |
| तालिका ४४ : रणनीति तथा कार्यनीति..... | १४० |
| तालिका ४५ : राजस्व सुधार कार्ययोजना खाका | १४३ |
| तालिका ४६ : अनुगमन तथा मूल्याङ्कन समितिको संरचना खाका | १५३ |
| तालिका ४७ : समूहीकरण गरिएका राजस्व उपशीर्षकहरू..... | १५८ |

मञ्जुषाहरू

| | |
|--|----|
| मञ्जुषा १: भारतको संविधान अनुसार राज्य सरकारको राजस्व अधिकार..... | १६ |
| मञ्जुषा २: अन्तरराष्ट्रिय अभ्यासबाट सिक्न सकिने क्षेत्र/पक्षहरू..... | २६ |
| मञ्जुषा ३: यातायात व्यवस्था कार्यालयहरूबाट प्राप्त सुझावहरू..... | ५२ |
| मञ्जुषा ४: झाडीदार प्राकृतिक स्रोत (लौठ सल्ला, लाहा र रुद्राक्ष) | ५९ |

अनुसूचीहरू

| | |
|---|-----|
| अनुसूची १: छलफल गरिएका पदाधिकारीको नामावली | १६३ |
| अनुसूची २: घरजग्गा लगायतको रजिष्ट्रेशन शुल्क, सेवा शुल्क र घरजग्गा रोक्का शुल्क | १६४ |
| अनुसूची ३: प्राकृतिक स्रोत सम्बन्धी प्रदेशगत कानूनी व्यवस्था | १७४ |
| अनुसूची ४: सिमेण्ट उद्योग सम्बन्धी विवरण | १७७ |
| अनुसूची ५: प्राकृतिक स्रोत (ढुङ्गा, गिटी, बालुवा) को उपयोग सम्बन्धी विवरण | १७९ |
| अनुसूची ६: स्थानीय तहबाट सूचना सङ्कलन गर्न प्रयोग गरिएको प्रश्नावली | १८५ |
| अनुसूची ७: स्थानीय तहहरूमा ढुङ्गा, गिटी, बालुवा बिक्री वापतको रकम | १८९ |
| अनुसूची ८: कृषि आय कर सम्बन्धी कानूनी व्यवस्था तथा अन्तर्राष्ट्रिय अभ्यास | १९१ |
| अनुसूची ९: कृषि आयमा कर सम्बन्धी व्यवस्थामा संशोधन | २०० |
| अनुसूची १०: प्रदेश नं. १ को राजस्व तथा अनुदान प्राप्ति (यथार्थ) | २०१ |
| अनुसूची ११: आ.व. २०७८/०७९ रोयल्टीको बाँडफाँटमा प्रदेश नं. १ को हिस्सा | २०४ |
| अनुसूची १२: तालतलैया सम्बन्धी विस्तृत विवरण | २०७ |
| अनुसूची १३: नदी तथा खोला बहाव हुने स्थानीय तहहरू | २११ |
| अनुसूची १४: जलविद्युत परियोजना सम्बन्धी विवरण | २१८ |
| अनुसूची १५: प्रदेश सरकारको राजस्व सुधारका लागि आवश्यक कानूनका विषयहरू | २२० |
| अनुसूची १६: कार्यक्रमहरूको उपस्थिति विवरण | २२४ |
| अनुसूची १७: विभिन्न कार्यक्रमका झलकहरू | २३६ |

शब्द संक्षेप

| | | |
|---------|---|---|
| आ.व. | : | आर्थिक वर्ष |
| आलेप | : | आन्तरिक लेखा परीक्षक |
| क्र.सं. | : | क्रम संख्या |
| कि.मी. | : | किलोमीटर |
| गापा | : | गाउँपालिका |
| नपा | : | नगरपालिका |
| प्रा. | : | प्राध्यापक |
| रु. | : | रुपैयाँ |
| लैससास | : | लैङ्गिक समानता तथा सामाजिक समावेशीकरण |
| हे. | : | हेक्टर |
| जि.स.स. | : | जिल्ला समन्वय समिति |
| BPfA | : | Beijing Declaration and Platform for Action for Equality, Development and Peace |
| CAGR | : | Compound Annual Growth Rate |
| CEDAW | : | Convention on the Elimination of All Forms of Discrimination Against Women |
| DMS | : | Document Management System |
| GIS | : | Geographic Information System |
| IEE | : | Initial Environment Examination |
| LRIMS | : | Land Records Information Management System |
| masl | : | Meters above sea level |
| PAM | : | Public Access Model |
| PSP | : | Provincial Support Programme |
| RMIS | : | Revenue Management Information System |
| SDG | : | Sustainable Development Goal |
| UN | : | United Nations |
| UPR | : | Universal Periodic Review |
| VRS | : | Vehicle Registration System |
| VRTMS | : | Vehicle Registration and Transport Management System |



सुशासन तथा विकास अनुसन्धान केन्द्र प्रा.लि.
Sushasan Tatha Bikas Anusandhan Kendra (SBAK) Pvt. Ltd.
 (Good Governance and Development Research Center)
 कोटेश्वर, काठमाडौं, २०७०

कृतज्ञता

प्रदेश नं. १ को राजस्व सम्भाव्यता अध्ययन कार्यका लागि यस सुशासन तथा विकास अनुसन्धान केन्द्रलाई जिम्मेवारी प्रदान गर्नु हुने मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नीति तथा योजना र प्रदेश सहयोग कार्यक्रमप्रति आभार प्रकट गर्दछु । प्रदेश नं. १ का माननीय मुख्यमन्त्री, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालयका माननीय मन्त्री, उच्चस्तरीय राजस्व अध्ययन कार्यदलका पदाधिकारीहरु, विभिन्न मन्त्रालयका सचिवहरु लगायत महाशाखा प्रमुखहरु, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालयका सचिव श्री शिवकुमार कार्की, तत्कालिन सचिव श्री सुमन दाहाल, श्री केशवप्रसाद अर्याल (प्रवक्ता), श्री खगेन्द्र खड्का (उपसचिव), शाखा अधिकृतहरु श्री पुष्पलता उप्रेती र विदुर पौडेल लगायत महाशाखा प्रमुख तथा अधिकृत कर्मचारीहरुबाट प्राप्त सहयोग, समन्वय र सहकार्यको लागि उच्च सम्मान प्रकट गर्दछु । प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालयको सहयोगका लागि प्रमुख श्री दामोदर खत्री र श्री ऋषिकुमार खनाललाई विशेष धन्यवाद दिन चाहन्छु । स्वीस सहयोग नियोगका वरिष्ठ सङ्घीयता विज्ञ श्री प्रकाश रेग्मी, प्रदेश सहयोग कार्यक्रमका टिम लिडर श्री विनोदप्रसाद उपाध्याय लगायत उहाँको टिमबाट प्राप्त सहयोग र समन्वयका लागि विशेष आभार व्यक्त गर्दछु ।

छलफलका क्रममा महत्वपूर्ण सुझाव दिनु हुने राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगका माननीय अध्यक्ष श्री बालानन्द पौडेल र प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद् कार्यालयका सचिव डा. गणेश पाण्डेलाई हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु । यस अध्ययन कार्यमा सहयोग प्रदान गर्नु हुने प्रदेश तथा नेपाल सरकार अन्तरगतका मन्त्रालयहरुका उच्च पदस्थ कर्मचारीहरु, संघ संस्था, लगायत विषय विज्ञहरुलाई धन्यवाद दिन चाहन्छु । अध्ययनका लागि आवश्यक सहयोग र सूचना प्रदान गर्नु हुने सबै १३७ वटै स्थानीय तहहरुलाई विशेष धन्यवाद प्रकट गर्दछु ।

मस्यौदा अध्ययन प्रतिवेदनको अध्ययन गरी सुझाव प्रदान गर्नु हुने राष्ट्रिय सभाका माननीय सदस्य डा. खिमलाल देवकोटा, राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगका माननीय सदस्य श्री जुद्धबहादुर गुरुड र नेपाल सरकारका पूर्व मुख्य सचिव डा. सोमलाल सुवेदीलाई हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन गर्दछु ।

अध्ययन कार्यमा विज्ञका रुपमा संलग्न नेपाल सरकारका पूर्व सचिव डा. मुकुन्द पौडेल, पूर्व सहसचिव श्री निर्मलहरि अधिकारी, सि.ए. श्री भवनाथ दाहाल, प्रा.डा. राजेश राई, डा. चन्द्रकान्त ज्ञवाली, श्री बिष्णुप्रसाद नेपाल, श्री लक्ष्मण पाण्डे र श्री कोपिला रिजाललाई विशेष धन्यवाद दिन चाहन्छु । साथै, स्थानीय तहहरुबाट सूचना सङ्कलन गर्ने गणकहरु लगायत सुशासन तथा विकास अनुसन्धान केन्द्रका श्री राजेन्द्रकुमार श्रेष्ठ, श्री जीवनहरी पोखरेल र एकबहादुर गुरुडको सहयोगका लागि आभार व्यक्त गर्दछु ।

डा. हेमराज लामिछाने

अध्यक्ष

सुशासन तथा विकास अनुसन्धान केन्द्र

तथा अध्ययन टोली प्रमुख

फागुन, २०७९

कार्यकारी सारांश

१. पृष्ठभूमि

प्रदेश नं. १ को मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय अन्तर्गत स्वीस सरकारको प्रदेश सहयोग कार्यक्रम मार्फत प्रदेश नं. १ को आन्तरिक राजस्व सम्भाव्यता अध्ययनको कार्य गरिएको हो। यस अध्ययन कार्यलाई अगाडी बढाउन मन्त्रिपरिषद्ले तत्कालिन प्रदेश योजना आयोगका माननीय उपाध्यक्ष डा. पूर्णकुमार लोकसनको संयोजकत्वमा ९ सदस्यीय उच्चस्तरीय राजस्व अध्ययन कार्यदल गठन गरेको थियो। सोही कार्यदलको मार्गदर्शनमा यो अध्ययन कार्य सम्पन्न गरिएको छ। यस अध्ययनका मुख्य उद्देश्यहरू प्रदेश नं. १ को राजस्व क्षमताको पहिचान गर्ने, कुल खर्च र आन्तरिक आयको अनुपातको विश्लेषण गरी वित्तीय खाडल पहिचान गर्नु, राजस्वका सम्भावित स्रोतहरूको पहिचान गर्नु, राजस्व प्रशासन सुधारका क्षेत्रहरूको पहिचान गर्नु, स्थानीय तहमा अवस्थित प्राकृतिक स्रोतहरू जस्तै नदीजन्य पदार्थ ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा सम्बन्धी डाटावेश तयार गर्नु, राजस्व नीतिका लागि आवश्यक पर्ने लैङ्गिक समानता तथा सामाजिक समावेशीकरणका सवालहरू पहिचान गर्नु, राजस्व परिचालनका लागि तीन तहका सरकारहरूका बीचको समन्वय र सहकार्यका क्षेत्रहरूको पहिचान गर्नु र आगामी पाँच वर्षको राजस्व प्रक्षेपण गर्नु आदि रहेका छन्।

मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, उच्चस्तरीय राजस्व अध्ययन कार्यदल र स्वीस सरकारको प्रदेश सहयोग कार्यक्रमको समन्वय र सहकार्यमा यो अध्ययन सम्पन्न गरिएको छ। अध्ययनका सिलसिलामा संघीय र प्रदेश कानूनहरूको पुनरावलोकन गरिएको छ। साथै, नेपाल सरकार र प्रदेश सरकारको आर्थिक सर्भेक्षण, वार्षिक प्रगति प्रतिवेदनहरू, प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालयले तयार गरेको वार्षिक वित्तीय प्रतिवेदनहरूको समेत आवश्यकता अनुसार पुनरावलोकन गरिएको छ। अन्तर्राष्ट्रिय अभ्यासको सम्बन्धमा विभिन्न किसिमका अध्ययन प्रतिवेदनहरू, वेवसाईट तथा गुगल सर्चको पनि प्रयोग गरिएको छ।

प्रदेश नं. १ अन्तर्गतका १३७ वटै स्थानीय तहहरूबाट प्राकृतिक स्रोतसँग सम्बन्धित सूचना सङ्कलन गर्ने प्रयोजनका लागि तयार गरिएको प्रश्नावलीहरूका सम्बन्धमा गणकहरूलाई अभिमुखीकरण गरी सूचना सङ्कलन गर्न स्थानीय तहहरूमा परिचालन गरिएको थियो। सोही आधारमा प्राकृतिक स्रोतको डाटावेश तयार गरी जिआईएस म्यापिङ्ग समेत गरिएको छ। प्रदेश सरकार र स्थानीय तहका बीचमा बाँडफाँट हुने राजस्वहरू जस्तै नदीजन्य पदार्थ, मनोरञ्जन कर, विज्ञापन कर र पर्यटक शुल्क सम्बन्धी कानूनी व्यवस्था, सङ्कलनको अवस्था, राजस्व प्रशासन र बाँडफाँटको वर्तमान अवस्था र भविष्यमा गर्नु पर्ने सुधारका सम्बन्धमा सुझाव लिने उद्देश्यले ताप्लेजुङ्गको पाथिभरा याडवरक गाउँपालिका, इलामको इलाम नगरपालिका, मोरङको विराटनगर महानगरपालिका, सुनसरीको इटहरी उपमहानगरपालिका, सोलुखुम्बुको सोलुदुधकुण्ड नगरपालिका र ओखलढुङ्गाको मानेभञ्ज्याङ्ग गाउँपालिकामा निर्वाचित जनप्रतिनिधिहरू र कर्मचारीहरूसँग छलफल तथा अन्तरक्रिया कार्यक्रम समेत आयोजना गरी राजस्व परिचालन लगायत स्थानीयतह र प्रदेश सरकार बीच राजस्व बाँडफाँटको वर्तमान अवस्थाको बारेमा छलफल गरी भविष्यमा गर्नु पर्ने सुधारका क्षेत्रहरूको समेत पहिचान गरिएको थियो।

प्रदेश सरकारको राजस्वलाई थप बलियो बनाउन कानूनमा समेत संशोधनको आवश्यकता देखिएकोले नेपालको संविधान, अन्तरसरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ र स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ र प्रदेश नं. १ को आर्थिक ऐनमा गर्नु पर्ने संशोधनका विषयहरूलाई समेत समावेश गरी तीन महलेको ढाँचा प्रतिवेदनमा समावेश गरिएको छ।

२. राजस्व प्रक्षेपण

निम्न आधारमा प्रदेश नं. १ को राजस्व प्रक्षेपण गरिएको छ ।

- वर्तमान स्रोत, नीतिगत र प्रशासनिक सुधार, नयाँ कर सम्बन्धी कानूनहरू निर्माण र करको दायरा बढाएर हुन सक्ने राजस्वको आंकलनको आधार लिईएको छ ।
- सम्भाव्य राजस्व स्रोतको कानूनी वर्गीकरण राजस्व कानून मात्रैबाट असुली हुने, विषयगत प्रदेश कानून अनुसार आर्थिक ऐनबाट गैरकर, संघीय विषयगत कानून अनुसार प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैरकर, हाल लगाउन नसकिने जटिल स्रोतबाट राजस्व र बनाउनु पर्ने कानूनहरूको पहिचान भएको छ ।

३. मुख्य उपलब्धीहरू

(क) कुल राजस्व परिचालन

देश नं. १ को विगत चार आर्थिक वर्षको औसत कुल आय (आन्तरिक राजस्व, संघीय सरकारबाट प्राप्त हुने राजस्व तथा रोयल्टी बाँडफाँट र अनुदान) मा विभिन्न क्षेत्रको योगदान निम्नानुसार रहेको छ । यसमा बेरुजू, निकास फिर्ता, अनुदान फिर्ता, नगद तथा बैक मौज्जातलाई समावेश गरिएको छैन ।

- १ कुल आयमा प्रदेश र स्थानीय तहबीच राजस्व बाँडफाँटको हिस्सा ८.१ प्रतिशत रहेको छ ।
- २ कुल आयमा प्रदेशको आन्तरिक आयको हिस्सा २.५ प्रतिशत रहेको छ ।
- ३ कुल आयमा संघीय सरकारबाट राजस्व बाँडफाँटको हिस्सा २७.७ प्रतिशत रहेको छ ।
- ४ कुल आयमा संघीय सरकारबाट रोयल्टी बाँडफाँटको हिस्सा ०.५ प्रतिशत रहेको छ ।
- ५ कुल आयमा संघीय अनुदानको हिस्सा ६१.३ प्रतिशत रहेको छ ।

(ख) कानूनमा गर्नुपर्ने संशोधन सम्बन्धमा

प्रदेश सरकारलाई वित्तीय रूपमा स्वायत्त र आत्मनिर्भर बनाउन अन्तर्राष्ट्रिय अभ्यास र प्रदेश तहमा गरिएको विभिन्न किसिमका अन्तरक्रियाबाट प्राप्त सुझावका आधारमा निम्नानुसार कानूनमा संशोधन गर्नु पर्ने आवश्यकता पहिचान भएको छ । वर्तमान कानूनको संशोधन प्रस्ताव देहाय बमोजिम तयार गरिएको छ ।

- नेपालको संविधान, २०७२ मा कर, गैर कर लगाउने र राजस्व उठाउने सम्बन्धी संशोधन प्रस्ताव र संशोधनको औचित्यको तीन महल,
- अन्तर सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ मा कर, गैरकर लगाउने र राजस्व उठाउने सम्बन्धी संशोधन प्रस्तावको तीन महल,
- प्रदेश नं. १ को कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ मा संशोधन प्रस्ताव, २०७९ को तीन महल ।

(ग) कृषि आयमा कर

- नेपालको संविधानले प्रदेश सरकारलाई राजस्वको एकल अधिकारको रूपमा प्रदान गरेको कृषि आयमा कर लगाउने अधिकारको कार्यान्वयनका लागि आवश्यक कानून निर्माण हुन नसक्दा यसबाट प्रदेश सरकारले राजस्व सङ्कलन गर्न सकेको छैन । तसर्थ, आगामी दिनमा कृषि आयमा कर लगाउने सम्बन्धी कानून तर्जुमा गर्न आवश्यक छ । यसका लागि चालु आर्थिक वर्षदेखिनै कृषि आयमा कर लगाउन सके विगतमा संघीय सरकारले प्राप्त गर्दै आएको राजस्व प्रदेश सञ्चित कोषमा जम्मा हुने हुँदा सोही अनुसार प्रदेश नं. १ को कर तथा गैरकर सम्बन्धी ऐन, २०७५ मा संशोधन गर्न आवश्यक छ । कृषि आयमा कर लगाउने प्रक्रिया सम्बन्धी प्रदेश कर तथा गैर कर ऐन, २०७५ को दफा ८ मा गर्नु पर्ने संशोधनको ढाँचा समेत प्रतिवेदनको अनसूची ९ मा उल्लेख छ ।

- संगठित कृषि व्यवसायको प्रवर्धन मार्फत कृषि आयमा कर लगाउन सकिने हुँदा कृषि उत्पादनमा आधारित सहकारी संस्थाहरूलाई कृषि व्यवसाय गर्न आवश्यक सहजीकरण, समन्वय र सहयोग गर्न सके कृषि क्षेत्रबाट राजस्व संकलन गर्न सकिन्छ ।

(घ) प्राकृतिक स्रोतको उपयोग सम्बन्धमा

प्राकृतिक स्रोतका सम्बन्धमा निम्नानुसार उल्लेखित सवालहरूलाई सम्बोधन गर्न सके थप राजस्व सङ्कलन गर्न सकिने प्रवल सम्भावना रहेको छ ।

- प्रदेश नं १ भित्र ११८ स्थानीय तह भएर बग्ने १७७ नदी खोलाका कम्तिमा ३०९ स्थान नदीजन्य पदार्थ (ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा) का सम्भाव्य स्थान रहेका छन् ।
- नदीजन्य पदार्थ (ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा) उपलब्ध भए तापनि ३७ वटा स्थानीय तहहरूमा प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण हुन सकेको छैन । त्यसैगरी १८ वटा स्थानीय तहमा प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण भए तापनि यसबाट राजस्व प्राप्त हुन सकेको छैन । १४ वटा स्थानीय तहहरूमा नदीनालाहरू नभएका कारण उत्खनन हुने सम्भावना छैन । २२ वटा स्थानीय तहले प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षणले सिफारिस गरेको परिमाणमा उत्खनन गर्न सकेको छैनन् । ३० वटा स्थानीय तहले प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षणले सिफारिस गरेको परिमाण अनुसारनै उत्खनन गर्दै आएका छन् ।
- स्रोत उपलब्ध भए तापनि हिमाली तथा पहाडी जिल्लामा उपलब्ध रहेका नदीजन्य पदार्थहरूको प्रारम्भिक वातावरणीय अध्ययन हुन नसकेको र अध्ययन भएका स्थानहरूबाट समेत सम्बन्धित स्थानीय तहले पटक पटक ठेक्का आह्वान गर्दा पनि ठेक्का लाग्न नसकेको कारण यसबाट राजस्व प्राप्त हुन सकेको छैन ।
- प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण र वातावरणीय प्रभाव मूल्याङ्कन जस्ता कार्यको गुणस्तर सुनिश्चित गर्न प्रदेश सरकारले स्थानीय तहहरूलाई आवश्यक सहजीकरण र सहयोग गर्नु पर्ने देखिन्छ ।
- प्रदेश नियमावली नबन्दा वन क्षेत्रभित्र रहेका वनपैदावार काठ, दाउरा निकासी तथा बिक्री गर्न र ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवाको उत्खनन गर्न नसकिएको हुँदा यसबाट पनि राजस्व सङ्कलन हुन सकेको छैन ।
- लौठ सल्ला, रुद्राक्ष, चिराईतो, अल्लो, सुपारी, सुपारीको पात लगायतका मूल्यवान वनपैदावार तथा जडिबुटीहरूको अध्ययन अनुसन्धान गरी अन्तर्राष्ट्रिय बजारसम्म पुऱ्याई कृषकहरूको जीवनस्तर उकास्न सकिने र यसबाट राजस्व आर्जन गर्न सक्ने प्रवल सम्भावनाहरू रहे तापनि यसलाई प्रभावकारी रूपमा प्रयोगमा ल्याउन सकिएको छैन ।

(ङ) घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क

- प्रदेश र स्थानीय तहको आन्तरिक राजस्वको पहिलो मुख्य स्रोतका रूपमा घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्कले महत्वपूर्ण योगदान गर्दै आएको छ । यस सम्बन्धमा मालपोत कार्यालय र नापी कार्यालयले गर्दै आएको प्रशासनलाई अटोमेशन प्रणालीमा लैजाने र ती कार्यालयहरूको क्षमता विकासका क्षेत्रमा लगानी गरेर भूमि प्रशासनलाई थप व्यवस्थित, चुस्त र दुरुस्त बनाउन जरुरी छ । यसबाट एकातिर सेवाग्राहीको सन्तुष्टिको तह वृद्धि हुने र अर्कोतिर राजस्व चुहावट नियन्त्रण भई राजस्व वृद्धिमा सहयोग पुग्ने देखिन्छ ।

(च) सवारी साधन कर

- प्रदेश र स्थानीय तहको आन्तरिक राजस्वको दोश्रो मुख्य स्रोतका रूपमा सवारी साधन कर रहेको छ । सवारी साधनकरलाई थप व्यवस्थित गर्न वर्तमान कानूनमा आवश्यक संशोधन, यातायात कार्यालयको संस्थागत विकास, प्रयोगमा आएको सफ्टवेयरहरूको अद्यावधिकरण, नवीकरण नभएका पुराना सवारी साधनहरूलाई नीतिगत व्यवस्था मार्फत करको दायरामा ल्याउने लगायत सवारी धनीहरूको व्यक्तिगत प्रोफाईल अद्यावधिक गरी मोवाईल अलर्ट

प्रणालीको प्रयोग जस्ता कार्यहरू गरी सवारी साधन कर सङ्कलन कार्यलाई थप प्रभावकारी बनाई राजस्व वृद्धि गर्न सकिने देखिन्छ ।

(छ) मनोरञ्जन कर

- प्रदेश र स्थानीय तहको साझा अधिकारको रूपमा रहेको मनोरञ्जन कर सङ्कलनको अवस्था तुलनात्मक रूपमा कमजोर रहेको पाइयो । मनोरञ्जन स्थलहरूको पहिचान, प्रवर्धन र प्रचारप्रसारमा लगानी वृद्धि गर्न सके र प्रदेश आर्थिक ऐनको प्रावधानलाई स्थानीय तहहरूले प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन गर्न सके राजस्व वृद्धि हुन सक्ने सम्भावना रहेको छ । यसका लागि प्रदेश सरकार र स्थानीय तहहरूका बीचमा नियमित रूपमा छलफल तथा अन्तरक्रिया हुन आवश्यक छ ।

(ज) विज्ञापन कर

- प्रदेश र स्थानीय तहको साझा अधिकारको रूपमा रहेको विज्ञापन करको वर्तमान सङ्कलनको अवस्था ज्यादै न्यून रहेको छ । विज्ञापन कर सम्बन्धमा विज्ञापन (नियमन गर्ने) ऐन, २०७६ र नियमावली २०७७ अनुसार विज्ञापन करको दायरा (लेख्य विज्ञापन, डिजिटल विज्ञापन र श्रव्यदृश्य विज्ञापन) समेत विस्तार गर्न सके यसबाट थप राजस्व सङ्कलन हुन सक्ने देखिन्छ । यसका लागि प्रदेश सरकार र स्थानीय तहहरूका बीचमा छलफल तथा अन्तरक्रिया हुन आवश्यक छ ।

(झ) पर्यटन शुल्क

- प्रदेश नं. १ ले विगतमा पर्यटन शुल्क वापत कुनै राजस्व असुली गरेको छैन । चालु आर्थिक वर्षको प्रदेश सरकारको बजेट वक्तव्यमा पर्यटन शुल्क र पदयात्रा वापत रु. ३५ लाख राजस्व आम्दानी हुने गरी राजस्व अनुमान गरिएको छ । यसको कार्यान्वयनका लागि पर्यटकीय स्थल, पर्यटन व्यवसाय र पर्यटकीय क्रियाकलापहरूमा पर्यटन शुल्क असुल गर्न सम्बन्धित गाउँपालिका वा नगरपालिकासँग सम्वाद तथा छलफल गरी उनीहरूलाई सहजीकरण गर्न आवश्यक छ ।

(ञ) लैङ्गिक समानता तथा सामाजिक समावेशीकरण

- राजस्व परिचालनमा महिला तथा पिछडा वर्गले पुऱ्याएको योगदानलाई देखाउन सकिने खालको खण्डीकृत तथ्याङ्कको अभावले गर्दा स्थानीय तह र प्रदेश सरकारको राजस्वमा उक्त वर्गको भूमिका र योगदानका बारेमा स्पष्ट रूपमा उल्लेख गर्न सकिएको छैन । राजस्व सङ्कलनमा लैङ्गिक पक्षलाई समेत समेटने गरी खण्डीकृत विवरण तयार हुने गरी राजस्वका सफ्टवेयरहरूको विकास गर्नु पर्दछ ।

(ट) प्रदेश सरकारले दिर्घकालमा प्रयोग गर्न सक्ने थप राजस्वका क्षेत्रहरू

- पैतृक सम्पत्ति हस्तान्तरण, उपहार तथा अंशवण्डामा कर ।
- व्यक्तिगत तथा संस्थागत आयकर, क्यासिनो कर, मदिरा/रक्सी (हल्का पेय पदार्थ) लाईसेन्स, रियलस्टेट कर, सम्पत्ति कर, सट्टेवाजी र चिठ्ठा कर, अग्नि नियन्त्रण कर, स्रोतमा लाग्ने कर, बीमा शुल्क कर, वित्तीय तथा पूँजीकर, जुवा कर, सार्वजनिक संस्थान कर, हुलाक टिकटमा टाँचा लगाउने कर, टोल कर, खनिज पदार्थमा कर, निजामति कर्मचारीहरूको पारिश्रमिक कर जस्ता क्षेत्रहरूको करको दर निर्धारण, सङ्कलन, प्रशासन र उपयोग एकल अधिकारको रूपमा प्रदेश सरकारहरूले गर्न सक्ने सम्भावनाहरू छन् । यसर्थ, आगामी दिनमा नेपालमा प्रदेश सरकारलाई थप वित्तीय अधिकार प्रदान गर्ने सन्दर्भमा यी क्षेत्रहरूलाई ध्यान दिनु उपयुक्त देखिन्छ । साथै, यसका लागि प्रदेश सरकारले संघीय सरकारसँग आवश्यकता अनुसार समन्वय गर्न आवश्यक छ ।

(ठ) संगठन संरचना

आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालयमा अर्थ सचिव र राजश्व सचिव गरी दुई सचिवको व्यवस्था गर्ने । प्रत्येक सचिव अन्तर्गत दुईवटा महाशाखाहरूको व्यवस्था गर्ने । सचिव (अर्थ) अन्तर्गत बजेट, योजना, कार्यक्रम तथा अनुगमन महाशाखा र प्रशासन महाशाखा रहने । सचिव (राजस्व) अन्तर्गत राजश्व महाशाखा र वित्तीय क्षेत्र व्यवस्थापन महाशाखा रहने । यसरी मन्त्रालयमा चारवटा महाशाखाहरूको व्यवस्था गरी संगठन पुनर्संरचना गर्न प्रस्ताव गरिएको छ ।

(ड) समन्वय र सहकार्य

- प्रदेश र स्थानीय तहका बीचमा बाँडफाँट हुने राजस्वहरू जस्तै नदीजन्य पदार्थ, घरजग्गा रजिष्ट्रेशन, सवारी साधन कर, विज्ञापन कर, मनोरञ्जन कर र पर्यटन शुल्कसँग सम्बन्धित विषयमा प्रदेश सरकार, स्थानीय सरकार, मालपोत कार्यालय, यातायात व्यवस्था कार्यालयहरूका बीचमा नियमित रूपमा प्रभावकारी समन्वय र सहकार्य हुन नसक्दा समस्याहरूको समाधानमा अन्यौलता रहेको अवस्था छ । यसको समाधानबाट राजस्व वृद्धि हुने सम्भावना छ ।
- मालपोत कार्यालय र नापी कार्यालयका बीचमा अपेक्षित सहकार्य हुन नसकेको कारण सेवाग्राहीहरूले सहज र सरल तरिकाले सेवा प्राप्त गर्न नसकेको अवस्था भएकोले यसलाई सहज बनाउन आवश्यक छ ।
- जग्गाको वर्गीकरण र मूल्याङ्कनको विषय वैज्ञानिक र प्रभावकारी बनाउने सम्बन्धमा प्रदेश सरकार र स्थानीय सरकारका बीचमा आवश्यक समन्वय हुन नसक्दा घरजग्गा रजिष्ट्रेशन कार्य प्रभावित भएको हुँदा यसले राजस्व असुलीमा नकारात्मक प्रभाव पारेको छ । यसको समाधानको आवश्यकता छ ।
- आवश्यकता अनुसार संघीय कानूनहरूमा संशोधन लगायत प्रदेश सरकारको राजस्व क्षमता अभिवृद्धिका क्षेत्रमा नेपाल सरकारसँगको सहकार्य र समन्वयमा जोड दिन आवश्यक छ ।
- स्थानीय तहको क्षमता विकास र नियमित छलफलले राजस्व परिचालनमा देखिएका समस्याहरूको समाधान गर्न सकिने हुँदा प्रदेश सरकारको अग्रसरतामा यसलाई कार्यान्वयनमा ल्याउन आवश्यक छ ।
- प्रदेश नं. १ को राजस्व सम्भाव्यता अध्ययन प्रतिवेदनले सुझाव गरेका वर्तमान कानूनमा गर्नु पर्ने संशोधन, नयाँ कानूनको निर्माण र राजस्व परिचालनका सम्बन्धमा तीन तहका सरकारकाहरूका बीचमा गर्नु पर्ने समन्वय र सहकार्यका विषयहरू अन्तर-सरकारी वित्त परिषदमा छलफल गरी निर्णयमा पुग्नु पर्दछ ।
- स्थानीय तह र प्रदेश सरकारबीचको राजस्वका साझा अधिकारहरूको प्रयोगलाई थप प्रभावकारी बनाउन प्रदेश समन्वय परिषद्को नियमित बैठक गरी राजस्व परिचालनमा देखिएका समस्या समाधानका विषयमा छलफल गरी निष्कर्षमा पुग्न आवश्यक हुन्छ ।
- संविधानतः अनुगमन र समन्वय गर्ने जिम्मेवारी पाएको जिल्ला समन्वय समितिलाई प्रदेश र स्थानीय तहका बीचमा गरिने राजस्व बाँडफाँटका क्षेत्रमा देखिएका समस्याहरूको समाधान गर्न आवश्यक सहजीकरण र समन्वय गर्ने जिम्मेवारी दिई जिल्ला समन्वय समितिको भूमिकालाई थप प्रभावकारी बनाउन उपयुक्त देखिन्छ ।
- कानूनतः अर्को व्यवस्था नहुञ्जेलसम्मका लागि मालपोत कार्यालयको क्षमता विकास लगायत आवश्यक समन्वय र सहजीकरण गर्ने जिम्मेवारी प्रदेश सरकारलाई दिन सके मालपोत कार्यालयहरूको कार्यसम्पादन थप प्रभावकारी हुन सक्ने देखिन्छ ।

(ढ) राजस्व प्रक्षेपण

- आ.व. २०८०/८१ देखि २०८४/८५ सम्म पाँच आर्थिक वर्षको राजस्व प्रक्षेपण गरिएको छ ।
- आ.व. २०७८/७९ को तुलनामा अध्ययन प्रतिवेदनमा प्रस्ताव गरिए अनुसारको सुधार हुन सकेमा चालु आ.व. २०७९/८० मा करिब १७.७० प्रतिशतले आन्तरिक राजस्व (संघीय सरकारको अनुदान बाहेक) वृद्धि हुन सक्ने गरी

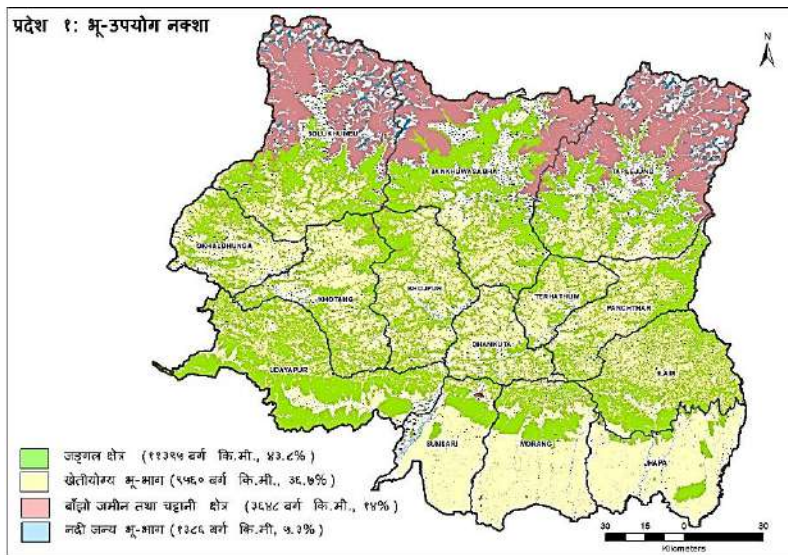
प्रक्षेपण गरिएको छ । जबकि चालु वर्षका लागि प्रदेश सरकारले गरेको अनुमानमा पनि ती सुधारहरू हुन सकेमा ३.१६ प्रतिशतले राजस्व बढ्न सक्ने प्रक्षेपण गरिएको छ ।

- राजस्व प्रक्षेपणको अन्तिम आ.व. २०८४/८५ मा यस प्रदेशको अनुदान बाहेकको राजस्व रु. ३८ अर्ब ५५ करोड ६७ लाख ८ हजार हुने अनुमान गरिएको छ ।

9.9 प्रदेशको संक्षिप्त परिचय

नेपालको पूर्व दिशामा अवस्थित प्रदेश नं. १ को कूल क्षेत्रफल २५९०५ वर्ग कि.मी. तथा जनगणना २०७८ को प्रारम्भिक प्रतिवेदन अनुसार कुल जनसंख्या ४९७२०२१ रहेको छ। जातीय र भाषिक विविधता रहेको यस प्रदेशमा विश्वकै सर्वोच्च सगरमाथा लगायत कञ्चनजङ्घा, मकालु, चोयु, ल्होत्से आदि हिमालहरूको अवस्थितिले मित्र राष्ट्र चीनसँग प्राकृतिक सीमाको काम गरेको छ। यस प्रदेशको पूर्वतर्फ भारतको पश्चिम बङ्गाल राज्य र दक्षिणतर्फ बिहार राज्य पर्दछन्। यस प्रदेशमा इलामको अन्तुडाँडा, कन्याम, धनकुटाको भेडेटार, सोलुखुम्बुको नाम्चे बजार, सगरमाथा आधार शिविर तथा सुनसरीको तालतलैया लगायतका पर्यटकीय स्थलहरू समेत रहेका छन्।

जातीय तथा भाषिक विविधता रहेको यस प्रदेशमा मुख्य रूपमा ब्राम्हण, क्षेत्री, लिम्बु, थारु, लेप्चा, मुस्लिम, तामाङ, गुरुङ, मेचे, कोचे, यादव, राजवंशी लगायतका जातिहरूको बसोवास रहेको छ। नेपाली, मैथिली, किराँती, तामाङ, लिम्बु, गुरुङ, लेप्चा, मुस्लिम, मगर र थारु भाषाहरू मुख्य भाषाका रूपमा बोलिन्छन्। यस प्रदेशमा इलामको अन्तुडाँडा र कन्याम, धनकुटाको भेडेटार, सोलुखुम्बुको नाम्चेबजार, सगरमाथाको आधार शिविर तथा सुनसरीको तालतलैया लगायतका पर्यटकीय स्थलहरू रहेका छन्। प्राकृतिक सम्पदा, वन्यजन्तु तथा पशुपंक्षीको संरक्षण गर्ने हेतुले स्थापना गरिएका सगरमाथा राष्ट्रिय निकुन्ज, मकालु बरुण राष्ट्रिय निकुन्ज, कोशिटप्पु वन्यजन्तु आरक्षण, कञ्चनजंगा संरक्षण क्षेत्रलगायत नेपालकै अग्लो हन्यातुङ झरना तथा टोङ्के, पोकली र नमस्ते झरना जस्ता ठूला र लामा झरनाहरू पनि यसै प्रदेशमा रहेका छन्।



यस प्रदेशको कूल क्षेत्रफलमध्ये जङ्गलले ढाकेको क्षेत्रफल ११३९९५ वर्ग कि.मी. (४३.९%), खेतीयोग्य जमीन ९५६० वर्ग कि.मी. (३.६.७%), बाँझो जमीन तथा चट्टानी क्षेत्र ३६८८ वर्ग कि.मी. (१.४%) र नदीजन्य भूभागले ढाकेको क्षेत्र १३२६ वर्ग कि.मी. (०.५%) रहेको छ। सुन्दर पहाड र हिमवत खण्ड, उच्च हिम श्रृङ्खला लगायत प्राकृतिक सम्पदाले सुशोभित दक्षिणपूर्वी एसियामा अवस्थित नेपाल धार्मिक तथा सांस्कृतिक दृष्टिले समेत समृद्ध छ। असंख्य मठ, मन्दिर, पाटि, पौवा, गुम्बा, मस्जिदले भरिपूर्ण

नेपालको सुदूरपूर्वमा रहेको यस प्रदेश नं. १ मा विभिन्न प्रसिद्ध धार्मिक तिर्थस्थलहरू जस्तै ताप्लेजुङ्गको पाथिभरा देवीको मन्दिर, इलामको माईपोखरी, झापाको अर्जुनधारा र सताक्षी धाम, सुनसरीको बराह क्षेत्र, बुढा सुब्बा, पिण्डेश्वर, दन्तकाली र रामधुनी, खोटाङ्गको हलेसी महादेव लगायत बराह पोखरी, सल्पा पोखरी, दुधकुण्ड, कालिका देवी, छिन्ताङ देवी, कन्काई आदि प्रख्यात धार्मिक स्थलहरू रहेका छन्। यी स्थलहरूमा स्वदेशी तथा विदेशी तीर्थालुहरूको प्रगाढ आस्था रही आएको छ। वर्षेनी हजारौं भक्तजन तथा तीर्थयात्रीहरूको आगमनले धार्मिक पर्यटनमा टेवा पुगेको पाइन्छ।

यस प्रदेशमा नेपालभरिका कुलमध्ये १३.१ प्रतिशत (१६,१७४ ओटा) घरेलु तथा साना उद्योगहरू दर्ता भएको देखिन्छ । राष्ट्रिय कुल उद्योगहरू मध्ये यस प्रदेशमा ७३ ओटा (२ प्रतिशत) साना उद्योगहरू, ३० (७.६ प्रतिशत) ओटा मध्यम खालका उद्योगहरू र २२ ओटा (७.८ प्रतिशत) ठूला उद्योग रहेका छन् । सबै खाले उद्योगहरू मध्ये औसतमा यस प्रदेशमा २.९ प्रतिशत उद्योगहरू रहेका छन् । मोरङमा ३ ओटा र सुनसरीमा ५ ओटा उत्पादित वस्तु निर्यात गर्ने उद्योगहरू रहेका छन् । आर्थिक गणना, २०१८ अनुसार प्रदेशको आर्थिक क्रियाकलाप गर्ने कुल औद्योगिक तथा व्यापारिक प्रतिष्ठानहरू मध्ये १८.३ प्रतिशत हिस्सा यस प्रदेशले ओगटेको छ । झापा, मोरङ, सुनसरी र उदयपुरमा सबैभन्दा बढी प्रतिष्ठानहरू रहेका छन् भने सबैभन्दा कम तेहथुम र सोलुखुम्बुमा छन् । यस प्रदेशमा सबैभन्दा बढी थोक तथा खुद्रा विक्रेताका प्रतिष्ठानहरू (५२.८ प्रतिशत) रहेका छन् । त्यसपछि क्रमशः बास तथा खाना, उद्योग प्रतिष्ठान, शिक्षा, कृषि, वन तथा माछापालन, मानव स्वास्थ्य, सामाजिक कार्य, वित्तीय, इन्स्योरेन्स आदि सम्बन्धी प्रतिष्ठानहरू रहेका छन् । यस प्रदेशमा सबैभन्दा बढी मानिसहरू थोक तथा खुद्रा विक्रेतामा संलग्न छन् भने सबैभन्दा कम घर घडेरी एवं खानी तथा भूगर्भ क्षेत्रमा मानिसहरू संलग्न रहेका छन् ।

यस प्रदेशमा पुवा खोला जलविद्युत आयोजना र थामे जलविद्युत आयोजना निर्माण भई सञ्चालनमा रहेका छन् भने अरुण तेस्रो जलविद्युत आयोजना प्रमुख प्रस्तावित जलविद्युत आयोजना भित्र पर्दछ । जलस्रोतमा सम्पन्न यस प्रदेशमा अरुण, तमोर, दुधकोशी, मेची, कन्काई र त्रियुगा लगायतका नदीहरू रहेका छन् ।^१

यस प्रदेश अन्तर्गत तीन हिमाली जिल्लामा २७ गाउँपालिका तथा नगरपालिका, आठ पहाडी जिल्लामा ६६ र तराईका तीन जिल्लामा ४४ गाउँपालिका तथा नगरपालिका गरी कुल १३७ गाउँपालिका तथा नगरपालिकाहरू रहेका छन् । जसमध्ये एक महानगरपालिका, दुई उपमहानगरपालिका, ४६ नगरपालिका र बाँकी ८८ गाउँपालिकाहरू रहेका छन् । जिल्लागत रूपमा गाउँपालिका तथा नगरपालिकाहरूको विवरण तालिका १ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

तालिका १ : प्रदेश अन्तर्गतका गाउँपालिका तथा नगरपालिकाहरूको विवरण

| क्र.स. | जिल्लाको नाम | स्थानीय तहको संख्या | क्र.स. | जिल्लाको नाम | स्थानीय तहको संख्या |
|-----------------------------|---------------|---------------------|--------|------------------|---------------------|
| (क) | हिमाली जिल्ला | | | (ख) पहाडी जिल्ला | |
| १ | ताप्लेजुङ्ग | ९ | १ | पाँचथर | ८ |
| २ | संखुवासभा | १० | २ | इलाम | १० |
| ३ | सोलुखुम्बु | ८ | ३ | तेहथुम | ६ |
| | जम्मा | २७ | ४ | धनकुटा | ७ |
| (ग) | तराई जिल्ला | | ५ | भोजपुर | ९ |
| १ | झापा | १५ | ६ | खोटाङ्ग | १० |
| २ | सुनसरी | १२ | ७ | उदयपुर | ८ |
| ३ | मोरङ्ग | १७ | ८ | ओखलढुङ्गा | ८ |
| | जम्मा | ४४ | | जम्मा | ६६ |
| कुल जम्मा (क, ख र ग) | | | | | १३७ |

स्रोत : <https://mofaga.gov.np/local-contact?>

^१ प्रदेश नम्बर १ को मुख्यमन्त्रीको कार्यालयको वेबसाईटबाट साभार ।

१.२ अध्ययनको पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानको धारा ५९ (१) ले संघ, प्रदेश र स्थानीय तहले आफ्नो अधिकारभित्रको आर्थिक अधिकार सम्बन्धी विषयमा कानून बनाउने, वार्षिक बजेट बनाउने, निर्णय गर्ने, नीति तथा योजना तयार गर्ने र त्यसको कार्यान्वयन गर्ने जिम्मेवारी तोकेको छ । संघ, प्रदेश र स्थानीय तहले प्राकृतिक स्रोतको प्रयोग वा विकासबाट प्राप्त लाभको समन्यायिक वितरणको व्यवस्था गर्नुपर्ने र त्यस्तो लाभको निश्चित अंश रोयल्टी, सेवा वा वस्तुको रूपमा परियोजना प्रभावित क्षेत्र र स्थानीय समुदायलाई कानून बमोजिम वितरण गर्नु पर्ने संवैधानिक व्यवस्था रहेको छ (धारा ५९ को ४) । यसैगरी संविधानको धारा ६० ले संघ, प्रदेश र स्थानीय तहले आफ्नो आर्थिक अधिकारक्षेत्र भित्रको विषयमा कर लगाउन र ती स्रोतहरूबाट राजस्व उठाउन सक्ने व्यवस्था गरेको छ । तर, साझा अधिकारको सूची भित्रको विषयमा र कुनैपनि तहको सूचीमा नपरेका विषयमा कर लगाउने र राजस्व उठाउने व्यवस्था नेपाल सरकारले निर्धारण गरे बमोजिम हुने व्यवस्था रहेको छ । कानून बमोजिम बाहेक प्रदेश सरकारले कुनै कर लगाउन र उठाउन नपाउने व्यवस्था संविधानको धारा २०३ को उपधारा (१) ले गरेको छ । त्यसैगरी संघीय कानून बमोजिम बाहेक प्रदेश सरकारले कुनै ऋण लिन र जमानत दिन नसक्ने व्यवस्था समेत संविधानले गरेको छ ।

संवैधानिक व्यवस्था अनुसार राजस्वको मुख्य स्रोतका रूपमा रहेको अन्तःशुल्क र मूल्य अभिवृद्धि कर संघीय सरकारले सङ्कलन गरी तीनै तहको सरकारका बीचमा बाँडफाँट हुन्छ भने भन्सार महशुल, राहदानी शुल्क, भिसा शुल्क र आयकरबाट संघीय सरकारले सङ्कलन गरेको राजस्व मध्येबाट प्रदेश र स्थानीय तहलाई विभिन्न अनुदानहरू प्राप्त हुन्छ । तर प्रदेश सरकार र स्थानीय तहको खर्चको आवश्यकता राजस्व क्षमताको तुलनामा अधिक भएको हुँदा उनीहरूको आफ्नो आन्तरिक स्रोतबाट संकलित राजस्वले खर्च धान्न पुग्दैन । तसर्थ, प्रदेश र स्थानीय तहको पूर्वाधार विकास र सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्रको विकासका लागि आवश्यक पर्ने राजस्व प्रदेश सरकार र स्थानीय तहसँग न्यून रहने हुँदा संघीय सरकार र प्रदेश तथा स्थानीय तहका बीचमा ठाडो वित्तीय खाडल (Vertical Fiscal Gap) रहेको छ ।

साथै प्रदेश/प्रदेश र स्थानीय/स्थानीय तहका बीचमा पनि राजस्व क्षमतामा एक रूपता देखिँदैन, जसले गर्दा प्रदेश/प्रदेश र स्थानीय/स्थानीय तहहरूका बीचमा तेर्सो वित्तीय खाडल (Horizontal Fiscal Gap) पनि रहेको छ । कतिपय गाउँपालिका तथा नगरपालिकाहरू र केही प्रदेश सरकारहरूको आन्तरिक स्रोत पर्याप्त रहेको र अधिकांश गाउँपालिका तथा नगरपालिकाहरू र प्रदेश सरकारहरूको आन्तरिक स्रोत कमजोर रहेको अवस्था छ । यसर्थ, विभिन्न तहका सरकारहरूका बीचमा रहेको वित्तीय खाडल पूर्ति गर्नका लागि संविधानले संघीय सरकारले न्यायोचित रूपमा प्रदेश र स्थानीय तहहरूलाई समानीकरण अनुदान उपलब्ध गराउने व्यवस्था सुनिश्चित गरेको छ । यसका अतिरिक्त संघीय सरकारले प्रदेश र स्थानीय तहलाई र प्रदेश सरकारले स्थानीय तहलाई विशेष अनुदान, समपूरक अनुदान र सशर्त अनुदान मार्फत खर्चको आवश्यकता पूरा गर्ने प्रयास हुँदै आएको छ । सशर्त अनुदान संघीय सरकारको नीति र राष्ट्रिय मापदण्ड प्राप्त गर्ने उद्देश्यले प्रदान गर्दै आएको छ भने समपूरक अनुदानको उपयोग पूर्वाधार विकास र विशेष अनुदान स्वास्थ्य तथा शिक्षा जस्ता सामाजिक क्षेत्रको विकासमा उपयोग गरिने व्यवस्था समपूरक अनुदान र विशेष अनुदान कार्यविधि, २०७७ ले गरेको छ । राजस्व तथा रोयल्टी बाँडफाँट, समानीकरण र सशर्त अनुदान वितरणको मापदण्ड बनाउने जिम्मा संविधानले राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगलाई दिएको छ । तसर्थ, राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगले निश्चित मापदण्ड, सिद्धान्त र अभ्यासलाई समेत आधार मानी नेपाल सरकारलाई वित्तीय हस्तान्तरण सम्बन्धी सिफारिस गर्दै आएको छ ।

संघ, प्रदेश र स्थानीय तहले प्राकृतिक स्रोतको प्रयोग वा विकासबाट प्राप्त लाभको समन्यायिक वितरणको व्यवस्था गर्नु पर्ने र त्यस्तो लाभको निश्चित अंश रोयल्टी, सेवा वा वस्तुको रूपमा परियोजना प्रभावित क्षेत्र र स्थानीय समुदायलाई कानूनबमोजिम वितरण गर्नुपर्ने संवैधानिक व्यवस्था रहेको छ (धारा ५९ को ४) । यसैगरी संविधानको धारा ६० ले संघ, प्रदेश

र स्थानीय तहले आफ्नो आर्थिक अधिकारक्षेत्र भित्रको विषयमा कर लगाउन र ती स्रोतहरूबाट राजस्व उठाउन सक्ने व्यवस्था गरेको छ । तर, साझा अधिकारको सूचीभित्रको विषयमा र कुनै पनि तहको सूचीमा नपरेका विषयमा कर लगाउने र राजस्व उठाउने व्यवस्था नेपाल सरकारले निर्धारण गरे बमोजिम हुने व्यवस्था रहेको छ । कानूनबमोजिम बाहेक प्रदेश सरकारले कुनै कर लगाउन र उठाउन नपाउने व्यवस्था संविधानको धारा २०३ को उपधारा १ ले गरेको छ । त्यसैगरी संघीय कानूनबमोजिम बाहेक प्रदेश सरकारले कुनै ऋण लिन र जमानत दिन नसक्ने व्यवस्था समेत संविधानले गरेको छ ।

१.३ अध्ययनको महत्व/औचित्य

आर्थिक रूपमा सबल र आत्मनिर्भर सरकार मात्र नागरिकलाई प्रभावकारी सेवा प्रवाह गर्न सक्षम हुन्छ । सामान्यतः सरकारको आन्तरिक राजस्व बढ्नु भनेको उसको स्वायत्तता बढ्नु हो भने बाह्य स्रोतमा निर्भर हुनु भनेको नियन्त्रणमा वृद्धि हुनु हो भन्ने मान्यता रहेको पाइन्छ । नेपालमा संघीय संरचना अनुसार स्थापना भएका प्रदेश सरकारहरूको कार्य सञ्चालन अनुभव छोटो छ । वित्तीय रूपमा प्रदेश नं. १ सरकारको खर्चको आवश्यकता पूरा गर्न आन्तरिक राजस्व न्यून रहेको र प्राप्त भएको अधिकारको पनि उचित परिचालन नहुँदा संघीय सरकारको अनुदानमा निर्भर रहनु पर्ने अवस्था विद्यमान छ ।

प्रदेश सरकारले प्रदेश र स्थानीय तहमा प्रदान गर्नुपर्ने सार्वजनिक वस्तु तथा सेवा, गरिबी न्यूनीकरण, क्षमता विकास जस्ता कार्यहरू गर्नका लागि प्रदेश सरकारले आन्तरिक स्रोतको परिचालन गर्नु अति आवश्यक हुन्छ । नेपालको सन्दर्भमा आन्तरिक स्रोत भन्नाले संविधान र कानून अनुसार प्रदेश तथा स्थानीय सरकारले लगाउन र सङ्कलन गर्न सक्ने करहरू र उनीहरूले प्रदान गर्ने सेवाहरू वापत लिने सेवा शुल्क तथा दस्तुरहरू हुन् । मुख्यतया: प्रदेश तथा स्थानीय तहले परिचालन गर्ने आन्तरिक स्रोतले संघीय सरकारलाई बढ्दो सार्वजनिक ऋण र चालु खर्चको दबाव कम गर्न सहयोग पुग्छ । यसको अतिरिक्त आन्तरिक स्रोत परिचालनमा हुने सुधारले वित्तीय स्वायत्तता, राजस्व स्रोतको वृद्धि र विकासका सवाल (एजेण्डा) सम्बोधन गर्नका लागि सहयोग पुग्दछ । नेपालको संघीयताको सफलताको लागि खासगरी प्रदेश र स्थानीय तहमा प्रभावकारी राजस्व प्रणाली स्थापित हुनु एउटा महत्वपूर्ण पूर्वशर्त हो । तसर्थ, प्रदेश नं. १ को मुख्यमन्त्री कार्यालय मातहत रहेको स्वीस सरकारको सहयोगमा सञ्चालित प्रदेश सहयोग कार्यक्रम (पिएसपी) को प्राविधिक सहयोगमा आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालयमार्फत यो राजस्व सम्भाव्यता अध्ययन कार्य गरिएको हो ।

१.४ अध्ययनको क्षेत्र

यस अध्ययनको क्षेत्र निम्नानुसार रहेको छ ।

१. प्रदेश सरकार अन्तर्गतको राजस्व अधिकारसँग सम्बन्धित संवैधानिक, नीतिगत, कानूनी प्रावधानहरू, संस्थागत र मानवीय स्रोतहरूको तुलनात्मक अध्ययन र विश्लेषण गर्नु,
२. प्रदेश नं. १ सरकारको हरेक राजस्वका स्रोतहरूको वर्तमान अवस्थाको विश्लेषण गर्नु र समाधानका उपायहरूको सिफारिस गर्नु,
३. प्रदेश नं. १ सरकारको आन्तरिक राजस्वको सम्भाव्य क्षेत्रहरू र स्रोतहरूको पहिचान गर्नु र हरेक स्थानीय तहमा यसको नक्साङ्कन गर्नु,
४. अन्तर सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ को अनुसूची २ मा उल्लेख भएको प्रदेशले लगाउन सक्ने कर र गैरकरको दर र आधारका साथै सङ्कलन र व्यवस्थापनको सुधारका लागि सुझाव सहितको रणनीतिक कार्ययोजना तयार गर्नु,
५. स्थानीय तहबाट विगत वर्षहरूमा प्राकृतिक स्रोतबाट प्राप्त राजस्वको पुनरावलोकन गर्नु र यस सम्बन्धी राजस्व सुधारका लागि सुझाव पेश गर्नु,

६. प्रस्तावित राजस्व र यसको परिचालनका लागि कर तथा गैरकरको दर/शुल्क, संस्थागत व्यवस्था र मानवीय स्रोतहरूको लागि आवश्यक नीतिहरू सिफारिस गर्नु,
७. स्थानीय तह र सम्बन्धित प्रदेश कार्यालयहरूको समन्वयमा प्रदेश सरकारले लगाइ स्थानीय सरकारले सङ्कलन गरेको राजस्वको पुनरावलोकन गर्नु र यस सम्बन्धी समस्याको समाधानका लागि सिफारिस गर्नु,
८. प्राकृतिक स्रोतको राजस्व बाँडफाँटका लागि विधि र संयन्त्र सहितको कृषि आयमा कर र प्राकृतिक स्रोत व्यवस्थापन सम्बन्धी कानूनी खाकाको लागि प्रशासनिक प्रणाली सहितको दरहरू र आधार (स्कोप) सिफारिस गर्नु,
९. संविधानको अनुसूची ६ र अन्य अनुसूचीहरूका साथै अन्तरसरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ मा उल्लेख भएको प्रदेश सरकारको राजस्व अधिकारको लागि प्रदेश सरकारले अपनाउनु पर्ने प्रविधिमा आधारित राजस्व व्यवस्थापन प्रणाली सिफारिस गर्नु,
१०. प्रदेश नं. १ सरकारको लागि कर र गैरकरका आधारहरू पहिचान गर्नु,
११. राजस्व सुधार र व्यवस्थापनका लागि नेपालका अन्य प्रदेशहरूले अपनाएका असल अभ्यासहरूको अध्ययन गर्नु र प्रदेश नं. १ सरकारलाई आवश्यक सिफारिस गर्नु,
१२. प्रदेश नं. १ सरकारको वार्षिक बजेट र मध्यमकालीन खर्च संरचनाको लागि सहयोग पुग्ने गरी यथार्थतामा आधारित र पुष्ट्याई सहित कर र गैरकरको पाँच वर्षको राजस्व प्रक्षेपण गर्नु,
१३. संविधान अनुसार प्रदेश तहको राजस्व अधिकारलाई स्थापित र कार्यान्वयन गर्न संघीय र अन्य तहको कानूनहरूमा कुनै संशोधन आवश्यक भएमा प्रदेश नं. १ सरकारलाई सिफारिस गर्नु ।

१.५ अध्ययनको उद्देश्य

यस अध्ययनको मुख्य उद्देश्य प्रदेश नं. १ को आन्तरिक राजस्वको सम्भाव्यता अध्ययन गर्नु र प्रदेश नं. १ को वित्तीय अन्तर न्यून गरी प्रदेशलाई वित्तीय रूपमा दिगो बनाउन अल्पकालीन, मध्यमकालीन र दीर्घकालीन रणनीतिक सुझावहरू उपलब्ध गराउनु ।

अपेक्षित प्रतिफलहरू

यस अध्ययनको मुख्य दुईवटा प्रतिफलहरू यसप्रकार रहेका छन्:

- (१) प्रदेश नं. १ को राजस्व सुधार कार्ययोजना तयार भएको हुने । यस अन्तर्गत निम्नानुसारका विषयहरू समावेश छन् ।
 - १.१ आन्तरिक राजस्व सङ्कलन (कर र गैरकर सङ्कलन प्रणाली सहित नीतिगत व्यवस्था, संस्थागत संरचना र मानव संसाधनको क्षमता) को वर्तमान अभ्यास र सवालहरूको लेखाजोखा ।
 - १.२ अन्य प्रदेश र सम्भव भएसम्म अन्तर्राष्ट्रिय अभ्यासहरूको अध्ययनको आधारमा प्रदेश नं. १ को राजस्व वृद्धि र व्यवस्थापन प्रणालीको सुधारका लागि आवश्यक सुझावका लागि अध्ययन ।
 - १.३ आन्तरिक राजस्व सङ्कलन र दायराको प्रवृत्ति विश्लेषणको साथै मुख्य राजस्वहरूको सङ्कलन संयन्त्र र कम राजस्व असुलीका कारणहरूको अध्ययन ।
 - १.४ विभिन्न प्रकृतिका कर तथा गैरकरको लागि नयाँ करका आधार र करका दरहरूको विश्लेषण तथा सिफारिस ।
 - १.५ आन्तरिक स्रोत (कृषिमा आय कर, घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, वन लगायत प्राकृतिक स्रोतहरू, पर्यटन र नदीजन्य पदार्थहरू, भौतिक पूर्वाधारहरू आदि) को अधिकतम परिचालनका लागि गर्नुपर्ने विभिन्न रणनीति र नीतिगत सुधारहरूको सिफारिस ।
 - १.६ राजस्व परिचालनका सन्दर्भमा लैङ्गिक समानता तथा सामाजिक समावेशीकरणको दृष्टिकोणबाट विश्लेषण र सिफारिस ।

- १.७ कर तिर्न सक्ने क्षमता, करको प्रकृति र करको परिमाण अनुसार दिगो कर तथा गैरकरका दरहरूको वैज्ञानिक सिफारिस ।
 - १.८ वर्तमान राजस्व प्रशासन प्रणालीको लेखाजोखा र संगठन संरचना, सङ्कलन, विजक प्रणाली र आन्तरिक नियन्त्रण प्रणालीको आधुनिकीकरण गर्न सिफारिस ।
 - १.९ प्रदेश सरकार र स्थानीय तहका बीचमा राजस्व बाँडफाँट सम्बन्धी प्रभावकारी संयन्त्र प्रक्रियाको सिफारिस ।
 - १.१० नतिजामा आधारित पाँचवर्षे कार्ययोजना ।
 - १.११ प्रदेश नं. १ को आ.व. २०७९/८० को आर्थिक ऐनको समीक्षा र आगामी आ.व. २०८०/८१ को आर्थिक ऐनको सुधारका लागि सुझाव ।
- (२) कृषि आयमा कर, घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, वन, पर्यटन, र नदीजन्य पदार्थ लगायत प्राकृतिक स्रोतहरूको प्रवर्द्धनका लागि कानूनी ढाँचा (फ्रेमवर्क) र प्रक्रियात्मक दिग्दर्शन तयार हुने । यस अन्तर्गत निम्नानुसारका विषयहरू समावेश छन्:
- २.१ कृषिमा आय कर, घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क र सवारी साधन करको वर्तमान अभ्यास र सवालहरूको लेखाजोखा तथा समीक्षा ।
 - २.२ वन, पर्यटन, नदीजन्य पदार्थ लगायत प्राकृतिक स्रोतहरू र प्रदेश अन्तर्गतका अन्य स्रोतहरूको वर्तमान अभ्यास र सवालहरूको लेखाजोखा तथा समीक्षा ।
 - २.३ प्रदेश नं. १ को प्राकृतिक स्रोतको तथ्यांकीय प्रणालीको स्थापना ।
 - २.४ कर लेखाजोखा, बिजकीकरण (बिलिड), सङ्कलन र नियन्त्रणको लागि कृषि आयमा कर, घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क र सवारी साधन करको प्रक्रियात्मक दिग्दर्शन ।
 - २.५ प्राकृतिक स्रोत (वन, पर्यटन, नदीजन्य पदार्थहरू आदि) को लागि प्रक्रियागत दिग्दर्शन तथा प्रदेश र स्थानीय तहबीच प्राकृतिक स्रोतको बाँडफाँट संयन्त्र ।
 - २.६ वर्तमान संस्थागत संरचनाको लेखाजोखा, प्रदेशको विकास र राजस्व वृद्धिको लागि नागरिक र निजी क्षेत्रको संलग्नताको प्रवर्द्धन र सहजीकरण गर्न उपयुक्त संस्थागत संरचनाको सिफारिस ।
 - २.७ राजस्व अधिकारको स्थापना र कार्यान्वयनका लागि बनेका संघीय र अन्य तहको कानूनहरूमा भएको अन्तर र दोहोरोपनाको विश्लेषण र नीतिगत सिफारिस ।

१.६ अध्ययन विधि

यस अध्ययनका लागि आन्तरिक राजस्व सम्भाव्यता तथा राजस्व सुधार सम्बन्धी दस्तावेज र विगतमा समान प्रकृतिका अध्ययन कार्यका अनुभवलाई आधार लिइएको छ । यो अध्ययनमा परिमाणात्मक र गुणात्मक दुवै तथ्याङ्कको प्रयोग गरिएको छ । साथै प्रदेश सरकारबाट जारी कार्यशर्त विवरण समेतका आधारमा निम्नानुसारको प्रक्रिया र विधिहरू अवलम्बन गरी अध्ययन कार्य सम्पन्न गरिएको छ:

(क) उच्चस्तरीय राजस्व अध्ययन कार्यदलसँगको नियमित परामर्श

यस अध्ययनलाई मार्गदर्शन गर्ने उद्देश्य बमोजिम प्रदेश नं. १ को राजस्व सम्भाव्यता अध्ययनको लागि मन्त्रिपरिषद्को निर्णयबमोजिम प्रदेश योजना आयोगका माननीय उपाध्यक्ष डा. पूर्णकुमार लोक्समको संयोजकत्वमा गठित उच्चस्तरीय राजस्व अध्ययन कार्यदलसँगको नियमित परामर्शमा प्रस्तुत अध्ययन सम्पन्न गरिएको हो । अध्ययन सम्बन्धी कार्यविवरणका साथै कार्यदलबाट उपलब्ध गराइएका नीतिगत मार्गदर्शनलाई अध्ययनको मुख्य आधार मानिएको छ । यसका अतिरिक्त प्रदेश सरकारले नियुक्त गरेको विषय विज्ञहरूसँग समेत अध्ययन टोलीले आवश्यक समन्वय र परामर्श गरेको थियो ।

यस अध्ययनलाई मार्गदर्शन गर्ने उद्देश्यले माथि उल्लेखित उच्चस्तरीय राजस्व अध्ययन कार्यदलको पहिलो बैठक २०७९ साल श्रावण २४ गते (अगष्ट ९, २०२२) का दिन विराटनगरमा बसेको थियो । उच्चस्तरीय राजस्व अध्ययन कार्यदलसँग गरिएको पहिलो छलफलका निष्कर्षहरू सहितको प्रतिवेदन कार्यआरम्भ प्रतिवेदनमा समावेश गरी छुट्टै पेश गरिएको छ ।

(ख) मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय एवम् प्रदेश सहयोग कार्यक्रमसँग समन्वय र सहकार्य

यस अध्ययन कार्य मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय र प्रदेश सहयोग कार्यक्रमको निरन्तर समन्वय र मार्गदर्शनमा सम्पन्न भएको हो । अध्ययनको मुख्य मुख्य क्रियाकलाप जस्तै तथ्याङ्क सङ्कलन ढाँचालाई अन्तिम रूप दिने कार्य र स्थानीय तहसँगको अन्तरक्रिया कार्यक्रम सञ्चालन गर्नु अघि प्रदेश सहयोग कार्यक्रमबाट यस सम्बन्धी पृष्ठपोषण प्राप्त गर्ने कार्य गरिएको थियो । स्थानीय तहबाट तथ्याङ्क सङ्कलनका लागि आवश्यक सहयोग प्रदान गर्न मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयबाट सबै स्थानीय तहहरूलाई पत्राचार गरिएको थियो । स्थानीय तहमा सञ्चालन गरिने अन्तरक्रिया कार्यक्रमको बारेमा आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय र प्रदेश सहयोग कार्यक्रमलाई पूर्व जानकारी गराईएको थियो र कार्यक्रममा उपस्थितिको लागि अनुरोध समेत गरिएको थियो ।

(ग) दस्तावेजहरूको अध्ययन

विषयवस्तुसँग सम्बन्धित सिद्धान्त, अभ्यास र सवालहरूको पहिचान गर्ने उद्देश्यले विभिन्न किसिमका दस्तावेजहरूको अध्ययन गरिएको थियो । मुख्यतः नेपालको संविधान, संघीय, प्रदेश र स्थानीय कानूनहरू, विभिन्न सान्दर्भिक अध्ययन प्रतिवेदनहरूको समेत पुनरावलोकन गरिएको छ । यसैगरी विभिन्न विषय क्षेत्रगत कृषि, पर्यटन, उद्योग, वन, जलविद्युत र पूर्वाधार विकाससँग सम्बन्धित संघीय र प्रदेशस्तरीय नीतिहरूको अध्ययन गरिएको छ । साथै, संघीय र प्रदेश स्तरका विभिन्न ऐन तथा नियमावलीहरूको समेत अध्ययन गरिएको छ । यसका अतिरिक्त प्रदेश तहका आर्थिक ऐनहरू, प्रदेश स्तरका कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐनहरू, संघ तथा प्रदेश नं. १ सरकारबाट जारी भएका आर्थिक सर्वेक्षण, नीति तथा कार्यक्रम, बजेट र आवधिक योजना लगायतका सान्दर्भिक अंश, केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागका पर्यटन, कृषि लगायतका विषयक्षेत्र सम्बन्धी प्रतिवेदनहरू एवम् महालेखापरीक्षकको वार्षिक प्रतिवेदनहरू समेत अध्ययन गरिएको छ । यसैगरी प्रदेश सरकारको राजस्व परिचालनका सन्दर्भमा लैङ्गिक समानता तथा सामाजिक समावेशीकरण (लैससास) सम्बन्धी राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय नीति, कानून र अभ्यासहरूको समेत लेखाजोखा गरिएको छ ।

(घ) सरोकारवाला निकायहरूसँग छलफल तथा अन्तरक्रिया

यस अध्ययनलाई पूर्णता दिनका लागि विभिन्न तहमा छलफल तथा अन्तरक्रियात्मक कार्यक्रमहरू आयोजना गरियो । अध्ययनकै सिलसिलामा प्रदेश स्तरका राजनीतिक दलका प्रमुख तथा प्रतिनिधिहरू, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेशका सम्बन्धित संसदीय समितिहरू, लेखासमिति, आर्थिक समिति, यातायात तथा व्यवस्था तथा सञ्चार मन्त्रालय, प्रदेश योजना आयोग, प्रदेशको कृषि मन्त्रालय, सामाजिक विकास मन्त्रालय, पर्यटन तथा संस्कृति मन्त्रालय, भूमि व्यवस्था, सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालय, वन, वातावरण तथा भूसंरक्षण मन्त्रालय, प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालय, जिल्ला भूमि व्यवस्था तथा मालपोत कार्यालय-विराटनगर, प्रदेशस्तरीय स्थानीय तहका संघ तथा महासंघहरूका प्रतिनिधिहरू, उद्योग बाणिज्य संघ, सामुदायिक वन उपभोक्ता महासंघ लगायतसँग छलफल तथा परामर्श गरिएको थियो । यसैगरी संघीय स्तरमा अर्थ मन्त्रालय, संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय, प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोग, महालेखा नियन्त्रक कार्यालय, भूमि व्यवस्थापन तथा अभिलेख विभाग, नेपाल उद्योग वाणिज्य संघ, जिल्ला समन्वय समिति महासंघ नेपाल, नेपाल नगरपालिका संघ, गाउँपालिका राष्ट्रिय महासंघहरूसँग समेत परामर्श तथा अन्तरक्रिया गरिएको थियो । त्यसैगरी सरोकारवालाहरूसँगको छलफल तथा अन्तरक्रियाका लागि पनि खुल्ला (Open ended) प्रश्नावलीका आधारमा छलफल गरी आवश्यक सुझावहरू सङ्कलन गरिएको थियो । छलफल गरिएका पदाधिकारीहरू सम्बन्धी विवरण **अनुसूची १** मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

१.७ तथ्याङ्क सङ्कलन र विश्लेषण

तथ्याङ्क सङ्कलन

यस अध्ययनको लागि प्राथमिक र द्वितीय स्रोतहरूबाट तथ्याङ्क सङ्कलन गरिएको थियो ।

(क) द्वितीय तथ्याङ्क

अर्थ मन्त्रालय, प्रदेश नं. १ को आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, कोष तथा लेखा नियन्त्रक कार्यालय, प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालय (विराटनगर), प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगको वार्षिक प्रतिवेदनहरू लगायत सबै स्थानीय तहहरूबाट प्राप्त तथ्याङ्कहरू यस अध्ययनमा प्रयोग गरिएका छन् ।

(ख) प्राथमिक तथ्याङ्क

अध्ययनको लागि आवश्यक तथ्याङ्क स्थानीय तहहरूबाट सङ्कलन गरिएको थियो । यसको लागि प्रदेश नं. १ अन्तर्गतका सबै १३७ गाउँपालिका तथा नगरपालिकाहरूबाट तथ्याङ्क सङ्कलन गर्न स्थानीय तह तथा केन्द्रबाट गणकहरू परिचालन गरिएको थियो । तथ्याङ्क सङ्कलनमा परिचालन गरिएका गणकहरूलाई चेकलिष्टका बारेमा अभिमुखीकरण गरिएको थियो । स्थानीय तहबाट तथ्याङ्क सङ्कलनका लागि आवश्यक सहयोग प्रदान गर्न मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयबाट सबै स्थानीय तहहरूलाई पत्राचार गरिएको थियो । गाउँपालिका तथा नगरपालिकामा रहेका प्राकृतिक स्रोतहरू (ढुङ्गा, गिटी, बालुवा, वन पैदावार खासगरी लौठ सल्लो, रुद्राक्ष र लाहा सम्बन्धी विवरण) लाई भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) मार्फत नक्साङ्कन गरी देखाइएको छ । उक्त सर्वेक्षणमार्फत विज्ञापन कर, मनोरञ्जन कर, नदीजन्य पदार्थ, पर्यटन शुल्क आदिको सङ्कलन तथा बाँडफाँट सम्बन्धी विवरण समेत सङ्कलन गरिएको थियो ।

(ग) अन्तरक्रिया र छलफल कार्यक्रमको आयोजना

प्रदेश र स्थानीय तहकाबीचमा गरिने राजस्व बाँडफाँटसँग सम्बन्धित सवालहरूका बारेमा स्थानीय तहका जनप्रतिनिधिहरूसँग छलफल तथा अन्तरक्रिया गर्ने, वित्तीय तथ्याङ्कहरू सङ्कलन गर्ने र स्थानीय तहबाट सूचना सङ्कलन गर्ने उद्देश्यले निम्नानुसारका ६ वटा स्थानीय तहहरूमा अन्तरक्रिया कार्यक्रम आयोजना गरिएको थियो (तालिका २) । स्थानीय तहको छनौटको आधारको रूपमा भौगोलिक हिसाबले हिमाल, पहाड तथा तराई र स्थानीय तहको किसिमको हिसाबले उद्देश्यमूलक नमूना छनौट (Purposive Sampling) विधिद्वारा गरिएको हो । छनौट गरिएका गाउँ तथा नगरपालिकाहरूमा सम्बन्धित स्थानीय सरकारका पदाधिकारी, कर्मचारी र अन्य सरोकारवालाहरूसँग एक दिवसीय अन्तरक्रिया कार्यक्रमको आयोजना गरी आवश्यक सूचना सङ्कलन सहित राजस्व सङ्कलन र बाँडफाँट सम्बन्धी सवालहरूका बारेमा विस्तृत रूपमा छलफल गरिएको थियो ।

तालिका २ : स्थलगत अध्ययनका लागि छनौट गरिएका स्थानीय तहहरू

| क्र.सं. | भौगोलिक अवस्थिति | जिल्ला | स्थानीय तहको नाम | स्थानीय तहको किसिम | सम्भावित प्रमुख राजस्वका स्रोतहरू | कार्यक्रम सम्पन्न मिति |
|---------|------------------|-------------|------------------|--------------------|---|------------------------|
| १ | हिमाल | ताप्लेजुङ्ग | पाथिभरा याडवरक | गाउँपालिका | नदीजन्य पदार्थ र वनपैदावार | २०७९ भाद्र २३ गते |
| २ | पहाड | इलाम | इलाम | नगरपालिका | कृषि, पर्यटन, वनपैदावार | २०७९ भाद्र २१ गते |
| ३ | तराई | मोरङ्ग | विराटनगर | महानगरपालिका | विज्ञापन, सवारी साधन, घरजग्गा रजिष्ट्रेशन | २०७९ कार्तिक २ गते |

| क्र.सं. | भौगोलिक अवस्थिति | जिल्ला | स्थानीय तहको नाम | स्थानीय तहको किसिम | सम्भावित प्रमुख राजस्वका स्रोतहरू | कार्यक्रम सम्पन्न मिति |
|---------|------------------|------------|------------------|--------------------|---|------------------------|
| ४ | तराई | सुनसरी | इटहरी | उप-महानगरपालिका | ढुङ्गा, गिट्टी, घरजग्गा रजिष्ट्रेशन, वन पैदावार | २०७९ कार्तिक २ गते |
| ५ | पहाड | ओखलढुङ्गा | मानेभञ्ज्याङ | गाउँपालिका | ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, वनपैदावार, पर्यटन | २०७९ कार्तिक २४ गते |
| ६ | हिमाल | सोलुखुम्बु | सोलुदुधकुण्ड | नगरपालिका | पर्यटन, वनपैदावार, नदीजन्य पदार्थ | २०७९ कार्तिक २६ गते |

तथ्याङ्क विश्लेषण

विभिन्न माध्यमहरूबाट सङ्कलन गरिएका प्राथमिक तथा द्वितीय तथ्याङ्कलाई आवश्यकता अनुसार तालिकीकरण गरी विश्लेषण गरिएको छ। द्वितीय स्रोतबाट प्राप्त परिमाणमात्मक तथ्याङ्कहरूको विश्लेषण साङ्ख्यिकीय पद्धतिद्वारा गरिएको छ र ग्राफ, पाइचार्ट, टेबल आदिको प्रयोग गरिएको छ। प्राथमिक स्रोतबाट प्राप्त भएका सूचनाहरूलाई संश्लेषण (Synthesis) पद्धतिबाट विश्लेषण गरिएको छ। प्राकृतिक स्रोतसँग सम्बन्धित सूचनाहरूलाई गाउँपालिका तथा नगरपालिकागत तालिकीकरण गरी विश्लेषण गरिएको छ भने राजस्वसँग सम्बन्धित वित्तीय विवरणहरूलाई आवश्यकता अनुसार विश्लेषण गरिएको छ। सान्दर्भिक वित्तीय विवरणहरू अन्य प्रदेशहरूसँग पनि तुलना गरी विश्लेषण गरिएको छ। मुख्यतः प्रदेश नं. १ को वित्तीय स्वायत्तता (Fiscal Autonomy) को वर्तमान अवस्थाको पहिचान गर्न कुल वार्षिक प्राप्तमा आन्तरिक आयको अनुपात र कुल खर्चमा आन्तरिक आयको योगदानको तुलनात्मक विश्लेषण गरिएको छ। अनुमानित र यथार्थ आन्तरिक राजस्वको विश्लेषण गरी प्रदेश नं. १ को कर सङ्कलन क्षमता (Tax Effort) को पहिचान गरिएको छ।

राजस्व प्रक्षेपण विधि तथा प्रक्रिया

राजस्व सुधार कार्ययोजना तयार गरेपछि सोको कार्यान्वयनबाट प्रदेश सरकारको राजस्व सङ्कलनमा पर्ने प्रभावको समेत विश्लेषण गरी भविष्यमा प्रदेश सरकारले सङ्कलन तथा प्राप्त गर्नसक्ने राजस्वको प्रक्षेपण गरिएको छ। प्रदेश नं. १ को राजस्व प्रक्षेपणका लागि निम्न विधिहरूको प्रयोग गरिएको छ:

(क) सीमित तथ्याङ्कको कारणले यस अध्ययनको सन्दर्भमा समय श्रृंखला विधि (Time series analysis) प्रयोग गरी राजस्व प्रक्षेपण गर्न सकिने। तसर्थ, यस अध्ययनमा प्रदेश नं. १ को राजस्व प्रक्षेपण गर्न निम्नानुसार चक्रीय वृद्धि दर (Compound Annual Growth Rate-CAGR) विधि प्रयोग गरिएको छ।

$$\text{कुल वार्षिक वृद्धि दर (CAGR)} = \left(\frac{\text{अन्तिम आ.व.को राजस्व}}{\text{शुरु आ.व.को राजस्व}} \right)^{\frac{1}{\text{कुल आ.व.}}} - 1 \times 100$$

विगत चार वर्षको औसत भारित मूल्य सूचकालाई प्रक्षेपित अवधीको मूल्य सूचकाङ्क मानिएको छ। यसका लागि नेपाल राष्ट्र बैंकको राष्ट्रिय उपभोक्ता मूल्य सूचकाङ्क लिइएको छ।

(ख) शीर्षकगत राजस्व प्रक्षेपण सम्बन्धी आधार र मापदण्ड प्रतिवेदनको खण्ड ८ “राजस्व सुधार कार्ययोजना र प्रक्षेपण” मा उल्लेख गरिएको छ।

१.८ मस्यौदा प्रतिवेदनमा परिमार्जन

अध्ययन टोलीले तयार गरेको मस्यौदा प्रतिवेदनलाई निम्नानुसारको विधि मार्फत अन्तिम रूप प्रदान गरिएको हो।

(क) प्रतिवेदनमाथि सुझाव सङ्कलन

अध्ययन टोलीले तयार गरेको मस्यौदा प्रतिवेदनमाथि सुझाव उपलब्ध गराउन उच्च स्तरीय राजस्व अध्ययन कार्यदल र प्रदेश सहयोग कार्यक्रम समक्ष पेश गरिएको र त्यहाँबाट प्राप्त लिखित रूपमा उपलब्ध गराएका सुझावहरू अनुसार प्रतिवेदनलाई परिष्कृत गरिएको छ । त्यसैगरी उक्त मस्यौदा प्रतिवेदन माथि राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोग, अर्थ मन्त्रालय र संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयका उच्च पदस्थ पदाधिकारी तथा कर्मचारीहरूबाट समेत सुझाव प्राप्त गरिएको थियो । यसैगरी स्वतन्त्र विज्ञका रूपमा राष्ट्रिय सभाका माननीय सदस्य डा. खिमलाल देवकोटा र नेपाल सरकारका पूर्व मुख्यसचिव डा. सोमलाल सुवेदीको सुझावलाई समेत समावेश गरिएको छ ।

(ख) प्रदेशस्तरीय अन्तरक्रिया कार्यक्रम

२०७९ साल माघ २२ गते तदनुसार फेब्रुवरी ५, २०२३ मा प्रदेश नं. १ को आन्तरिक राजस्व सम्भाव्यता अध्ययनको मस्यौदा प्रतिवेदन माथिको छलफल कार्यक्रम विराटनगरमा आयोजना गरिएको थियो । उक्त कार्यक्रमको अध्यक्षता आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालयका सचिव श्री शिवकुमार कार्कीले गर्नु भएको थियो भने प्रमुख अतिथिका रूपमा प्रदेश नं. १ का माननीय मुख्यमन्त्री श्री हिक्मत कुमार कार्कीज्यूको सहभागिता रहेको थियो । विशेष अतिथिका रूपमा निमित्त प्रमुख सचिव श्री किशोर कुमार चौधरीज्यूको उपस्थिति रहेको थियो । उक्त कार्यक्रममा मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, प्रदेश नीति तथा योजना आयोग, प्रदेशसभा लगायत सबै मन्त्रालयका सचिवहरू, महाशाखा प्रमुख, प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालयका प्रमुख, विराटनगर महानगरपालिका प्रमुख प्रशासकीय अधिकृत, कानेपोखरी गाउँपालिकाका उपाध्यक्ष तथा गाउँपालिका राष्ट्रिय महासंघका प्रतिनिधि, प्रदेश सहयोग कार्यक्रम लगायतबाट ३५ जनाको सहभागिता रहेको थियो । उक्त कार्यक्रमका सहभागीहरूको सुझावलाई समेत सम्बोधन गरी मस्यौदा अध्ययन प्रतिवेदनलाई सुधार गरिएको थियो ।

(ग) संघीय स्तरको छलफल कार्यक्रम

२०७९ फागुन १२ गते (तदनुसार फेब्रुवरी २४, २०२३) काठमाडौंमा राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगका माननीय अध्यक्ष श्री बालानन्द पौडेलज्यूको प्रमुख आतिथ्यता, माननीय सदस्य श्री जुद्धबहादुर गुरुङज्यूको विशेष आतिथ्यता र प्रदेश नं. १ मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद् कार्यालयका सचिव श्री कृष्णप्रसाद सापकोटाज्यूको अध्यक्षतामा प्रदेशस्तरीय छलफल कार्यक्रमबाट प्राप्त सुझावलाई समेत समावेश गरी सुधार गरिएको मस्यौदा प्रतिवेदन माथि छलफल कार्यक्रमको आयोजना गरियो ।



उक्त कार्यक्रममा संविधानसभाका माननीय सदस्यहरू, नेपाल सरकारका पूर्व मुख्यसचिव, अर्थ मन्त्रालय, संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय, कृषि तथा पशु विकास मन्त्रालय, भौतिक पूर्वाधार तथा यातायात मन्त्रालय, वन तथा वातावरण मन्त्रालय, भूमि व्यवस्था, सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालय, कानून, न्याय तथा संसदीय मामिला मन्त्रालय, संस्कृति, पर्यटन तथा नागरिक उड्डयन मन्त्रालय, वनस्पति विभाग, जिल्ला समन्वय समिति महासंघ, नेपाल, नेपाल नगरपालिका संघ, गाउँपालिका राष्ट्रिय महासंघ, विभिन्न विज्ञहरू, प्रदेश नं. १ अन्तरगत आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय र प्रदेश योजना आयोग, स्वीस विकास नियोग, प्रदेश सहयोग कार्यक्रम, विभिन्न विकास साझेदारका प्रतिनिधिहरू लगायतको सहभागिता रहेको थियो । सहभागीहरूको उपस्थिति विवरण अनुसूची १६ (ग) मा राखिएको छ । अध्ययन टोलीका तर्फबाट डा. हेमराज लामिछाने र सिए भवनाथ दाहालले अध्ययन प्रतिवेदनको संक्षिप्त प्रस्तुतीकरण गर्नु भए पश्चात

सहभागीहरूबाट सुझाव प्राप्त गरिएको थियो । सहभागीहरूबाट प्राप्त सुझावहरूलाई समेत समावेश गरि प्रतिवेदनलाई अन्तिम रूप प्रदान गरिएको छ ।

१.९ अध्ययनको सीमा

यो अध्ययन नेपालको संविधान लगायत प्रचलित कानूनले प्रदेश र स्थानीय सरकारलाई प्रदान गरेको राजस्व अधिकारको सिमाभित्र रहेर गरिएको छ । प्रदेश सरकारको कार्य अनुभव छोटो भएको हुँदा प्रदेश सरकारको आय वृद्धिदरको दीर्घकालीन प्रवृत्तिको आधार समय श्रृङ्खला (Time Series) मा आधारित Econometrics (अर्थमिति) विधि प्रयोग गरी रिग्रेसन (Regression) मार्फत राजस्व प्रक्षेपण गर्न सकिएको छैन ।

उपलब्ध हुन सक्ने वित्तीय विवरणहरूको आधारमा कर प्रणालीको कार्यकुशलताको लेखाजोखा गर्न करको उप्लावकता (Tax Buoyancy) को अवस्था विश्लेषण गर्ने विधि ($Tax\ Buoyancy\ (TB) = \% \Delta Revenue \div \% \Delta Base\ (GDP)$) को प्रयोग गर्नलाई प्रदेशको चार वर्षको मात्रै वित्तीय विवरण प्राप्त भएको हुँदा यसबाट सहि प्रक्षेपण हुन नसक्ने भएकोले यो विधिको प्रयोग गरिएको छैन ।

करको दरमा भएको परिवर्तनले कर राजस्वमा कस्तो परिवर्तन आएको छ भन्ने कुरा करको लचकता (Tax Elasticity) को विश्लेषणबाट पहिचान गर्न सकिन्छ । तर प्रदेश नं. १ को चार वर्षको मात्रै राजस्व प्राप्त भएकोले यसबाट सहि पहिचान हुन नसक्ने हुँदा कर लचकता विधि ($Tax\ Elasticity\ (TE) = \% \Delta Revenue \div \% \Delta Base/GDP/Rate$) प्रयोग गरिएको छैन ।

नदीजन्य पदार्थ ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, विज्ञापन कर, मनोरञ्जनकर आदिका सम्बन्धमा स्थानीय तहहरूबाट प्राप्त सूचनालाई आधारमानी विश्लेषण गरिएको छ ।

यो अध्ययन संघीयता लागू भएको चार वर्षमा गरिएको अध्ययन हो । तर राजस्व प्रक्षेपणको लागि आधार लिन भने पर्याप्त तथ्याङ्क उपलब्ध भएनन् । यही बीचमा कोरोना महामारी आई आर्थिक क्रियाकलापमा ठूलो असर पार्यो । यस बीचमा केही राजस्व शीर्षकहरूको तथ्याङ्कको वृद्धि अश्वभाविक रूपमा बढी र केहीको अस्वाभाविक रूपमा कमी भएको पाइएकोले यस्तो वृद्धिदरमा भएको उतार चढाव (volatility) बाट मुक्त हुन राजस्वमा भएको वृद्धिको न्यूनतम र अधिकतम सीमा तोकेर (calibrate) प्रक्षेपणको आधार बनाइएको छ । यो सबै काल वा परिस्थितिमा मान्य नहुन पनि सक्छ ।

नेपालका सात प्रदेशहरूको आआफ्नै भौगोलिक विशेषता र प्राकृतिक स्रोतको अवस्था पनि बेग्लामेग्लै रहेको छ । यसर्थ प्रदेश नं. १ को राजस्व प्रक्षेपणको नतिजा अन्य प्रदेशहरूको लागि सामान्यीकरण (generalize) गर्दा वास्तविकता भन्दा टाढा भइने सम्भावना रहन्छ ।

यस अध्ययनमा प्राकृतिक स्रोतहरूको नक्साङ्कन (mapping) वृहत रूपमा अध्ययन गर्न सकिएको छैन । प्रदेशको राजस्वमा खानी (धातु, कोइला, पथ्रर, ढुङ्गा, माटो, बालुवा आदि), जङ्गल, दहत्तर-बहत्तर जलस्रोत, हिमनदी जस्ता प्राकृतिक स्रोतहरूको योगदानको अंश वस्तुगत रूपमा यकिन गर्न सकिएको छैन ।

१.१० प्रतिवेदन ढाँचा

राजस्व सुधार कार्ययोजना प्रतिवेदन एघार खण्डमा विभाजन गरिएको छ । पहिलो खण्ड “परिचय” अन्तर्गत पृष्ठभूमि, अध्ययनको महत्व, उद्देश्य, उपलब्धी, विधि र अध्ययन प्रतिवेदनको संगठन/ढाँचा प्रस्तुत गरिएको छ । दोश्रो खण्ड “वित्तीय संघीयताको सैद्धान्तिक पक्ष र राष्ट्रिय/अन्तर्राष्ट्रिय अभ्यास” अन्तर्गत वित्तीय संघीयताको सिद्धान्त र केही संघीय

मुलुकहरुमा वित्तीय अधिकारको प्रयोग सम्बन्धी समीक्षा तथा पुनरावलोकन गरिएको छ । तेश्रो खण्ड “प्रदेश तहमा राजस्व अधिकार र अभ्यास” अन्तर्गत राजस्व सम्बन्धी प्रदेश सरकारको एकल र साझा अधिकार सम्बन्धी सवैधानिक अधिकार र प्रदेश सरकारको आर्थिक ऐनको प्रावधानका विषयहरु, अन्य सान्दर्भिक संघीय तथा प्रदेश कानूनमा भएको व्यवस्था र यसको कार्यान्वयन अवस्थालाई समावेश गरिएको छ । चौथो खण्ड “राजस्व परिचालनको अवस्था र सम्भाव्यताका क्षेत्रहरु” अन्तर्गत प्रदेश सरकारको शीर्षकगत कर तथा गैरकर, राजस्व बाँडफाँट, रोयल्टी तथा अनुदानको प्रवृत्ति र अन्य प्रदेशहरुसँगको तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत गरिएको छ । पाँचौ खण्ड “राजस्व परिचालन र बाँडफाँट सम्बन्धी स्थानीय तहको अनुभव र अभ्यास” अन्तर्गत स्थलगत अध्ययनका लागि छनौट गरिएका ६ वटा स्थानीय तहबाट प्राप्त प्रदेश र स्थानीय तहकाबीचमा राजस्व बाँडफाँट सम्बन्धी बर्तमान अभ्यास, समस्याहरु र आगामी दिनमा गर्नु पर्ने सुधारका क्षेत्रहरुका बारेमा उल्लेख गरिएको छ । छैटौ खण्ड “प्राकृतिक स्रोत र राजस्व परिचालन” अन्तर्गत प्रदेश नं. १ अन्तर्गतका १३७ वटै स्थानीय तहहरुमा उपलब्ध प्राकृतिक स्रोत सम्बन्धी विवरणहरु र उक्त विवरणलाई भौगर्भिक सूचना प्रणालीमा प्रस्तुत गरिएको छ । सातौँ खण्ड “राजस्व अधिकार सम्बन्धी कानूनी ढाँचा” अन्तर्गत राजस्व सम्बन्धी मौजुदा कानूनी व्यवस्था र संशोधन प्रस्ताव प्रस्तुत गरिएको छ । आठौँ खण्ड “निश्कर्ष, सुझाव तथा सुधार कार्ययोजना” अन्तर्गत अध्ययनको निश्कर्ष र सुझावहरु तथा प्रदेश नं. १ को राजस्व सुधारको लागि गर्नुपर्ने कार्यहरु, त्यसको जिम्मवारी र समय सिमा सिफारिस गरिएको छ । नवौँ खण्ड “अनुगमन तथा मूल्याङ्कन” अन्तर्गत प्रदेश नं. १ को राजस्व सुधारको लागि आवश्यक अनुगमन तथा मूल्याङ्कन ढाँचा प्रस्तुत गरिएको छ र दशौँ खण्ड “राजस्व प्रक्षेपण” मा आगामी पाँच आर्थिक वर्षमा प्रदेश नं. १ मा प्राप्त हुन सक्ने राजस्वको प्रक्षेपण गरिएको छ । अन्य सान्दर्भिक विवरणलाई विभिन्न अनुसूचीहरुमा समावेश गरिएको छ ।

२ खण्ड दुई: वित्तीय संघीयताको सैद्धान्तिक पक्ष र राष्ट्रिय/अन्तर्राष्ट्रिय अभ्यास

२.१ पृष्ठभूमि

संवैधानिक व्यवस्था अनुसार विभिन्न तहका सरकारहरूका बीचमा अधिकारको बाँडफाँट गरी उनीहरूको स्वायत्तताको प्रत्याभूत गर्ने प्रक्रियालाई संघीयता भनिन्छ। संघीयताले आंशिक रूपमा स्वायत्त र साझा सरकारको अवधारणालाई स्वीकार गरेको हुन्छ (Elazar 1987)। वित्तीय संघीयता (Fiscal Federalism) मा विभिन्न तहका सरकारहरूको आर्थिक अधिकार, यसको प्रयोग र यसले पार्ने प्रभाव तथा कार्यकुशलताको बारेमा विश्लेषण गरिन्छ (<http://web.worldbank.org>)। अधिकांश रूपमा संघीय मुलुकमा सुरक्षा, परराष्ट्र नीति, नागरिकता र आप्रवासन, मुद्रा र वैदेशिक व्यापार जस्ता जिम्मेवारीहरू केन्द्रीय सरकारमा निहित हुन्छ र बाँकी अधिकारहरू अन्य तहका सरकारहरूका बीचमा बाँडफाँट गरिन्छ। तर, पछिल्लो समयमा संघीय व्यवस्था अँगालेका मुलुकहरूको संविधानमा केन्द्रीय सरकारलाई बढी अधिकार रहेको पाइन्छ (Irving 2008: 68)। तथापि, मुलुकै पिच्छे फरक फरक अभ्यासहरू भएको पाइन्छ। संघीय मुलुकहरूमा सबै तहका सरकारहरूलाई कानूनतः खर्च गर्ने र राजस्व सङ्कलन गर्ने अधिकार प्राप्त हुन्छ। खर्च जिम्मेवारी पूरा गर्न सक्ने गरी राजस्व अधिकार प्राप्त हुन सके मात्र उपराष्ट्रिय (Sub-National) सरकारहरूले स्वतन्त्र रूपमा आफूलाई सुम्पिएको जिम्मेवारी पूरा गर्न सक्दछन् अन्यथा उनीहरू माथिल्लो तहको सरकारको अनुदानमा निर्भर गर्नु पर्ने हुन्छ (Shah, 2007)। अनुदानले प्रायः स्वायत्ततालाई भन्दा नियन्त्रणलाई महत्व दिने हुन्छ।

२.२ सैद्धान्तिक पक्ष

संघीयता अधिकार विकेन्द्रीकरणको एउटा माध्यम हो। सिद्धान्ततः तल्लो तहका सरकारहरू जनताको नजिक रहने हुँदा जनतासँग प्रत्यक्ष सरोकार हुने सार्वजनिक वस्तु तथा सेवाको आवश्यकता र प्राथमिकताहरू केन्द्रीय/संघीय सरकारको तुलनामा उनीहरूलाई बढी जानकारी हुन्छ। तसर्थ वित्तीय विकेन्द्रीकरणले आर्थिक वृद्धि हासिल गर्न, सरकारको आकार निर्धारण गर्न, सार्वजनिक खर्चको ढाँचामा परिवर्तन गर्न, वित्तीय असन्तुलन कम गर्न, सुशासनको प्रत्याभूत गर्न र सार्वजनिक सेवा प्रवाहलाई प्रभावकारी बनाउन सहयोग गर्दछ (Tiebout, 1961)। यसैगरी, वित्तीय विकेन्द्रीकरण अन्तर्गत अन्तर-सरकारी वित्तीय सम्बन्धको पहिलो र अति आवश्यक खुड्किलो भनेको सबै तहका सरकारहरूका बीचमा स्पष्ट कार्य जिम्मेवारीको कितान गर्नु हो (Boadway & Shah, 2009)। कुनैपनि मुलुकमा संघीय शासन व्यवस्था अन्तर्गत निर्माण भएका तहगत सरकारहरूका बीचमा अधिकार र उत्तरदायित्व बाँडफाँट गरिने सार्वजनिक वित्त व्यवस्थापन (Fiscal Arrangement) लाई वित्तीय संघीयता भनिन्छ (नेपाल सरकार, संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय, २०७८)। कुनैपनि तहको सरकारलाई राजस्व जिम्मेवारी सुम्पिनु पूर्व निम्न चारवटा प्रचलित सिद्धान्तलाई ध्यान दिनु पर्दछ।

- (१) **आर्थिक दक्षताको मापदण्ड:** गतिशिल तथा चलायमान करहरू र व्यापार तथा व्यावसायसँग सम्बन्धित करहरू संघीय सरकारको जिम्मेवारीमा हुँदा सङ्कलन कार्य सहज र प्रभावकारी हुन्छ।
- (२) **राष्ट्रिय समताको मापदण्ड:** यस मापदण्ड अनुसार प्रगतिशील पुनर्वितरित करहरू संघीय सरकारको जिम्मेवारीमा हुनुपर्छ। यस्ता करहरूले सामाजिक न्यायलाई सम्बोधन गर्दछन्। उदाहरणका लागि संस्थागत वा व्यक्तिगत आयकरलाई लिन सकिन्छ। किनकि धेरै आय हुनेले धेरै कर र कम आय हुनेले कम कर तिर्नु पर्दछ। साथै, राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार (निकासी तथा पैठारी) सँग सम्बन्धित पुनर्वितरणयोग्य करहरू जस्तै भन्सार, अन्तःशुल्क, मूल्य अभिवृद्धि कर

आदि संघीय सरकारको अधिनमा हुनु पर्दछ । यस्ता स्रोतबाट प्राप्त राजस्व संघीय सरकारले सबै तहको विकासका लागि पुनर्वितरण गरी सामाजिक न्यायको सुनिश्चित गर्नुपर्दछ ।

- (३) **प्रशासनिक सम्भाव्यता वा दक्षताको मापदण्ड:** यस मापदण्डले तल्लो तहको सरकारलाई जिम्मेवार बनाउने र प्रशासनिक खर्च कम गर्नलाई सहयोग गर्छ । यसका लागि स्थानीय सरकारहरूलाई जिम्मेवार बनाउनु पर्दछ । यसले करको चुहावट तथा छलि रोकन र अनुगमन तथा नियमनलाई प्रभावकारी बनाउन सहयोग पुग्दछ । उहाहरणका लागि सम्पत्ति कर र भूमिकरहरू स्थानीय सरकारको कार्यजिम्मेवारी भित्र पर्नु पर्दछ ।
- (४) **वित्तीय आवश्यकता वा राजस्व पर्याप्तताको मापदण्ड:** यस मापदण्डले खर्चको आवश्यकता पूरा गर्ने गरी राजस्व अधिकार हुनु पर्छ भन्ने मान्यता राख्दछ । सेवा शुल्कहरू सबै तहको सरकारका लागि उपयुक्त हुन्छन् (Shah, 2007) । तहगत सरकारहरूबीच वित्तीय अधिकार बाँडफाँट सम्बन्धी नमूना तालिका ३ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

तालिका ३ : तहगत सरकारहरूबीच वित्तीय अधिकार बाँडफाँट

| क्र.स. | करको किसिम | निर्धारण गर्ने जिम्मेवारी | | सङ्कलन र प्रशासन | कैफियत |
|--------|--|---------------------------|------------------------------------|---------------------------------|--|
| | | करको आधार | करको दर | | |
| १ | भन्सार | संघ/केन्द्र | संघ/केन्द्र | संघ/केन्द्र, निजी | अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार |
| २ | संस्थागत आयकर | संघ/केन्द्र | संघ/केन्द्र | संघ/केन्द्र | चलायमान, स्थिरिकरण औजार |
| ३ | स्रोत भाडा कर (मुनाफा, आय) | संघ/केन्द्र | संघ/केन्द्र | संघ/केन्द्र | उच्चरूपमा असमान किसिमले वितरित करको आधार |
| ४ | रोयल्टी, शुल्क दस्तुर | प्रदेश/राज्य, स्थानीय | प्रदेश/राज्य, स्थानीय | प्रदेश/राज्य, स्थानीय, निजी | मुनाफामा कर/राज्य र स्थानीय तहले उपलब्ध गराउने सेवा शुल्क |
| ५ | संरक्षण दस्तुर | प्रदेश/राज्य, स्थानीय | प्रदेश/राज्य, स्थानीय | प्रदेश/राज्य, स्थानीय, निजी | स्थानीय पर्यावरण संरक्षण गर्ने प्रयोजनका लागि |
| ६ | व्यक्तिगत आयकर | संघ/केन्द्र | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, स्थानीय | संघ/केन्द्र | पुनर्वितरण, चलायमान र स्थिरिकरण औजार |
| ७ | सम्पत्ति कर (पूँजी, सम्पत्ति हस्तान्तरण, पैतृक सम्पत्ति र उपहार) | संघ/केन्द्र | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य | संघ/केन्द्र | पुनर्वितरण |
| ८ | तलब तथा ज्याला | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य | मुनाफा दस्तुर जस्तै सामाजिक सुरक्षा समावेश |
| ९ | मूल्य अभिवृद्धि कर | संघ/केन्द्र | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य | संघ अन्तर्गत सीमा क्षेत्र कर समायोजन गर्न संभव हुने, सम्भावित स्थिरिकरण औजार |
| १० | एकल तह बिक्रीकर (उत्पादक, थोक र खुद्रा बिक्री) | | | | |
| १०.१ | विकल्प (क) | प्रदेश/राज्य | प्रदेश/राज्य, स्थानीय | प्रदेश/राज्य, स्थानीय | उच्चतहको परिपालना लागत |
| १०.२ | विकल्प (ख) | संघ/केन्द्र | प्रदेश/राज्य | संघ/केन्द्र | तालमेल मिलाइएको, न्यून परिपालन लागत |
| ११ | हानीकारक पदार्थ कर | | | | |
| ११.१ | मदिरा र सुतीमा भन्सार | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, निजी | स्वास्थ्य सुरक्षा सम्बन्धी साझा अधिकार |

| क्र.स. | करको किसिम | निर्धारण गर्ने जिम्मेवारी | | सङ्कलन र प्रशासन | कैफियत |
|--------|---|------------------------------------|------------------------------------|--|--|
| | | करको आधार | करको दर | | |
| ११.२ | सट्टाबाजी, जुवा, चिन्टा, प्रतियोगिता, मार्ग | प्रदेश/राज्य, स्थानीय | प्रदेश/राज्य, स्थानीय | प्रदेश/राज्य, स्थानीय, निजी | प्रदेश/राज्य, स्थानीयको जिम्मेवारी |
| १२ | कार्वन उत्सर्जन कर | संघ/केन्द्र | संघ/केन्द्र | संघ/केन्द्र | प्रदुषण विरुद्ध लड्न |
| १३ | उर्जासम्बन्धी कर | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, स्थानीय | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, स्थानीय | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, स्थानीय, निजी | प्रदुषणको प्रभाव तीनै तहमा हुने |
| १४ | सवारी साधन इन्धन | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, स्थानीय | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, स्थानीय | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, स्थानीय, निजी | संघ, प्रदेश र स्थानीय सडकको प्रयोग हुने |
| १५ | उत्सर्जन शुल्क | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, स्थानीय | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, स्थानीय | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, स्थानीय, निजी | अन्तर राज्य, स्थानीय तह वा स्थानीय कर मिलाउन |
| १६ | सडक भिड (जाम) व्यवस्थापन टोल (शुल्क) | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, स्थानीय | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, स्थानीय | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, स्थानीय, निजी | संघ/केन्द्र, प्रदेश राज्य, स्थानीयको सडक कर |
| १७ | पार्किङ्ग शुल्क | स्थानीय | स्थानीय | स्थानीय, निजी | स्थानीय भिडभाड नियन्त्रण गर्न |
| १८ | सवारी साधन | | | | |
| १८.१ | दर्ता, नामसारी, वार्षिक नवीकरण | प्रदेश/राज्य | प्रदेश/राज्य | प्रदेश/राज्य | राज्यको जिम्मेवारी |
| १८.२ | चालक अनुमति पत्र शुल्क | प्रदेश/राज्य | प्रदेश/राज्य | प्रदेश/राज्य | राज्यको जिम्मेवारी |
| १९ | व्यवसाय कर | प्रदेश/राज्य | प्रदेश/राज्य | प्रदेश/राज्य | लाभमा लाग्ने कर |
| २० | अन्तः शुल्क (Excises) | प्रदेश/राज्य, स्थानीय | प्रदेश/राज्य, स्थानीय | प्रदेश/राज्य, स्थानीय | आवासमा आधारित कर |
| २१ | सम्पत्ति कर | प्रदेश/राज्य | स्थानीय | स्थानीय | अचल सम्पत्तिमा लाग्ने कर, लाभ कर |
| २२ | भूमिकर (मालपोत) | प्रदेश/राज्य | स्थानीय | स्थानीय | अचल सम्पत्तिमा लाग्ने कर, लाभ कर |
| २३ | Frontage, betterment | प्रदेश/राज्य, स्थानीय | स्थानीय | स्थानीय | खर्च उठाउने |
| २४ | पोल (Poll) | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, स्थानीय | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, स्थानीय | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, स्थानीय | सेवा वापतको भुक्तानी |
| २५ | उपभोग दस्तुर | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, स्थानीय | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, स्थानीय | संघ/केन्द्र, प्रदेश/राज्य, स्थानीय, निजी | सेवा प्राप्त गरे वापतको भुक्तानी |

स्रोत : Shah, Anwar (2007), Table 3, pp. 22-24

तहगत सरकारहरूका बीचमा हुने वित्तीय खाडल तथा असमानता न्यूनीकरण गर्न तथा राज्यको साधन र स्रोतको न्यायोचित वितरणका लागि अनुदान प्रणाली स्पष्ट र पारदर्शी हुनु पर्दछ ।

२.३ अन्तर्राष्ट्रिय अभ्यासहरु

तहगत सरकारहरुका बीचमा वित्तीय अधिकारको बाँडफाँट सम्बन्धी केही संघीय मुलुकहरुले गर्दै गरेका अभ्यासहरु यहाँ प्रस्तुत गरिएको छः

(क) भारत

भारत जनसंख्याको हिसाबले विश्वको दोश्रो ठूलो देश हो। सन् १९५० मा भारत संघीय गणतन्त्रात्मक मुलुक भएको हो। अहिले भारतमा २८ वटा राज्य सरकार र दिल्ली, जम्मु काश्मिर सहित ८ वटा संघीय सरकार शासित (युनियन टेरिटोरिज) क्षेत्रहरु रहेका छन्। भारतमा सबै तहको सरकारको वित्तीय अधिकार संविधानले कितान गरेको छ। बृहत आधार भएका र प्रगतिशील करहरु तथा कर सम्बन्धी अवशिष्ट अधिकारहरु संघीय सरकारको जिम्मेवारीमा रहेको छ। केही वित्तीय अधिकारहरु राज्य सरकारहरुलाई प्रदान गरिएको भए तापनि राजस्वको उत्पादकत्वको हिसाबले बिक्रीकर मात्रै महत्वपूर्ण करको रूपमा रहेको छ। यसका साथै प्रदेश अन्तः शुल्क, मदिरा उत्पादन, हुलाक टिकटको टाँचा दस्तुर र रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर र यातायात कर राज्य सरकारहरुले सङ्कलन गर्दछन्। भारतको संविधानको अनुसूची ७ को सूची २ अनुसार राज्य सरकारको राजस्व अधिकार देहायबमोजिम रहेको छ।

मञ्जुषा १: भारतको संविधान अनुसार राज्य सरकारको राजस्व अधिकार

१. भूमिकर (राजस्व सङ्कलन र आकलन, जग्गाको रेकर्ड राख्ने, नापी आदि) (बुँदा ४५), २. कृषि आयमा कर (बुँदा ४६), ३. जग्गा नामसारी दस्तुर (बुँदा ४७), ४. कृषि भूमिमा घर कर (बुँदा ४८), ५. घरजग्गा कर (बुँदा ४९), ६. खनिज पदार्थमा कर (बुँदा ५०), ७. निम्न वस्तुहरुको निर्माण तथा उत्पादनमा शुल्क (बुँदा ५१), (क) पेय पदार्थ (रक्सी), (ख) अफिम, भारतीय भांग तथा अन्य मादक पदार्थ ८. विद्युतको उपभोग तथा बिक्री कर (बुँदा ५३), ९. कच्चा पेट्रोलियम पदार्थ, डिजेल, पेट्रोल, प्राकृतिक ग्याँस, उड्डयन टर्वाइन इन्धनको बिक्री कर (तर, अन्तर-राज्य व्यापार तथा बाणिज्य र अन्तरराष्ट्रिय बिक्रीमा कर लगाउन पाईने छैन (बुँदा ५४), १०. सडकबाट यात्रा गर्ने यात्रुहरु र वस्तुमा कर (बुँदा ५६), ११. सवारी साधन कर (बुँदा ५७), १२. जीवजन्तु तथा डुङ्गामा कर (बुँदा ५८), १३. टोल कर (बुँदा ५९), १४. Taxes on professions, trades, callings and employments (बुँदा ६०), १५. Capitation taxes (बुँदा ६१), १६. मनोरञ्जन कर (स्थानीय तहले सङ्कलन गर्ने) (बुँदा ६२), १७. हुलाक टिकटमा टाँचा लगाउने कर (बुँदा ६३), १८. विभिन्न शुल्कहरु (बुँदा ६६)।

(ख) अष्ट्रेलिया

यहाँ अधिकांश कर राजस्व सम्बन्धी अधिकार संघीय सरकारमा रहेको छ भने प्रदेश/राज्य, क्षेत्रीय सरकार र स्थानीय तहहरुलाई न्यून वित्तीय अधिकार प्राप्त रहेको छ। कुल सार्वजनिक राजस्वको ६४ प्रतिशत संघीय सरकारले सङ्कलन गर्दछ। यसका अतिरिक्त वस्तु तथा सेवा कर (कुल राजस्वको १३ प्रतिशत) पनि संघीय सरकारले सङ्कलन गर्दछ। प्रदेश/राज्य र क्षेत्रीय सरकारहरुले कुल राजस्वको करिब १७ प्रतिशत राजस्व सङ्कलन गर्दछन् भने उनीहरुको खर्च जिम्मेवारी पूरा गर्न उनीहरुले कुल खर्चको ३३ प्रतिशत खर्च गर्नुपर्ने हुन्छ। यसैगरी स्थानीय तहहरुले कुल राजस्वमा करिब ३ प्रतिशतमात्र सङ्कलन गर्दछन् र कुल खर्चको करिब ६ प्रतिशत खर्च स्थानीय तहहरुबाट हुन्छ। तसर्थ यस मुलुकमा राजस्व र खर्चको बीचमा ठाडो असन्तुलन बढी देखिन्छ। यो खाडल पूरा गर्न संघीय सरकारले विभिन्न किसिमका अनुदानहरु हस्तान्तरण गर्दछ। संघ र प्रदेश/राज्य सरकारको राजस्व अधिकार सम्बन्धी विवरण तालिका ४ मा प्रस्तुत गरिएको छ।

तालिका ४ : अष्ट्रेलियाको तहगत सरकारको राजस्व अधिकार

| क्र.सं. | करका शीर्षकहरू | कर सङ्कलन र व्यवस्थापन | राजस्व बाँडफाँट (प्रतिशतमा) | |
|---------|---------------------------|------------------------|-----------------------------|--------------|
| | | | संघ | प्रदेश/राज्य |
| १ | संस्थागत र व्यक्तिगत आयकर | संघ | १०० | - |
| २ | उद्यम (कम्पनी) कर | संघ | १०० | - |
| ३ | बिक्री कर | संघ | १०० | - |
| ४ | वस्तु तथा सेवा कर | संघ | १०० | - |
| ५ | कमनवेल्थ शुल्क | संघ | १०० | - |
| ६ | कृषि उत्पादन शुल्क | संघ र प्रदेश/राज्य | ९९ | १ |
| ७ | वैदेशिक व्यापार कर | संघ | १०० | - |
| ८ | तलब तथा ज्याला (पेरोल) | संघ र प्रदेश/राज्य | २५ | ७५ |
| ९ | भूमिकर | प्रदेश/राज्य | - | १०० |
| १० | वित्तीय र पूँजीकर | प्रदेश/राज्य | - | १०० |
| ११ | अन्य सम्पत्ति कर | प्रदेश/राज्य | ०.६ | ९९.४ |
| १२ | जुवा कर | प्रदेश/राज्य | - | १०० |
| १३ | सार्वजनिक संस्थान कर | प्रदेश/राज्य | - | १०० |
| १४ | बीमा शुल्क कर | प्रदेश/राज्य | - | १०० |
| १५ | सवारी साधन कर | प्रदेश/राज्य | - | १०० |
| १६ | लाईसेन्स, अनुमति शुल्क | प्रदेश/राज्य | - | १०० |
| १७ | खानी | प्रदेश/राज्य | - | १०० |

पुनश्च :

१. स्थानीय तहको राजस्वको मुख्य स्रोत भनेको सेवा शुल्क र दस्तुर रहेको छ । स्थानीय सरकारहरू प्रदेश/राज्य अन्तर्गत पर्दछन् ।
२. समानीकरण अनुदानको व्यवस्थापनमा कमनवेल्थ अनुदान आयोगको महत्वपूर्ण भूमिका रहन्छ ।

स्रोत: Shah, Anwar (2007), Table 4, pp. 54

(ग) क्यानडा

क्यानडामा संघीय सरकारले चाहेको कर लगाउन र सङ्कलन गर्न सक्दछ । अवशिष्ट अधिकार प्रदेश/राज्य सरकारमा निहित रहेको छ । प्रदेश/राज्य सरकारहरूले खर्च जिम्मेवारी पूरा गर्न अप्रत्यक्ष कर मार्फत राजस्व सङ्कलन गर्दछन् । प्रदेश/राज्य सरकारहरूले आफ्नो क्षेत्राधिकार भित्रका प्राकृतिक स्रोतहरूको व्यवस्थापन गर्नुका साथै आवश्यकता अनुसार कर लगाउने गर्दछन् । उनीहरूले आफ्नो बजेटमा पूर्ण नियन्त्रण राख्दछन् । ऋण लिने र दिने कुरामा पनि उनीहरू पूर्णरूपमा स्वतन्त्र छन् । स्थानीय सरकारहरू प्रदेश/राज्य सरकारको अंगका रूपमा रहेका छन् । स्थानीय नीतिहरू, खानेपानी, ढल, फोहरमैला, स्थानीय सडक र मनोरञ्जन जस्ता स्थानीय आवश्यकता परिपूर्ति गर्ने जिम्मेवारी स्थानीय सरकारलाई प्रदेश सरकारले सुम्पिएको हुन्छ । यहाँ क्यूबेक र अल्बर्टा राज्यले संघीय सरकारले राज्य सरकारलाई बढी वित्तीय अधिकार दिनु पर्छ भन्ने पक्षमा र एट्लान्टिक प्रदेशले संघीय सरकारले बढी वित्तीय हस्तान्तरण गर्नु पर्छ भन्ने पक्षमा रहेको पाइन्छ । प्रदेश/राज्यहरूका बीचमा ठूलो वित्तीय असमानता भएकाले सुत्रका आधारमा वित्तीय समानीकरण अनुदान प्रणाली अभ्यासमा ल्याएको छ । करको आधार तथा दर निर्धारण, कर सङ्कलन र व्यवस्थापन तथा राजस्व बाँडफाँटको हिस्सा सम्बन्धी विवरण तालिका ५ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

तालिका ५ : क्यानडामा तहगत सरकारको राजस्व अधिकार

| क्र.स. | करका शीर्षकहरू | निर्धारण | | कर सङ्कलन र व्यवस्थापन | राजस्व बाँडफाँट (प्रतिशतमा) | | |
|--------|-------------------------------|--------------|--------------|------------------------|-----------------------------|--------------|---------|
| | | आधार | दर | | संघ | प्रदेश/राज्य | स्थानीय |
| क | संघीय | | | | | | |
| १ | आयकर | संघ | संघ | संघ | ६४.७ | ३५.३ | - |
| २ | उपभोग कर (Consumption tax) | संघ | संघ | संघ | ४५.३ | ५४.७ | - |
| ३ | पारिश्रमिक कर (Payroll) | संघ | संघ | संघ | ६८.६ | ३१.४ | - |
| ४ | सेवा शुल्क | संघ | संघ | संघ | २४.४ | २३.३ | ५२.३ |
| ख | प्रदेश/राज्य | | | | | | |
| १ | आयकर | संघ | प्रदेश/राज्य | संघ | ६४.७ | ३५.३ | - |
| २ | उपभोग कर | प्रदेश/राज्य | प्रदेश/राज्य | संघ, प्रदेश/राज्य | ४५.३ | ५४.७ | - |
| ३ | पारिश्रमिक कर (Payroll) | संघ | प्रदेश/राज्य | संघ | ६८.६ | ३१.४ | - |
| ४ | स्रोतमा लामने कर | प्रदेश/राज्य | प्रदेश/राज्य | प्रदेश/राज्य | - | १०० | - |
| ५ | स्वास्थ्य बीमा | प्रदेश/राज्य | प्रदेश/राज्य | प्रदेश/राज्य | - | १०० | - |
| ६ | सम्पत्ति कर | प्रदेश/राज्य | प्रदेश/राज्य | प्रदेश/राज्य | - | २.२ | ९७.८ |
| ७ | सेवा शुल्क | प्रदेश/राज्य | प्रदेश/राज्य | प्रदेश/राज्य | २४.४ | २३.४ | ५२.३ |
| ग | स्थानीय तह | | | | | | |
| १ | सम्पत्ति कर | प्रदेश/राज्य | स्थानीय | प्रदेश/राज्य | ० | २.२ | ९७.८ |
| २ | सेवा शुल्क | स्थानीय | स्थानीय | स्थानीय | २४.४ | २३.४ | ५२.३ |

स्रोत : Shah, Anwar (2007), Table 4, pp. 104

(घ) जर्मनी

जर्मनीमा प्रदेश/राज्य सरकार (ल्याण्डर) लाई प्रशस्त मात्रामा राजस्व सम्बन्धी स्वायत्तता छैन। उनीहरू एकतैले करको आधार र दर तय गर्न सक्नेनन्। तसर्थ यिनीहरूले अत्याधिक मात्रामा ऋण लिने गर्दछन्। कुल राजस्वको ८५.४ प्रतिशत कर राजस्वबाट सङ्कलन हुन्छ। कुल राजस्वको ६४.२ प्रतिशत साझा कर राजस्वबाट सङ्कलन हुन्छ। ल्याण्डरहरूले धेरै कर सङ्कलन गर्दैनन्। उनीहरू संघीय सरकारको अनुदान र ऋणमा निर्भर गर्दछन्। ल्याण्डरको तुलनामा स्थानीय सरकारहरू वित्तीय रूपमा सशक्त र स्वायत्त छन्। जर्मनीमा राजस्व भन्दा खर्च गर्न तल्ला तहका सरकारहरू बढी स्वायत्त छन्। जर्मनीमा तहगत सरकारको राजस्व अधिकार सम्बन्धी विवरण तालिका ६ मा उल्लेख गरिएको छ।

तालिका ६ : जर्मनीमा तहगत सरकारको राजस्व अधिकार

| क्र.सं. | करका शीर्षकहरू | निर्धारण | | कर सङ्कलन र व्यवस्थापन | राजस्व बाँडफाँट (प्रतिशतमा) | | |
|---------|--|----------|-----|------------------------|-----------------------------|--------------|---------|
| | | आधार | दर | | संघ | प्रदेश/राज्य | स्थानीय |
| क. | संघीय | | | | | | |
| १ | खनिज आयल कर | संघ | संघ | संघ | १०० | - | - |
| २ | सुती कर | संघ | संघ | संघ | १०० | - | - |
| ३ | स्पिरिट्स कर (Spirits tax) | संघ | संघ | संघ | १०० | - | - |
| ४ | चम्केको रक्सी कर (Sparkling wine tax) | संघ | संघ | संघ | १०० | - | - |
| ५ | मध्यवर्ती वस्तु कर | संघ | संघ | संघ | १०० | - | - |

प्रदेश नं. १ को आन्तरिक राजस्व सम्भाव्यता अध्ययन प्रतिवेदन, २०७९

| क्र.सं. | करका शीर्षकहरू | निर्धारण | | कर सङ्कलन र व्यवस्थापन | राजस्व बाँडफाँट (प्रतिशतमा) | | |
|-----------|---|-------------------------|-------------------------|---------------------------|-----------------------------|--------------|---------|
| | | आधार | दर | | संघ | प्रदेश/राज्य | स्थानीय |
| | (Intermediate good tax) | | | | | | |
| ६ | कफी कर | संघ | संघ | संघ | १०० | - | - |
| ७ | बीमा कर | संघ | संघ | ल्याण्डर | १०० | - | - |
| ८ | विद्युत शुल्क (कर) | संघ | संघ | ल्याण्डर | १०० | - | - |
| ९ | एकात्मकता कर (Solidarity tax) | संघ | संघ | ल्याण्डर | १०० | - | - |
| ख. | प्रदेश/राज्य | | | | | | |
| १ | सम्पत्ति कर | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | ल्याण्डर | - | १०० | - |
| २ | पैतृक सम्पत्ति कर (Inheritance tax) | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | ल्याण्डर | - | १०० | - |
| ३ | रियलस्टेट खरिद कर | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | ल्याण्डर | - | १०० | - |
| ४ | सवारी साधन कर | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | ल्याण्डर | - | १०० | - |
| ५ | सट्टेबाजी र चिड्ढा कर | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | ल्याण्डर | - | १०० | - |
| ६ | अग्नि नियन्त्रण कर | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | ल्याण्डर | - | १०० | - |
| ७ | बियर कर | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | ल्याण्डर | - | १०० | - |
| ग. | स्थानीय तह | | | | | | |
| १ | व्यवसाय कर | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | ल्याण्डर | ४.४ | १५.४ | ८०.२ |
| २ | रियलस्टेट कर शुल्क (Real estate taxes) | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | स्थानीय | स्थानीय/ ल्याण्डर | - | - | १०० |
| घ. | साझा कर (बाँडफाँट) | | | | | | |
| १ | व्यक्तिगत आयकर | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | ल्याण्डर | ४२.५ | ४२.५ | १५ |
| २ | ब्याज छुट | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | ल्याण्डर | ४४ | ४४ | १५ |
| ३ | संस्थागत आयकर | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | ल्याण्डर | ५० | ५० | - |
| ४ | मूल्य अभिवृद्धि कर | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | संघ/ल्याण्डर संयुक्त | ल्याण्डर | ४९.५ | ४८.४ | २.१० |

स्रोत : Shah, Anwar (2007), Table 4, pp. 141-42

(ड) दक्षिण अफ्रिका

दक्षिण अफ्रिकामा केन्द्रिय सरकारसँग वित्तीय अधिकार निहित रहेको छ भने खर्च गर्ने जिम्मेवारी विकेन्द्रीत गरिएको छ । प्रान्तिय सरकारहरूले सामाजिक सुरक्षाका क्षेत्रका करिब ९० प्रतिशत काम गर्दछन् । उनीहरूको वित्तीय अधिकार ज्यादै न्यून

भएकोले केन्द्रिय सरकारको अन्तर सरकारी वित्तीय हस्तान्तरणमा उनीहरू निर्भर गर्नु पर्दछ । प्रदेश सरकारले गर्ने कुल खर्चको १५ प्रतिशत केन्द्रीय सरकारको अनुदान तथा हस्तान्तरणबाट ब्यहोर्नु पर्दछ । प्रदेश सरकारको सागुरो राजस्व अधिकार भएका कारण उनीहरूले आन्तरिक रुपमा आवश्यक राजस्व परिचालन गर्न सकेका छैनन् । औसतमा केन्द्रीय सरकारले कुल राजस्वमा ८२ प्रतिशत, प्रदेशले २ प्रतिशत र स्थानीय तहले १६ प्रतिशत सङ्कलन गर्दछन भने कुल राष्ट्रिय खर्चमा केन्द्रीय, प्रदेश र स्थानीय तहले क्रमशः ४९ प्रतिशत, ३६ प्रतिशत र १५ प्रतिशत योगदान रहेको छ । दक्षिण अफ्रिकामा संघ र प्रान्त/राज्य सरकारको कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी अधिकार तालिका ७ मा उल्लेख गरिएको छ ।

तालिका ७ : दक्षिण अफ्रिकामा तहगत सरकारको राजस्व अधिकार

| संघको | | प्रान्त/राज्य | |
|--|---|--|---|
| कर राजस्व | गैरकर राजस्व | कर राजस्व | गैरकर राजस्व |
| <ul style="list-style-type: none"> आय, मुनाफा र पूँजी प्राप्ति कर पेयरोल कर सम्पत्ति कर मूल्य अभिवृद्धि कर भन्सार | <ul style="list-style-type: none"> टाँचा शुल्क | <ul style="list-style-type: none"> क्यासिनो कर घोडा दौड कर मदिरा/रक्सी (हल्का पेय पदार्थ) लाइसेन्स सवारी साधन लाइसेन्स | <ul style="list-style-type: none"> गैरपूँजीगत वस्तुको बिक्री हस्तान्तरण दण्ड जरिवाना ब्याज आय पूँजीगत वस्तुको बिक्री अन्य वित्तीय कारोवार |

स्रोत : Shah, Anwar (2007), pp. 141-42

(च) स्विट्जरल्याण्ड

भूगोलको हिसाबले स्विट्जरल्याण्ड सानो देश भए तापनि यहाँ संघीय व्यवस्था कार्यान्वयनमा छ । प्रान्तिय सरकारको रुपमा २६ वटा क्याण्टनहरू छन् । हरेक क्याण्टनमा स्थानीय सरकारका रुपमा नगरपालिकाहरू रहेका छन् । नगरपालिकाहरूको स्वायत्तता सम्बन्धित क्याण्टनले निर्धारण गरेबमोजिम हुने हुँदा उनीहरूको स्वायत्ततामा निकै भिन्नता पाइन्छ । क्याण्टनको आफ्नै संविधान, प्रतिनिधिसभा, सरकार र अदालत छन् । क्याण्टनहरू राजनीतिक र वित्तीय रुपमा अत्यन्त स्वायत्त पनि छन् । क्याण्टनको वित्तीय स्वायत्तताको दुईवटा परिणामहरू छन् । (१) संविधान र प्रचलित कानूनले क्याण्टनको सार्वजनिक वित्तलाई दीगो बनाउने वित्तीय जिम्मेवारी प्रदान गरेको छ । (२) क्याण्टनहरूका बीचमा वित्तीय प्रतिस्पर्धा हुने हुँदा यसले राष्ट्रिय स्वाधिनतामा खतरा पार्न सक्ने सम्भावनाहरू रहन्छ । यसैले यहाँ पनि वित्तीय समानीकरण अनुदानको आवश्यकता पर्दछ । क्याण्टनहरू करका दरहरू र कर सङ्कलन कार्यतालिका बनाउन स्वायत्त छन् तथापि, उनीहरूले यस सम्बन्धमा निर्णय गर्नु पूर्व जनतासँग उनीहरूको अभिमत लिन जनमतसंग्रह गर्नु पर्दछ । कुल राजस्व सङ्कलनमध्ये संघीय सरकार, क्याण्टन र स्थानीय सरकारको क्रमशः ३७ प्रतिशत, ३८ प्रतिशत र २४ प्रतिशत योगदान हुने गरेको छ भने संघीय सरकारको ३१ प्रतिशत, क्याण्टनको ४२ प्रतिशत र स्थानीय तहको २७ प्रतिशत खर्च गर्दछन् (Shah, 2007) । स्विट्जरल्याण्डमा तहगत सरकारको राजस्व अधिकार सम्बन्धी विवरण तालिका ८ मा उल्लेख गरिएको छ ।

तालिका ८ : स्विट्जरल्याण्डमा तहगत सरकारको राजस्व अधिकार

| क्र.सं. | करका शीर्षकहरू | निर्धारण | | कर सङ्कलन र व्यवस्थापन | राजस्व बाँडफाँट (प्रतिशतमा) | | |
|---------|-----------------------------|----------|-----|-------------------------|-----------------------------|--------------|---------|
| | | आधार | दर | | संघ | प्रदेश/राज्य | स्थानीय |
| क. | संघीय | | | | | | |
| १ | प्रत्यक्ष संघीय आय कर | संघ | संघ | क्याण्टन/ स्थानीय तह | १०० | - | - |
| २ | रोक्का कर (Withholding tax) | संघ | संघ | क्याण्टन/ स्थानीय तह | ९०.५ | ९.५ | - |

| क्र.सं. | करका शीर्षकहरू | निर्धारण | | कर सङ्कलन र व्यवस्थापन | राजस्व बाँडफाँट (प्रतिशतमा) | | |
|-----------|--|----------|-------------------------|---------------------------|-----------------------------|--------------|---------|
| | | आधार | दर | | संघ | प्रदेश/राज्य | स्थानीय |
| ३ | पूँजी हस्तान्तरण कर (Capital transfer tax) | संघ | संघ | क्याण्टन/ स्थानीय तह | १०० | - | - |
| ४ | मूल्य अभिवृद्धि कर | संघ | संघ | क्याण्टन/ स्थानीय तह | १०० | - | - |
| ५ | अन्तः शुल्क | संघ | संघ | क्याण्टन/ स्थानीय तह | १०० | - | - |
| ६ | आयात शुल्क | संघ | संघ | क्याण्टन/ स्थानीय तह | १०० | - | - |
| ७ | ट्राफिक शुल्क | संघ | संघ | क्याण्टन/ स्थानीय तह | १०० | - | - |
| ८ | कृषि शुल्क | संघ | संघ | क्याण्टन/ स्थानीय तह | १०० | - | - |
| ९ | जुवाघर कर | संघ | संघ | क्याण्टन/ स्थानीय तह | १०० | - | - |
| १० | प्याटेण्ट र कन्सेसन | संघ | संघ | क्याण्टन/ स्थानीय तह | १०० | - | - |
| ११ | कानूनी परामर्श शुल्क | संघ | संघ | क्याण्टन/ स्थानीय तह | १०० | - | - |
| १२ | अस्पताल शुल्क | संघ | संघ | क्याण्टन/ स्थानीय तह | १०० | - | - |
| १३ | सेवा शुल्क दस्तुर | संघ | संघ | क्याण्टन/ स्थानीय तह | १०० | - | - |
| १४ | अन्य | संघ | संघ | क्याण्टन/ स्थानीय तह | १०० | - | - |
| ख. | क्याण्टन | | | | | | |
| १ | व्यक्तिगत आयकर | क्याण्टन | क्याण्टन/ स्थानीय तह | क्याण्टन/ स्थानीय तह | - | ५४.९ | ४५.१ |
| २ | सम्पत्ति कर | क्याण्टन | क्याण्टन/ स्थानीय तह | क्याण्टन/ स्थानीय तह | - | ५५.३ | ४४.७ |
| ३ | संस्थागत आयकर | क्याण्टन | क्याण्टन/ स्थानीय तह | क्याण्टन/ स्थानीय तह | - | ५५.६ | ४४.४ |
| ४ | पूँजीगत कर | क्याण्टन | क्याण्टन/ स्थानीय तह | क्याण्टन/ स्थानीय तह | - | ६०.६ | ३९.४ |
| ५ | रियलस्टेट कर | क्याण्टन | क्याण्टन/ स्थानीय तह | क्याण्टन/ स्थानीय तह | - | २६.५ | ७३.५ |
| ६ | सम्पत्ति आर्जन कर | क्याण्टन | क्याण्टन/ स्थानीय तह | क्याण्टन/ स्थानीय तह | - | ५३.८ | ४६.२ |
| ७ | सम्पत्ति हस्तान्तरण कर | क्याण्टन | क्याण्टन/ स्थानीय तह | क्याण्टन/ स्थानीय तह | - | ७२.२ | २७.८ |

| क्र.सं. | करका शीर्षकहरू | निर्धारण | | कर सङ्कलन र व्यवस्थापन | राजस्व बाँडफाँट (प्रतिशतमा) | | |
|---------|-----------------------------|----------|-------------------------|---------------------------|-----------------------------|--------------|---------|
| | | आधार | दर | | संघ | प्रदेश/राज्य | स्थानीय |
| ८ | हेरिटेज (विरासत) र उपहार कर | क्याण्टन | क्याण्टन/ स्थानीय तह | क्याण्टन/ स्थानीय तह | - | ९१.५ | ८.५ |
| ९ | सवारी साधन कर | क्याण्टन | क्याण्टन/ स्थानीय तह | क्याण्टन/ स्थानीय तह | - | १०० | - |
| १० | मनोरञ्जन कर | क्याण्टन | क्याण्टन/ स्थानीय तह | क्याण्टन/ स्थानीय तह | - | ३१.८ | ६८.२ |
| ११ | कुकुर कर | क्याण्टन | क्याण्टन/ स्थानीय तह | क्याण्टन/ स्थानीय तह | - | २५.६ | ७४.४ |
| १२ | अन्य सम्पत्ति तथा खर्च कर | क्याण्टन | क्याण्टन/ स्थानीय तह | क्याण्टन/ स्थानीय तह | - | ७६ | २४ |
| १३ | प्याटेण्ट र कन्सेसन | क्याण्टन | क्याण्टन/ स्थानीय तह | क्याण्टन/ स्थानीय तह | - | ८४.५ | १५.५ |
| १४ | अस्पताल शुल्क | क्याण्टन | क्याण्टन/ स्थानीय तह | क्याण्टन/ स्थानीय तह | - | ४४.४ | ५५.६ |
| १५ | सेवा शुल्क दस्तुर | क्याण्टन | क्याण्टन/ स्थानीय तह | क्याण्टन/ स्थानीय तह | - | २६.५ | ७३.५ |
| १६ | अन्य | क्याण्टन | क्याण्टन/ स्थानीय तह | क्याण्टन/ स्थानीय तह | - | ४९.२ | ५०.८ |

स्रोत : Shah, Anwar (2007), Table 4, pp. 330-331

(छ) संयुक्त राज्य अमेरिका

संयुक्त राज्य अमेरिकामा राज्य सरकारहरू संघीय सरकारबाट पूर्णरूपमा स्वायत्त छन्। संविधानतः राज्य सरकारहरूले संघीय सरकारलाई सिमित अधिकार प्रत्यायोजित गरेका छन्। धेरैजसो राज्यहरूमा ३,०३४ वटा काउण्टीहरू स्थानीय सरकारको रूपमा रहेका छन्। काउण्टी अन्तर्गत ३५,९३३ वटा सिटी र टाउनहरू छन्। विशेष उद्देश्यका लागि स्थानीय सरकारको रूपमा जिल्लाहरू पनि रहेका छन्। उनीहरूले शिक्षा, अस्पताल, अग्नी नियन्त्रण, आवास, खानेपानी, ढल, राजमार्ग, हवाई यातायात, आर्थिक विकास, बाढी पहिरो नियन्त्रण, माटो संरक्षण जस्ता तोकिएका कामहरू गर्दछन्। विभिन्न तहका सरकारहरूको सबै जिम्मेवारी संविधानमा उल्लेख नगरी कतिपय जिम्मेवारीहरू परम्परा र अभ्यासका आधारमा पनि कार्यान्वयन हुँदै आएको छ। यसैगरी राज्य सरकार र स्थानीय सरकारहरूको जिम्मेवारी पनि राज्य पिच्छे उनीहरूको संविधान अनुसार फरक फरक हुन्छ। राज्य र स्थानीय सरकारहरूको तुलनामा संघीय सरकारले प्रत्यक्ष रूपमा जनतालाई सेवा प्रदान गर्ने कार्यहरू ज्यादै कम मात्रै गर्दछ। तर, कतिपय अवस्थामा यस्ता सेवामा संघीय सरकारको प्रभाव महत्वपूर्ण हुन्छ। संघीय सरकारको प्राथमिकताका कार्यक्रमहरू राज्य र स्थानीय सरकार मार्फत सञ्चालन गरिन्छ। अन्तर-राज्य वणिज्य/व्यापारमा विभेद गर्न नपाइने र अन्तर्राष्ट्रिय व्यापारमा कर लगाउन नपाउने गरी राज्यहरूलाई संविधानले प्रतिबन्ध लगाएको छ।

संघीय सरकारको राजस्वको मुख्य स्रोत व्यक्तिगत आयकर हो जुन कुल राजस्वको ८० प्रतिशतभन्दा बढी हुन्छ। कुल राजस्वमा संघीय सरकारले ८० प्रतिशत राजस्व सङ्कलन गर्दछ। संघीय सरकारले अधिकांश इन्स्युरेन्स ट्रष्ट राजस्व पनि सङ्कलन गर्दछ। सम्पत्ति कर स्थानीय सरकारहरूले सङ्कलन गर्दछन् जुन उनीहरूको कुल राजस्वको तीन चौथाई बराबर हुन्छ। तथापि करको आधार र दर सम्बन्धमा राज्य सरकारको नियन्त्रण हुन्छ। राज्य सरकारहरूको राजस्वको मुख्य स्रोत बिक्री र व्यक्तिगत आयकर हो। यसका अतिरिक्त सवारी साधन लाईसेन्स कर पनि मुख्य करको स्रोत भित्र पर्दछ। कुल

राजस्वमा औसतमा संघीय सरकारले ५५ प्रतिशत, राज्य सरकारले २५ प्रतिशत र स्थानीय सरकारहरूले २० प्रतिशत राजस्व परिचालन गर्दछन्। सन् २०१९ को प्राप्त विवरण अनुसार संयुक्त राज्य अमेरीकाका संघीय राज्य सरकारहरूको राजस्वका स्रोतहरू निम्नानुसार तालिका ९ मा उल्लेख गरिएको छ।

तालिका ९ : संयुक्त राज्य अमेरिकामा राज्य सरकारहरूको वित्तीय अधिकार

| क्र.सं. | राजस्वका स्रोतहरू | प्रतिशत | कैफियत |
|---------|--|------------|---|
| १ | व्यक्तिगत आयकर (Individual income tax) | १९ | ज्याला, तलब, लाभांश, ब्याज र अन्य व्यक्तिगत आमदानी आदि |
| २ | सामान्य बिक्री कर (General sales tax) | १५ | उपभोक्ताहरूले खरिद गर्ने वस्तु तथा सेवामा लाग्ने कर |
| ३ | छनौट गरिएका वस्तुको बिक्री कर (Selective sales tax) | ८ | मादक पदार्थ (रक्सी), सवारी साधन इन्धन र धुम्रपान (सुर्तीजन्य वस्तु) |
| ४ | संस्थागत आयकर (Corporate income tax) | ३ | व्यवसायको नाफामा लाग्ने कर |
| ५ | सम्पत्ती कर तथा प्राकृतिक स्रोतमा लाग्ने कर (Estate tax, property tax and severance tax) | ४ | पैतृक सम्पत्ती हस्तान्तरणमा लाग्ने कर, सम्पत्ती कर र इन्धन र प्राकृतिक ग्याँसमा लाग्ने कर |
| ६ | दस्तुर (Charges) | ११ | राज्य अन्तर्गतमा विश्वविद्यालयले लिने शिक्षण शुल्कमा कर, सार्वजनिक अस्पतालमा तिर्ने शुल्क, भुक्तानी/रकममा लाग्ने कर, राजमार्गमा लाग्ने टोल कर, फोहरमैला व्यवस्थापन शुल्क, पार्किङ शुल्क (सिटीले सङ्कलन गर्ने) |
| ७ | विविध (Miscellaneous) | ८ | राज्य सरकारले उपलब्ध गराउने राजस्व, विशेष आँकलन आदि |
| ८ | अन्तरसरकारी वित्त हस्तान्तरण (Intergovernmental transfer) | ३२ | संघीय सरकारले उपलब्ध गराउने अनुदान |
| | जम्मा | १०० | |

स्रोत: <https://www.urban.org/policy-centers/cross-center-initiatives/state-and-local-finance-initiative/state-and-local-backgrounders/state-and-local-revenues#state>; September 1, 2022

नोट:

१. अलस्का, फ्लोरिडा, नेभाडा, दक्षिण डकोटा, टेनेसी, टेक्सास, वासिङ्गटन र योमिङ्ग राज्यमा कुनै पनि किसिमको व्यक्तिगत आयकर लाग्दैन। नयाँ हैम्पशायर राज्यमा लाभांश र व्याजमा कर लाग्दछ।
२. १७ वटा राज्य र कोलम्बिया जिल्लाले मात्रै इस्टेट ट्याक्स लगाउने गरेका छन्।
३. स्थानीय सरकारहरूले वास्तविक सम्पत्ति कर (Real property tax) लगाउँछन्।

सन् २०१९ मा संयुक्त राज्य अमेरीकाका स्थानीय सरकारहरूको राजस्वका स्रोतहरू निम्नानुसार तालिका १० मा रहेका अनुसार थिए।

तालिका १० : संयुक्त राज्य अमेरिकामा स्थानीय सरकारहरूको वित्तीय अधिकार

| क्र.सं. | राजस्वका स्रोतहरू | प्रतिशत | कैफियत |
|---------|---|---------|---|
| १ | सम्पत्ति कर (Property Tax) | ३० | आवासीय र व्यापारिक घरजग्गा, व्यापारिक उपकरणहरू, इन्भेन्टोरिज, गैर व्यवसायिक सवारी साधनहरू |
| २ | सामान्य बिक्री कर (General sales tax) | ५ | उपभोक्ताहरूले खरिद गर्ने वस्तु तथा सेवामा लाग्ने कर |
| ३ | छनौट गरिएका वस्तुको बिक्री कर (Selective sales tax) | २ | मादक पदार्थ (रक्सी), सवारी साधन इन्धन र धुम्रपान (सुर्तीजन्य वस्तु) |

| क्र.सं. | राजस्वका स्रोतहरू | प्रतिशत | कैफियत |
|---------|--|------------|--|
| ४ | व्यक्तिगत आयकर (Individual income tax) | २ | ज्याला, तलब, लाभांश, ब्याज र अन्य व्यक्तिगत आमदानी आदि |
| ५ | होटल बुकिङ र रेष्टुराको खाद्य पदार्थमा कर (Hotel booking and restaurant meals) | ३ | |
| ६ | दस्तुर (Charges) | १८ | फोहरमैला व्यवस्थापन शुल्क, पार्किङ शुल्क (सिटीले सङ्कलन गर्ने) |
| ७ | विविध (Miscellaneous) | ६ | सम्पत्ति बिक्रीबाट प्राप्त आय, विभिन्न लगानीबाट प्राप्त ब्याज आदि |
| ८ | अन्तरसरकारी वित्त हस्तान्तरण (Intergovernmental transfer) | ३५ | संघीय सरकारबाट स्थानीय यातायात परियोजनाको लागि ४ प्रतिशत र राज्य सरकारबाट ३१ प्रतिशत हस्तान्तरण भएको |
| | जम्मा | १०१ | |

नोट: All sources of local government general revenue do not sum to 100 percent because of rounding.

स्रोत : <https://www.urban.org/policy-centers/cross-center-initiatives/...>

(ज) ब्राजिल

दक्षिण अमेरिकी देशहरूमा ब्राजिल सबैभन्दा ठूलो देश हो भने यो देश विश्वका ठूला देशहरूमा पाँचौ स्थानमा पर्दछ । यहाँ संघीय गणतान्त्रिक शासन व्यवस्था छ । राष्ट्रपति र उपराष्ट्रपतिको दुईचरणमा जनताको बहुमतद्वारा प्रत्यक्ष निर्वाचन गर्ने व्यवस्था रहेको छ । संघ, राज्य/प्रदेश र स्थानीय तह (नगरपालिका) गरी यहाँ तीन तहका सरकारहरू छन् । राज्य/प्रदेश र स्थानीय तहहरूले स्वतन्त्र रूपमा काम गर्दछन् र वित्तीय अधिकारको प्रयोगमा पनि उनीहरू स्वतन्त्र छन् । यहाँको संविधानले उपराष्ट्रिय सरकारहरूको स्वायत्तता र राज्य सरकारहरूले सञ्चालन गरेका सामाजिक सुरक्षाका कार्यक्रमहरूमा संगठित नागरिक-दवाव समुहको बढी पहुँच सुनिश्चित गरेको छ । यसका लागि एकातिर राज्य सरकार र स्थानीय सरकारहरूले बढी कर सम्बन्धी अधिकार र परम्परागत संघीय राजस्वका अधिकारहरू प्राप्त गरेका छन् भने अर्कातिर सामाजिक योगदान जस्ता अनिवार्य करहरू संघीय सरकारको अधिकार क्षेत्रमा रहेका छन् । जसबाट संघीय सरकारले निवृत्तिभरण, स्वास्थ्य क्षेत्र र सामाजिक सेवाका क्षेत्रमा खर्च गर्दछ ।

तीनै तहको सरकारहरूको कार्यजिम्मेवारीमा स्पष्टता नहुँदा कतिपय अवस्थामा विवादहरू हुने गर्दछ । कतिपय अवस्थामा संघीय कर सम्बन्धी कानूनले प्रदेशको राजस्व अधिकार कटौती गर्ने गर्दछ । उदाहरणको लागि प्रदेश सरकारले लगाउने मूल्य अभिवृद्धि करको दरमा संघीय कानूनले छुट दिने व्यवस्था गर्दा उनीहरूको राजस्वमा कमी आउने गर्दछ । यस किसिमको संघीय हस्तक्षेपका कारण संघीय सरकार र प्रदेश सरकारहरूका बीचमा विवादहरू सिर्जना हुने गर्दछ । संघीय सरकारको रक्षा, सामान्य प्रशासन, आर्थिक र सामाजिक गतिविधिहरूमा बढी भूमिका हुन्छ भने राज्य सरकारहरूको शान्ति सुरक्षा (कानूनी राज्य), शिक्षा, स्वास्थ्य, वातावरण संरक्षण, प्रहरी सेवा, सामाजिक र आर्थिक सेवाका क्षेत्रमा बढी जिम्मेवारीहरू रहेका छन् । यसैगरी स्थानीय सरकारहरूको बढी भूमिका आवास तथा सामुदायिक सुविधा, स्वास्थ्य, प्राथमिक र उच्च माध्यामिक तहको शिक्षा, वातावरण संरक्षण, स्थानीय सेवा र सामान्य प्रशासनमा रहेको छ । स्थानीय तहहरूले प्रहरी सेवा पनि उपलब्ध गराउँदछन् । विभिन्न तहका सरकारहरूका बीचमा देहायबमोजिम कर राजस्व सम्बन्धी जिम्मेवारी तोकिएको छ । ब्राजिलमा तहगत सरकारको राजस्व अधिकार तालिका ११ मा उल्लेख गरिएको छ ।

तालिका ११ : ब्राजिलमा तहगत सरकारको राजस्व अधिकार

| क्र.सं. | करका शीर्षकहरू | निर्धारण | | कर सङ्कलन र व्यवस्थापन | राजस्व बाँडफाँट (प्रतिशतमा) | | |
|---------|--|------------|------------|------------------------|-----------------------------|--------------|---------|
| | | आधार | दर | | संघ | प्रदेश/राज्य | स्थानीय |
| क. | संघीय | | | | | | |
| १ | वस्तु आयात तथा निर्यात कर | संघ | संघ | संघ | १०० | - | - |
| २ | ग्रामीण क्षेत्र कर (Rural territorial tax) | संघ | संघ | संघ | ५० | - | ५० |
| ३ | आय कर | संघ | संघ | संघ | ५३ | २१.५ | २२.५ |
| ४ | निर्मित वस्तुमा कर | संघ | संघ | संघ | ४३ | २९ | २५ |
| ५ | आर्थिक सञ्चालन (Tax on financial operation) | संघ | संघ | संघ | १०० | - | - |
| ६ | सुन व्यापार (Financial operations dealing with gold) | संघ | संघ | संघ | - | ३० | ७० |
| ७ | अन्य कर तथा शुल्क | संघ | संघ | संघ | १०० | - | - |
| ८ | वस्तु र सेवा बिक्रीमा कर | संघ | संघ | संघ | १०० | - | - |
| ९ | आर्थिक कारोबारमा कर | संघ | संघ | संघ | १०० | - | - |
| १० | खुद मुनाफामा कर | संघ | संघ | संघ | १०० | - | - |
| ११ | पेट्रोल कर | संघ | संघ | संघ | १०० | - | - |
| १२ | आयलको उत्पादन र आयतका कर | संघ | संघ | संघ | ७१ | २१.८ | ७.२ |
| १३ | निजामति कर्मचारीको पारिश्रमिक कर | संघ | संघ | राज्य | - | १०० | - |
| १४ | सवारी साधन सम्पत्ती कर | राज्य | राज्य | राज्य | - | ५० | ५० |
| १५ | पैतृक सम्पत्ति र उपहार कर (Tax on inheritance and gifts) | राज्य | राज्य | राज्य | - | १०० | - |
| १६ | वस्तु र सेवाको वितरणमा कर | संघ, राज्य | संघ, राज्य | राज्य | - | ७५ | २५ |
| १७ | निबृत्तीभरणका लागि छुट्याइएको तलबमा कर (Contribution on employees' wages earmarked to pension) | राज्य | राज्य | राज्य | - | १०० | - |

नोट :

१. आय कर र निर्मित वस्तुको ३ प्रतिशत क्षेत्रिय सरकारलाई बाँडफाँट गरिन्छ ।
२. राज्य र स्थानीय सरकारले विशेष ऐन अन्तर्गत पेट्रोलियम पदार्थ, ग्यास, विद्युत, अन्य खनिज पदार्थबाट प्राप्त रोयल्टीको हिस्सा प्राप्त गर्दछन् ।

स्रोत : Shah, Anwar (2007), Table 4, pp. 85-86

२.४ नेपालमा वित्तीय संघीयता

संघियताको मूलभूत पक्ष केन्द्र र अन्य संघीय इकाइहरूका बीचमा राज्य शक्तिको बाँडफाँट गर्नु हो । नेपालको सन्दर्भमा पनि संविधानले संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका बीचमा अधिकारहरूको निर्धारण गरेको छ । संघ, प्रदेश र स्थानीय तहले आफ्नो अधिकारक्षेत्र भित्रको आर्थिक अधिकार सम्बन्धी विषयमा कानून बनाउने, वार्षिक बजेट बनाउने, निर्णय गर्ने, नीति तथा योजना तयार गर्ने र त्यसको कार्यान्वयन गर्न सक्ने व्यवस्था संविधानको धारा ५९ (१) ले गरेको छ । उपधारा (२) अनुसार संघले साझा सूचीका विषयमा र आर्थिक अधिकारका अन्य क्षेत्रमा प्रदेशलाई समेत लागू हुने गरी आवश्यक नीति, मापदण्ड

र कानून बनाउन सक्ने व्यवस्था छ । संघ, प्रदेश र स्थानीय तहले प्राकृतिक स्रोतको प्रयोग वा विकासबाट प्राप्त लाभको समन्यायिक वितरणको व्यवस्था गर्नु पर्ने र त्यस्तो लाभको निश्चित अंश रोयल्टी, सेवा वा वस्तुको रूपमा परियोजना प्रभावित क्षेत्र र स्थानीय समुदायलाई कानून बमोजिम वितरण गर्नुपर्ने संवैधानिक व्यवस्था रहेको छ (धारा ५९ को (४) ।

संघ, प्रदेश र स्थानीय तहले आफ्नो आर्थिक अधिकार क्षेत्र भित्रको विषयमा कर लगाउन र ती स्रोतहरूबाट राजस्व उठाउन सक्ने तर साझा सूची भित्रको विषयमा र कुनै पनि तहको सूचीमा नपरेका विषयमा कर लगाउने र राजस्व उठाउने व्यवस्था नेपाल सरकारले निर्धारण गरे बमोजिम हुने व्यवस्था नेपालको संविधानको धारा ६० (१) ले गरेको छ । कानून बमोजिम बाहेक प्रदेश सरकारले कुनै कर लगाउन र उठाउन नपाउने व्यवस्था संविधानको धारा २०३ को उपधारा (१) ले गरेको छ । त्यसैगरी संघीय कानून बमोजिम बाहेक प्रदेश सरकारले कुनै ऋण लिन र जमानत दिन नसक्ने व्यवस्था समेत संविधानले गरेको छ । संसारको विभिन्न मुलुलहरूमा विभिन्न तहको सरकारहरूको वित्तीय अधिकारहरू अभ्यास फरक फरक देखिन्छ तापनि केही कुराहरू मूलभूत रूपमा समान देखिन्छ जुन मञ्जुषा २ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

मञ्जुषा २: अन्तरराष्ट्रिय अभ्यासबाट सिक्न सकिने क्षेत्र/पक्षहरू

राज्य तथा प्रदेश तहको राजस्व अधिकारका सम्बन्धमा अन्तरराष्ट्रिय अभ्यासहरूलाई विश्लेषण गर्दा व्यक्तिगत तथा संस्थागत आयकर, सवारी साधन कर, क्यासिनो कर, मदिरा/रक्सी (हल्का पेय पदार्थ) लाईसेन्स, रियलस्टेट कर, सम्पत्ति कर, सट्टेवाजी र चिठ्ठा कर, अग्नि नियन्त्रण कर, स्रोतमा लाग्ने कर, बीमा शुल्क कर, वित्तीय तथा पूँजीकर, जुवा कर, सार्वजनिक संस्थान कर, हुलाक टिकटमा टाँचा लगाउने कर, टोल कर, भूमिकर, खनिज पदार्थमा कर, निजामति कर्मचारीहरूको पारिश्रमिक कर, पैतृक सम्पत्ति र उपहार कर जस्ता क्षेत्रहरूको करको दर निर्धारण, सडकलन, प्रशासन र उपयोग एकल अधिकारको रूपमा राज्य तथा प्रदेश तहको सरकारहरूले गर्ने गरेको पाइन्छ । यसर्थ, भोलिका दिनमा नेपालमा प्रदेश सरकारलाई थप वित्तीय अधिकार प्रदान गर्ने सन्दर्भमा यी क्षेत्रहरूलाई ध्यान दिन उपयुक्त देखिन्छ । साथै, यसका लागि प्रदेश सरकारहरूले संघीय सरकारसँग आवश्यकता अनुसार, समन्वय, लवी र पैरवी गर्न आवश्यक हुन्छ ।

(क) तहगत सरकारको आर्थिक अधिकार

नेपालको संविधानको अनुसूची ६ को बुँदा ४ अनुसार घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, मनोरञ्जन कर, विज्ञापन कर, पर्यटन, कृषि आयमा कर, सेवा शुल्क दस्तुर, दण्ड जरिवाना जस्ता राजस्व सम्बन्धी अधिकार प्रदेश सरकारमा निहित रहेको छ । घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, मनोरञ्जन कर, स्थानीय तहसँग बाँडफाँट गर्नुपर्ने व्यवस्था रहेको छ । यसैगरी संविधानको अनुसूची ७ को संघ र प्रदेशको साझा अधिकार क्षेत्र भित्रका राजस्व अधिकारहरू जस्तै: नदी, जलमार्ग, क्यासिनो, चिठ्ठा, चलचित्र, सिनेमा हल, खेलकुद आदिबाट प्राप्त हुने राजस्व संघ र प्रदेशबीचमा बाँडफाँट गर्नु पर्दछ । यसैगरी संविधानको अनुसूची ८ ले स्थानीय तहको एकल अधिकारको व्यवस्था गरेको छ भने अनुसूची ९ मा सेवा शुल्क, दस्तुर, दण्ड जरिवाना तथा प्राकृतिक स्रोतबाट प्राप्त रोयल्टी र पर्यटन शुल्क तीनै तहको सरकारको साझा अधिकारको रूपमा व्यवस्था गरेको छ । यसरी संविधानको अनुसूचीमा भएको राजस्व सम्बन्धी व्यवस्थालाई कार्यान्वयनमा ल्याउन केही समस्याहरू रहेको र तहगत सरकारहरूका अधिकार क्षेत्रका बारेमा साझा अधिकारको कानून संघबाट बनि नसकेको कारणले गर्दा स्पष्टताको कमि रहेको छ ।

यद्यपि, अन्तर-सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ ले तीन तहको राजस्व अधिकारका बारेमा स्पष्ट व्यवस्था गरेको छ । उक्त ऐनको अनुसूची १ मा नेपाल सरकारले लगाउन सक्ने कर तथा गैरकरको बारेमा व्यवस्था गरेको छ । जस अनुसार कर राजस्व अन्तर्गत (१) भन्सार महसुल, (२) अन्तःशुल्क, (३) मूल्य अभिवृद्धि कर, (४) संस्थागत आय कर, (५) व्यक्तिगत आय कर र (६) पारिश्रमिक कर रहेका छन् भने गैरकर अन्तर्गत (१) राहदानी शुल्क, (२) भिसा शुल्क, (३) पर्यटन दस्तुर,

(४) सेवा शुल्क दस्तुर, (५) जुवा/चिठ्ठा, क्यासिनो र (६) दण्ड जरिवाना रहेका छन्। यसका अतिरिक्त संघीय कानून र अन्य प्रचलित कानून अनुसार संघीय सरकारले अन्य कर र गैर कर लगाउन सक्ने व्यवस्था छ।

अन्तर-सरकारी वित्त व्यवस्था ऐन, २०७४ को अनुसूची ३ मा स्थानीय तहले लगाउन सक्ने कर गैरकरको व्यवस्था गरेको छ। कर राजस्व अन्तर्गत सम्पत्ति कर, घरवहाल कर, घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, भूमि कर (मालपोत), मनोरञ्जन कर, विज्ञापन कर र व्यवसाय कर रहेका छन् भने गैरकर अन्तर्गत सेवा शुल्क दस्तुर, पर्यटन शुल्क र दण्ड जरिवाना रहेका छन्। प्रदेश सरकारको राजस्व सम्बन्धी एकल अधिकार भनेको कृषि आयमा लगाउने कर हो। यसका अतिरिक्त स्थानीय तह र प्रदेश सरकारका बीचमा बाँडफाँट हुने राजस्वमा घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, मनोरञ्जन कर र विज्ञापन कर रहेका छन्। यसैगरी प्रदेश सरकारको गैरकरमा सेवा शुल्क दस्तुर, पर्यटन शुल्क र दण्ड जरिवाना पर्दछन्। तहगत सरकारको आर्थिक अधिकारको सूची तालिका १२ मा प्रस्तुत गरिएको छ।

तालिका १२ : तहगत सरकारको आर्थिक अधिकारको सूची

| नेपाल सरकार (संघ) | प्रदेश सरकार | स्थानीय तह |
|------------------------|------------------------------|------------------------------|
| १. भन्सार | १. घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क | १. सम्पत्ति कर |
| २. अन्तः शुल्क | २. सवारी साधन कर | २. घर वहाल कर |
| ३. मूल्य अभिवृद्धि कर | ३. मनोरञ्जन कर | ३. घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क |
| ४. संस्थागत आयकर | ४. विज्ञापन कर | ४. सवारी साधन कर |
| ५. व्यक्तिगत आयकर | ५. पर्यटन | ५. मनोरञ्जन कर |
| ६. पारिश्रमिक कर | ६. कृषि आयमा कर | ६. विज्ञापन कर |
| ७. राहदानी शुल्क | ७. सेवा शुल्क दस्तुर | ७. व्यवसाय कर |
| ८. भिसा शुल्क | ८. दण्ड जरिवाना | ८. भूमिकर (मालपोत) |
| ९. पर्यटन शुल्क दस्तुर | | ९. पर्यटन शुल्क |
| १०. सेवा शुल्क दस्तुर | | १०. सेवा शुल्क दस्तुर |
| ११. दण्ड जरिवाना | | ११. दण्ड जरिवाना |

स्रोत : नेपालको संविधान, अनुसूची, ५, ७ र ८

(ख) प्रदेश र स्थानीय तहबीचको राजस्व जिम्मेवारी

प्रदेश नं. १ मा प्रदेशको एकल र प्रदेश तथा स्थानीय तह बीचमा बाँडफाँट हुने राजस्वका क्षेत्रहरू, सङ्कलन जिम्मेवारी, बाँडफाँटको अनुपात र करको आधारहरू निम्नानुसार (तालिका १३) रहेको छः

तालिका १३ : प्रदेशले लगाउन सक्ने कर तथा गैरकर, जिम्मेवारी र बाँडफाँट हिस्सा

| क्र.सं. | राजस्वका क्षेत्रहरू | सङ्कलन जिम्मेवारी | बाँडफाँट (प्रतिशत) | | करको आधार |
|---------|--|----------------------------------|--------------------|------------|---|
| | | | प्रदेश | स्थानीय तह | |
| १ | घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क | मालपोत कार्यालय | ४० | ६० | कारोवार |
| २ | सवारी साधन कर | यातायात कार्यालय | ६० | ४० | सवारीको किसिम र संख्या |
| ३ | सवारी चालक अनुमति-पत्र, सवारी दर्ता किताब (ब्लू बुक) सम्बन्धी दस्तुर | प्रदेश सरकारबाट तोकिएको कार्यालय | १०० | ० | सवारीको किसिम र संख्या |
| ४ | मनोरञ्जन कर | मनोरञ्जन स्थल सञ्चालक | ४० | ६० | मनोरञ्जन स्थलहरूको किसिम (चलचित्र घर, फन पार्क आदिको) |

| क्र.सं. | राजस्वका क्षेत्रहरु | सङ्कलन जिम्मेवारी | बाँडफाँट (प्रतिशत) | | करको आधार |
|---------|--|--|--------------------|------------|--|
| | | | प्रदेश | स्थानीय तह | |
| | | | | | टिकट, सर्कसहरूको प्रतिदिन प्रति महिना) |
| ५ | विज्ञापन कर (फ्लेक्स, डिजिटल, होर्डिङ, साइन, ग्लो बोर्ड, स्टल आदि) | स्थानीय तह | ४० | ६० | ठेक्का रकम |
| ६ | वनपैदावार बिक्री शुल्क (नदीबाट बगाएको काठ, कुकाठ, जराजुरी) | वन कार्यालय | १०० | ० | क्यू. फिट |
| ७ | प्राकृतिक स्रोत सङ्कलन तथा बिक्री शुल्क (ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा) | स्थानीय तह | ४० | ६० | क्यू. फिट |
| ८ | पर्यटन शुल्क | वन कार्यालय वा तोकिएको निकाय | ४० | ६० | पर्यटक र पर्यटन एजेन्सीको संख्या |
| ९ | प्राकृतिक स्रोत उपभोग शुल्क (सिमेन्ट निकासी शुल्क) | स्थानीय तह | ४० | ६० | निकासी हुने बोराको संख्या |
| १० | कृषि सेवा शुल्क* | प्रदेश कृषि मन्त्रालय अन्तर्गतको निकाय | १०० | ० | सेवाको किसिम |
| ११. | सेवा शुल्क, दस्तुर र दण्डजरिवाना | प्रदेशस्तरीय सम्बन्धित कार्यालय | १०० | ० | सेवा/घटनाको किसिम र परिमाण/संख्या |

नोट : *प्रदेश नं. १ को आर्थिक विधेयक, २०७९ ले कृषि आयमा कर सम्बन्धी कुनै व्यवस्था नगरी कृषि सेवा शुल्कको व्यवस्था गरेको छ ।

स्रोत : आर्थिक विधेयक, २०७९, प्रदेशसभा सचिवालय, विराटनगर ।

(ग) संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबीच राजस्व बाँडफाँट

नेपालको संविधान अनुसार नेपाल सरकारले सङ्कलन गरेको प्राकृतिक स्रोतको रोयल्टी तथा मूल्य अभिवृद्धि कर र अन्तःशुल्कको राजस्व तीन तहको सरकारका बीचमा बाँडफाँट गर्नु पर्दछ । यस सम्बन्धी विवरण तल प्रस्तुत गरिएको छ ।

(घ) प्राकृतिक स्रोतको रोयल्टीको बाँडफाँट

नेपाल सरकार, प्रदेश र स्थानीय तहबीच सङ्घीय कानूनबमोजिम प्राकृतिक स्रोतबाट प्राप्त रोयल्टीको बाँडफाँट गर्न नेपाल सरकारले एक संघीय विभाज्य कोष खडा गरी त्यस्तो रोयल्टीबाट प्राप्त रकम सो कोषमा जम्मा गर्ने व्यवस्था अन्तर-सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐनको दफा ७ मा व्यवस्था गरिएको छ । उक्त विभाज्य कोषमा रहेको रोयल्टीको बाँडफाँट नेपाल सरकारले देहायबमोजिम (तालिका १४) गर्नु पर्दछ ।

तालिका १४ : प्राकृतिक स्रोतको रोयल्टीको बाँडफाँट (प्रतिशतमा)

| क्र.सं. | राजस्व शीर्षकहरु | दर निर्धारण र सङ्कलन | नेपाल सरकार | प्रदेश सरकार | स्थानीय तह |
|---------|-------------------------------|----------------------|-------------|--------------|------------|
| १ | पर्वतारोहणबाट प्राप्त रोयल्टी | नेपाल सरकार | ५० | २५ | २५ |
| २ | विद्युत | नेपाल सरकार | ५० | २५ | २५ |
| ३ | वन | नेपाल सरकार | ५० | २५ | २५ |
| | (क) संरक्षित वन | नेपाल सरकार | ५० | २५ | २५ |
| | (ख) राष्ट्रिय वन | नेपाल सरकार | ५० | २५ | २५ |
| ४ | खानी तथा खनिज | नेपाल सरकार | ५० | २५ | २५ |
| ५ | पानी तथा अन्य प्राकृतिक स्रोत | नेपाल सरकार | ५० | २५ | २५ |

स्रोत : अन्तर-सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४, अनुसूची ४

(ड) मूल्य अभिवृद्धि कर तथा अन्तःशुल्कको बाँडफाँट

अन्तर सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ को दफा ६ (१) अनुसार नेपाल सरकार, प्रदेश र स्थानीय तहबीच मूल्य अभिवृद्धि कर र आन्तरिक उत्पादनबाट उठेको अन्तःशुल्क रकम बाँडफाँट गर्न नेपाल सरकारले एक संघीय विभाज्य कोष खडा गरी त्यस्तो रकम सो कोषमा जम्मा गर्नु पर्नेछ। तीन तहको सरकारबीचमा राजस्व बाँडफाँट निम्नानुसार (तालिका १५) हुँदै आएको छ।

तालिका १५: मूल्य अभिवृद्धि कर तथा अन्तःशुल्कको बाँडफाँट

| क्र.सं. | राजस्व शीर्षकहरु | दर निर्धारण र सङ्कलन | नेपाल सरकार | प्रदेश सरकार | स्थानीय तह |
|---------|--------------------|----------------------|-------------|--------------|------------|
| १ | मूल्य अभिवृद्धि कर | नेपाल सरकार | ७० | १५ | १५ |
| २ | अन्तः शुल्क | नेपाल सरकार | ७० | १५ | १५ |

स्रोत : अन्तर-सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४, दफा ६।

२.५ नेपालमा वित्तीय संघीयता कार्यान्वयनको अवस्था

नेपालमा संघीयता कार्यान्वयनको उपरोक्त पृष्ठभूमिमा संघीयता कार्यान्वयन अध्ययन तथा अनुगमन संसदीय विशेष समितिले २०७९ कार्तिक १ गते नेपाल सरकार र सरोकार निकायलाई वित्तीय संघीयताको प्रभावकारी कार्यान्वयनको लागि निम्नानुसारको क्षेत्रमा सुधार गर्नुपर्ने भनी सिफारिस गरेको छ (तालिका १६)।

तालिका १६: वित्तीय संघीयता कार्यान्वयन सम्बन्धी सुझावहरु

| क्र.सं. | विषय/क्षेत्र | सुझाव/क्रियाकलाप | जिम्मेवार निकाय | समय सीमा | कैफियत |
|---|---|---|--|------------|---|
| (क) अधिकार क्षेत्रको थप स्पष्टता र संविधान संशोधनसँग सम्बन्धित | | | | | |
| १ | कार्यविस्तृतीकरणको पुनरावलोकन | नेपालको संविधानको अधिकार सूची र यसको कार्य विस्तृतीकरण/ अन्वण्डलिङ्ग प्रतिवेदनबाट समेत सरकारका तहहरुबीचको कार्यजिम्मेवारीमा अझै प्रस्टता नआएकोले ५ वर्षको अनुभव समेतका आधारमा कार्य विस्तृतीकरणलाई परिमार्जन गरी सरकारका तहहरुबीचको जिम्मेवारीमा थप प्रस्टता कायम गर्ने | प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रीपरिषद्को कार्यालय | २०८० बैशाख | मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयहरु र स्थानीय तहसँगको समन्वयमा |
| (झ) प्रशासनिक संघीयतासँग सम्बन्धित | | | | | |
| २२ | प्रदेश र स्थानीय तहको कर्मचारीको अस्थायी व्यवस्थापन | प्रदेश र स्थानीय तहमा कर्मचारीको अभावका कारण ती निकायको कार्यसम्पादन र सेवा प्रवाहमा परेको तात्कालिक समस्याको समाधानका लागि आवश्यक कर्मचारी खटाउने | संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय | एक हप्ता | |
| (ट) अन्तरतह समन्वय र सहकार्यसँग सम्बन्धित | | | | | |
| ५२ | प्रदेश र स्थानीय तहसँगको समन्वय | प्रदेश र स्थानीय तहसँगको समन्वय र सहजीकरण अलग-अलग निकाय/ मन्त्रालयबाट हुने गरेकोमा एउटै निकाय/मन्त्रालयबाट हुने व्यवस्था गर्ने | प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय | २०७९ माघ | |

| क्र.सं. | विषय/क्षेत्र | सुझाव/क्रियाकलाप | जिम्मेवार निकाय | समय सीमा | कैफियत |
|---|--|--|---|------------|-------------------------------------|
| ५३ | प्रदेश र पालिका र पालिका तथा पालिका बीचको समन्वय | प्रदेश र स्थानीय तह तथा स्थानीय तह र स्थानीय तहबीच समन्वय कायम गर्न र कुनै राजनीतिक विवाद भएमा समाधान गर्न संविधानको धारा २३५ को उपधारा (२) बमोजिमको कानून प्रदेश सभाले बनाउने | प्रदेश सभा | २०८० असार | |
| ५४ | एकल अधिकार विषयका क्षेत्रमा कानून तर्जुमा | संघीय तहले एकल अधिकारका विषयमा कानून बनाउँदा प्रदेशसँग र प्रदेशले स्थानीय तहसँग सुझाव लिने अभ्यासको थालनी गर्ने | संघ र प्रदेशका सम्बन्धित मन्त्रालय | निरन्तर | |
| (ठ) वित्तीय संघीयतासँग सम्बन्धित | | | | | |
| ५७ | राजस्व क्षमता | प्रदेश र स्थानीय तहको राजस्व सङ्कलनको विवरण र राजस्व क्षमताको पहिचान गर्ने | राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोग | निरन्तर | हरेक वर्ष प्रतिवेदन सार्वजनिक गर्ने |
| ५८ | आन्तरिक स्रोत परिचालन | प्रदेश र स्थानीय तहले राजस्व सुधार कार्ययोजना बनाई आन्तरिक स्रोत परिचालनलाई प्राथमिकतामा राखी कार्य गर्ने | प्रदेशको सम्बन्धित मन्त्रालय र स्थानीय तह | नियमित | |
| ५९ | विज्ञापन र मनोरञ्जन कर | प्रदेश र स्थानीय तहको एकल-एकल अधिकार सूचीमा रहेका यी करहरूको सङ्कलन काठमाडौं लयायतका प्रमुख पालिकामा समेत अत्यन्तै न्यून देखिएकोले सुधार गर्ने | प्रदेश सम्बन्धित मन्त्रालयसँगको समन्वयमा सम्बन्धित स्थानीय तह | २०८० बैशाख | |
| ६० | घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क | बजार मूल्यका आधारमा घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क सङ्कलन गर्ने विधि बसाल्ने मालपोत र नापी कार्यालयको स्वेस्ता लगायतका व्यवस्थापकीय पक्षमा सुधार गर्ने | स्थानीय तहसँगको समन्वयमा संघ र प्रदेशका सम्बन्धित मन्त्रालय | २०८० बैशाख | |
| ६१ | सवारी साधन कर | सवारी साधन करको दरलाई सबै प्रदेशमा एकरूपता कायम गर्ने। यस करको निश्चित हिस्सा वन तथा वातावरण संरक्षण एवं संवर्द्धनमा प्रयोग गर्ने नीतिगत व्यवस्था गर्ने | प्रदेश सम्बन्धित मन्त्रालय र स्थानीय तह | | |
| ६२ | खानीजन्य, नदीजन्य स्रोत | प्रदेश र स्थानीय तहको साझा अधिकार सूचीमा रहेका खानीजन्य र नदीजन्य स्रोत ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा लयायतका स्थानीय प्राकृतिक स्रोत र साधनको सङ्कलन र बाँडफाँटमा रहेको द्विविधा अन्तका लागि कानूनमा सुधार गर्ने | संघ र प्रदेशका सम्बन्धित मन्त्रालय | २०८० असार | |
| ६३ | खानीजन्य नदीजन्य स्रोत | खानीजन्य र नदीजन्य पदार्थ ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा लयायतको सङ्कलन, वितरण, नियमन लगायत क्रसर उद्योग संचालन र | संघ र प्रदेशका सम्बन्धित | २०८० असार | |

| क्र.सं. | विषय/क्षेत्र | सुझाव/क्रियाकलाप | जिम्मेवार निकाय | समय सीमा | कैफियत |
|-----------------------------------|---|--|---|---------------|--------|
| | | व्यवस्थापन सम्बन्धी तीनै तहका सरकारको स्पष्ट भूमिका उल्लेख हुने गरी कानूनी व्यवस्था गर्ने, प्रचलित कानूनको उलङ्घन हुने गरी सञ्चालित क्रसर उद्योग हटाउने | मन्त्रालय, स्थानीय तह | | |
| ६४ | प्राकृतिक स्रोतको परिचालन | प्राकृतिक स्रोतको दोहनमा स्वार्थ समूह हावी रहेको र अत्यधिक दोहनका कारण वातावरणीय हास समेत देखिएको हुँदा रोकथाम/नियन्त्रण लगायतका लागि आवश्यक कानूनी र नीतिगत व्यवस्था गर्ने | संघ र प्रदेशका सम्बन्धित मन्त्रालय | २०८० असार | |
| ६५ | प्राकृतिक स्रोतको परिचालनमा एकीकृत कानून | प्राकृतिक स्रोतको परिचालन तथा व्यवस्थापनमा सरलीकरण गर्ने गरी एकीकृत कानून तर्जुमा गर्ने | संघ र प्रदेशका सम्बन्धित मन्त्रालय | २०८० असार | |
| ६६ | ऋण अधिकार | प्रदेश र स्थानीय तहको ऋण व्यवस्थापन प्रणालीको विकास गरी आन्तरिक ऋणको परिचालन व्यवस्थित गर्ने | अर्थमन्त्रालय | २०८० बैशाख | |
| ६८ | समानीकरण अनुदानको बढोत्तरी | नेपाल सरकारबाट प्रदेश र स्थानीय तह र प्रदेशबाट स्थानीय तहको वित्तीय हस्तान्तरणमा वित्तीय समानीकरण अनुदानको अंश बजेटको अनुपातमा बढाउँदै लैजाने विधिको परिपालन गर्ने | अर्थमन्त्रालय, प्रदेशको अर्थ हेर्ने मन्त्रालय | प्रत्येक वर्ष | |
| ७३ | स्थानीय तह राजस्व लयायतका समितिको क्रियाशीलता | केही स्थानीय तहहरूमा राजस्व परामर्श समिति, स्रोत अनुमान तथा बजेट सीमा निर्धारण समिति र बजेट तथा कार्यक्रम तर्जुमा समिति क्रियाशील नभएको स्थितिमा कानून बमोजिम क्रियाशील गराउने | सम्बन्धित स्थानीय तह | तुरुन्त | |
| (ड) अन्य विषयसँग सम्बन्धित | | | | | |
| ९७ | वित्तीय सुशासन | सार्वजनिक लेखा समितिका काम कारवाही जस्तै स्थानीय तहमा वित्तीय अनुशासन/सुशासन प्रवर्द्धनका लागि आवश्यक कानूनी तथा नीतिगत व्यवस्था गर्ने | संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय र प्रदेशको सम्बन्धित मन्त्रालय | २०८० असार | |
| ९८ | जग्गाको अभिलेख | सरकारी र सार्वजनिक जग्गाको अभिलेख अद्यावधिक गर्ने, भूउपयोग वर्गीकरण र भूउपयोग योजना तर्जुमा गर्ने | संघ र प्रदेशका सम्बन्धित मन्त्रालय/निकाय | | |

नोट: माथि तालिकामा उल्लेख गरिएको क्र.सं. समितिको प्रतिवेदनको क्र.सं. अनुसार प्रस्तुत गरिएको हो।

स्रोत: संघीय संसद, राष्ट्रिय सभा (२०७९), संघीयता कार्यान्वयन अध्ययन तथा अनुगमन संसदीय विशेष समिति, काठमाडौं, नेपाल

२.६ राजस्वको लैङ्गिक विश्लेषण

राष्ट्रिय जनगणना २०७८ अनुसार नेपालको कुल जनसङ्ख्याको आधाभन्दा बढी (५१.०४ प्रतिशत) संख्या महिलाको रहेको छ । नेपालमा सन् २०२० मा मानव विकास सूचकाङ्क ०.६०२ अङ्कसहित १४२ औँ स्थानमा छ । राष्ट्रिय मानव विकास प्रतिवेदन २०२० अनुसार नेपालको लैङ्गिक विकास सूचक र लैङ्गिक सशक्तीकरण मापक क्रमशः ०.९३३ र ०.३५१ (८६औँ स्थान) तथा लैङ्गिक असमानता सूचक ०.४५२ छ । विश्व आर्थिक मञ्चद्वारा तयार पारिएको ग्लोबल लैङ्गिक समानता अन्तराल प्रतिवेदन २०२० मा नेपाल ०.६८३ अङ्क सहित १०६ औँ स्थानमा छ जुन दक्षिण एशियामा बंगलादेश पछिको दोस्रो स्थान हो ।

केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागको सन् २०२१ को तथ्याङ्क (Nepal in Figure 2021) मा उल्लेख भए अनुसार नेपालमा महिला साक्षरता ५७.४ प्रतिशत छ । राष्ट्रिय मानव विकास प्रतिवेदन २०२० अनुसार महिलाको श्रमशक्ति सहभागिता दर २६.३ प्रतिशत छ । त्यस्तै काम गर्ने उमेर समूहका महिलामध्ये २२.९ प्रतिशत मात्र रोजगार प्राप्त छन् । मातृ मृत्यु दर प्रतिलाख जीवित जन्ममा २३९ छ । विक्रम संवत् २०६८ सालको जनगणनाअनुसार लैङ्गिक अनुपात ९४.१६ र शहरी क्षेत्रमा जन्मदरको अनुपात १११.८० छ भने ग्रामीण क्षेत्रमा १०५.६ प्रतिशत छ ।

राज्यबाट महिलाको आर्थिक तथा सामाजिक रूपान्तरणका लागि विभिन्न नीतिगत र कानूनी व्यवस्था तथा कार्यक्रमहरू लागू भएका छन् । यही कारण राज्यका विभिन्न निकायमा महिला प्रतिनिधित्व, सरकारी तथा सार्वजनिक क्षेत्रमा सहभागिता र विद्यमान स्रोत/साधनको पहुँचमा क्रमशः वृद्धि हुँदै गएको छ । साथै जीविकोपार्जन, उद्यमशीलता र रोजगारीका क्षेत्रमा समेत क्रमिक सुधार भएको छ ।

नेपालको संविधानले समानता, समृद्धि र सामाजिक न्याय सुनिश्चित गर्न समानुपातिक, समावेशी र सहभागितामूलक सिद्धान्तका आधारमा समतामूलक समाज निर्माण गर्ने सङ्कल्प गरेको छ । संविधानको धारा १८ मा समानताको हक अन्तर्गत समान कामका लागि लैङ्गिक आधारमा पारिश्रमिक तथा सामाजिक सुरक्षामा कुनै भेदभाव गरिने छैन भन्ने व्यवस्था मौलिक हकको रूपमा गरिएको छ । साथै पैतृक सम्पत्तिमा लैङ्गिक भेदभाव बिना सबै सन्तानको समान हक हुने व्यवस्था, संविधानको धारा ३८ मा महिलाको हक अन्तर्गत महिलालाई लैङ्गिक भेदभाव बिना समान वंशीय हक हुने व्यवस्थाका साथै महिला विरुद्ध धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परम्परा, प्रचलन वा अन्य कुनै आधारमा शारीरिक, मानसिक, यौनजन्य, मनोवैज्ञानिक वा अन्य कुनै किसिमको हिंसाजन्य कार्य वा शोषण नगरिने समेत व्यवस्था गरिएको छ । त्यस्तो कार्य कानून बमोजिम दण्डनीय हुने र पीडितलाई कानून बमोजिम क्षतिपूर्ति पाउने हक हुने व्यवस्था समेत संविधानले मौलिक हकमा समेटेको छ । संविधानको भाग २७, धारा २५२ ले राष्ट्रिय महिला आयोगलाई संवैधानिक आयोगका रूपमा स्थापित गरेको छ ।

लैङ्गिक समतामूलक राष्ट्र निर्माणको सोच र लैङ्गिक उत्तरदायी शासन व्यवस्थालाई संस्थागत गर्ने उद्देश्य सहित पन्ध्रौँ आवधिक योजना (आर्थिक वर्ष २०७६/७७-२०८०/८१) कार्यान्वयनमा छ । महिलाको शिक्षा, स्वास्थ्य, सम्पत्ति माथिको स्वामित्व तथा श्रम सहभागितामा नेपालले गर्दै आएका प्रयासहरूले लैङ्गिक समानताको क्षेत्रमा सकारात्मक परिवर्तन भएको र समाजमा महिलाको राजनीतिक र आर्थिक भूमिका बढोत्तरी हुँदै गएको छ । देश संघीय ढाँचामा गएसँगै विगतका दिनमा नेपाल सरकारबाट महिला सशक्तीकरणका लागि भए/गेका व्यवस्था प्रदेश र स्थानीय तहमा हस्तान्तरण भई कार्यान्वयनमा छन् । त्यस्तै दिगो विकास लक्ष्यको ५ नं. बुँदामा उल्लिखित लैङ्गिक समानता र सशक्तीकरणको लक्ष्य प्राप्तिका लागि सूचकहरू निर्माण भई कार्यान्वयनको क्रममा रहेको छ ।

त्यसैगरी समान कामका लागि ज्याला/पारिश्रमिक (महिला र पुरुषबीचको समानतामूलक ज्यालाको अनुपात) का लागि सन् २०१५ मा ०.६२ प्रतिशत रहेकामा त्यसलाई २०२२ मा ०.८ प्रतिशतमा झार्ने र २०२५ मा ०.८७ प्रतिशत पुऱ्याउँदै २०३० मा ०.९२ प्रतिशत पुऱ्याइने मार्गचित्र तय भएको छ । खण्डीकरणको तह प्रादेशिक जिम्मेवारीमा तोकिएकोमा मापन समय ५ वर्ष राखिएको छ भने जिम्मेवार निकायमा महिला, बालबालिका तथा ज्येष्ठ नागरिक मन्त्रालय र राष्ट्रिय योजना आयोगलाई तोकिएको छ ।

नेपाल सरकारले गरेको प्रतिबद्धता अनुसार प्रत्येक संघीय, प्रदेश र स्थानीय निकायहरूका लागि तय हुने बजेट र पञ्चवर्षीय योजनामा लैससासलाई मुख्य प्राथमिकता दिइएको छ । यसै अनुरूप सन २००७ मा अर्थ मन्त्रालयले लैङ्गिक उत्तरदायी बजेटको घोषणा गरेअनुरूप लैससासलाई संस्थागत बनाउने उद्देश्यले हरेक क्षेत्रमा लैङ्गिक उत्तरदायी बजेटको विनियोजन र लैङ्गिक परीक्षण (Gender Auditing) को सुरुवात भएको छ । संघीय संरचना बनेपछि हरेक क्षेत्रमा लैससास नीतिको निर्माण गर्ने र हरेक प्रदेश र स्थानीय निकायले लैससास नीति अनुसार बजेट विनियोजन गरेर प्रदेश सरकार र स्थानीय निकायलाई लैङ्गिक उत्तरदायी बजेटको अवलोकन, कार्यान्वयन र लेखाजोखा गर्ने जिम्मेवारी दिइएको छ । यसैगरी दिगो विकास लक्षको लक्ष्य ५ ले लैङ्गिक वित्तपोषण (Gender Financing) लाई बढी जोड दिएको छ ।

नेपाल सरकारले लैङ्गिक संवेदनशील लघुवित्त नीति आठौं पञ्चवर्षीय योजना (सन् १९९२-१९९७) बाट सुरुवात गरेको छ । यस नीतिले खास गरेर लैङ्गिक संवेदनशील बजेट, लैङ्गिक संवेदनशील करको दायरा र लैङ्गिक संवेदनशील राजस्व सङ्कलनको दायरालाई बढी प्राथमिकता दिएको छ । त्यस्तै नेपाल सरकारले लैङ्गिक संवेदनशील आयकरको सुरुवात पनि सन् २०१९ बाट गरेको छ । जसले राष्ट्रिय बजेटमा निम्न सूचकाङ्कहरूलाई दर्शाएको छ ।

१. प्रत्यक्ष लैङ्गिक संवेदनशील फाइदा: कुल बजेटको ५० प्रतिशत बजेट लैङ्गिक तथा समावेशीकरण संवेदनशील हुनुपर्दछ ।

२. अप्रत्यक्ष लैङ्गिक संवेदनशील फाइदा: कुल बजेटको २० देखि २५ प्रतिशत बजेट लैङ्गिक संवेदनशील हुनुपर्दछ ।

३. तटस्थ: कुल बजेटको २० प्रतिशत बजेट लैङ्गिक संवेदनशील देखिनु पर्दछ ।

नेपाल सरकार विभिन्न राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय अभिसन्धिहरूको पक्ष राष्ट्र भएकाले लैङ्गिक समानता, महिला सशक्तीकरण र सामाजिक समावेशीकरणलाई कानूनी रूपले स्वीकारोक्ति सहितको प्रतिबद्धता व्यक्त गरेको छ । नेपाल सरकारबाट लैङ्गिक समानताको उद्देश्य लिई आ.व. २०६२/६३ को बजेट वक्तव्यमा नेपाल सरकारको वार्षिक बजेटमा लैङ्गिक उत्तरदायी राजस्व विधिलाई सार्वजनिक वित्तीय व्यवस्थामा लागू गर्ने घोषणा गरेको थियो । सो अनुरूप आ.व. २०६४/६५ देखि नेपाल सरकारको वार्षिक बजेटमा लैङ्गिक उत्तरदायी राजस्व विधिलाई सार्वजनिक वित्तीय व्यवस्थामा नै एकीकृत गर्दै आएको छ । सोको निरन्तरता दिन पन्ध्रौं आवधिक योजनाले संघ, प्रदेश र स्थानीय सरकारमा लैङ्गिक समानता नीति, कानून तथा कार्यक्रम तर्जुमा गर्ने, लैङ्गिक उत्तरदायी शासन पद्धति अवलम्बन गर्ने र लैङ्गिक उत्तरदायी राजस्व विनियोजन पद्धतिलाई संस्थागत गर्ने रणनीति लिएको छ । सो अनुरूप सार्वजनिक वित्तीय व्यवस्थापनका सबै दस्तावेजहरू (आवधिक योजना, मध्यकालीन खर्च योजना, वार्षिक कार्ययोजना, खर्च व्यवस्थापन र सोको प्रतिवेदन आदि) मा लैङ्गिक उत्तरदायी राजस्व विधिलाई समावेश गरिएको छ । संघीय सरकारको सार्वजनिक वित्तीय व्यवस्थापनसँग समञ्जस्यता ल्याउन प्रदेश सरकारले प्रथम आवधिक योजनामा लैङ्गिक उत्तरदायी राजस्व विनियोजन वृद्धि गरी स्थानीय तहसम्म संस्थागत गर्दै सोको परीक्षण, मूल्याङ्कन र अनुगमन गर्ने रणनीति लिएको छ । प्रदेश नं. १ को सरकारले बजेटमा लैङ्गिक उत्तरदायी राजस्व विश्लेषण सहितका प्रक्षेपण आ.व. २०७६/७७ देखि थालनी गरेको छ । सोको प्रभावकारी विश्लेषण, योजना तर्जुमा, बजेट विनियोजन, कार्यान्वयन, प्रतिवेदन र प्रभाव मूल्याङ्कनका लागि व्यावहारिक, सजिलै प्रयोग गर्न सक्ने र प्रभाव वा परिवर्तन हेर्न सक्ने गरी 'लैङ्गिक उत्तरदायी राजस्व तर्जुमा दिग्दर्शन, २०६९ र 'प्रदेश तथा स्थानीय तहका लागि लैङ्गिक

उत्तरदायी राजस्व नमुना निर्देशिका, २०७७ को सामञ्जस्यता 'लैङ्गिक उत्तरदायी राजस्व कार्यान्वयन निर्देशिका, २०७९' तयार पारेको छ ।

यी माथिका लिंगसमास मार्कर सूचकाङ्कले हरेक क्षेत्रमा बजेट विनियोजन हुँदा लैङ्गिक संवेदनशीलता हुनुपर्दछ भनेको छ । करको दायरालाई हेर्दा भूमि ऐन अन्तर्गत महिलाको नाममा जग्गा पास गरेमा राजस्वमा २० प्रतिशत छुट पाउने व्यवस्था गरेको छ । अर्कोतर्फ महिलाको कामको भारको आधारमा करको दायरा फरक हुनुपर्नेमा अझै पनि आयकर तिर्नुपर्दा पुरुष र महिलाले समान कर तिर्नुपरेको छ । अन्तर्राष्ट्रिय श्रम संगठनले सन् २०२० मा गरेको अनुसन्धान अनुसार यदि महिलाले १२ घण्टा काम गर्दछन् भने पुरुषले जम्मा ८ घण्टा मात्र काम गर्ने गरेको पाइन्छ । त्यसकारण स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ अनुसार प्रदेश स्तरमा बनेका लिंगसमास नीति, रणनीति, योजना तर्जुमाले महिलाको हकमा करको दायरा उनीहरूको कार्यभारको आधारमा छुट्याउनु पर्ने देखिन्छ । अर्कोतर्फ महिला र विपन्न वर्गको आमदानीको स्रोतको आधारमा राजस्व नीति र राजस्व सङ्कलन गर्नुपर्ने देखिन्छ । हालसम्म नेपालमा लैङ्गिक दृष्टिकोणबाट राजस्व र करको दायरा सम्बन्धी अनुसन्धान नभएको भए पनि नेपाल सरकारले गरेका अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिबद्धताहरू जस्तै: CEDAW, BPFA, SDG, UPR र UN सँग गरेका प्रतिबद्धताले लैङ्गिक उत्तरदायी बजेटको परिकल्पना अनुसार प्रदेश र स्थानीय सरकारको लैङ्गिक परीक्षण (Gender Auditing) गरी लिंगसमास संवेदनशील करको दायरा तोकिनु जरुरी देखिन्छ ।

राजस्वको लैङ्गिक विश्लेषणका लागि गर्नुपर्ने पहल

१. **लैङ्गिक खण्डीकृत तथ्याङ्कको प्रयोग गरी महिलाको पहुँच बढाउने:** महिलाको सशक्तीकरण हुनु भनेको स्रोत अनुमान गर्ने र संवेदनशील राजस्व विश्लेषणको विधिबाट सिकेका तथ्यबाट नीति तथा कार्यक्रममा प्रभाव वा वकालत गर्ने खण्डीकृत तथ्याङ्क तथा अद्यावधिक गर्ने, लैङ्गिक विश्लेषण गर्ने र लैङ्गिक आवश्यकता पहिचान गर्ने, लैङ्गिक आवश्यकता अनुसार नीति तथा कार्यक्रम बनाउने, करको दायरा सुनिश्चितता गर्ने र सम्बन्धित निकायहरूमा राजस्व व्यवस्थापन सूचना प्रणालीको सफ्टवेयरमा लैङ्गिक खण्डीकृतको व्यवस्था गर्ने, राजस्व सङ्कलनमा महिलाले गरेका योगदान र असरको बारेमा अध्ययन गर्ने र राजस्व नीतिमा सकारात्मक परिवर्तनका लागि वकालत गर्ने ।
२. **खर्चको प्रमुख शीर्षकहरूमा तोकिने लैसासको दायरा:** खर्चको प्रमुख शीर्षकहरू जस्तै उपभोग, कार्य सञ्चालन, कार्यक्रमिक तथा पूँजीगत खर्चा अन्तर्गत सरकारी निकायहरूले गर्ने खर्चमा सरकारी निकायहरू आफैँले र बाह्य स्रोतबाट गरिने करारीय प्रबन्धको आधारमा करार सम्झौतामा वर्गीकृत आधारमा वस्तुगत कार्यहरू उल्लेख गरी समावेश गर्ने ।
३. **बजेट सूचना प्रणालीमा लैङ्गिक संवेदनशील राजस्व:** बजेट सूचना प्रणालीमा लैङ्गिक संवेदनशील राजस्व देखिनका लागि बजेट विनियोजनमा लैङ्गिक बजेटको रकम र अंकभार उल्लेख हुने व्यवस्था गर्नुपर्ने र सो आधारमा प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालयले क्षेत्रगत मन्त्रालय र मातहतका निकायहरूका लागि बजेट खर्चको चरणमा क्रियाकलापगत आधारमा खर्च लेख्दा लैङ्गिक संवेदनशील राजस्व र करको दायरा उल्लेख गरी अनुगमन गर्ने व्यवस्था गर्ने ।
४. **कार्यक्रममा लैङ्गिक उत्तरदायी शासन पद्धतिको विकास गर्ने लैङ्गिक समानताका लागि निर्धारण गरिने कार्यक्रम र बजेटको सफलता, त्यसका विषयवस्तुसँगै सोलाई कानूनी आधार प्रदान गर्ने, क्रियाकलापलाई पारदर्शी बनाउने, सरोकारका पक्षलाई जिम्मेवार तथा जवाफदेही बनाउने, सरोकारका पक्षलाई उप्रेरित हुने कार्य वातावरण निर्माण गर्नु अपरिहार्य मानिन्छ ।** लैङ्गिक उत्तरदायी राजस्व पद्धतिलाई संस्थागत गर्न तथा यसको दीगोपनका लागि लैङ्गिक उत्तरदायी शासन पद्धति सम्बद्ध कार्यक्रमको महत्वपूर्ण भूमिका रहन्छ । यो सूचक लैङ्गिक संवेदनशील सुशासन प्रवर्द्धन गर्ने र लैङ्गिकमैत्री वातावरण बनाउने सुनियोजित प्रयास हो ।

५. **महिलाको आर्थिक सशक्तीकरण:** यसले महिलाको आर्थिक सशक्तीकरणमा उपयोगी हुने रोजगार अभिवृद्धि, आर्थिक विकासका अवसर र साधनमा महिलाको पहुँच अभिवृद्धि, महिलाले सम्पादन गर्दै आएको पुनः उत्पादनको भूमिकाको महत्व र यसले राष्ट्रिय अर्थतन्त्रमा पुऱ्याएको योगदान र महत्व लगायतका पक्षमा प्रदेशका कार्यक्रमहरूलाई निर्देशित गर्ने पक्षको माग गर्दछ । यसमा परियोजना वा कार्यक्रम सञ्चालनका क्रममा सिर्जना हुने वा योगदान दिने वा पूरक रूपमा सीप विकास, रोजगारी र आय आर्जनको अवसरमा महिलाहरूलाई पनि समान पहुँचको सुनिश्चितताको माग गर्दछ । यसको अर्थ समान रूपमा रोजगारीमा संलग्न हुनैपर्दछ भन्दा पनि महिलाले चाहेमा यस अधिकारलाई उपयोग गर्न सक्ने वातावरणको सिर्जना गर्नु हो । महिलाहरूको भूमिका घरको काममा (जस्तै खाना बनाउने, बच्चाको स्याहारसुसार र सरसफाइ) नै व्यस्त हुने र बाह्य रोजगार र आय आर्जनमा कम मात्रामा समय दिने हुँदा महिलाले गर्ने कार्यमा मूल्यपरक नहुनु र प्रदेशको अर्थतन्त्रमा महिलाको कार्यको योगदान नहुनाले प्रदेश सरकारको राजस्व वृद्धि योजना भित्र नपर्नाले महिलाका लागि केही विशेष कार्य गर्न नसक्नुले महिलाहरू आर्थिक सशक्तीकरणमा पछाडि परेका छन् । महिलालाई श्रम बजारमा पहुँच वृद्धि गरी प्रदेशको अर्थतन्त्रमा सहभागी गराउनु पनि प्रदेश सरकारको उद्देश्य रहेकाले कार्यक्रमहरूबाट सिर्जित सीप विकास, रोजगारी र आयआर्जनका अवसरमा पुरुष सरह सहभागी गराउन लैङ्गिकमैत्री कार्य वातावरणको सुनिश्चितता गर्नु पर्छ । अधिकांश अवस्थामा आयोजनाको उद्देश्य तोकिएको क्षेत्रगत उपलब्धि हासिल गर्ने र कार्यक्रम सम्पादन गर्ने हुन्छ । सीप विकास, रोजगारी र आयआर्जनको अवसर दिने हुँदैन । जस्तै: शिक्षा, जनस्वास्थ्य, सडक निर्माण आदि । तर आयोजना कार्यान्वयनमा संलग्नबाट पनि सीप विकास, (कार्य गरेर) रोजगारी वा आय आर्जनको अवसर सिर्जना हुन सक्छ । यसरी सिर्जना हुने अवसरहरूमा महिलाहरूको पनि समान पहुँच बढाउनका लागि संरचनात्मक अवरोधहरू हटाउनेतर्फ सचेष्टता गर्नु हो । कतिपय अवस्थामा आयोजनाले प्रत्यक्ष रोजगारी वा आयआर्जन अवसरभन्दा पनि आयोजनाबाट सिकेको सीप वा आयोजना कार्यान्वयनका कारण त्यसको प्रभाव स्वरूप अन्य धेरै आयआर्जनका अवसरहरू सिर्जना हुन सक्दछन् । जस्तै: कृषि तथा पशुसेवा । यस सूचक अन्तर्गत उपसूचकहरूका लागि कुल २५ अंकभार निर्धारण गरिएको छ । यसलाई देहायका तीन उपसूचकहरूमा विभाजन गरी सोका लागि तय गरिएका परीक्षण सूचकाङ्कका आधारमा विभिन्न अंकभार दिनु पर्ने हुन्छ । उपसूचक ४.१ सिर्जित रोजगार, सीप विकास र आयआर्जनका अवसरहरूमा महिलाको सहभागिता: कुनै परियोजनाले प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष वा परपूरकको रूपमा रोजगार, सीप विकास र आयआर्जनका अवसरहरू सिर्जना गर्दछन् । ती रोजगार, सीप विकास र आयआर्जनका अवसरहरूमा महिलाको सहभागिताको माग गर्दछ । परियोजनाले प्रत्यक्षरूपमा योगदान नगरे पनि परियोजनाको निर्माण, कार्यान्वयन, निरीक्षण र मूल्याङ्कनमा सहभागी भएर ज्ञान र सीप विकासबाट आउने दिनमा रोजगारी वा आयआर्जनको अवसर दिन सक्दछ । यस उपसूचकले परम्परात भूमिका भन्दा बाहेकका प्रदेशमा सिर्जना हुने कुनै पनि किसिमका रोजगार र आयआर्जनका अवसरहरूमा महिलाको सहभागिताको माग गर्दछ । यसका लागि हुन सक्ने कार्यक्रम भनेको परियोजनाको रोजगारीका लागि आवश्यक योग्यता महिला मैत्री हुने गरी व्यवस्था गर्ने, परम्परागत भूमिका भन्दा बाहेकका पेशा, उपयोगी सीप विकासका कार्यक्रम गर्ने, महिला रोजगारीका अवसर अभिवृद्धि गर्ने, रोजगारदातालाई अभिप्रेरित गर्ने, उत्प्रेरणामूलक उपाय अवलम्बन गर्ने, प्रदेश मातहत सरकारी तथा निजी क्षेत्रमा सिर्जना हुने रोजगारीका अवसरमा महिलाहरूको सहभागितालाई अनिवार्य गराउने, समान कामका लागि समान ज्यालाको अधिकारको अनिवार्य कार्यान्वयन गर्ने र गराउने, कार्यस्थलसम्म आवतजावतमा सहज उपायहरू अवलम्बन गर्ने, लैङ्गिकमैत्री कार्यस्थल, सुरक्षाको व्यवस्था र कार्य समय आदि सुधारका कार्यक्रम अन्तर्गत पर्दछन् ।

६. **राजस्वको लैससास सम्बन्धी अनुगमन तथा मूल्याङ्कन:** अनुगमन, प्रतिवेदन र पृष्ठपोषण लैङ्गिक उत्तरदायी राजस्व कार्यान्वयन र लाभको वितरणमा सुनिश्चितताका लागि अनुगमन प्रणाली एउटा प्रमुख औजार मानिन्छ । यसरी अनुगमन गर्दा स्थलगत भ्रमणको साथै उपलब्धि अभिलेखलाई आधार बनाउन सकिन्छ । यसको आधारमा सबै विषय

क्षेत्रगत मन्त्रालय, निकाय तथा अन्य सरोकारका पक्षहरूले विषयलाई गम्भीरतासँग लिए नलिएको वा आत्मसात् गरे नगरेको परीक्षण गर्न सकिन्छ । लैङ्गिक समानताको प्रवर्द्धनका लागि राजस्व कार्यान्वयनको प्रक्रियामा यसको वर्गीकरण मात्र पर्याप्त हुँदैन । विनियोजित बजेटको खर्चको स्थिति र त्यसले प्रवाह गरेको सेवाबाट लैङ्गिक समानतामा पुऱ्याएको योगदानको पनि नियमित लेखाजोखा र अभिलेख आवश्यक हुन्छ । यस्ता अभिलेखबाट प्रदेश सरकारले समुदाय समक्ष निर्वाह गर्नुपर्ने भूमिका सम्पादनमा समेत सहयोग पुग्ने हुन्छ । आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय र अरू क्षेत्रगत मन्त्रालयहरूले समय समयमा क्षेत्रगत निकाय तथा अन्य सरोकारवालाहरूलाई राजस्व सङ्कलनमा लैङ्गिक समानताका लागि लक्षित गरिएको उद्देश्य हासिल भए नभएको परीक्षण गर्ने सूचकहरूको विकास गरी सोका आधारमा सहमति जनाउने परिपाटीलाई संस्थागत गर्नुपर्दछ ।

लैङ्गिक समानता तथा सामाजिक समावेशीकरणसँग सम्बन्धित प्रश्नहरूको जवाफको विश्लेषण

प्रश्न १: नदीजन्य पदार्थको उत्खननमा महिला तथा पिछडा वर्गको संलग्नता छ वा छैन ?

| संलग्नता छ वा छैन ? | स्थानीय तहको संख्या | प्रतिशत |
|---------------------|---------------------|---------|
| छ | ३६ | २६.२८ |
| छैन | ९४ | ६८.६१ |
| सूचना उपलब्ध नभएको | ७ | ५.११ |
| जम्मा | १३७ | १०० |

स्रोत: स्थलगत अध्ययन, २०७९

| छ भने संलग्नता कति छ (प्रतिशतमा) | स्थानीय तहको संख्या | प्रतिशत |
|----------------------------------|---------------------|---------|
| १०% सम्म | ११ | ३३.५५ |
| ११ देखि २०% सम्म | २ | ५.५५ |
| २१ देखि ३०% सम्म | ७ | १९.४४ |
| ३१ देखि ४०% सम्म | १ | २.७८ |
| ४१ देखि ५०% सम्म | ४ | ११.११ |
| ५१% भन्दा माथि | ११ | ३३.५५ |
| जम्मा | ३६ | १०० |

स्रोत: स्थलगत अध्ययन, २०७९

अध्ययन गरिएका स्थानीय तहमा नदीजन्य पदार्थको उत्खननमा महिला तथा पिछडा वर्गको संलग्नता छ वा छैन भनी गरिएको अध्ययनमा ७ स्थानीय तह अर्थात् ५.११ प्रतिशत स्थानीय तहको सूचना प्राप्त हुन सकेन । सूचना प्राप्त भएका धेरै स्थानीय तहहरूमा संलग्नता छैन । कुल स्थानीय तहमा ३६ स्थानीय तहहरू अर्थात् २६.२८ प्रतिशत स्थानीय तहमा महिला तथा पिछडा वर्गको संलग्नता रहेको पाइयो । दुई तिहाई भन्दा बढि ६८.६१ प्रतिशत अर्थात् ९४ स्थानीय तहमा महिला तथा पिछडा वर्गको संलग्नता रहेको पाईएन ।

प्रश्न २: महिला र पिछडा वर्गले सञ्चालन गरेको प्राकृतिक स्रोत सम्बन्धी व्यवसायबाट राजस्व प्राप्त भएको छ वा छैन ?

| राजस्व प्राप्त भएको छ वा छैन ? | स्थानीय तहको संख्या | प्रतिशत |
|--------------------------------|---------------------|---------|
| छ | २० | १४.६० |
| छैन | १०९ | ७९.५६ |
| सूचना उपलब्ध नभएको | ८ | ५.८४ |
| जम्मा | १३७ | १०० |

स्रोत: स्थलगत अध्ययन, २०७९

| छ भने संलग्नता कति छ (प्रतिशतमा) | स्थानीय तहको संख्या | प्रतिशत |
|------------------------------------|---------------------|------------|
| १०% सम्म | ९ | ४५ |
| ११ देखि २०% सम्म | ५ | २५ |
| ३१ % भन्दा माथि | ३ | १५ |
| छ भनेको तर % उपलब्ध नभएको | २ | १० |
| फिदिम नगरपालिकाले रकम उल्लेख गरेको | १* | ५ |
| जम्मा | २० | १०० |

स्रोत: स्थलगत अध्ययन, २०७९

* रु. २५,६०,०००।-

प्राकृतिक स्रोत सम्बन्धी व्यवसायमा महिला र पिछडा वर्गको संलग्नता कम देखिन्छ साथै अध्ययन गरिएका कुल १३७ स्थानीय तहहरूमा जम्मा २० वटा अर्थात् १४.६० प्रतिशत स्थानीय तहहरूले मात्र महिला र पिछडा वर्गले सञ्चालन गरेको प्राकृतिक स्रोत सम्बन्धी व्यवसायबाट राजस्व प्राप्त गरेका छन्। बाँकी अरु स्थानीय तहहरूले राजस्व प्राप्त गरेका छैनन् वा सूचना प्राप्त नभएका छन्।

राजस्व प्राप्त गरेका २० वटा स्थानीय तहहरू मध्ये २ स्थानीय तहसँग महिला र पिछडा वर्गको संलग्नताको सूचना छैन र फिदिम नगरपालिकाले संलग्नताको प्रतिशतको ठाउँमा प्राप्त गरेको राजस्वको रकम उल्लेख गरेको छ। धेरै अर्थात् ९ वटा स्थानीय तहमा यस्तो व्यवसायमा महिला र पिछडा वर्गको संलग्नता १० प्रतिशत मुनी छ भने ५ वटा स्थानीय तहमा ११ देखि २० प्रतिशतसम्म संलग्नता भएको पाइन्छ।

प्रश्न ३: वार्षिक राजस्व सङ्कलनमा महिलाहरूको योगदान छ वा छैन ?

| वार्षिक राजस्व सङ्कलनमा महिलाहरूको योगदान छ वा छैन ? | स्थानीय तहको संख्या | प्रतिशत |
|--|---------------------|------------|
| छ | ३५ | २५.५५ |
| छैन | ९३ | ६७.८८ |
| सूचना उपलब्ध नभएको | ९ | ६.५७ |
| जम्मा | १३७ | १०० |

स्रोत: स्थलगत अध्ययन, २०७९

| छ भने संलग्नता कति छ प्रतिशतमा ? | स्थानीय तहको संख्या | प्रतिशत |
|----------------------------------|---------------------|------------|
| १०% सम्म | १० | २८.५७ |
| ११ देखि २०% सम्म | ५ | १४.२८ |
| २१ देखि ३०% सम्म | ६ | १७.१४ |
| ३१ देखि ४०% सम्म | ८ | २२.८६ |
| ५०% भन्दा माथि | ५ | १४.२८ |
| छ भनेको तर % उपलब्ध नभएको | १ | २.८६ |
| जम्मा | ३५ | १०० |

स्रोत: स्थलगत अध्ययन, २०७९

महिला र पिछडा वर्गले सञ्चालन गरेको प्राकृतिक स्रोत सम्बन्धी व्यवसायबाट राजस्व प्राप्त गर्ने स्थानीय तहहरू कम भए पनि वार्षिक राजस्व सङ्कलनमा महिलाहरूको योगदान छ भन्ने स्थानीय तहहरूको संख्या केही बढी छ। कुल १३७ स्थानीय तहमा ३५ वटा स्थानीय तह अर्थात् २५.५५ प्रतिशत स्थानीय तहको वार्षिक राजस्व सङ्कलनमा महिलाहरूको योगदान

रहेको छ भने ९३ वटा स्थानीय तह अर्थात दुई तिहाई (६७.८८ प्रतिशत) स्थानीय तहमा यस्तो योगदान रहेको छैन । ६.५७ प्रतिशत स्थानीय तहबाट योगदान रहेको वा नरहेको सूचना प्राप्त भएन ।

वार्षिक राजस्व सङ्कलनमा महिलाहरुको योगदान छ भन्ने स्थानीय तहमा धेरै स्थानीय तहमा (२८.५७ प्रतिशत) यस्तो योगदान जम्मा १० प्रतिशत सम्म छ भने २२.८६ प्रतिशत स्थानीय तहमा यस्तो योगदान ३१ देखि ४० प्रतिशत छ । तर १४.२८ प्रतिशत स्थानीय तहमा यस्तो योगदान ५० प्रतिशत भन्दा बढी छ ।

प्रश्न ४: महिलाले सञ्चालन गरेको पर्यटन व्यवसाय छ वा छैन ?

| महिलाले सञ्चालन गरेको पर्यटन व्यवसाय छ वा छैन ? | स्थानीय तहको संख्या | प्रतिशत |
|---|---------------------|---------|
| छ | ८ | ५.८४ |
| छैन | १२० | ८७.५९ |
| सूचना उपलब्ध नभएको | ९ | ६.५७ |
| जम्मा | १३७ | १०० |

स्रोत: स्थलगत अध्ययन, २०७९

| छ भने वार्षिक कति राजस्व सङ्कलन भएको छ ? | स्थानीय तहको संख्या | प्रतिशत |
|--|---------------------|---------|
| १०,००० | १ | १२.५ |
| १,००,००० | १ | १२.५ |
| छ भनेको तर रकम उपलब्ध नभएको | ६ | ७५ |
| जम्मा | ८ | १०० |

स्रोत: स्थलगत अध्ययन, २०७९

अध्ययन गरिएका १३७ स्थानीय तहहरूमध्ये जम्मा ८ वटा स्थानीय तह अर्थात ५.८४ प्रतिशत स्थानीय तहमा महिलाले पर्यटन व्यवसाय सञ्चालन गरेका छन् भने ९ वटा स्थानीय तह अर्थात ६.५७ प्रतिशत स्थानीय तहबाट यस सम्बन्धी सूचना प्राप्त भएन । महिलाले पर्यटन व्यवसाय सञ्चालन गरेका छन् भन्ने ८ वटा स्थानीय तह मध्ये ६ वटा स्थानीय तहमा त्यस्तो व्यवसायबाट वार्षिक कति राजस्व सङ्कलन भएको छ भन्ने तथ्याङ्क नभएको देखिन्छ । तथ्याङ्क उपलब्ध भएका २ वटा स्थानीय तहमा महिलाले सञ्चालन गरेको पर्यटन व्यवसायबाट वार्षिक क्रमशः रु १०,००० र रु १,००,००० राजस्व सङ्कलन भएको देखिन्छ ।

३ खण्ड तीन: प्रदेश तहमा राजस्व अधिकार र अभ्यास

नेपालमा संघीयताको अभ्यास लामो छैन। प्रदेश सरकारको पहिलो ५ वर्षे कार्यकाल भर्खर सम्पन्न भई दोस्रो कार्यकाल शुरू भएको छ। यसका बाबजुद प्रदेश तहमा संविधानले निर्दिष्ट गरेका राजस्व अधिकारको कार्यान्वयन हुँदै आएको छ। प्रदेश नं. १ सरकारले यसको लागि प्रदेश नं. १ कर तथा गैर कर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५, प्रदेश नं. १ प्रदेश वित्त व्यवस्थापन ऐन २०७५ तथा वार्षिक रुपमा आर्थिक ऐनहरू बनाई कार्यान्वयन गर्दै आएको छ। प्रदेश नं. १ को प्रदेश आर्थिक ऐन, २०७९ अनुसार घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सेवा शुल्क र रोक्का दस्तुर, सवारी साधन कर, सवारी चालक अनुमति पत्र, सवारी दर्ता किताब (ब्लु बुक) सम्बन्धी दस्तुर, मनोरञ्जन कर, प्राकृतिक स्रोत सङ्कलन तथा बिक्री शुल्क, वन पैदावार बिक्री शुल्क, पर्यटन शुल्क, विज्ञापन कर, कृषि सेवा शुल्क र दण्डजरिवाना लगाईने र सङ्कलन गर्दै आएको छ। प्रदेश नं. १ सरकारको राजस्वको स्रोतगत कानूनी व्यवस्था र अभ्यास सम्बन्धी समीक्षा निम्नानुसार गरिएको छ।

३.१ घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क

(क) संवैधानिक तथा कानूनी व्यवस्था

नेपालको संविधान

नेपालको संविधानले प्रदेश र स्थानीय तहको एकल अधिकार अन्तर्गत घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्कलाई क्रमशः प्रदेश तह (अनुसूची ६) र स्थानीय तह (अनुसूची ८) को राजस्वको स्रोत वा राजस्व अधिकारको रुपमा व्यवस्था गरेको छ। संविधानमा घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क र यससँग प्रत्यक्ष सम्बन्धित विषयहरू संविधानको अनुसूचीहरूमा देहायको तालिका १७ बमोजिम रहेको छ।

तालिका १७ : घर जग्गा रजिष्ट्रेशनसँग अन्तर-सम्बन्धित विषयहरू

| अनुसूची ५ : संघ सरकारको एकल अधिकार | अनुसूची ६ : प्रदेश सरकारको एकल अधिकार | अनुसूची ७ : संघ र प्रदेश सरकारको साझा अधिकार | अनुसूची ८ : स्थानीय सरकारको एकल अधिकार |
|--|---|---|--|
| २९. भूउपयोग नीति, वस्ती विकास नीति ३०. देवानी कानूनको निर्माण | ४. घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क १६. भूमि व्यवस्थापन, जग्गाको अभिलेख २१. गुठी व्यवस्थापन | १. देवानी कार्यविधि ६. सम्पत्ति प्राप्ति, अधिग्रहण र अधिकारको सिर्जना २४. भूमि नीति र सो सम्बन्धी कानून | ४. घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, मालपोत (भूमिकर), मालपोत सङ्कलन १४. घर जग्गा धनी पूर्जा वितरण |

स्रोत: नेपालको संविधानका अनुसूचीहरू

कानूनी व्यवस्थाहरू

वि.सं. १९६० मा तत्कालिन प्रधानमन्त्री चन्द्र शमशेरले जग्गालाई अवल, दोयम, सीम र चाहार गरी वर्गीकरण गरेका थिए। सोही वर्गीकरण हालसम्म पनि प्रचलनमा रहेको छ। भूउपयोग ऐन २०७६ तथा नियमावली २०७९ ले जग्गालाई स्थानीय तहमा (क) कृषि क्षेत्र, (ख) आवास क्षेत्र, (ग) व्यवसायिक क्षेत्र, (घ) औद्योगिक क्षेत्र, (ङ) खानी तथा खनिज क्षेत्र, (च) वन क्षेत्र, (छ) नदी, खोला, ताल, सीमसार क्षेत्र, (ज) सार्वजनिक उपयोगको क्षेत्र, (झ) सांस्कृतिक तथा पूरातात्विक महत्वको क्षेत्र, (ञ) नेपाल सरकारबाट तोकिएका अन्य क्षेत्र गरी १० किसिमले वर्गीकरण गर्ने व्यवस्था गरेको छ। यस अनुसार मन्त्रालयले प्रत्येक स्थानीय तहको भूउपयोग नक्शा तयार गरी ऐन जारी भएको एक वर्षभित्र सम्बन्धित स्थानीय तहलाई

हस्तान्तरण गर्नुपर्ने व्यवस्था रहेको छ । स्थानीय तहले आफ्नो क्षेत्रभित्रको जग्गा मूल्याङ्कन गर्दा र भूमि सम्बन्धी करको निर्धारण गर्दा भूउपयोग क्षेत्र वर्गीकरणलाई समेत आधार मान्नु पर्ने व्यवस्था उक्त ऐनको दफा १३ मा रहेको छ । हाल ऐन बमोजिमको भूउपयोग नियमावली, २०७९ जारी भई भूउपयोग क्षेत्र वर्गीकरणका लागि भूमि व्यवस्था, सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालयले सबै स्थानीय तहहरूको कृषि र गैरकृषि क्षेत्रको वर्गीकरण २०७९ मङ्सिर २३ भित्र सम्पन्न गर्न सम्बन्धित पक्षलाई परिपत्र गरेको छ (भूमि व्यवस्था, सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालयको मिति २०७९ श्रावण ३१ को विभिन्न निकायहरूलाई प्रेषित गरेको परिपत्र) ।

घरजग्गा रजिष्ट्रेशनको अंक निर्धारण गर्दा प्रत्येक जग्गाको न्यूनतम मूल्याङ्कन निश्चित गर्न मालपोत नियमावली, २०३६ नियम ५ (ख) बमोजिम प्रमुख जिल्ला अधिकारीको संयोजकत्वमा जिल्ला समन्वय समितिका प्रमुख, प्रमुख कर अधिकृत वा कर कार्यालय नभएको स्थानमा कोष तथा लेखा नियन्त्रक कार्यालयको प्रमुख, नापी शाखाको प्रमुख, उद्योग वाणिज्य संघको प्रतिनिधि, नेपाल राष्ट्र बैंकले तोकेको स्थानीय वाणिज्य बैंकको प्रतिनिधि र मालपोत कार्यालयको प्रमुख सदस्य सचिव रहेको समितिले वार्षिक रूपमा गरेको न्यूनतम मूल्याङ्कन अनुसार प्रत्येक वर्षको असार मसान्तभित्र जग्गाको न्यूनतम मूल्य निर्धारण हुने गरेको छ । यसैगरी उक्त नियमावलीमा समसामयिक संशोधन गरी सूचना प्रविधिको प्रयोग सम्बन्धी व्यवस्था गरेको पनि पाइन्छ ।

जग्गा प्रशासन निर्देशिका, २०५८ मा १९ वटा परिच्छेदमा जग्गा प्रशासनसँग सम्बन्धित विषयहरू विस्तृत रूपमा रहेका छन् । यस निर्देशिकामा जग्गा प्रशासन सम्बन्धी मुलुकी ऐनका व्यवस्थाहरू, अदालतका विभिन्न नजिरहरू समेत समावेश गरिएको छ ।

अन्तरसरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ को दफा ५ उपदफा (१) मा प्रदेश र स्थानीय तह दुवैको अधिकार सूचीमा रहेका करहरूलाई एकल कर प्रशासन मार्फत लगाउने र उठाउने व्यवस्था गरेको छ । सोही दफा एवं उपदफाको खण्ड (ख) ले घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्कको दर प्रदेशले लगाउने र गाउँपालिका वा नगरपालिकाले उठाउने प्रबन्ध गरेको छ । सोही दफाको उपदफा (२) अनुसार यसरी प्रदेशले लगाएको घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्कको दर बमोजिम असूल गरिएको राजस्वको साठी प्रतिशत स्थानीय सञ्चित कोष र चालीस प्रतिशत प्रदेश सञ्चित कोषमा जम्मा गर्नुपर्ने व्यवस्था गरिएको छ । यस व्यवस्थाको कार्यान्वयनका लागि अन्तरसरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ को दफा ३३ बमोजिम संघीय अर्थमन्त्रीको संयोजकत्वमा गठित अन्तरसरकारी वित्त परिषद्को मिति २०७५ चैत्र २८ मा बसेको तेस्रो बैठकले घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्कको रकम मासिक रूपमा सम्बन्धित तहको संचित कोषमा पठाउने निर्णय समेत गरेको छ ।

प्रदेश नं. १ को प्रदेश आर्थिक ऐन, २०७९ को दफा २ मा प्रदेशभित्र लगाइने घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सेवा शुल्क र रोक्का दस्तुर सम्बन्धी व्यवस्था छ । उक्त शुल्क तथा दस्तुर सम्बन्धित गाउँपालिका वा नगरपालिकाले असुल गरी साठी प्रतिशत आफैँ राखी बाँकी चालीस प्रतिशत प्रदेश सरकारलाई मासिक रूपमा अर्को महिनाको २५ गतेभित्र उपलब्ध गराउनु पर्ने प्रावधान रहेको छ । साथै उक्त कार्यका लागि गाउँपालिका वा नगरपालिकामा आवश्यक स्रोत, साधन, जनशक्ति तथा कार्यालयको व्यवस्थापन नभएसम्म नेपाल सरकारको तोकिएको कार्यालयले सङ्कलन गर्ने समेत उल्लेख गरिएको छ । हाल यो व्यवस्था जिल्ला मालपोत कार्यालयले नै प्रदेश कानूनमा तोकिए बमोजिम शुल्क सङ्कलन गर्ने र संकलित रकम कोष तथा लेखा नियन्त्रक कार्यालयले मासिक रूपमा सम्बन्धित स्थानीय सरकार र प्रदेश सरकारको सञ्चित कोषमा दाखिला हुनेगरी पठाउने गरेको छ । घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सेवा शुल्क र रोक्का दस्तुर लगायतका दरहरू सोही ऐनको अनुसूची १ मा व्यवस्था गरिएको छ ।

प्रदेश नं. १ को आ.व. २०७७/७८, २०७८/७९ र २०७९/८० को आर्थिक ऐनहरूले घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सेवा शुल्क र रोक्का दस्तुर सम्बन्धी व्यवस्था गरेको दरहरूको विस्तृत अध्ययन गरी विश्लेषण गरिएको छ ।

(ख) घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्कको दरको तुलनात्मक विश्लेषण

प्रदेश नं. १ को आर्थिक ऐनहरूलाई तुलना गर्दा घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क अन्तर्गत केही शीर्षकका दरहरूमा परिमार्जन भएको देखिन्छ। आ.व. २०७७/७८ को तुलनामा आ.व. २०७९/८० मा भएको परिवर्तन/वृद्धिको विवरण तालिका १८ मा प्रस्तुत गरिएको छ। तीन आर्थिक वर्षहरूको दर सम्बन्धी विस्तृत विवरण अनुसूची २ मा राखिएको छ।

तालिका १८ : घर जग्गा रजिष्ट्रेशन सेवा शुल्कको वार्षिक वृद्धि सम्बन्धी विश्लेषण

| लिखतको प्रकार | महा नगरपालिका | उप महानगरपालिका | नगरपालिका | गाउँपालिका |
|--|---------------|-----------------|-----------|------------|
| सि.नं. ६ : शेषपछिको बकसपत्रको प्रति लिखत दर (रु.) आ.व. २०७८/७९ को तुलनामा २०७९/८० मा भएको वृद्धि (प्रतिशतमा) | | | | |
| (क) तीन पुस्ता भित्रको | २००० | २००० | २००० | १००० |
| (ख) तीन पुस्ता बाहिरको | ३००० | २००० | १००० | २००० |
| सि.नं. ६ : अष्टलोहको लिखतको प्रति लिखत दर (रु.) आ.व. २०७८/७९ को तुलनामा २०७९/८० मा भएको वृद्धि (प्रतिशत) | | | | |
| (क) तीन पुस्ता भित्रको | २००० | २००० | २००० | २००० |
| (ख) तीन पुस्ता बाहिरको | २००० | २००० | २००० | २००० |
| सि.नं. ७ : बन्धकीको लिखत अन्तर्गत आ.व. २०७७/७८ को तुलनामा २०७८/७९ मा दरमा भएको वृद्धि (प्रतिशत) | | | | |
| (ख) रु. ३० लाख भन्दा माथिको दृष्टिबन्धकी, भोगबन्धकी र लख बन्धकीको लिखतको थैली अंकमा | ०.५०% | ०.५०% | ०.५०% | ०.५०% |
| सि.नं. १२ : अन्य जुनसुकै प्रकारको लिखतको दर आ.व. २०७८/७९ को तुलनामा आ.व. २०७९/८० मा भएको वृद्धि (प्रतिशत) (क) रकम खुलेकोमा | | | | |
| | १% | १.५% | २% | १% |
| सि.नं. : १३ अधिकारनामा, मञ्जुरीनामा र अख्तियारनामाको लिखतको दरमा आ.व. २०७८/ ७९ को तुलनामा २०७९/८० मा भएको वृद्धि (प्रतिशत) | | | | |
| | १००० | १००० | १००० | १००० |

सेवा शुल्क

| विवरण | महा नगरपालिका | उप महानगरपालिका | नगरपालिका | गाउँपालिका |
|---|---------------|-----------------|-----------|------------|
| सि.नं. २ वित्तीय धितो: नेपाल राष्ट्र बैंकबाट वित्तीय कारोबार गर्न स्वीकृति प्राप्त बैंक, वित्तीय तथा सहकारी संस्थाबाट दिने कर्जाको धितोबन्धक वा दृष्टिबन्धक लिखतको (झ) अन्तर्गत आ.व. २०७७/७८ मा रु. ५ करोड भन्दा बढी जतिसुकै थैली अंकमा रु. १ लाख सेवा शुल्क निर्धारण भएकोमा आ.व. २०७८/७९ बाट रु. ५ करोडभन्दा बढी रु. २० करोडसम्मको थैली अंकमा रु. १ लाख निर्धारण भएको। सोही (ञ) मा आ.व. २०७८/७९ बाट रु. २० करोडभन्दा बढी रु. १ अर्बसम्मको थैली अंकमा रु. १ लाख ५० हजार सेवा शुल्क निर्धारण भएको। | | | | |
| सोही (ट) मा आ.व. २०७८/७९ बाट रु. १ अर्बभन्दा बढी जतिसुकैको थैली अंकमा रु. २ लाख ५० हजार सेवा शुल्क निर्धारण भएको | | | | |
| सि.नं. ५ : दाखिल खारेज शुल्क अन्तर्गत (छ) मा अदालत वा न्यायिक निकायको फैसला बमोजिम लिलाम बढाबढ गरी दाखिल खारेज गर्दा प्रति मिसिल आ.व. २०७७/७८ मा महानगरका लागि रु. ५००० र उपमहानगरपालिकाका लागि रु. ३००० भएकोमा आ.व. २०७८/७९ देखि घटाई क्रमशः रु. २००० र रु. १५०० निर्धारण भएको। | | | | |
| सि.नं. ६ : नामसारी अन्तर्गत (क) तीनपुस्ता भित्रको नामसारी गर्न | | | | |
| • जतिसुकै भए पनि आ.व. २०७७/७८ का लागि निर्धारित दर (रु.) | ५०० | ३०० | २०० | १०० |

| विवरण | महा नगरपालिका | उप महानगरपालिका | नगरपालिका | गाउँपालिका |
|---|---------------|-----------------|-----------|------------|
| • आ.व. २०७८/७९ का लागि निर्धारित दर (रु.) (अ) १ करोडसम्म भएकोमा | ५०० | ३०० | २०० | १०० |
| • (आ) १ करोडभन्दा माथि भएकोमा | १००० | ८०० | ६०० | ४०० |
| • जतिसुकै भए पनि आ.व. २०७९/८० का लागि निर्धारित दर (रु.) | १५०० | १२०० | १००० | ६०० |
| सि.नं.६ नामसारी अन्तर्गत (ख) तीनपुस्ता भन्दा बाहिरको नामसारी गर्न जतिसुकै भए पनि आ.व. २०७७/७८ का लागि निर्धारित दर (रु.) | १५०० | १२०० | १००० | ७०० |
| • आ.व. २०७८/७९ का लागि निर्धारित दर (रु.) (अ) १ करोडसम्म भएकोमा | १५०० | १२०० | १००० | ७०० |
| • आ.व. २०७८/७९ का लागि निर्धारित दर (रु.) (आ) १ करोडभन्दा माथि भएकोमा | ३००० | २५०० | २००० | १००० |
| • जतिसुकै भए पनि आ.व. २०७९/८० का लागि निर्धारित दर (रु.) | ५००० | ४००० | ३००० | २००० |
| सि.नं. : ७ हाल साविक अन्तर्गत पुनः नापजाँच पछिको श्रेस्ता हाल साविक तथा अध्यावधिक गर्दा प्रति मिसिलको दरमा आ.व. २०७८/७९ को तुलनामा आ.व. २०७९/८० मा भएको वृद्धि (%) | २७५ | २३३ | ३०० | ४०० |
| सि.नं. : ८ घर कायम अन्तर्गत (क) श्रेस्ता पूर्जामा घर जनाउने प्रति निवेदनमाको दरमा आ.व. २०७८/७९ को तुलनामा आ.व. २०७९/८० मा भएको वृद्धि (%) | ६० | ५० | २५ | १०० |
| (ग) रोक्का शुल्क: | | | | |
| सि.नं. १० रजिष्ट्रेशन रोक्का शुल्क (उ) ऋण अंक खुलेकोलाई आ.व. २०७७/७८ मा रकम निर्धारण नभएको तथा आ.व. २०७८/७९ मा सि.नं. २ बमोजिम उल्लेख भएकोलाई आ.व. २०७९/८० मा स्पष्ट गरिएको | | | | |
| सि.नं. १० रजिष्ट्रेशन रोक्का शुल्क (ऊ) ऋण अंक नखुलेकोमा अन्तर्गत आ.व. २०७७/७८ मा रकम निर्धारण गरिएकोमा आ.व. २०७८/७९ मा दर निर्धारण नभएको पाइन्छ। पुनः आ.व. २०७९/८० मा आ.व. २०७७/७८ को तुलनामा भएको वृद्धि (%) | १०० | ७५ | ६७ | १०० |

(ग) राजस्व प्रशासन

घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्कको प्रशासन आ.व. २०७४/७५ देखि संघ सरकारले तोकेको निकाय अर्थात भूमिसुधार तथा मालपोत वा मालपोत कार्यालय मार्फत निरन्तर रूपमा हुँदै आएको छ। देशभरिमा कुल भूमिसुधार तथा मालपोत कार्यालय वा मालपोत कार्यालय गरी कुल १३५ वटा कार्यालयहरू रहेकोमा प्रदेश नं. १ अन्तर्गतका १४ वटा जिल्लामा ३ वटा भूमिसुधार तथा मालपोत कार्यालय र २२ वटा मालपोत कार्यालयहरू गरी जम्मा २५ वटा कार्यालयहरू विभिन्न जिल्लाहरूमा छरिएर रहेका छन्। उक्त जिल्ला र कार्यालयहरूको विवरण देहायको तालिका १९ मा प्रस्तुत गरिएको छ।

तालिका १९ : भूमिसुधार तथा मालपोत कार्यालयहरूको विवरण

| क्र.सं. | जिल्ला | भूमिसुधार तथा मालपोत कार्यालय | मालपोत कार्यालय | कैफियत |
|---------|------------|-------------------------------|---------------------------|--------|
| १ | ताप्लेजुङ | | ताप्लेजुङ | १ वटा |
| २ | पाँचथर | | पाँचथर | १ वटा |
| ३ | इलाम | | इलाम र मंगलबारे | २ वटा |
| ४ | झापा | भद्रपुर | दमक | २ वटा |
| ५ | तेह्रथुम | | तेह्रथुम र सक्रान्ती बजार | २ वटा |
| ६ | धनकुटा | | धनकुटा | १ वटा |
| ७ | मोरङ | विराटनगर | बेलबारी र रंगेली | ३ वटा |
| ८ | सुनसरी | इनरुवा | धरान | २ वटा |
| ९ | संखुवासभा | | खाँदवारी र चैनपुर | २ वटा |
| १० | भोजपुर | | भोजपुर र दिङ्गला | २ वटा |
| ११ | खोटाङ | | दिक्तेल र खोरोङबजार | २ वटा |
| १२ | सोलुखुम्बु | | सोलुखुम्बु | १ वटा |
| १३ | ओखलढुङ्गा | | ओखलढुङ्गा र खिजी | २ वटा |
| १४ | उदयपुर | | गाईघाट र कटारी फलाटे | २ वटा |

स्रोत: भूमि व्यवस्थापन तथा अभिलेख विभागको वेवसाइट

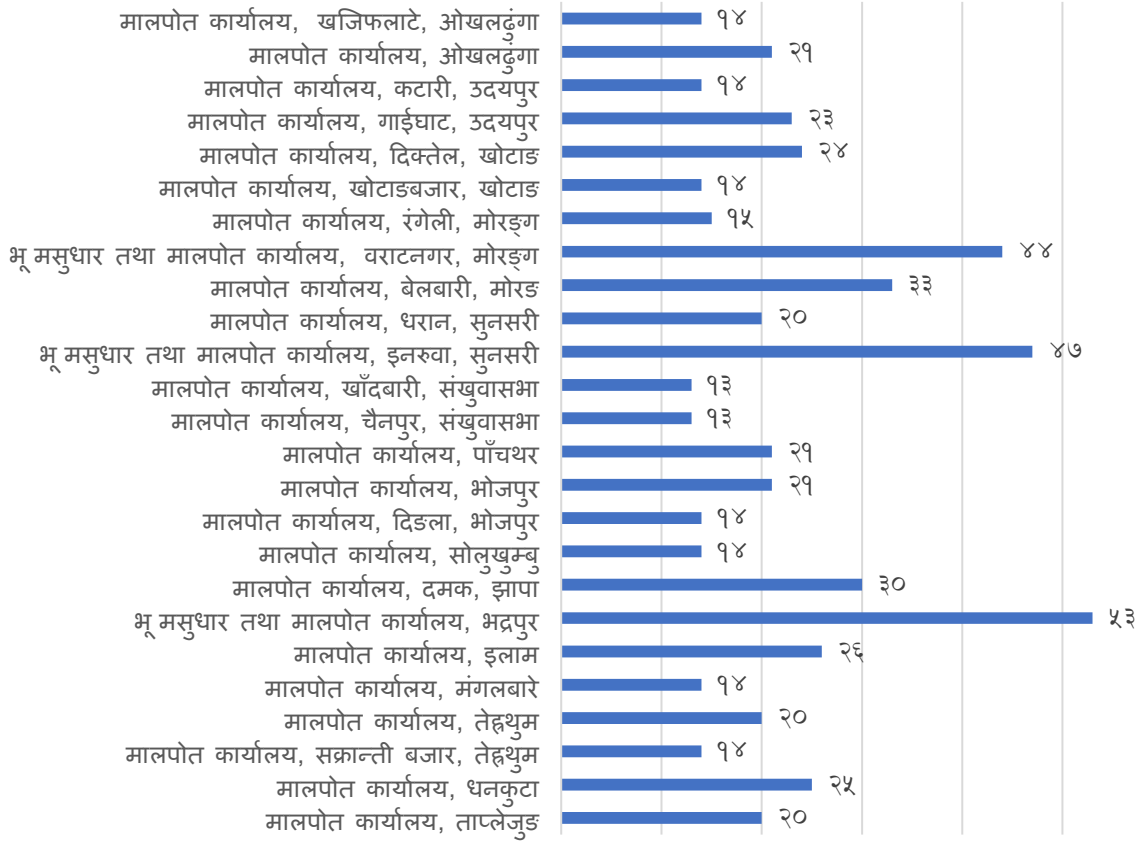
यसरी यस प्रदेशका मोरङ जिल्लामा ३ वटा, इलाम, झापा, तेह्रथुम, सुनसरी, संखुवासभा, भोजपुर, खोटाङ, ओखलढुङ्गा र उदयपुर गरी ९ जिल्लामा २/२ वटा तथा ताप्लेजुङ, पाँचथर, धनकुटा र सोलुखुम्बु गरी ४ जिल्लामा १ वटाका दरले कार्यालयहरू रहेका छन्। जसमध्ये झापा, मोरङ र सुनसरीमा १/१ वटा जिल्ला भूमिसुधार तथा मालपोत कार्यालयहरू रहेका छन् भने बाँकी २२ वटा मालपोत कार्यालयहरू छन्। यी कार्यालयहरूबाट सेवाग्राहीको चापलाई मध्यनजर गरी स्थानीय तहहरूको समूह बनाई फाँटहरूको व्यवस्था गरी सेवा प्रवाह गर्ने गरेका छन्।

कानूनद्वारा प्रदेशले लगाएको घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क सङ्कलन स्थानीय सरकारमार्फत हुने व्यवस्था भए तापनि स्थानीय तहमा मालपोत सम्बन्धी कार्य नभई संघीय इकाईका रूपमा रहेको मालपोत कार्यालय मार्फत भइरहेको छ। यसले गर्दा मालपोत कार्यालयमा प्रशासनिक व्यवस्थापनमा कठिनाई भएको देखिन्छ।

(घ) मानव संसाधनको अवस्था

देशभरिमा कुल ३११७ जनशक्तिको दरबन्दी रहेकोमा प्रदेश नं. १ मा ५६७ जनाको (करिव १८ प्रतिशत) दरबन्दी रहेको छ (आ.व. २०७७/७८ को वार्षिक प्रतिवेदन अनुसार)। जसमध्ये सबैभन्दा बढी २५.४० प्रतिशत कार्यालय सहयोगी, २५.२२ प्रतिशत खरिदार र २४.३४ प्रतिशत नायब सुब्बाको दरबन्दी रहेको छ। त्यसैगरी क्रमशः ८.११ प्रतिशत कम्प्युटर अपरेटर, ७.७६ प्रतिशत मालपोत अधिकृत पदको दरबन्दी रहेको छ। बाँकी दरबन्दी प्रमुख मालपोत अधिकृत, लेखा अधिकृत, लेखापाल, सहलेखापाल, टाइपिष्ट, मुखिया, हलुका सवारी चालक पदको रहेको छ। कार्यालयगत आधारमा दरबन्दी संख्याको विवरण देहायको चित्रमा देखाईको छ:

भूमिसुधार तथा मालपोत कार्यालयहरूको दरबन्दी विवरण २०७७-७८



स्रोत: भूमि व्यवस्थापन तथा अभिलेख विभागको आ.व. २०७७/७८ को वार्षिक प्रतिवेदन ।

(ड) राजस्व सङ्कलनमा प्रयोग भएको प्रविधि

सरकारी सेवा प्रवाहलाई छिटो, छरितो, व्यवस्थित एवं प्रभावकारी बनाउन सूचना प्रविधिको विकास र प्रयोगको अभ्यास बढ्दै गएको छ । नेपाल सरकारले जग्गा प्रशासनलाई समय सापेक्ष परिमार्जन गर्दै सूचना प्रविधिमा आधारित बनाउने उद्देश्यले आवश्यक नीतिगत व्यवस्था सहित विभिन्न प्रणालीहरूको विकास गरी कार्यान्वयनमा ल्याएको छ । मुख्य प्रणालीहरूमा (१) पब्लिक एक्सेस मोडेल (पाम) प्रणाली, (२) भूमिसुधार तथा मालपोत कार्यालयमा भू-अभिलेख सूचना व्यवस्थापन प्रणाली – एल.आर.आई.एम.एस. (Land Records Information Management System – LRIMS), तथा (३) अभिलेख व्यवस्थापन प्रणाली (डिएमएस) हुन् ।

मालपोत नियमावली, २०३६ (छैठौँ संशोधन) को नियम २३ क (२) को व्यवस्था अनुसार सेवाग्राहीले इन्टरनेटको माध्यमबाट जग्गा प्रशासन सम्बन्धी काम गर्न सकिने गरी विकास गरिएको प्रणाली पाम प्रणाली हो । यसमा भू-सेवा केन्द्रको सञ्चालन तथा व्यवस्था सम्बन्धी काम गर्न सकिनेछ । यस प्रणालीबाट जग्गा धनी आफैँले वान टाइम पासवर्ड (ओटिपी) को प्रयोग गरी अनलाइन प्रणालीमा पहुँच प्राप्त गरी निवेदन भर्न सक्ने भएकोले लेखापढी व्यवसायी मार्फत कारोबार गर्ने प्रचलनको विकल्पका रूपमा सेवाग्राही आफैँले फाराम भर्न सक्ने व्यवस्था छ । साथै बैंक तथा वित्तीय संस्थाले ऋणीको जग्गा रोक्का र फुकुवा आफ्नै कार्यालयबाट गर्नसक्ने प्रविधिको विकास भएको छ । भू-सेवा केन्द्र सञ्चालनका लागि बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरू, स्थानीय तहहरू र लेखापढी व्यवसायीहरूले सञ्चालन गर्न सक्छन् । पाम प्रणाली देशका ६५ स्थानमा वि.सं. २०७८ कार्तिकदेखि सुरुवात गरिएको हो ।

विभागले वि.सं. २०७२ श्रावण २५ देखि कलंकी मालपोत कार्यालयबाट शुरु गरेको अनलाइनमा आधारित भू-अभिलेख सूचना व्यवस्थापन प्रणाली (एलआरआईएमएस) २०७८ कार्तिकदेखि देशभरका १२६ स्थानका मालपोत कार्यालयहरूमा कार्यान्वयनमा आएको छ । यो पाम प्रणालीबाट भएका सूचनाहरूको अनलाइन अभिलेख बस्ने प्रणाली हो ।

कार्यालयका जग्गा प्रशासनसँग सम्बन्धित अभिलेखहरूलाई विद्युतीय स्वरूपमा अभिलेखन गर्न कार्यालयमा रहेका मोठ तथा रोक्का सेस्ताहरूलाई स्क्यानइङ्ग गरी भण्डारण गर्ने प्रणाली अभिलेख व्यवस्थापन प्रणाली (डिएमएस) हो । हालसम्म अधिकांश अभिलेखहरू उक्त प्रणालीमा अपलोड भएको व्यहोरा भूमि व्यवस्थापन तथा अभिलेख केन्द्रको वार्षिक प्रतिवेदनमा उल्लेख छ ।

यी प्रणालीहरू विकास भएतापनि मालपोत कार्यालयका मोठहरूको डिजिटाइज कार्य पूर्ण नभएको, तथ्याङ्कको शुद्धतामा प्रश्न रहेकाले तथा सूचना प्रणालीप्रति पूर्ण विश्वस्त र अभ्यस्त नभएकोले दोहोरो प्रणाली अवलम्बन गर्दा बढी स्रोत साधन तथा समय लागेको, मालपोत कार्यालयहरूको जनशक्ति विकसित सूचना प्रविधि प्रणाली अनुरूप अद्यावधिक भइ नसकेको तथा पर्याप्त जनशक्ति नभएको, इन्टरनेट तथा सर्भरको विश्वसनीयता कम भएको हुँदा बेलाबेलामा सेवा अवरुद्ध हुने जस्ता कारणहरूले गर्दा यी प्रणालीहरू अझै पूर्ण विश्वसनीय रूपमा कार्यान्वयनमा आउन सकेको देखिँदैन । मालपोत कार्यालयहरू विद्यमानमा संक्रमण कालका रूपमा कार्य गर्दा संघ सरकारले थप जनशक्ति व्यवस्था गर्न नसक्ने र स्थानीय तहमा कार्यजिम्मेवारी हस्तान्तरण नभएको अवस्थामा हालको मालपोत कार्यालयका लागि आवश्यक जनशक्ति तथा कार्यालय व्यवस्थापन कार्य प्रभावित भएको धारणा सम्बन्धित पक्षको रहेको छ । यसबाट नागरिकलाई प्रवाह हुने सेवामा पनि असर परेको देखिन्छ । यसैगरी कानूनतः मालपोत कार्यालयहरू स्थानीय तहमा हस्तान्तरण हुनुपर्नेमा आजसम्म हुन नसकेको कारण यी कार्यालयको क्षमता विकास लगायतका क्षेत्रमा संघ सरकार र स्थानीय सरकारहरूले अपनत्व लिएर काम गर्न नसक्दा यी कार्यालयहरूको क्षमता विकास हुन सकेको छैन । यसले गर्दा मालपोत कार्यालय र नापी कार्यालयको कार्यक्षमता चुस्त र दुरुस्त बनाउन सकिएको छैन ।

३.२ सवारी साधन कर

(क) संवैधानिक तथा कानूनी व्यवस्था

नेपालको संविधान

मुलुकको सवारी साधन तथा यातायातको विषयमा तीन तहको अधिकारको विवेचना गर्दा नेपालको संविधानको अनुसूची ५ बमोजिम संघले राष्ट्रिय यातायात नीति, रेल तथा राष्ट्रिय लोकमार्गको व्यवस्थापन गर्नेछ भने अनुसूची ६ बमोजिम सवारी साधन कर र यातायात सम्बन्धी विषय प्रदेशको क्षेत्राधिकारमा रहेको छ । साथै अनुसूची ८ बमोजिम सवारी साधन कर स्थानीय तहको अधिकार भित्र पनि रहेको छ । यसका अतिरिक्त, अनुसूची ९ बमोजिम सवारी साधन अनुमति पत्र भने संघ, प्रदेश तथा स्थानीय तहको साझा अधिकारको सूचीमा रहेको छ । यसरी तीन तहको अधिकारको फरक सूचीले वस्तुको ढुवानी तथा सेवाको विस्तारमा हुनसक्ने अवरोधलाई दृष्टिगत गरी संविधानको धारा २३६ मा एक प्रदेश वा स्थानीय तहबाट अर्को प्रदेश वा स्थानीय तहको क्षेत्रमा हुने वस्तुको ढुवानी वा सेवाको विस्तार वा कुनै प्रदेश वा स्थानीय तहको क्षेत्रमा हुने वस्तुको ढुवानी वा सेवाको विस्तारमा कुनै किसिमको बाधा अवरोध गर्न वा कुनै कर, शुल्क, दस्तुर वा महसूल लगाउने वा त्यस्तो सेवा वा वस्तुको ढुवानी वा विस्तारमा कुनै किसिमको भेदभाव गर्न नपाइने व्यवस्था गरिएको छ ।

उपर्युक्त संवैधानिक व्यवस्थाको आधारमा मुलुकको सवारी साधन करको अधिकार प्रदेश तथा स्थानीय तहमा मात्र रहेको तर राष्ट्रिय यातायात नीति बनाउने र रेल तथा राष्ट्रिय लोकमार्गको व्यवस्थापनको कार्य संघमा र यातायातको विषय प्रदेशमा

पनि रहेको छ । तीन तहको साझा अधिकारको सूचीमा पर्न गएको सवारी साधन अनुमति पत्रको विषय भने नेपाल सरकारबाट स्वीकृत कार्यविस्तृतीकरण प्रतिवेदन (Unbundling Report) को आधारमा प्रदेशको कार्यसूचीमा रहेको देखिन्छ ।

कानूनी व्यवस्था

अन्तर-सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ अनुसार तीनवटै तहका सरकारको वित्त व्यवस्थापन (मूलतः राजस्व बाँडफाँट, अनुदान, ऋण, बजेट, खर्च) लाई प्रभावकारी रूपमा सञ्चालन गर्न वित्तीय संघीयता कार्यान्वयनको शुरुवातमा छाता ऐन (Umbrella Act) को रूपमा आएको यो ऐनको दफा ५ को उपदफा १ को खण्ड (क) बाट सवारी साधन करलाई व्यवस्थित गरेको छ । उल्लिखित दफाको प्रावधान अनुसार सवारी साधन करको दर प्रदेशले लगाउने र उठाउने व्यवस्था छ । तर टाँगा, रिक्सा, अटोरिक्सा र विद्युतीय रिक्सामा सवारी साधन करको दर गाउँपालिका वा नगरपालिकाले लगाउने र उठाउने व्यवस्था छ । यसका अतिरिक्त ऐनको दफा ६ (क) मा सवारी साधन करको बाँडफाँटको प्रावधान राखिएको छ । यस अन्तर्गत प्रदेशले लगाएको र उठाएको सवारी साधन कर वापतको उक्त रकम प्रदेश सरकारले प्रदेश विभाज्य कोषमा जम्मा गर्नुपर्ने, त्यसरी जम्मा भएको रकममध्ये साठी प्रतिशत प्रदेश सरकारलाई र चालीस प्रतिशत स्थानीय तहहरूलाई बाँडफाँट गर्नुपर्ने व्यवस्था छ । विभाज्य कोषमा जम्मा भएको रकममध्ये प्रदेश सरकारले प्राप्त गर्ने रकम प्रदेश सञ्चित कोषमा र स्थानीय तहलाई प्रदान गर्ने रकम रकम स्थानीय विभाज्य कोषमा जम्मा गर्नु पर्नेछ । स्थानीय विभाज्य कोषमा जम्मा भएको रकम राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगले निर्धारण गरेको आधार र ढाँचा बमोजिम प्रदेश सरकारले स्थानीय तहलाई बाँडफाँट गर्नुपर्ने प्रावधान छ ।

उल्लिखित प्रावधान अनुरूप राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगले आर्थिक वर्ष २०७८/७९ को लागि प्रदेश सरकारबाट स्थानीय तहलाई हस्तान्तरण हुने सवारी साधन करको बाँडफाँटको सिफारिस गर्दा मूलतः ३ वटा आधार र त्यसको भाराङ्क (Weightage) तोकेको छः

(क) सम्बन्धित स्थानीय तहमा रहेको जनसंख्या: ४५ प्रतिशत

(ख) सडकको लम्बाई: ५० प्रतिशत

(ग) वनले ढाकेको क्षेत्रफल: ५ प्रतिशत

उल्लिखित आधार अनुसार स्थानीय विभाज्य कोषमा रहेको यस्तो रकम प्रदेश सरकारले सम्बन्धित स्थानीय सञ्चित कोषमा जम्मा गर्नुपर्ने र आर्थिक वर्षको अन्तिम महिनामा हिसाब मिलान गर्नुपर्ने व्यवस्था पनि प्रस्तुत ऐनले गरेको छ ।

स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ को दफा ११ (२) (घ) ले स्थानीय तहलाई सवारी साधन कर सम्बन्धी अधिकार प्रदान गरेको छ । त्यसैगरी सोही दफाको (४) (ट) ले स्थानीय तहलाई यातायात व्यवस्थापन सम्बन्धी स्थानीय नीति, कानून, मापदण्ड, योजना कार्यान्वयन र नियमन गर्ने अधिकार प्रदान गरेको छ । यसैगरी, दफा १२ (१) को (ग) को (३३) अनुसार वडाले प्रचलित कानूनको अधिनमा रही सवारी साधन कर सङ्कलन गरी सम्बन्धित गाउँपालिका तथा नगरपालिकामा प्रतिवेदन सहित रकम बुझाउनु पर्ने व्यवस्था रहेको छ ।

सवारी दुर्घटनाको रोकथाम गर्न, दुर्घटनाबाट पिडित पक्षलाई क्षतिपूर्ति दिलाउन, बीमा व्यवस्था गर्न र सर्वसाधारण जनतालाई सरल एवं सुलभ ढंगबाट यातायात सुविधा उपलब्ध गराउन, यातायात सेवालालाई सुदृढ, सक्षम तथा प्रभावकारी बनाउने उद्देश्यले सवारी तथा यातायात व्यवस्था ऐन, २०४९ र नियमावली, २०५४ संघीयता कार्यान्वयन पूर्व नै बनेको हुन् । यो ऐनमा एकातिर सवारी साधन सम्बन्धी व्यवस्थाहरू उल्लेख गरिएको छ भने अर्कोतिर यातायात व्यवस्थापनका प्रावधानहरू राखिएका छन् । कूल ११ वटा परिच्छेदहरू रहेको यस ऐनमा सवारी साधनको व्यवस्थापन अन्तर्गत सवारीको वर्गीकरण, सवारी दर्ता सम्बन्धी व्यवस्था, चालक अनुमति पत्र सम्बन्धी व्यवस्था र परिचालक अनुमति पत्र सम्बन्धी व्यवस्था उल्लेख

छ । यातायात सम्बन्धी विषय अन्तर्गत मूलतः यातायात व्यवस्थापन, आवागमन नियन्त्रण, बीमा सम्बन्धी व्यवस्था उल्लेख छन् । यसका अतिरिक्त, परिच्छेद ९ मा निकाय र समितिहरूको काम, कर्तव्य र अधिकार, परिच्छेद १० मा सजाय सम्बन्धी व्यवस्था र परिच्छेद ११ मा विविध व्यवस्था उल्लेख गरिएको छ ।

सवारी तथा यातायात व्यवस्था नियमावली, २०५४ ले सवारी तथा यातायात सम्बन्धी प्रक्रियागत व्यवस्थाहरू गरेको छ । यसमा मूलतः सवारी दर्ता, सार्वजनिक सवारीको वर्गीकरण, स्तर तथा क्षमता, चालक अनुमति पत्र, परिचालक अनुमति पत्र, यातायात व्यवस्थापन, बीमा, प्रशिक्षण केन्द्र, कारखाना, वर्कशप सञ्चालन, यातायात सेवाका कर्मचारीहरूको पारिश्रमिक सेवाका शर्त र सुविधाका साथै विविध व्यवस्थाहरूको कार्य सञ्चालन प्रक्रिया र त्यसका ढाँचाहरू (Formats) अनुसूचीमा तोकिएका छन् ।

नियमावलीको अनुसूची ३ मा सवारी दर्ता र सरुवा दस्तुर, अस्थायी दर्ता दस्तुर, विदेशमा दर्ता भएका सवारी चलाउने अनुमति दस्तुर, दर्ता प्रमाण पत्र नवीकरण दस्तुर, नामसारी दस्तुर, प्रतिलिपि दस्तुर, चालक अनुमति पत्र दस्तुर, जाँचपास प्रमाण पत्र दस्तुर, वर्कशप सञ्चालन दस्तुर जस्ता दस्तुरहरू तोकिएका छन् । सिद्धान्ततः यस्ता दस्तुरहरू ऐनबाटै तोकिनु पर्नेमा नियमावलीबाट तोकिएको उपयुक्त देखिँदैन । निश्कर्षमा भन्नुपर्दा, वित्तीय संघीयताको कार्यान्वयनसँगै सवारी साधन तथा यातायात र व्यवस्थापनको विषय प्रदेशको कार्यक्षेत्रमा परेको छ । यस अनुरूप यसको प्रशासन गर्ने कार्यालयहरू प्रदेशमा हस्तान्तरण भइसकेका छन् । कतिपय प्रदेश सरकारहरूले यसलाई व्यवस्थित गर्ने सिलसिलामा प्रदेश सवारी साधन तथा यातायात व्यवस्था सम्बन्धी ऐनहरू जारी गरिसकेका छन् भने कतिपय प्रदेशहरू ऐन जारी गर्ने क्रममा छन् । यस सन्दर्भमा, प्रस्तुत ऐन तथा नियमका अधिकांश प्रावधानहरू संघीय सरकारका लागि निष्प्रभावी देखिएका छन् । यसर्थ, मुलुकको सवारी तथा यातायात व्यवस्थापनलाई प्रदेशगत एकरूपता कायम गर्न, नेपालको संविधानको अनुसूची ५ बाट प्राप्त संघको अधिकार सूची अन्तर्गतको राष्ट्रिय यातायात नीति, रेल तथा राष्ट्रिय लोकमार्गको व्यवस्थापन गर्न र अनुसूची ९ को संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको अधिकारको साझा सूची अन्तर्गतको सवारी साधन अनुमति पत्रको हालको प्रदेशले कार्यान्वयन गरेको अधिकार प्रदेशलाई कानूनी रूपले प्रदान गर्न यस सम्बन्धी छुट्टै संघीय ऐन ल्याउन भने अपरिहार्य देखिन्छ ।

चालक अनुमति पत्र, नवीकरण तथा प्रदेशभित्र सवारी दर्ता, नामसारी, नवीकरण भई सञ्चालन हुने सवारी साधनको व्यवस्थित, मर्यादित, अनुशासित तरिकाले सञ्चालन, नियमन, व्यवस्थापन, सर्वसाधारणलाई सहज, सरल र सुविधायुक्त यातायात सेवा उपलब्ध गराउन, सार्वजनिक यातायातको रुट अनुमति, गुणस्तर, भाडा निर्धारण र नियमन तथा सवारी साधनमा लगानी भएको नेपाली श्रम र पूँजीलाई संरक्षण, प्रवर्द्धन तथा विकास गर्न, यातायात क्षेत्रमा रोजगारी श्रृजना गरी संरक्षण गर्न, सवारी दुर्घटनालाई न्यूनीकरण गर्न, सडक सुरक्षा तथा सुशासनको प्रत्याभूति गर्न, रज्जुमार्ग, जलमार्ग लगायतका वैकल्पिक यातायात प्रविधिको प्रवर्द्धन, योजना र आयोजनालाई सुदृढ, सक्षम तथा प्रभावकारी बनाउन कानूनी व्यवस्था गर्नका लागि प्रदेश नं. १ सरकारले प्रदेश सवारी तथा यातायात व्यवस्था ऐन, २०७६ ल्याएको छ । यस सम्बन्धी संघीय ऐनलाई आधार बनाई तर्जुमा गरिएको यो ऐन, २०७६ साल असोज ५ गते प्रमाणीकरण भई कार्यान्वयनमा आएको छ ।

यस ऐनले प्रदेशभित्रका सवारीको वर्गीकरण, सवारी दर्ता र यस सम्बन्धी प्रक्रियागत व्यवस्था, चालक तथा परिचालक अनुमति पत्र सम्बन्धी व्यवस्था, यातायात व्यवस्थापन (बाटो निर्धारण, बाटो इजाजत, सवारी जाँचपास, नाम पञ्जिकृत, भाडा आदि), आवागमन नियन्त्रण, बीमा सम्बन्धी व्यवस्थापन निकाय, समिति र पदाधिकारीहरूको काम, कर्तव्य र अधिकार, सजाय सम्बन्धी व्यवस्था र विविध व्यवस्थाहरू गरेको छ । प्रस्तुत ऐनभित्र मूलतः देहायबमोजिमका दफाहरू कर तथा गैरकर राजस्वसँग सम्बन्धित छन्:

(१) **सवारी दर्ता (दफा १५)** दरखास्त, प्रमाणपत्र, सक्षमताको प्रमाणपत्र, अस्थायी दर्ता, सरुवा दर्ता, विदेशी सवारी चलाउन अनुमति, दर्ताको प्रमाणपत्र, नवीकरण, नवीकरण ढिला भएमा जरिवाना, पाँचवर्षको एकैपटक नवीकरण,

पुनः दर्ता, सवारीको नामसारी, सवारीको पार्टपूर्जा परिवर्तन गर्दा दिने स्वीकृतिमा लाग्ने दस्तुर, सवारी कर तथा नवीकरण दस्तुर मिनाहा, दर्ताको प्रमाणपत्रको प्रतिलिपि ।

- (२) **चालक अनुमति पत्र:** यस अन्तर्गत दरखास्त, विदेशी राष्ट्रबाट प्राप्त चालक अनुमति पत्रको मान्यता, चालक अनुमति पत्रमा अन्य सवारी समावेश गर्दा, चालक अनुमति पत्र नवीकरण र म्याद नाघेकोमा थप दस्तुर, चालक अनुमति पत्रको प्रतिलिपि आदि ।
- (३) **परिचालक अनुमति पत्र:** दरखास्त, प्रतिलिपि ।
- (४) **बाटो इजाजत पत्र (६ महिना):** दरखास्त, बाटो परिवर्तन, पटके बाटो इजाजत, बहु बाटो इजाजत, बाटो इजाजत पत्र नवीकरण, पुनः बाटो इजाजत पत्रको जरिवाना (दफा ८३), बाटो इजाजत पत्रको प्रतिलिपि, सवारी जाँचपासको दरखास्त, पुनः जाँचपास दरखास्तको थप दस्तुर, यातायात सेवाको श्रम पञ्जीकृत गर्दाको दस्तुर र ५ वर्षपछि हुने यसको नवीकरण शुल्क र म्याद नाघेकोमा थप दस्तुर) ।
- (५) प्रशिक्षण केन्द्र, कारखाना तथा वर्कशप सञ्चालन अनुमति (दफा १५६-१५७) दरखास्त ।
- (६) दण्ड सजाय

- वास्तविक नम्बर वा प्लेट नराखेमा – पचास हजार रुपैयाँसम्म,
- अन्य प्रयोजनमा सवारी साधन प्रयोग गरेमा (दफा १३), चालक अनुमति पत्र बिना सवारी चलाएमा (दफा ४५), सवारीमा तोकिएको संख्या भन्दा बढी मानिस, तोकिएको भन्दा बढी वजन भएको माल वस्तु राखेमा (दफा ११५) रु. पाँच हजार रुपैयाँसम्म,
- अनुमति नलिई विदेशी सवारी चलाएमा (दफा २९), स्वीकृति नलिई पार्टपूर्जा फेरेमा (दफा ३९), बाटो इजाजत पत्र नलिएमा (दफा ७३), यातायात सेवाको नाम पञ्जीकृत नगरेमा (दफा ९१), तोकिएको भाडा भन्दा बढी लिएमा (दफा ९४), आवागमनमा बाधा गरेमा (दफा १२३), दुर्घटनामा परेको सवारी र यात्रीलाई हानी पुऱ्याएमा (दफा १२७) रु. १० हजार रुपैयाँसम्म,
- यो ऐन वा यस अन्तर्गतको नियम वा आदेश विपरित काम गर्नेलाई पाँच हजार रुपैयाँसम्म,
- सवारीलाई मार्ग परिवर्तन गराएमा र यात्रीलाई बन्धक बनाएमा जरिवाना रु. पचास हजार रुपैयाँसम्म,
- चालक, परिचालक, सुरक्षाकर्मी, यात्रीलाई पिटेमा, सवारी रोकेमा, तोडफोड गराएमा वा हानी नोक्सानी पुऱ्याएमा रु. दश हजार रुपैयाँसम्म,
- सडक कसुर गरेमा (दफा १६२) रु. एक हजार देखि दुई हजार रुपैयाँसम्म ।

प्रदेश नं. १ को प्रदेश आर्थिक ऐन, २०७९ को दफा ३ ले सवारी साधन कर सम्बन्धी व्यवस्था गरेको छ र यसको अनुसूची २ मा सवारी साधन करको दर तोकिएको छ । तर टाँगा, रिक्सा, अटोरिक्सा, विद्युतीय रिक्सा (ई-रिक्सा) र पावर ट्रिलरमा भने सम्बन्धित नगरपालिका वा गाउँपालिकाले सवारी साधन कर लगाई असुल गर्नसक्ने प्रावधान रहेको छ । यद्यपि उक्त कर उठाउन आवश्यक पर्ने साधन, स्रोत, प्रविधि, जनशक्ति र कार्यालयको व्यवस्था नभएसम्मका लागि प्रदेश सरकारबाट तोकिएको कार्यालयले सडकलन गर्ने व्यवस्था छ । सवारी साधन कर वापत सडकलन भएको कूल रकममध्ये साठी प्रतिशत प्रदेश सञ्चित कोषमा र चालीस प्रतिशत रकम स्थानीय विभाज्य कोषमा दाखिला गरी स्थानीय तहलाई तोकिए बमोजिम बाँडफाँट गरी स्थानीय सञ्चित कोषमा मासिक रुपमा दाखिला गर्नुपर्ने प्रावधान रहेको छ ।

प्रस्तुत ऐनको दफा ४ ले प्रदेश भित्रको सवारी चालक अनुमति पत्रको इजाजत दस्तुर, दरखास्त दस्तुर, नवीकरण दस्तुर, जरिवाना, पुनः प्रयोगात्मक परीक्षा (रि-ट्रायल) दस्तुर, सवारीको दर्ता किताब (ब्लुबुक) दस्तुर, सवारी जाँचपास दस्तुर तथा सोको नवीकरण दस्तुर र अन्य दस्तुर सम्बन्धी व्यवस्था प्रचलित सवारी तथा यातायात सम्बन्धी कानून बमोजिम लगाइने र

प्रदेश सरकारबाट तोकिएको कार्यालयले सङ्कलन गरी सिधै प्रदेश सञ्चित कोषमा दाखिल गर्नुपर्ने उल्लेख छ । प्रदेश नं. १ को तीन आर्थिक वर्षको प्रदेश आर्थिक ऐनले तय गरेका सवारी साधन करका दरहरू तालिका २० मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

तालिका २० : सवारी साधन करका दरहरू

| राजस्वका शीर्षकहरू | आर्थिक वर्ष २०७७/७८ | आर्थिक वर्ष २०७८/७९ | आर्थिक वर्ष २०७९/८० |
|--|------------------------|------------------------|------------------------|
| क) कार, जिप, भ्यान, माइक्रो बस (निजी) | | | |
| (अ) १००० सी.सी.सम्म | २१००० | २१००० | २२१०० |
| (आ) १००१ देखि १५०० सी.सी.सम्म | २३००० | २३००० | २४२०० |
| (इ) १५०१ देखि २००० सी.सी.सम्म | ३०००० | ३०००० | ३१५०० |
| (ई) २००१ देखि २५०० सी.सी.सम्म | ३५५०० | ३५५०० | ३७५०४ |
| (उ) २५०१ देखि २९०० सी.सी.सम्म | ४१००० | ४१००० | ४३१०० |
| (उ) २९०१ देखि माथि सबै | ५८५०० | ५८५०० | ६१५०० |
| (ख) डोजर, एक्साभेटर, लोडर, जस्ता मेशिनरी उपकरण | | | |
| (अ) डोजर, एक्साभेटर, लोडर,रोलर, ट्रिपर, क्रेनजस्ता मेशिनरी उपकरण | ३८५०० | ३८५०० | ४०५०० |
| (आ) मिनि ट्रिपर, ट्रिपर | २७५०० | २७५०० | २९००० |
| (ग) अटोरिक्सा, थ्रिहिलर र टेम्पो, ट्रेक्टर र पावर टिलर, | | | |
| (अ) अटोरिक्सा, थ्रिहिलर र टेम्पो | ५००० | ५००० | ५००० |
| (आ) ट्रेक्टर (कृषि प्रयोजन) | ४५०० | ४५०० | ५००० |
| (इ) पावर टिलर | ३५०० | ३५०० | ४००० |
| (ई) मिनिट्रक, मिनिबस | २४५०० | २४५०० | २५७०० |
| (उ) ट्रक, बस | ३३००० | ३३००० | ३५००० |
| (घ) मोटर साइकल/स्कुटर | | | |
| (अ) १२५ सी.सी.सम्मको | २८०० | २८०० | ३००० |
| (आ) १२६ सी.सी. देखि १६० सम्मको | | - | ४००० |
| (इ) १६१ सी.सी. देखि २५० सम्मका | | - | ५५०० |
| (ई) १२६ सी.सी. २५० सम्मका | ४५०० | ४५०० | - |
| (उ) १५० सी.सी. २२५ सम्मका | | - | - |
| (ऊ) २५१ सी.सी. ४०० सम्मका | ९००० | ९००० | १०००० |
| (ए) ४०१ सि सि र सो देखि माथि | १६५०० | १६५०० | १८००० |
| २. सार्वजनिक सवारीमा दर्ता भएका सवारी साधनमा देहाय बमोजिम सवारी कर लाग्ने छ । | | | |
| सवारी किसिम | | | |
| (क) कार, जिप, भ्यान, माइक्रोबस | | | |
| (अ) १३०० सी.सी.सम्म | ८५०० | ८५०० | ९००० |
| (आ) १३०१ सी.सी. देखि २००० सि.सी.सम्म | ९५०० | ९५०० | १०५०० |
| (इ) २००१ सी.सी. देखि २९०० सि.सी.सम्म | ११५०० | ११५०० | १२७५० |
| (ई) २९०१ सी.सी.देखि ४००० सि.सी.सम्म | १३५०० | १३५०० | १५००० |
| (उ) ४००१ सी.सी.देखि माथि सबै | १६००० | १६००० | १८००० |

| राजस्वका शीर्षकहरु | आर्थिक वर्ष २०७७/७८ | आर्थिक वर्ष २०७८/७९ | आर्थिक वर्ष २०७९/८० |
|--|------------------------|------------------------|------------------------|
| (ख) डोजर, स्काभेटर, लोडर, रोलर, ट्रीपर, क्रेन जस्ता मेसिनरी उपकरण | १८००० | १८००० | २०००० |
| (ग) अटो रिक्सा, श्रीहिलर, टेम्पो, टेक्टर र पावर टिलर | | | |
| (अ) अटोरिक्सा, श्रीहिलर र टेम्पो | ४५०० | ४५०० | ४५०० |
| (आ) टेक्टर | २७०० | २७०० | ४५०० |
| (इ) पावर टिलर | २५०० | २५०० | ३००० |
| (घ) मिनिट्रक, मिनिबस | १२५०० | १२५०० | १४००० |
| (ङ) मिनि ट्रीपर | १५००० | १५००० | १६७५० |
| (च) ट्रक, बस, तेल टयांकर | १७००० | १७००० | १९००० |
| ३. निजी विद्युतीय सवारी साधनमा देहायबमोजिम सवारी साधन कर लाग्ने छ । | | | |
| (क) इ रिक्सा तथा अन्य तिन पाङ्ग्रे सवारी | | | |
| (अ) ५०० देखि १००० वाट सम्म | | | २००० |
| (आ) १००१ देखि १५०० वाट सम्म | | | २५०० |
| (इ) १५०० वाट देखि २००० सम्म | | | ३००० |
| (ई) २००० वाट भन्दा माथि सबै | | | ४००० |
| (ख) मोटरसाइकल, स्कुटर | | | |
| (अ) ३५० वाट देखि १००० सम्म | | | २००० |
| (आ) १००१ देखि १५०० वाट सम्म | | | २५०० |
| (इ) १५०१ वाट देखि २००० सम्म | | | ३००० |
| (ई) २००१ वाट भन्दा माथि सबै | | | ४००० |
| (ग) कार, जिप, भ्यान, माइक्रोबस र बस | | | |
| (अ) ५० देखि १२५ किलोवाट सम्म | | | १५००० |
| (आ) १२६ देखि २०० किलोवाट सम्म | | | २०००० |
| (इ) २०१ किलोवाट देखि माथि सबै | | | ३०००० |

नोट:-(आ.व. २०७७/७८ र २०७८/७९ मा विद्युतीय सवारीमा करको व्यवस्था नरहेको)

स्रोत: प्रदेश नं. १ प्रदेश आर्थिक ऐन २०७७/७८, २०७८/७९ र २०७९/८०

सवारी साधन करको दरबाट निजी विद्युतीय सवारी साधनलाई प्रवर्द्धन गर्न खोजेको देखिन्छ । ई-रिक्सा तथा अन्य तीन पाङ्ग्रे सवारी साधनमा र मोटरसाइकल/स्कूटरका लागि सि.सि. अनुसार न्यूनतम २,०००।- देखि रु. ४,०००।- सम्म तोकिएको छ भने कार, जीप, भ्यान, माइक्रोबस र बसमा किलोवाटको आधारमा रु. १५,०००।- र अधिकतम रु. ३०,०००।- रकम वार्षिक रुपमा तोकिएको छ । नेपाल सरकार, प्रदेश सरकार र स्थानीय तहको नाममा दर्ता भएका सवारी साधनमा पनि भाडाका सवारी साधन अनुरूप नै करारोपण गर्ने कुरा उल्लेख छ ।

आर्थिक ऐनको अनुसूची २ मा सवारी साधन करहरुमा छुटको प्रावधानहरु पनि राखिएको छ । यस अनुसार भाडाका बस, मिनिबस तथा माइक्रोबसका सवारी साधनले विद्यार्थी, जेष्ठ नागरिक र अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरुलाई सहूलियतको रुपमा भाडामा छुट दिएवापत सवारी साधन करमा ६० प्रतिशत छुट हुने, एकमुष्ट रुपमा ५ वर्षसम्मका लागि एकैपटक सवारी साधन कर अग्रिम रुपमा भुक्तानी गरेमा १० प्रतिशत छुट हुने, सार्वजनिक संग्रहालयमा प्रदर्शनीमा राखिएका २० वर्ष पुराना सवारी साधन र दमकल, एम्बुलेन्स र शव वाहन एवं नेपाल सरकारले जफत गरी लिलाम बिक्री गरेकोमा सवारी साधन कर नलाग्ने

व्यवस्था छ । यसका अतिरिक्त अपाङ्गता भएका व्यक्तिले प्रयोग गर्न मिल्ने गरी बनाइएका १५० सीसी सम्मका स्कूटरमा पनि सवारी साधन कर छुटको व्यवस्था रहेको छ ।

(ख) कर तथा दस्तुरको दर विश्लेषण

कर

मुलुक भित्रका सातवटै प्रदेशहरूले आ-आफ्नो आर्थिक ऐनबाट एक आर्थिक वर्षका लागि सवारी साधन करको दायरा र दर निर्धारण गर्ने गरेका छन् । सबै प्रदेशहरूले सवारी साधन करका दरहरू निर्धारण गर्दा कार, जीप, भ्यान र माइक्रोबस एवं मोटरसाइकल/स्कूटरहरूको दर सीसी क्षमताको आधार लिएका छन् । यसो गर्दा, बागमती र गण्डकी प्रदेशले २५०० देखि ३००० सीसीसम्म, ३००० देखि ३५०० सीसीसम्म र ३५०० सीसी माथिको लागि क्रमशः ५० हजार, ६० हजार र ६५ हजार तोकेका छन् भने अरु प्रदेशहरूले २५०१ देखि २९०० सीसीसम्म र २९०१ देखि माथि सबैका लागि एउटा दर राखेको देखिन्छ । यसका साथै बागमती र गण्डकीमा मोटरसाइकल एवं भाडाका सवारी साधनको वर्गीकरण केही फरक राखेको छ । यी सवारी साधनहरूमा अन्य प्रदेशहरूको तुलनामा प्रदेश नं. १ को दर अधिक नै रहेको देखिन्छ तथापि अन्य प्रदेशहरूलाई आधार मानी निर्धारित रकमलाई Rounding गरी हजारको इकाईमा दर राख्नु सान्दर्भिक हुन्छ ।

दस्तुर

प्रदेश नं. १ को आर्थिक ऐनबाट लगाइएको सवारी साधन करको अतिरिक्त, प्रदेश नं. १ को सवारी तथा यातायात व्यवस्था नियमावली, २०७६ ले सवारी साधनको स्थायी दर्ता दस्तुर, अस्थायी दर्ता दस्तुर, हेरफेर दर्ता दस्तुर, दर्ताको प्रमाणपत्र नवीकरण दस्तुर, सवारीको नामसारी दस्तुर, सवारीको दर्ता प्रमाणपत्रको प्रतिलिपि दस्तुर, विदेशमा दर्ता भएका सवारी चलाउने अनुमति दस्तुर, सवारीको डोर दस्तुर, चालक अनुमति दरखास्त दस्तुर, चालक अनुमति पत्रमा अन्य सवारी वर्ग थप दस्तुर, चालक अनुमति पत्रको नवीकरण दस्तुर र अनुमति पत्र प्रतिलिपि दस्तुर तोकेको छ । यस्तो दर ठूला, मझौला, साना र निजी तथा सार्वजनिक सवारी साधनमा छुट्टाछुट्टै तोकेको छ । तुलनात्मक रूपले हेर्दा ठूला, मझौला र सानामा निजी भन्दा सार्वजनिकमा बढी दर तोकेको देखिन्छ । यसका अतिरिक्त, बाटो इजाजत पत्र, बाटो परिवर्तन, पटके बाटो इजाजत पत्र र बाटो इजाजत पत्रको नवीकरण (अर्धवार्षिक) प्रत्येक ५० किलोमिटरमा फरक दर कायम गर्दै १ देखि ५० किलोमिटरसम्म ठूला र मझौला बस/मिनिबसमा रु. ७५०१- र ट्रक/मिनिट्रकमा रु. ९००१- देखि ७०१ कि.मी. भन्दा माथि रु. ४,२००१- र ३,९००१- सम्म तोकिएको छ । तोकिएको निश्चित दूरी भित्र पाँच सिटभन्दा बढी चौध सिटसम्म क्षमता भएका सार्वजनिक सवारीको लागि बाटो इजाजत र नवीकरण दस्तुर रु. ६००१- देखि रु. १,२००१- सम्म निर्धारण भएको छ भने तोकिएको निश्चित बाटो (रुट) वा क्षेत्रभित्र सञ्चालनार्थ लाग्ने बाटो इजाजत पत्र दस्तुर सवारीको प्रकृति अनुसार अर्धवार्षिक रूपमा तोकिएको छ ।

(ग) संगठन संरचना

प्रदेशस्तरको यातायात सम्बन्धी नीति, कानून, मापदण्ड र योजनाको तर्जुमा तथा कार्यान्वयन, अध्ययन, अनुसन्धान, तथा नियमनका साथै प्रदेशभित्रको सवारी दर्ता र नवीकरण, सार्वजनिक यातायातको रुट निर्धारण गर्नुका साथै सञ्चार माध्यमको दर्ता, अनुमति, अभिलेख, वर्गीकरण, आचारसंहिता र अनुगमन लगायतका कार्यहरू सम्पन्न गर्ने उद्देश्यले प्रदेश नं. १ मा २०७८ माघ २३ गते यातायात व्यवस्था तथा सञ्चार मन्त्रालयको स्थापना भएको हो । यातायात व्यवस्थालाई व्यवस्थित गर्न यस मन्त्रालय अन्तर्गत प्रशासन तथा यातायात व्यवस्था महाशाखा रहेको छ भने विभिन्न सातवटा यातायात व्यवस्था सेवा कार्यालय र एकवटा यातायात व्यवस्था (सवारी चालक अनुमति पत्र) कार्यालय रहेको छ । यस प्रदेश अन्तर्गतका १४ वटा जिल्लाहरूमध्ये हिमाली जिल्लाहरू (ताप्लेजुङ्ग, संखुवासभा र सोलुखुम्बु) मा सेवा कार्यालय छैनन् भने पहाडी

जिल्लाहरूमध्ये ओखलढुङ्गा, धनकुटा र उदयपुर बाहेक अन्य जिल्लामा यातायात व्यवस्था सेवा कार्यालय रहेका छैनन् । झापा, मोरङ, इलाम धनकुटा, उदयपुर र ओखलढुङ्गामा एक एक वटा यातायात व्यवस्था/सेवा कार्यालयहरू रहेका छन् भने सुनसरी जिल्लामा दुईवटा यातायात व्यवस्था कार्यालयहरू रहेका छन् (<http://motmc.p1.gov.np/about/office>) । सवारी तथा ढुवानी साधनको दोहोरो/तेहरो दर्ता भएबाट यस्ता साधनको प्रकृति अनुसारको संख्या एकिन हुन सकेको छैन । राजस्व बक्यौताको विवरण एकिन हुन सकेको छैन । सरकारी सवारी साधनको वर्षेनी राजस्व भुक्तानी हुन सकेको छैन । कार्यालयहरूको भौतिक पूर्वाधार दयनीय देखिन्छ । कार्यालयहरूको अवस्थिति संख्या र दरबन्दी सिर्जनामा हचुवापन हावी छ भने पदपूर्ति हुन सकेको छैन ।

(घ) चुनौती/समस्याहरू

प्रदेश नं. १ को सवारी साधन कर तथा यातायात दस्तुर/शुल्कको सम्बन्धमा अध्ययन गर्ने क्रममा गरिएको ऐन कानूनहरूको पुनरावलोकन, प्राप्त तथ्यहरू, तथ्यहरूको खोजीको क्रममा अनुभूत भएका बाधा/अवरोधहरू, यससँग सम्बन्धित कार्यालयका पदाधिकारीहरू, स्थानीय तहहरू र सेवाग्राहीहरूसँग भएको अन्तरक्रिया/छलफल समेतको आधारमा यस क्षेत्रमा अनुभूत भएका चुनौती/समस्याहरूलाई देहाय बमोजिम उल्लेख गरिएको छ ।

- संघ तथा प्रदेशका कानूनहरूका बीचमा अन्तरविरोध/दोहोरोपना रहनु ।
- प्रदेशहरूको कार्यप्रक्रिया, दरहरू र दायराहरूमा विविधता/फरक देखिनु ।
- केही छुटहरू (Exemptions) को औचित्य नदेखिनु ।
- VRS (Vehicle Registration System) नामक सफ्टवेयर अपर्याप्त हुनु र यसको RMIS (Revenue Management Information System) सँग कुनै Linkage नहुनु ।
- प्रदेशहरू बीचको सूचनामा पहुँच नहुनु ।
- ट्राफिक कार्यालयहरूले असूल गरेको जरिवाना रकम र अवैध सवारी साधन पक्राउ गरी लिलाम भएका सवारी/ढुवानी साधनको राजस्व संघको कोषमा दाखिल हुनु ।
- सवारी साधन अनुमति पत्रको द्वैध प्रशासन र निष्काशन (Issue) मा अधिक ढिलाई हुनु ।
- सडकको रुट अनुमति नलिई भाडाका सवारी साधन सञ्चालन हुनु र रुट अनुमतिको नवीकरण पनि नहुनु ।
- स्थानीय तहको अधिकार प्रभावकारी नहुनु ।
- यातायात व्यवस्था कार्यालयहरूलाई प्रविधिमैत्री बनाई छिटो, छरितो र भरपर्दो सेवा प्रदान गर्न डिजिटल प्रणाली लागू नभएको ।
- कारखाना/वर्कशप/ड्राईभिङ्ग प्रशिक्षण केन्द्रहरू दर्ता तथा नवीकरण भई राजस्वको दायरामा नआई सकेको ।
- ई-रिक्सा, टेम्पो जस्ता तीनपाङ्ग्रे साना साधनहरूको दर्ता, नवीकरण तथा यसबाट प्राप्त राजस्वको बाँडफाँटका सम्बन्धमा स्थानीय र प्रदेश तहबीच थप स्पष्टता आवश्यक भएको ।
- यातायात व्यवस्था कार्यालयहरूले लिने ट्रायल परीक्षाका लागि सरकारी ट्रायल सेन्टरको व्यवस्था हुन नसकेको ।

मञ्जुषा ३: यातायात व्यवस्था कार्यालयहरूबाट प्राप्त सुझावहरू

- ✓ हाल प्रयोगमा आएको VRS Software ले सवारी अनुमति पत्रका लागि लामो राजस्वलाई Automatic रूपमा देखाउन सक्छ तर सवारी दर्ता किताब लगायत अन्य शीर्षकबाट प्राप्त हुने राजस्वलाई स्वचालित रूपमा देखाउन नसक्ने हुँदा राजस्व सङ्कलनमा समस्या हुने गरेको छ । तसर्थ उक्त Software लाई अद्यावधिक गरी सबै शीर्षकहरूको स्वचालित रूपमा राजस्व देखिने बनाउन जरुरी छ ।

- ✓ कर नवीकरण गर्ने प्रयोजनका लागि मात्रै यातायात व्यवस्था सेवा कार्यालय स्थापना गरिएका हुन् तर अहिले उक्त कार्यालयबाट नवीकरण लगायत नामसारी, दर्ता जस्ता सबै काम हुने गरेकोले यस कार्यालयलाई सेवा कार्यालय नभनी यातायात व्यवस्था कार्यालय राख्नु उपयुक्त हुने ।
- ✓ पहिला देखिनै सञ्चालनमा रहेको VRS Software को विकसित रूप E-VRS software उपलब्ध गराउनु पर्ने । पुरानो र नयाँ VRS Software हाल प्रयोगमा आएको छ तथापि पुरानो र नयाँका बीचमा Link नहुँदा काम गर्न असहज भएको छ । यस प्रणालीले पटक पटक राजस्व भुक्तानी गर्दा पनि लिने र धेरै वा थोरै भुक्तानी गर्दा पनि लिने गरेको ।
- ✓ सवारी अनुमति पत्र तर्फ EDL-VRS प्रणाली प्रयोगमा आएको छ । यसले स्वचालित रूपमा काम गरेको ।
- ✓ यातायात व्यवस्था सेवा कार्यालयका लागि कम्तीमा पनि १ जना अधिकृतस्तरको आईटी अधिकृत, दुई जना कम्प्यूटर अपरेटर र कार्यालयको सुरक्षाको लागि कम्तीमा दुईजना सुरक्षा गार्डको दरबन्दी हुने पर्ने ।
- ✓ २/२ जना कार्यालय सहयोगी, सलेप १/१ जना, मेकानिकल सुपरभाइजर १/१, खरिददार १/१ (चौथौं), नासु २/२ (१ छैटौं १ पाँचौं), कार्यालय प्रमुख (शा.अ.) १/१ हुनुपर्ने ।

३.३ मनोरञ्जन कर

(क) संवैधानिक तथा कानूनी व्यवस्था

नेपालको संविधानले मनोरञ्जन करलाई प्रदेश र स्थानीय तह दुबैको एकल अधिकार सूचीमा राखेको छ । स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ को दफा ११ को उपदफा २ (घ) मा गाउँपालिका तथा नगरपालिकाको काम कर्तव्य र अधिकारको रूपमा विज्ञापन कर सम्बन्धी नीति, कानून, मापदण्ड, कार्यान्वयन र नियमन गर्ने अधिकारको व्यवस्था रहेको छ । अन्तर सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ को दफा ५ को उपदफा (१) को (ग) मा मनोरञ्जन करको दर प्रदेशले लगाउने र गाउँपालिका वा नगरपालिकाले उठाउने व्यवस्था रहेको छ । सोहि दफाको उपदफा २ मा मनोरञ्जन करबाट उठेको रकम मध्ये साठी प्रतिशत रकम गाउँपालिका वा नगरपालिकाले स्थानीय संचित कोषमा जम्मा गरी चालीस प्रतिशत रकम मासिक रूपमा प्रदेश सञ्चित कोषमा जम्मा गर्नुपर्ने व्यवस्था रहेको छ । प्रदेश नं. १ को प्रदेश कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा ६ को उप दफा (१) अनुसार प्रदेशले चलचित्र घर, भिडियो घर, साँस्कृतिक प्रदर्शन हल, हाटबजार, मेला, थिएटर र कन्सर्ट जस्ता मनोरञ्जन स्थलमा देखाइने मनोरञ्जनका सेवामा तथा मनोरञ्जन क्रियाकलापमा मनोरञ्जन कर लगाउने छ भन्ने व्यवस्था छ । प्रदेश नं. १ को आर्थिक ऐन, २०७९ को दफा ५ (१) अनुसार प्रदेशभित्र सञ्चालित हुने मनोरञ्जनजन्य क्रियाकलापमा देहायबमोजिम मनोरञ्जन कर लगाई असुल उपर गर्ने व्यवस्था गरेको छ । उपदफा (१) बमोजिमको मनोरञ्जन कर एकमुष्ट तोकिएको अवस्थामा सोही बमोजिम र अन्यमा मनोरञ्जन स्थलको प्रवेशको लागि खरिद गरिने टिकटको मूल्यमा लाग्ने, उपदफा ३ अनुसार उपदफा (२) बमोजिमको मनोरञ्जन करबाट उठेको रकम मनोरञ्जन स्थलको सञ्चालकले कर उठाएको महिना भन्दा पछिल्लो महिनाको पच्चीस गतेभित्र सम्बन्धित स्थानीय तहमा जम्मा गर्नु पर्नेछ । यसैगरी उपदफा ६ अनुसार मनोरञ्जन कर बापत संकलित रकमको साठी प्रतिशतले हुन आउने रकम सम्बन्धित स्थानीय तहको सञ्चित कोषमा र चालीस प्रतिशतले हुन आउने रकम प्रदेश सञ्चित कोषमा मासिक रूपमा दाखिला गर्नु पर्नेछ । तीन आर्थिक वर्षको प्रदेश सरकारको मनोरञ्जन करको दर सम्बन्धी विवरण तालिका २१ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

तालिका २१ : प्रदेश नं. १ को मनोरञ्जन करको दर

| क्र.सं. | शीर्षक | आ.व. | आ.व. | आ.व. |
|---------|---|----------|----------|----------|
| | | २०७७/०७८ | २०७८/०७९ | २०७९/०८० |
| १ | चलचित्र घरमा चलचित्र प्रदर्शन गर्दा दर्शकहरूबाट प्रति टिकट (प्रतिशतमा) | ३ | ३ | ३ |
| २ | भिडियो घर, साँस्कृतिक प्रदर्शन हल, कन्सर्ट, थिएटर, नाटक घर (टिकट मूल्यको) (प्रतिशतमा) | ५ | ५ | ३ |
| ३ | दोहोरी साँझ, डान्स बार (वार्षिक रु.) | ५००० | ५००० | ५००० |

| क्र.सं. | शीर्षक | आ.व. २०७७/०७८ | आ.व. २०७८/०७९ | आ.व. २०७९/०८० |
|---------|--|------------------|------------------|------------------|
| ४ | फन पार्क, वाटर गार्डेन, बाल उद्यान लगायत मनोरञ्जनात्मक स्थलको प्रवेश लगायतको विभिन्न क्रियाकलापको टिकट मूल्यको (प्रतिशतमा) | २ | २ | ३ |
| ५ | एक महिनासम्म जादु सर्कस तथा मेला तथा मनोरञ्जनात्मक कार्यक्रम सञ्चालन गराए बापत प्रतिदिन रु. | २०० | २०० | २०० |
| ६ | एक महिना भन्दा बढी जादु सर्कस तथा मेला तथा मनोरञ्जनात्मक कार्यक्रम सञ्चालन गराय बापत प्रतिमहिना रु. | ५५०० | ५५०० | ५५०० |
| ७ | नेपाली चलचित्रको प्रदर्शनमा सि.नं. १ मा उल्लेखित दरमा छुट (प्रतिशतमा) | ५० | ५० | ५० |

स्रोत: प्रदेश नं. १ को आर्थिक ऐनहरू, आ.व. २०७७/०७८, आ.व. २०७८/०७९ र आ.व. २०७९/०८०

(ख) प्रदेशमा रहेका मनोरञ्जन स्थलहरू

मनोरञ्जन करका स्रोतहरू मध्ये चलचित्र हलहरूपनि एक मुख्य स्रोतका रूपमा कानूनले व्याख्या गरेको छ । स्थानीय तहगत चलचित्रको विवरण सङ्कलन गर्दा निम्नानुसार जम्मा ५ वटा स्थानीय तहहरूमा मात्रै चलचित्र हलहरू रहेको विवरण प्राप्त भएको छ । जस अनुसार फिदिम नगरपालिकामा १, भद्रपुर नगरपालिकामा २, बिर्तामोड नगरपालिकामा २, बाह्रदशी गाउँपालिकामा १ र विराटनगर महानगरपालिकामा ५ गरी जम्मा ११ वटा चलचित्र घरहरू रहेका छन् ।

स्थानीय तहगत फन पार्क, वाटर गार्डेन, बाल उद्यान र अन्य मनोरञ्जनात्मक स्थलहरूको अवस्था सम्बन्धी विवरण सङ्कलन गर्दा ज्यादै न्यून स्थानीय तहहरूमा मात्रै त्यस्ता मनोरञ्जनात्मक स्थलहरू भएको पाइयो । जसमा ताप्लेजुङ्गको फुडलिङ गाउँपालिका, इलामको इलाम र सूर्योदय नगरपालिका, झापाको भद्रपुर, बिर्तामोड र अर्जुनधारा नगरपालिका, मोरङको विराटनगर महानगरपालिका, रंगेली नगरपालिका, कटहरी र मिक्लाजुङ गाउँपालिका, सुनसरीको इटहरी उपमहानगरपालिका, उदयपुरको ताप्लि गाउँपालिका र ओखलढुङ्गाको लिखु गाउँपालिकामा मनोरञ्जनात्मक स्थलहरू रहेका छन् ।

(ग) कर सङ्कलनको अवस्था

केही स्थानीय तहहरूले मनोरञ्जन करबाट सङ्कलन गरेको राजस्वको विवरण तल तालिका २२ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

तालिका २२ : मनोरञ्जन करबाट राजस्व सङ्कलन (रु.)

| क्र.सं. | जिल्ला | स्थानीय तह | आ.व. २०७५/७६ | आ.व. २०७६/७७ | आ.व. २०७७/७८ | आ.व. २०७८/७९ | आ.व. २०७९/८० |
|---------|-----------|-----------------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|
| १ | ताप्लेजुङ | मिक्वाखोला गाउँपालिका | - | - | - | - | ५०००० |
| २ | इलाम | इलाम नगरपालिका | - | - | - | ३५०००० | १४२५००० |
| ३ | झापा | भद्रपुर नगरपालिका | - | ५०००० | १५०००० | - | - |
| ४ | झापा | अर्जुनधारा नगरपालिका | - | २९६०० | ० | - | - |
| ५ | धनकुटा | साँगुरीगढी गाउँपालिका | - | - | - | २२००००० | - |
| ६ | सुनसरी | बर्जु गाउँपालिका | - | - | - | - | १०००००० |
| | | जम्मा | | ७९६०० | १५०००० | २२००००० | १०००००० |

स्रोत: सम्बन्धित गाउँपालिका तथा नगरपालिका, २०७९

(घ) समस्या/सवालहरू

- प्रदेश भित्र कानूनमा व्यवस्था भए अनुसारको मनोरञ्जन स्थलहरू पर्याप्त मात्रामा नभएको ।
- मनोरञ्जनात्मक स्थलहरू भएका स्थानीय तहहरूले पनि त्यस्ता स्थानबाट राजस्व सङ्कलन गर्न नसकेको ।
- केही गाउँपालिका तथा नगरपालिकाहरूबाट मनोरञ्जन कर वापत सङ्कलन गरेको राजस्व प्रदेश सरकारको सञ्चित कोषमा जम्मा नभएको ।
- मनोरञ्जन करको प्रशासनमा प्रदेश सरकार र स्थानीय तहबीच समन्वयको कमी रहेको ।

३.४ प्राकृतिक स्रोत सङ्कलन तथा बिक्री शुल्क

प्राकृतिक स्रोत (नदीजन्य पदार्थ) सम्बन्धी संघीय र प्रदेश कानूनमा भएको व्यवस्था निम्नानुसार रहेको छ:

(क) कानूनी व्यवस्था

(१) संघीय कानून

स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ को दफा ११ (घ) को ६ अनुसार ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, माटो, काठ दाउरा, जराजुरी, स्लेट, खरीढुङ्गा आदि प्राकृतिक वस्तुको बिक्री तथा निकासी शुल्क दस्तुर सङ्कलन गर्ने अधिकार स्थानीय तहलाई प्रदान गरेको छ । दफा ६२ क. (१) गाउँपालिका तथा नगरपालिकाले आफ्नो क्षेत्रभित्र वातावरणीय प्रभाव मूल्याङ्कन तथा प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षणबाट तोकिएको परिमाणमा स्लेट, ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, एवं माटोजन्य वस्तुको बिक्री गर्न सक्ने व्यवस्था गरेको छ । (२) गाउँपालिका तथा नगरपालिकाले आफ्नो क्षेत्रभित्रको सार्वजनिक तथा ऐलानी जग्गामा रहेका काठ दाउरा, जराजुरी, दहत्तर बहत्तर आदिको बिक्री गर्न सक्नेछ । (३) उपदफा (१) र (२) बमोजिम बिक्री वापत प्राप्त रकम गाउँपालिका तथा नगरपालिकाको सञ्चित कोषमा जम्मा गर्नु पर्ने व्यवस्था रहेको छ । तर, नेपाल सरकारले स्वीकृत गरी जारी गरेको ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा उत्खनन्, बिक्री तथा व्यवस्थापन मापदण्ड, २०७७ ले यसरी ठेक्का लगाउँदा वा यदाकदा आफैले सङ्कलन गरेको ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवाबाट उठेको राजस्वको ६० प्रतिशत स्थानीय सञ्चित कोषमा दाखिला हुने र बाँकी ४० प्रतिशत सम्बन्धित प्रदेश सरकारको खातामा जम्मा गर्ने व्यवस्था गरेको छ । यो व्यवस्था संघीय कानूनसँग बाझिन गई प्रदेश तथा स्थानीय तहबीच राजस्व बाँडफाँटमा विवाद सिर्जना भएको छ । साथै स्थानीय तहले आफ्नो सञ्चित कोषमा जम्मा गरेको रकम बाँडफाँट गर्ने विषय प्रचलित राजस्व बाँडफाँटका मान्यतासँग समेत मेल खाने देखिँदैन । यस सन्दर्भमा खानीजन्य र नदीजन्य पदार्थलाई परिभाषित गर्नुपर्ने देखिन्छ (राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोग, २०७८) ।

स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ ले नदीजन्य वस्तु सर्वेक्षण, उत्खनन् तथा उपयोगको दर्ता, अनुमति, नवीकरण, खारेजी र व्यवस्थापन तथा बिक्री सम्बन्धमा निम्नानुसारको व्यवस्था गरेको छ ।

- (क) ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, माटो तथा स्लेट जस्ता वस्तुको सर्वेक्षण, उत्खनन् तथा उपयोगको दर्ता, अनुमति, नवीकरण, खारेजी र व्यवस्थापन (दफा ११ को प को ७)
- (ख) गाउँपालिका तथा नगरपालिकाले आफ्नो क्षेत्रभित्र वातावरणीय प्रभाव मूल्याङ्कन (EIA) तथा प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण (IEE) बाट तोकिएको परिमाणमा स्लेट, ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा एवम् माटोजन्य वस्तुको बिक्री गर्न सक्नेछ (दफा ६२ क. को १) । उपदफा १ बमोजिम बिक्री वापत प्राप्त रकम गाउँपालिका तथा नगरपालिकाको सञ्चित कोषमा जम्मा गर्नु पर्नेछ (दफा ६२ क. को ३) ।

तर, ढुङ्गा, गिट्टी तथा बालुवा उत्खनन्, बिक्री तथा व्यवस्थापन सम्बन्धी मापदण्ड, २०७७ ले यस सम्बन्धमा निम्नानुसारको व्यवस्था गरेको छ:

- (क) ढुङ्गा, गिड्डी तथा बालुवा आदिको सङ्कलन, स्थानान्तरण तथा बिक्री सम्बन्धी कार्य सम्बन्धित गाउँपालिका वा नगरपालिकाले ठेक्का बन्दोवस्त वा अन्य उपयुक्त व्यवस्था गरी गर्न सक्नेछ ।
- (ख) तर राष्ट्रिय निकुञ्ज, वन्यजन्तु आरक्ष, संरक्षण क्षेत्र र मध्यवर्ती क्षेत्रको ढुङ्गा, गिड्डी तथा बालुवा तथा माटोजन्य पदार्थको उत्खनन तथा सङ्कलन सम्बन्धी व्यवस्था प्रचलित संघीय कानून बमोजिम हुनेछ । वन तथा चुरेक्षेत्रबाट सामान्यतया ढुङ्गा, गिड्डी तथा बालुवा उत्खनन गरिने छैन ।
- (ग) तर राष्ट्रपति चुरे तराई मधेस संरक्षण विकास समितिको सहमतिमा र स्वीकृत मापदण्ड अनुसार वातावरणीय अध्ययन प्रतिवेदनमा उल्लेखित विधि अनुसार सम्बन्धित गाउँपालिका वा नगरपालिकाले प्रचलित कानून तथा मापदण्ड बमोजिम ठेक्का बन्दोवस्त गर्नु पर्नेछ ।
- (घ) गाउँपालिका वा नगरपालिकाले यस मापदण्ड बमोजिम साधारण निर्माणमुखी, खानीजन्य र नदीजन्य पदार्थको बिक्री एवम् अनुमति वा नवीकरण शुल्क वा करबाट संकलित राजस्वमध्ये साठी प्रतिशत रकम सम्बन्धित गाउँपालिका वा नगरपालिका र बाँकी चालीस प्रतिशत रकम प्रदेश सरकारको सञ्चित कोषमा जम्मा हुने गरी बाँडफाँट गर्नु पर्नेछ ।

(२) प्रदेश कानून

प्रदेश नं. १ को कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा १० ले प्राकृतिक स्रोत मध्ये ढुङ्गा, गिड्डी, बालुवा, चुनढुङ्गा, माटो र दहत्तर वहत्तरको शुल्क प्रदेशले प्राकृतिक स्रोत शुल्कका रूपमा लगाउने व्यवस्था गरेको छ । मधेश प्रदेशको कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ मा यस सम्बन्धमा कुनै व्यवस्था छैन । बागमती प्रदेशको कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा २ ले ढुङ्गा, गिड्डी, बालुवा तथा नदीले बगाई ल्याएको काठ, दाउरा लगायतका वस्तुलाई दहत्तर वहत्तर भनी परिभाषित गरेको छ र दफा १५ अनुसार प्रदेशले आफ्नो क्षेत्रभित्र माटो ढुङ्गा, गिड्डी, बालुवा, स्लेट, चुनढुङ्गा, ग्राभेल, खरिखुङ्गा, अभ्रख र दहत्तर वहत्तरको सङ्कलन, निकासी वा बिक्रीमा तोकिए बमोजिम ढुङ्गा, गिड्डी, बालुवा, खरिढुङ्गा, दहत्तर वहत्तर शुल्क लगाउने व्यवस्था गरेको छ । यसैगरी गण्डकी प्रदेशले पनि कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा १५ मा दहत्तर वहत्तरको सङ्कलन शुल्क प्रदेशले लगाउने व्यवस्था गरेको छ । लुम्बिनी प्रदेशको कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा १५ ले पनि प्राकृतिक स्रोतमध्ये आफ्नो क्षेत्रभित्र ढुङ्गा, गिड्डी, बालुवा, माटो र दहत्तर वहत्तरको सङ्कलनमा प्राकृतिक स्रोत शुल्क प्रदेशले लगाउने व्यवस्था गरेको छ । कर्णाली प्रदेशको कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ मा यस सम्बन्धमा कुनै व्यवस्था छैन । सुदूरपश्चिम प्रदेशको कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा १५ मा प्रचलित कानूनले अन्यथा व्यवस्था गरेकोमा बाहेक प्राकृतिक स्रोत मध्ये आफ्नो क्षेत्रभित्र ढुङ्गा, गिड्डी, बालुवा, माटो र दहत्तर वहत्तरको सङ्कलनमा प्राकृतिक स्रोत कर प्रदेशले लगाउने व्यवस्था गरेको छ । प्राकृतिक स्रोत सम्बन्धमा प्रदेश सरकारहरुको कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐनहरुमा प्राकृतिक स्रोत सम्बन्धी आ-आफ्नो कानूनी व्यवस्था रहेको छ । यस सम्बन्धी विवरण **अनुसूची ३** मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

प्रदेश नं. १ को आर्थिक ऐन, २०७९ को दफा ६ को प्राकृतिक स्रोत सङ्कलन तथा बिक्री शुल्क सम्बन्धी अनुसूची ४ को (ग) अनुसार प्रदेश भित्र उत्पादन हुने सिमेण्टको हकमा उद्योगबाट उत्पादित सिमेण्ट उद्योगभन्दा बाहिर पठाउँदा प्रति बोरा एक रुपैयाँका दरले प्राकृतिक स्रोत उपयोग वापत शुल्क लगाउने व्यवस्था छ । यसरी लगाइएको शुल्क स्थानीय तहले सङ्कलन गरी संकलित रकम बाँडफाँट गरी चालीस प्रतिशतले हुन आउने रकम प्रदेश सञ्चित कोषमा दाखिला गर्नुपर्ने व्यवस्था रहेको छ । यस शुल्कको अनुगमन प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालय मार्फत हुने प्रावधान समेत यस ऐनले गरेको छ । प्रदेश नं. १ मा रहेका सिमेण्ट उद्योग सम्बन्धी विवरण **अनुसूची ४** मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

(ख) प्राकृतिक स्रोत (ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा) को अवस्थिति

यस प्रदेशमा थुप्रै नदी तथा खोलाहरू रहेका छन् । ती नदी तथा खोलाहरूबाट ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवाको उत्खनन्, सङ्कलन र बिक्री हुँदै आएको छ । प्रदेशभरिका गाउँपालिका तथा नगरपालिकाहरूले नदी तथा खोलाहरूबाट उत्खनन् गरेको ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवाको परिमाण तथा तिनीहरूको उपयोगको अवस्थालाई निम्नानुसार वर्गीकरण गरी तालिका २३ मा प्रस्तुत गरिएको छ र यस सम्बन्धी विस्तृत जानकारी अनुसूची ५ मा प्रस्तुत गरिएको छ । यी तथ्याङ्कहरू सङ्कलन गर्नको लागि प्रश्नावलीहरू तयार गरी प्रदेश अन्तर्गतका १३७ वटै स्थानीय तहहरूमा गणकहरू परिचालन गरिएको थियो । तथ्याङ्क सङ्कलनको लागि प्रयोग गरिएको तथ्याङ्क सङ्कलनको ढाँचा अनुसूची ६ मा प्रस्तुत गरिएको छ । प्राप्त तथ्याङ्क अनुसार १७७ वटा नदी तथा खोलाहरू भएपनि जम्मा ७४ वटा स्थानमा मात्रै प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण (IEE) भएको विवरण प्राप्त भएको छ ।

तालिका २३ : ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवाको उपयोगको अवस्था सम्बन्धी विवरण

| क्र.सं. | वर्गीकरणको आधार | स्थानीय तहको संख्या |
|---------|--|---------------------|
| क. | प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण (IEE) भए पनि उत्खनन् नभएका | १८ |
| ख. | प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण (IEE) भएजति उत्खनन् भएका | ३० |
| ग. | प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण (IEE) भएभन्दा कम उत्खनन् भएका | २२ |
| घ. | उपयोगमा समस्या रहेकाले उत्खनन् हुन नसकेका | ११ |
| ङ. | ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा नभएका स्थानीय तहहरू | १४ |
| च. | स्रोत भएर पनि प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण (IEE) नभएका | ३७ |
| छ. | विवरण उपलब्ध नभएका | ५ |
| | जम्मा | १३७ |

एउटा खोला वा नदी विभिन्न स्थानीय तह हुँदै बग्ने हुँदा प्राप्त विवरण अनुसार कम्तीमा पनि एउटा स्थानीय तहले एउटा खोलामा एउटा मात्रै स्थान मान्दा पनि ३०९ वटा प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण हुनसक्ने देखिन्छ । प्रदेश तथा स्थानीय तहका लागि प्राकृतिक स्रोतबाट प्राप्त हुने राजस्व भरपर्दो रूपमा दीगो स्रोतको रूपमा रहन्छ । प्राकृतिक स्रोतको राजस्वमा सो प्राकृतिक स्रोतलाई कच्चा पदार्थको रूपमा प्रयोग गर्ने कारखाना तथा सोझै उपयोग गर्ने उपभोक्ताको अवस्थिति, स्रोतदेखि उपभोक्तासम्म पुग्ने यातायातको सुविधाको अवस्थिति, वातावरणीय प्रभाव, स्रोत उपभोगमा नीतिगत तथा कानूनी प्रबन्ध, सरोकारवालासँगको सम्बन्ध जस्ता विषयले बढी प्रभाव पार्दछ । प्रदेश भित्र रहेका नदी तथा खोलाहरू र तिनीहरूको बहाव हुने स्थानीय तहहरू सम्बन्धी विवरण अनुसूची १३ मा प्रस्तुतमा प्रस्तुत गरिएको छ ।

स्थलगत अध्ययनबाट प्राप्त विवरण अनुसार ७७ वटा गाउँपालिका तथा नगरपालिकाबाट ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवाको बिक्रीबाट आ.व. २०७८/७९ मा रु. ६९ करोड ४४ लाख ८ हजार एक सय बैसठ्ठी राजस्व सङ्कलन गरेको देखिन्छ । यस सम्बन्धी विस्तृत विवरण अनुसूची ७ मा प्रस्तुत गरिएको छ । त्यसैगरी प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालय विराटनगरले उपलब्ध गराएको विवरण अनुसार आर्थिक वर्ष २०७८/७९ को असार मसान्तसम्म ४२ वटा गाउँपालिका तथा नगरपालिकाहरूबाट नदीजन्य पदार्थ ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवाको बिक्रीको चालीस प्रतिशतको हिस्सा वापत रु. २८ करोड ४ लाख १ सय ७२ प्रदेश सञ्चित कोषमा जम्मा भएको छ ।

३.५ वन पैदावार बिक्री शुल्क

संघीय वन ऐन, २०७६ ले “वन पैदावार” लाई वनमा रहेका वा पाइएका वा वनबाट ल्याइएका काष्ठ पैदावार, गैर काष्ठ वन पैदावार वा चट्टान, माटो, नदीजन्य र खनिजजन्य पदार्थको रूपमा परिभाषित गरेको छ। वन नियमावली २०७९ को नियम ३० को उपनियम ५ अनुसार राष्ट्रिय वन क्षेत्रभित्र बग्ने नदीबाट नेपाल सरकारले नेपाल राजपत्रमा सूचना प्रकाशन गरी तोकेको मापदण्ड र समयावधिको अधिनमा रही वातावरणीय अध्ययन प्रतिवेदनबाट तोकिएको परिमाणमा नदीजन्य ढुङ्गा, गिट्टी वा बालुवा सम्बन्धित स्थानीय तहले खुला प्रतिस्पर्धाको माध्यमबाट सङ्कलन र बिक्री वितरण गर्ने व्यवस्था गरेको छ।

प्रदेश नं. १ मा कुल १५ वटा डिभिजन वन कार्यालयहरू रहेका छन्। यसैगरी यस प्रदेश अन्तर्गत ३ हजार ६ सय ९९ वटा सामुदायिक वन, ९८२ कबुलियती वन, २ हजार ३८ वडा निजी वन, ४४ वटा धार्मिक वन, ५ वटा साझेदारी तथा चक्ला वन र १ वटा सरकारद्वारा व्यवस्थित वन रहेका छन् (तालिका २४)।

तालिका २४ : वन सम्बन्धी विवरण

| क्र.सं. | डिभिजनको नाम | सामुदायिक वन | | कबुलियती वन | | निजी वन | | धार्मिक वन | | साझेदारी र चक्ला वन | | सरकारद्वारा व्यवस्थित वन | |
|---------|--------------|--------------|-----------------|-------------|-----------------|-------------|-----------------|------------|-----------------|---------------------|-----------------|--------------------------|-----------------|
| | | संख्या | क्षेत्रफल (हे.) | संख्या | क्षेत्रफल (हे.) | संख्या | क्षेत्रफल (हे.) | संख्या | क्षेत्रफल (हे.) | संख्या | क्षेत्रफल (हे.) | संख्या | क्षेत्रफल (हे.) |
| १ | ताप्लेजुङ | १२१ | ८७५६ | ० | ० | ३६ | २७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २ | पाँचथर | १७९ | १७८२५ | २२८ | ७९० | २८ | ३० | २ | १७ | ० | ० | ० | ० |
| ३ | इलाम | २४१ | ५०७२८ | ० | ० | ७७ | ६८ | १ | २०४ | ० | ० | ० | ० |
| ४ | झापा | ५९ | १५८३९ | ० | ० | ४३७ | ४१३ | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५ | मोरङ | १३४ | ६७८२२ | ० | ० | ६१८ | ७६१ | १२ | ६० | ४ | ७२६३ | ० | ० |
| ६ | सुनसरी | ७३ | ११२१६ | ० | ० | ३८७ | २६७ | १२ | ६० | १ | ३५७५ | ० | ० |
| ७ | धनकुटा | ३८७ | २९८४६ | ० | ० | ६३ | ९० | ३ | ३० | ० | ० | १ | ४४ |
| ८ | तेह्रथुम | ३३९ | १९३३७ | १२३ | ३४१ | ३२ | २६ | ० | ० | ० | ० | ० | ६९७१ |
| ९ | संखुवासभा | २९० | ३७७५५ | ० | ० | १४ | २१ | २ | ११ | ० | ० | ० | ० |
| १० | भोजपुर | ५६६ | ४४२६१ | १९५ | ७६० | ४६ | ३९ | ३ | ३ | ० | ० | ० | २८०१३ |
| ११ | खोटाङ | ४१९ | ९२८६६ | २३७ | ९०१ | ९ | ९ | १ | १ | ० | ० | ० | ० |
| १२ | सोलुखुम्बु | १८१ | ३३५७० | ६ | ८ | १०० | १८६ | ३ | ७१ | ० | ० | ० | ० |
| १३ | ओखलढुङ्गा | ३५१ | २६८५९ | १९१ | १२१५ | ३३ | ३० | १ | ११ | ० | ० | ० | ० |
| १४ | उदयपुर | २०५ | ४८८९४ | २ | १७६ | ५५ | २५ | १ | २ | ० | ० | ० | २५५८३ |
| १५ | त्रिवेणी | १५४ | ७४६४० | ० | ० | १०३ | २५ | ३ | ११ | ० | ० | ० | ० |
| | जम्मा | ३६९९ | ५८०२०६ | ९८२ | ४१९१ | २०३८ | २०१५ | ४४ | ४८२ | ५ | १०८३८ | १ | ६०६११ |

स्रोत: प्रदेश सरकार, वन, वातावरण तथा भूसंरक्षण मन्त्रालय, वन निर्देशनालय, प्रदेश नं. १, २०७९

नोट: सामुदायिक वन अन्तर्गत ५३२९५६, कबुलियत वन अन्तर्गत ८८५३ र साझेदारी तथा चक्ला वन अन्तर्गत १३४३७२ घरधुरीहरू रहेका छन्।

आर्थिक वर्ष २०७६/७७ मा सरकारद्वारा व्यवस्थित, सामुदायिक, निजी र साझेदारी वनबाट कुल ७७ लाख ९५ हजार ६ सय ७८ क्यू फिट काठ उत्पादन र बिक्री भएको थियो भने आर्थिक वर्ष २०७७/७८ मा ३६.४४ प्रतिशतले वृद्धि भई १ करोड ६ लाख ३६ हजार ४ सय ९९ क्यू फिट काठ उत्पादन तथा बिक्री भएको थियो। तर सोही अवधीका दाउराको उत्पादन र बिक्री ३३ प्रतिशतले घटेको थियो। (तालिका २५)

तालिका २५ : वन पैदावारको उत्पादित परिमाण

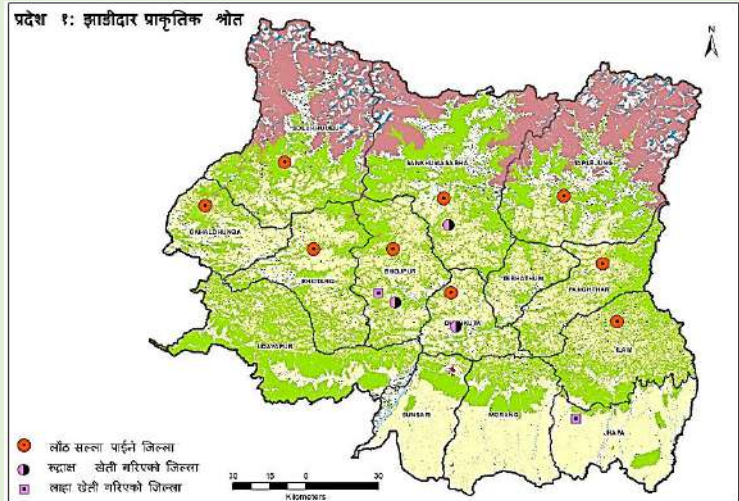
| क्र.सं. | विवरण | उत्पादित परिमाण | | | | | |
|---------|--------------------------|---------------------|---------------------|----------------------|---------------------|----------------------|---------------------|
| | | आर्थिक वर्ष २०७६/७७ | | आर्थिक वर्ष २०७७/७७ | | आर्थिक वर्ष २०७८/७९ | |
| | | काठ (क्यू फिट) | दाउरा (क्यू फिट) | काठ (क्यू फिट) | दाउरा (क्यू फिट) | काठ (क्यू फिट) | दाउरा (क्यू फिट) |
| १ | सरकारद्वारा व्यवस्थित वन | १५३,६३६.०२ | ३३९.७२ | २२८९९८.१५ | ३१९.३५ | २०३,०३५.०९ | १५८.९० |
| २ | सामुदायिक वन | ४३६,९८९.३९ | ८५६.५८ | ३६०,९४०.४० | ३९५.९९ | ५२१,७११.०० | ५९६.२८ |
| ३ | निजी वन | ७,००३,७६५.३४ | १३८९.२४ | १०,०३६,५४२.२९ | १,२२५.३६ | १५,०२४,८४९.१४ | १,९८२.०७ |
| ४ | साझेदारी वन | २०१२१०.०३ | ३४९.५५ | १०,०१०.८० | २५.५० | १९,५४६.५८ | १२.५० |
| | कुल जम्मा | ७,७९५,६००.७८ | २,९३५.०९ | १०,६३६,४९१.६४ | १,९६६.२० | १५,७६९,१४९.८१ | २,७४९.७५ |
| | वृद्धि प्रतिशत | | | ३६.४४ | -३३ | ४४.२५ | ४० |

स्रोत: प्रदेश सरकार, वन, वातावरण तथा भूसंरक्षण मन्त्रालय, वन निर्देशनालय, प्रदेश नं. १, २०७९

मञ्जुषा ४: झाडीदार प्राकृतिक स्रोत (लौठ सल्ला, लाहा र रुद्राक्ष)

रुख तथा झाडीदार स्वरूपको प्राकृतिक अवस्थामा हुर्किने सल्ला वर्ग भित्रको एउटा जाति लौठसल्ला हो। नेपालमा पाइने ट्याक्सस वालिचियाना (लौठसल्ला) को रुख ३० मिटरसम्म अग्लो र ५ मिटरसम्म गोलाई भएका पाइन्छन्। यसका पातहरू १ देखि ४ सेन्टिमिटरसम्म लाम्बो र २ देखि ४ मिलीमिटरसम्म चौडाई भएको सिधा वा केही बाङ्गिएका गाढा हरियो रंगका हुन्छन्। नेपालमा पाइने लौठसल्लाको वैज्ञानिक पहिचान तथा नामाकरणको क्रममा विगतमा केही द्विविधा देखिएको भए तापनि यसलाई हाल ट्याक्सस (Taxus baccata) वकाटा को नामले चिन्ने गरिएको छ।

प्रदेश नं. १ अन्तर्गत सोलुखुम्बु, भोजपुर, धनकुटा, संखुवासभा, खोटाङ्ग, ओखलढुङ्गा, इलाम, पाँचथर र ताप्लेजुङ्ग जिल्लामा लौठसल्ला पाइन्छ। यहाँ पाइने लौठसल्लाको वैज्ञानिक नाम ट्याक्सस वालिचियाना (Taxus Wallichiana), यसको अग्रेजी नाम पूर्वी हिमालय लौठसल्ला र यसको स्थानीय नाम सिलिङ्गी, सिलटिङ, साङ्गा, सिङ्ग, टोङ्गा, ढेङ्गे, लौठसल्ला, सालिन, लस्वान, थिङ्गे, तालिस पत्र, बर्मे सल्ला आदिले चिनिन्छ। यो प्रजातिको काठ बलियो हुन्छ। भवन निर्माण कार्यमा यसको प्रयोग गर्न सकिन्छ, साथै यसको पात विभिन्न उपचार पद्धतिमा प्रयोग गर्न सकिन्छ। आधुनिक चिकित्सा पद्धतिमा लौठसल्लाले ठूलो स्थान पाएको छ। यसबाट क्यान्सर विरुद्ध प्रभावकारी देखिने रसायन ट्याक्सस त्रिभिफोलियाबाट प्राप्त हुन्छ। लौठसल्लामा पाइने सारतत्व 10-DAB II लाई प्रशोधन गरी Paditaxel (Generic Name) नामक क्यान्सर विरुद्धको औषधीय गुण भएको रसायन उत्पादन कार्य हुदै आएको छ। यही रसायनलाई व्यापारिक भाषामा ट्याक्सोल (Taxol) भनिन्छ। यसको दिगो प्रयोगका लागि बढीमा २५ प्रतिशतसम्म पात सङ्कलन गर्न सकिने हुन्छ। (नेपाल सरकार, वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालय, वनस्पति विभाग, नेपालमा लौठ सल्ला, २०७३)।



आर्थिक वर्ष २०७६/७७ मा वन पैदावार, वन क्षेत्र अन्य प्रयोजन वापत, गैहकाष्ठ वन पैदावार र अन्य प्रशासनिक समेत गरी कुल रु. ३४ करोड ७६ लाख ८७ हजार राजस्व र ३२ करोड २३ लाख ४० हजार मूल्य अभिवृद्धि कर वापत सङ्कलन

भएको थियो । आर्थिक वर्ष २०७६/७७ को तुलनामा आर्थिक वर्ष २०७७/७८ मा राजस्व शीर्षकमा ५७ प्रतिशतले हास भएको छ भने मूल्य अभिवृद्धि कर ४३ प्रतिशतले घटेको छ । जबकि आर्थिक वर्ष २०७७/७८ को तुलनामा आर्थिक वर्ष २०७८/७९ मा राजस्व शीर्षकमा १५५ प्रतिशत र सोही अवधिमा मूल्य अभिवृद्धि करमा २७ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ । (तालिका २६)

तालिका २६: वन पैदावार बिक्रीबाट प्राप्त राजस्वको विवरण (रकम रु. हजारमा)

| क्र.सं. | विवरण | आर्थिक वर्ष २०७६/७७ | | आर्थिक वर्ष २०७७/७७ | | आर्थिक वर्ष २०७८/७९ | |
|---------|------------------------------|---------------------|--------------------|---------------------|--------------------|---------------------|--------------------|
| | | राजस्व | मूल्य अभिवृद्धि कर | राजस्व | मूल्य अभिवृद्धि कर | राजस्व | मूल्य अभिवृद्धि कर |
| १ | वन पैदावार | १२६४८२ | ३२९९३९ | १३७९२० | ४६९९३२ | ३९३६३८ | ५८६७९४ |
| २ | वन क्षेत्र अन्य प्रयोजन वापत | १८०९ | ० | ९३९० | ० | १७८०८ | ० |
| ३ | गैहकाष्ठ वन पैदावार | ८८३ | ४९० | २०४९ | ५६९ | १३७२ | ७२९ |
| ४ | अन्य (प्रशासनिक समेत) | २९८५२९ | ० | १८३८ | ० | ५०४४९ | ० |
| | कुल जम्मा | ३४७६८७ | ३२२३४० | १५०३८९ | ४६९६९३ | ३८३२६७ | ५८७५२३ |
| | वृद्धि प्रतिशत | | | -५७ | -४३ | १५५ | २७ |

स्रोत: प्रदेश सरकार, वन, वातावरण तथा भूसंरक्षण मन्त्रालय, वन निर्देशनालय, प्रदेश नं. १, २०७९

३.६ पर्यटन शुल्क

पर्यटन ऐन, २०३५ अनुसार “पर्यटक” भन्नाले विदेशी मुलुकबाट भ्रमणको लागि नेपालमा आउने गैर नेपाली नागरिक सम्झनु पर्छ । त्यसैगरी “नेपाली पर्यटक” भन्नाले नेपालको एक स्थानबाट अर्का स्थानमा भ्रमण गर्ने नेपाली नागरिक सम्झनु पर्छ । “ट्राभल एजेन्सी” भन्नाले जुनसुकै नामबाट सञ्चालन गरिएको भए तापनि पर्यटक वा अन्य व्यक्तिको निमित्त शुल्क लिई भ्रमण, बसोबास तथा आधुनिक सवारीको साधन उपलब्ध भएका स्थानहरूमा दृष्यावलोकन सम्बन्धी प्रबन्ध मिलाउने व्यक्ति, फर्म वा कम्पनी सम्झनु पर्छ । “ट्रेकिङ्ग एजेन्सी” भन्नाले जुनसुकै नामबाट सञ्चालन गरिएको भए तापनि पर्यटक वा अन्य व्यक्तिहरूलाई विविध प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक दृष्यावलोकन गराउने उद्देश्यले शुल्क लिई साधारणतया आधुनिक सवारी साधन उपलब्ध नभएका स्थानहरूमा यात्रा गराउने प्रबन्ध मिलाउने व्यक्ति, फर्म वा कम्पनी सम्झनु पर्छ ।

ऐनको दफा १४ (क) अनुसार नेपाल सरकारले नेपाल राजपत्रमा सूचना प्रकाशन गरी तोकिए बमोजिम होटल, लज, रेष्टुरा तथा रिसोर्ट वा बार प्रदेश सरकारले दर्ता गर्न सक्छ ।

ऐनको दफा ४५ (क) अनुसार जलयात्रा (न्याफिटड), ग्लाइडिङ, जङ्गल सफारी, क्याम्पिङ, हाईकिङ, स्काइङ, तथा तोकिएका अन्य पर्यटन व्यवसायहरूको दर्ता गर्ने, इजाजत लिने, नवीकरण गर्ने, सञ्चालन गर्ने, इजाजत नियमन गर्ने तथा दर्ता खारेज गर्ने सम्बन्धमा तोकिए बमोजिम हुने व्यवस्था छ । प्रदेश नं. १ को गत तीन आ.व. को पर्यटन शुल्कको दर तालिका २७ बमोजिम रहेको छ ।

प्रदेश नं. १ को कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा ९ अनुसार प्रदेश आफैले निर्माण गरेको र संघीय सरकारबाट हस्तान्तरण भई आउने पर्यटकीय स्थल, पर्यटन व्यवसाय र पर्यटकीय क्रियाकलापमा सेवाको लागत सञ्चालन र सम्भार खर्चलाई आधार मानी पर्यटन शुल्क लगाउने व्यवस्था रहेको छ । यसैगरी, प्रदेश नं. १ को आर्थिक ऐन, २०७९ को दफा ८ को उपदफा (१) अनुसार नेपाल सरकारबाट हस्तान्तरण भई आएका र प्रदेश सरकारले तोकिएका प्रदेश अन्तर्गतका वनक्षेत्र भित्र पर्ने पर्यटन स्थल, पर्यटकीय पदमार्ग, पर्यटकीय हवाई चार्टर्ड उडान, तालतलैया, गुफा, धार्मिक स्थल तथा प्रदेश भित्रका पूरातात्विक, ऐतिहासिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक स्थल, संग्रहालय, पार्क, रक क्लाइम्बिङ्ग, बञ्जीजम्पिङ्ग, न्याफिटिङ्ग, क्यानोनिङ्ग, जीपफ्लायर, अल्ट्रालाइट, प्याराग्लाइडिङ्ग, केवल कार, पिकनिक स्थल, भ्यू टावर, ट्रेकिङ तथा

ट्राभल एजेन्सी, क्यूरियो तथा पर्यटकीय सामग्री बिक्री वितरण गर्ने व्यवसाय जस्ता पर्यटकीय स्थल, पर्यटन व्यवसाय र पर्यटकीय क्रियाकलापहरूमा पर्यटन शुल्क लगाई असुल उपर गर्ने व्यवस्था गरेको छ। यसैगरी उपदफा (५) ले पर्यटन शुल्कको नियमन र प्रशासन सम्बन्धित गाउँपालिका वा नगरपालिकाले गर्ने र संकलित रकम बाँडफाँट गरी चालीस प्रतिशत रकम प्रदेश सञ्चित कोषमा दाखिला गर्नु पर्ने व्यवस्था गरेको छ।

तालिका २७ : प्रदेश नं. १ को पर्यटन शुल्कको दर

| क्र.सं. | शीर्षक | आ.व. २०७७/०७८ | आ.व. २०७८/०७९ | आ.व. २०७९/०८० |
|---------|--|--|---|---|
| १ | प्राचीन स्मारक तथा पूरातात्विक, धार्मिक, ऐतिहासिक, साँस्कृतिक सम्पदा र सङ्ग्रहालय | | | विदेशी तथा स्वदेशी पर्यटकलाई लाग्ने प्रवेश शुल्कको ५ प्रतिशत |
| २ | पदमार्ग | सार्क मुलुकको लागि प्रति पर्यटक यु.एस डलर ५ र अन्य मुलुकको पर्यटकको लागि यु.एस. डलर १० | सार्क मुलुकको लागि प्रति पर्यटक यु.एस डलर ५ र अन्य मुलुकको पर्यटकको लागि यु.एस डलर १० | सार्क मुलुकको लागि प्रति पर्यटक यु.एस डलर ५ र अन्य मुलुकको पर्यटकको लागि यु.एस डलर १० |
| ३ | वन क्षेत्र तथा तालतलैया, गुफा, पार्क, पिकनिक स्थल, भ्यूटावर, संरक्षण क्षेत्र | | | विदेशी तथा स्वदेशी पर्यटकलाई लाग्ने प्रवेश शुल्कको ५ प्रतिशत |
| ४ | पर्यटकीय हवाई चार्टर्ड उडान, प्याराग्लाइडिङ्ग, अल्ट्रालाइट, बञ्जीजम्पिङ, नौका विहार र क्यानोनिङ | | | विदेशी तथा स्वदेशी पर्यटकलाई लाग्ने प्रवेश शुल्कको ५ प्रतिशत |
| ५ | पर्यटक शुल्क | विदेशी पर्यटकको हकमा प्रति पर्यटक रु. १००० र स्वदेशी पर्यटकको हकमा प्रति पर्यटक शुल्क रु १०० | विदेशी पर्यटकको हकमा प्रति पर्यटक रु. १००० र स्वदेशी पर्यटकको हकमा प्रति पर्यटक शुल्क रु. १०० | विदेशी पर्यटकको हकमा प्रति पर्यटक रु. १००० र स्वदेशी पर्यटकको हकमा प्रति पर्यटक शुल्क रु. २०० |
| ६ | ट्रेकिङ तथा ट्राभल एजेन्सी, क्यूरियो पसल र पर्यटकीय सामग्री बिक्री वितरण गर्न पसल वार्षिक एक हजारको दरले सञ्चालन शुल्क लाग्ने छ। | | | वार्षिक एक हजारको दरले सञ्चालन शुल्क लाग्ने छ। |

स्रोत: प्रदेश नं. १ को आर्थिक ऐनहरू

३.७ विज्ञापन कर

(क) संवैधानिक तथा कानूनी व्यवस्था

नेपालको संविधानको अनुसूची ६ अन्तर्गत प्रदेशको अधिकार सूचीमा एकल अधिकारको रूपमा विज्ञापन कर रहेको छ भने अनुसूची ८ अन्तर्गत स्थानीय तहको अधिकारको सूचीमा पनि स्थानीय तहको एकल अधिकारको रूपमा विज्ञापन कर रहेको छ। स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ को दफा ११ को उपदफा २ (घ) मा गाउँपालिका तथा नगरपालिकाको काम

कर्तव्य र अधिकारको रूपमा विज्ञापन कर सम्बन्धी नीति, कानून, मापदण्ड, कार्यान्वयन र नियमन गर्ने अधिकारको व्यवस्था रहेको छ । अन्तर सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ को दफा ५ को उपदफा (१) को (घ) मा विज्ञापन करको दर गाउँपालिका वा नगरपालिकाले लगाउने र उठाउने व्यवस्था रहेको छ । सोहि दफाको उपदफा २ मा विज्ञापन करबाट उठेको रकम मध्ये साठौँ प्रतिशत रकम गाउँपालिका वा नगरपालिकाले स्थानीय संचित कोषमा जम्मा गरी चालीस प्रतिशत रकम मासिक रूपमा प्रदेश सञ्चित कोषमा जम्मा गर्नुपर्ने व्यवस्था रहेको छ । प्रदेश नं. १ को प्रदेश कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा ७ को उप दफा (१) अनुसार प्रदेशमा विज्ञापन सामग्री राखे वापत लाग्ने विज्ञापन कर सम्बन्धित स्थानीय तहले लगाउने र उठाउने छ भन्ने व्यवस्था छ ।

विज्ञापन (नियमन गर्ने) ऐन, २०७६ को दफा २ को (ड) अनुसार “विज्ञापन” भन्नाले कुनै वस्तु, सेवा, कार्यक्रम वा अवसरको बारेमा छापा, विद्युतीय माध्यम, अनलाईन, सामाजिक सञ्जाल, होर्डिङ्ग बोर्ड, बेलुन वा कुनै संरचना लगायतका माध्यमबाट सार्वजनिक रूपमा प्रचार प्रसार गरिएको वा प्रचार प्रसार गर्ने उद्देश्यले तयार गरिएको शब्द, वाक्य, चित्र, श्रव्य, दृश्य वा श्रव्यदृश्य सम्झनु पर्छ । विज्ञापन (नियमन गर्ने) ऐन, २०७६ को दफा २ को (छ) अनुसार “होर्डिङ्ग बोर्ड” भन्नाले विज्ञापन प्रदर्शनको लागि राखिएको वा राखिने साधन सम्झनु पर्छ र सो शब्दले डिजिटल डिस्प्ले, चलदृश्य बोर्ड, एलसीडी बोर्ड, लिड बोर्ड, ग्लो बोर्ड, नियोन साईन, प्रोजेक्टर, स्टल डिस्प्ले वा यस्तै अन्य प्रविधि वा प्रकारका बाह्य विज्ञापनको साधनलाई समेत जनाउँछ । दफा ४ मा सार्वजनिक स्थलबाट देखिने गरी होर्डिङ्ग बोर्ड राख्न र त्यसमा विज्ञापन गर्न चाहने व्यक्तिले सम्बन्धित स्थानीय तहबाट अनुमतिपत्र लिनु पर्ने व्यवस्था रहेको छ ।

विज्ञापन (नियमन गर्ने) नियमावली, २०७७ नियम ११ अनुसार विज्ञापन एजेन्सीको रूपमा सूचीकरण हुन चाहने एजेन्सीले सूचीकृत हुन बोर्डमा पाँच हजार रुपैयाँ दस्तुर तिरी निवेदन दिनु पर्नेछ । नियम ११ बमोजिम सूचीकृत भएका विज्ञापन एजेन्सीले आफ्नो एजेन्सी मार्फत गरिएका विज्ञापनहरूको दर्ता किताव खडा गरी अभिलेख राख्नु पर्नेछ ।

प्रदेश नं. १ को आर्थिक ऐन, २०७९ को दफा ९ को (१) ले स्थानीय तहको केन्द्र लगायत मुख्य मुख्य बजार तथा व्यापारिक केन्द्रहरूमा विज्ञापन कर लगाउनु पर्नेछ । यस्तो कर गाउँपालिका वा नगरपालिकाले लगाउने र असुल गर्नेछ । (२) उपदफा (१) बमोजिम संकलित कर स्थानीय विभाज्य कोषमा जम्मा गरी उक्त रकमको साठी प्रतिशतले हुन आउने सम्बन्धित स्थानीय तहको सञ्चित कोषमा र चालीस प्रतिशतले हुन आउने प्रदेश सञ्चित कोषमा मासिक रूपमा दाखिला गर्नुपर्नेछ ।

(ख) कर सङ्कलनको अवस्था

प्रदेश नं. १ अन्तर्गतका १३७ स्थानीय तहहरूबाट संकलित सूचना अनुसार जम्मा ३६ वटा स्थानीय तहहरूमा विज्ञापन कर लगाएको र उठाएको पाइन्छ । कर सङ्कलन सम्बन्धी विवरण तालिका २८ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

तालिका २८ : विज्ञापन करबाट राजस्व सङ्कलन (रु.)

| क्र.सं. | स्थानीय तह | यथार्थ रकम रु. | | | | अनुमानित रु. | कैफियत |
|---------|-----------------|----------------|--------------|--------------|--------------|--------------|---------------------------------|
| | | आ.व. २०७५/७६ | आ.व. २०७६/७७ | आ.व. २०७७/७८ | आ.व. २०७८/७९ | आ.व. २०७९/८० | |
| १ | फुडलिङ नपा | ७५००० | ७५००० | ७५००० | ० | ० | |
| २ | फिदिम नपा | ० | ० | ० | २४१५०० | ० | आ.व. २०७७/७८ र २०७८/७९ को जम्मा |
| ३ | फाल्गुनन्द गापा | ० | ० | ० | ५००० | ० | |
| ४ | इलाम नपा | २००००० | ० | ० | ७६९९९३ | ५३५००० | |
| ५ | सुर्योदय नपा | ० | १००००० | १००००० | १२९००० | २००००० | |

| क्र.सं. | स्थानीय तह | यथार्थ रकम रु. | | | | अनुमानित रु. | कैफियत |
|---------|-------------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|--|
| | | आ.व. २०७५/७६ | आ.व. २०७६/७७ | आ.व. २०७७/७८ | आ.व. २०७८/७९ | आ.व. २०७९/८० | |
| ६ | दमक नपा | २०००००० | ० | ० | ० | ० | ठेक्का रकम नबुझाएको र पुन सूचना निकाल्दा टेण्डर नपरेको |
| ७ | कन्काई नपा | ० | ० | ० | ४०२२९२ | ० | २०७८/७९ मा अनुमान गरिए तापनि सङ्कलन हुन नसकेको |
| ८ | अर्जुनधारा नपा | ० | ० | ० | १५५००० | ० | |
| ९ | शिवसताक्षी नपा | ० | ० | ० | ३७२७५० | ४१००२५ | |
| १० | गौरादह नपा | ० | ० | ० | ५०००० | ० | |
| ११ | कमल गापा | ० | ० | ० | ४६३००० | ० | |
| १२ | बुद्धशान्ति गापा | ० | ० | १००००० | ० | १२५००० | |
| १३ | हल्दीबारी गापा | ० | ० | १५००० | ० | ० | |
| १४ | कचनकवल गापा | ० | ० | ० | ० | ० | |
| १५ | धनकुटा नपा | ० | ४५०००० | ० | ५००००० | ५५०००० | सम्भावना भएको |
| १६ | साँगुरीगढी गापा | ० | ० | ० | ३०००० | ० | |
| १७ | छथर जोरपाटी गापा | ० | ० | ० | ४६००० | ० | |
| १८ | विराटनगर मनपा | ० | ० | ५०६६६६७ | ५०६६६६७ | ५०६६६६७ | तीन वर्षको एकमुष्ट रकम १ करोड ५२ लाख |
| १९ | बेलबारी नपा | ० | ० | १००००० | १५०००० | १६५००० | |
| २० | लेटाड नपा | ० | ० | ० | ८१००० | ८०००० | |
| २१ | पथरीशनिश्चरे नपा | ० | ० | ० | ८१००० | ८९१०० | |
| २२ | रतुवामाई नपा | ० | ० | ४५००० | ४५००० | ४५००० | |
| २३ | उर्लाबारी नपा | ० | ० | ० | ५०९९७५ | ० | |
| २४ | बुढीगंगा गापा | ० | ० | ० | २७८१०० | ० | |
| २५ | कानेपोखरी गापा | ० | ० | ५०००० | ५०००० | ५०००० | |
| २६ | इटहरी उमनपा | ० | ० | ० | २३७५००० | २३७५००० | तीन वर्षको एकमुष्ट रकम ७१ लाखमा ठेक्का लागेको |
| २७ | धरान उमनपा | २६४३७७७ | १२००० | ४०५२४ | ० | ९९०००० | |
| २८ | इनरुवा नपा | ० | ० | ० | ० | ११००००० | आ.व. ०७७/७८ देखि ०७९/८० सम्मको एकमुष्ट ठेक्का रकम |
| २९ | दुहवी नपा | ५६०००० | ५६०००० | ५६०००० | ५६०००० | ५६०००० | वार्षिक सरदर रु. ५,६०,००० प्राप्त हुने गरेको |
| ३० | बराहक्षेत्र नपा | ० | ० | ५०५०० | ११५००० | १२६५०० | |
| ३१ | कोशी गापा | ० | ० | ० | ३००००० | ३३०००० | |
| ३२ | गढी गापा | ० | ० | ० | ० | ११००० | |
| ३३ | हलेसी तुवाचुङ नपा | ० | ० | १०००० | १०००० | १५००० | |
| ३४ | कटारी नपा | १०४००० | १३७०३९ | ३१०००० | २३१००० | २००००० | |

| क्र.सं. | स्थानीय तह | यथार्थ रकम रु. | | | | अनुमानित रु. | कैफियत |
|---------|------------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|---|
| | | आ.व. २०७५/७६ | आ.व. २०७६/७७ | आ.व. २०७७/७८ | आ.व. २०७८/७९ | आ.व. २०७९/८० | |
| ३५ | सिद्धिचरण नपा | ० | ० | २९२५८ | १५४७० | ० | |
| ३६ | चिशंखुगढी गापा | ० | २०००० | २०००० | २०००० | २०००० | कूल ठेक्का रकमलाई वार्षिक सरदर रुपमा देखाइएको |
| | जम्मा रु. | ५५८२७७७ | १३५४०३९ | ६५७९९४९ | १३०४३७८७ | १३०४३२९२ | |

स्रोत: सम्बन्धित गाउँपालिका तथा नगरपालिका, २०७९

(ग) समस्या/सवालहरू

विज्ञापन कर सम्बन्धमा निम्नानुसारको समस्या/सवालहरू पहिचान गरिएका छन्।

- विज्ञापन कर सङ्कलनमा स्थानीय तहहरूको तत्परता कम देखिएको।
- कतिपय गाउँपालिका तथा नगरपालिकाहरूले विज्ञापन कर सङ्कलनको लागि टेन्डर आह्वान गर्दा टेन्डर नपरेको।
- विज्ञापन करको हकमा दुई वा सो भन्दा बढी मिलेर कर लगाउने र उठाउने गर्दा थप प्रभावकारी हुने देखिएको।
- स्थानीय तह र प्रदेश सरकारका बीचमा विज्ञापन करको दायराको खोजी तथा विस्तार गर्न आवश्यक सहकार्यको कमी भएको।

३.८ कृषि आयमा कर

कृषि आयमा करका सम्बन्धमा विभिन्न किसिमका अवधारणाहरू पाइन्छन्। खासगरी जीविकोपार्जनका हिसाबले न्यून आय हुने कृषकहरूले खेतीपाती गर्ने भएको हुँदा उनीहरूको कर तिर्ने क्षमता हुँदैन। कृषिलाई संरक्षित गरी प्रोत्साहन गर्नुपर्ने क्षेत्र भएको हुनाले कर लगाउने नभई अनुदान दिनुपर्दछ। कृषि क्षेत्रमा संलग्न किसानहरूको आर्थिक गतिविधिमा न्यून उपस्थिति हुने भएकाले कर तिर्ने क्षमता कमजोर हुन्छ। कृषि उपजको मूल्य उत्पादनकर्ता किसानले भन्दा व्यापारीले लिने हुँदा किसानलाई कर लगाउनु हुँदैन जस्ता विषयहरू उठ्ने गर्दछन्। तसर्थ कृषि आयमा कर लगाउनु उपयुक्त हुँदैन भन्ने सर्वसाधारणको अवधारणा रहेको पाइन्छ। तथापि कृषि आयमा कर लगाउँदा कर छल्ले प्रवृत्तिबाट जोगाउँछ, तेर्सो (Horizontal) र ठाडो (Vertical) समता कायम गर्न सहयोग गर्छ र कृषि क्षेत्रको विकास र सेवा विस्तारमा सहयोग पुऱ्याउँछ भन्ने अवधारणा पनि त्यत्तिकै बलियो रहेको पाइन्छ।

सामान्यतः कृषि आयमा कर भन्नाले कृषि उत्पादन जस्तै अन्नबाली (खाद्यान्न), फलफूल तथा तेलहन बाली तथा पशुपन्छी तथा मत्स्यपालन व्यवसायबाट किसानहरूले गर्ने आमदानीमा लगाइने करलाई बुझिन्छ। तर पनि, विभिन्न मुलुकमा कृषि आयमा कर सम्बन्धी परिभाषा फरक फरक पाइन्छ। भारतको आयकर ऐन, १९६१ अनुसार खेतीयोग्य जमिन र कृषि प्रयोजनका लागि भाडामा लिएको जग्गाबाट गरेको आमदानीलाई कृषि आयमा गणना गर्ने गरी व्याख्या गरेको छ भने पशुपालन, दुग्धशाला (डेरी फार्म) र कुखुरा पालनबाट आर्जन गरेको आयलाई कृषि आयमा गणना गरेको छैन। पाकिस्तानको आयकर अध्यादेश, २००१ अनुसार खेतीबाली/अन्नबाली र जग्गा भाडामा दिए वापत गरेको आमदानीमा कृषि कर लाग्ने गरी व्याख्या गरेको छ। संयुक्त राज्य अमेरिकामा विभिन्न किसिमका करहरूको फरक फरक रुपमा कानूनी परिभाषा गरिएको छैन। सबै किसिमका आय र पूँजीगत लाभलाई करयोग्य आयको रुपमा मानिएको छ। खेतीबारीको आयलाई छुट्टै आयको रुपमा नमान्ने यसलाई अन्य व्यवसायको आय सरह मानिएको छ। तदनुसरूप, धेरै विकसित मुलुकहरूले कृषि आयमा करलाई सामाजिक सुरक्षा योजनासँग गाँसेको पाइन्छ। कृषि आयमा कर लगाउने विषय अधिकांश मुलुकहरूमा विवादास्पद देखिँदै

आएको पनि छ । कृषि आयमा कर लगाउने कुरा कृषि व्यवसायमा आश्रित अधिकांश मानिसहरु साना किसानहरु हुन्छन्, उनीहरुले निर्वाहमुखी कृषि पेशा अँगालेका हुन्छन् र उनीहरुको कर तिर्ने क्षमता कम हुन्छ भन्ने कुरालाई बेवास्ता गरेको हुन्छ (खान, २००१) । कृषि क्षेत्र अधिकांश रुपमा अनौपचारिक हुन्छ र उचित लेखाप्रणाली बिना नै नगदमा कारोबार गर्ने गरिन्छ । यसले किसानहरुको वास्तविक आमदानीको लेखाजोखा गर्न समेत कठिन हुन्छ । साथै, कृषि व्यवसाय सम्बन्धमा उचित किसिमको तथ्याङ्क उपलब्ध हुन नसक्दा पनि कृषि आयमा कर लगाउने विषय जटिल छ (चटर्जी र जुनकर, १९६८) ।

सबै मुलुकहरुमा एकै किसिमको मोडेलले कृषि कर सङ्कलन गर्न सकिँदैन । किनकी यसमा सम्बन्धित मुलुकको राजनीतिक, सामाजिक र संस्थागत ढाँचा, कृषिको उत्पादन र उत्पादकत्वको आकार आदिले प्रभाव पारेको हुन्छ । तथापि, कृषि आयमा करलाई कसरी परिभाषित गर्ने, कसरी कर लगाउने, कसलाई कर लगाउने, कसरी कर सङ्कलन गर्ने र कसरी करदाता किसानहरुलाई सुविधा दिने भन्ने विषयमा स्पष्टता हुन सकेको खण्डमा कृषि आयमा कर लगाउन सहज हुने देखिन्छ । तसर्थ, कृषि आयमा कर लगाउन जिम्मेवारी प्राप्त निकायले स्पष्ट योजना र खाका बनाएर करदाताहरुलाई यसका बारेमा सचेत गराउनु आवश्यक हुन्छ ।

कृषि आयमा कर लगाउने वैकल्पिक संयन्त्रको रुपमा अष्ट्रेलिया, क्यानाडा, पोल्याण्ड, जर्मनी, इटली र स्विट्जरल्याण्ड जस्ता विकसित मुलुकहरुमा सामाजिक सुरक्षामा आधारित कर प्रणाली प्रयोगमा छन् । तथापि, यो प्रणाली मुलक पिच्छे फरक फरक रुपमा प्रयोग भएको छ (एण्डरसन एट अल, २००२) । यस प्रणालीको मुख्य अवधारणा भनेको कृषि आयमा कर तिर्ने किसानहरुलाई विभिन्न किसिमका वित्तीय सुरक्षाको सुनिश्चित गर्नु हो । पहिलो, खासगरी कृषियोग्य जमिनको स्वामित्व वा कृषियोग्य जमिनको आयको लेखाजोखा गरी सोको आधारमा अथवा करको समतल दर (Flat Rate) का आधारमा यस्तो कर लगाउने गरिन्छ । अधिकांश मुलुकहरुले यस किसिमको योजनामा न्यून आय गर्ने किसानहरुलाई सहभागी गराउँदछन् (Schoukens, 2007) । जसको वार्षिक कारोवार निश्चित सीमाभन्दा बढी हुन्छ र ठूलो मात्रामा कृषि व्यवसाय सञ्चालन गर्दछन् भने उनीहरु कर्पोरेट निकायका रुपमा दर्ता भै सोही अनुसार कर तिर्नु पर्दछ । दोस्रो, यसरी साना किसानहरुबाट सङ्कलन भएको रकमलाई करको रुपमा नलिई यसलाई उनीहरुको मौज्दात (संचय) को रुपमा सङ्कलन भएको मानी उक्त रकम किसानहरुकै हितमा वित्तीय सहयोग गरिन्छ । यसरी जति पनि किसानहरु यस किसिमको योजनामा सहभागी हुन्छन् उनीहरुलाई सरकारले बाली बीमा, जीवन/स्वास्थ्य बीमा, अन्य करहरुमा छुट, विउ-विजन तथा मल जस्ता क्षेत्रमा सहूलियत, ज्येष्ठ किसान पेन्सन जस्ता सुविधाहरु उपलब्ध गराउँदछ । तेश्रो, यदि कुनै मुलुकले ज्येष्ठ किसान पेन्सनको व्यवस्था गर्दैनन् भने निश्चित समय पश्चात उनीहरुबाट जम्मा भएको रकमको केही अंश आवश्यकता अनुसार जुनसुकै बेलापनि उनीहरुले नै फिर्ता लिन सक्दछन् । सरकारको वित्तीय बोझ कम गर्न यस किसिमको योजनामा न्यून आय भएका किसानहरुलाई स्वेच्छाले सहभागी गराई प्रोत्साहन गर्न सचेतनामूलक कार्यक्रमहरु सञ्चालन गर्न सकिन्छ । कृषि आयमा कर सम्बन्धी प्रदेशगत आर्थिक ऐनहरु र कर तथा गैरकर सम्बन्धी ऐनहरुको पुनरावलोकन तथा अन्तर्राष्ट्रिय अभ्यासहरुको विवेचना **अनुसूची ८** मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

नेपालको सातवटै प्रदेशहरुको प्रदेश कर तथा गैरकर सम्बन्धी ऐन अध्ययन गर्दा कृषि आयमा करका सम्बन्धमा समान परिभाषा भएको पाईदैन । प्रदेश नं. १, बागमती र लुम्बिनी प्रदेशले स्वयं कर निर्धारण प्रणालीमा आधारित भएर कृषि आयमा कर लगाउने व्यवस्था गरेका छन् । प्रदेश नं. १ ले कृषि आयमा कर लगाउने प्रक्रिया प्रदेश सरकारले तोके बमोजिम हुने व्यवस्था गरेको छ तर यसको कार्यान्वयन हुन सकेको देखिँदैन । प्रदेश तहको चालु आ.व. २०७९/८० को आर्थिक ऐनहरु अध्ययन गर्दा सुदूरपश्चिम प्रदेशले कृषि आयमा लाग्ने कर पूर्णरुपमा छुट गर्ने व्यवस्था गरेको छ । प्रदेश नं. १ ले कृषि आयमा कर सम्बन्धी दर तय नगरी सेवा शुल्क निर्धारण गरेको छ भने बागमती प्रदेशले कृषकहरुले स्वयम् घोषणा गरी रु. ५ लाखभन्दा

बढीको कृषि आमदानीमा कर लगाउने र गण्डकी, लुम्बिनी र सुदुरपश्चिम प्रदेशले रु. १० लाखभन्दा माथिको कृषि आयमा कर लगाउने कानूनी व्यवस्था गरेका छन् । तर कर्णाली प्रदेशको आर्थिक ऐनमा यो विषय मौन रहेको छ ।

कानून बनाएर मात्रै कृषि आयमा कर लगाउने अभ्यास अन्तरराष्ट्रिय तहमा पाइन्छ । मापदण्डका आधारमा कृषि उत्पादनबाट निश्चित आय आर्जन गर्ने कृषकहरूबाट कृषि आयमा कर लगाउने गरेको पाइन्छ । निर्वाहमुखी कृषि पेशालाई प्रवर्धन गर्ने र व्यवसायिक कृषि पेशामा कर लगाउने अभ्यास रहेको पाइन्छ । कतिपयमा निश्चित भूमिको क्षेत्रफल र पशुपक्षीको संख्यालाई आधार मानी न्यूनतम कृषि आयमा कर लगाउने प्रचलन पनि देखिन्छ । यसैगरी खास खास कृषि खेतीबाट प्राप्त आयमा कर लगाउने प्रचलनहरू भएको देखिन्छ ।

३.९ दस्तुर तथा दण्ड जरिवाना

माथिका शीर्षकहरूको अतिरिक्त प्रदेश सरकारले प्रदान गर्ने सेवा र नियमन वापत विभिन्न किसिमको सेवा शुल्क तथा दस्तुर सङ्कलन गर्दै आएको छ । यसको साथै प्रदेश भित्र कुनै व्यक्ति, संस्था वा निकायले प्रदेश कानूनको उल्लङ्घन गरेको पाइएमा प्रदेश सरकारले दण्ड जरिवाना गर्न सक्ने व्यवस्था प्रदेश आर्थिक ऐनले गरेको छ । सो प्रदेश आर्थिक ऐनमा प्रदेश कानूनको उल्लङ्घन वापत हुने दण्ड र जरिवानाको व्यवस्था यस ऐन र अन्य प्रचलित कानून बमोजिम हुने उल्लेख छ । दण्ड जरिवानाको दर प्रचलित कानून बमोजिम हुने व्यवस्था पनि प्रदेश आर्थिक ऐनले गरेको छ ।

४.९ राष्ट्रिय परिवेश

(क) वृहत आर्थिक परिदृश्य

नेपालको वर्तमान कूल गार्हस्थ उत्पादनको आकार रु. ४८५१ अर्ब रहेको छ। आर्थिक सर्वेक्षण २०७८/७९ मा चालू आर्थिक वर्षमा कृषि, उद्योग र सेवा क्षेत्रको मूल्य अभिवृद्धि क्रमशः २.३ प्रतिशत ८.१ प्रतिशत र ६.६ प्रतिशतका दरले वृद्धिहुने अनुमान गरिएको छ। साथै, कूल मूल्य अभिवृद्धि (Value addition) मा कृषि, उद्योग, र सेवा क्षेत्रको योगदान क्रमशः २३.९ प्रतिशत, १४.३ प्रतिशत र ६१.८ प्रतिशत रहने अनुमान गरिएको छ। यस अतिरिक्त आर्थिक वर्ष २०७८/७९ मा कृषि बाहेकका गैर कृषि क्षेत्रहरूको मूल्य अभिवृद्धि ६.८८ प्रतिशतले बढेको अनुमान छ। कृषि अझै परम्परागत निर्वाह खेतीको रूपमा रहेको छ भने गैह्र कृषि तर्फ विद्युत तथा ग्याँस, आवास तथा भोजन, निर्माण उद्योग, खानी र स्वास्थ्य क्षेत्र लगायतमा भएको वृद्धिले यो उपक्षेत्रमा वृद्धि भएको अनुमान रहेको छ।

न्यून आम्दानी हुने भएकोले आम्दानीको तुलनामा उपभोगको अंश ठूलो रहेको छ। उपभोग-आम्दानी अनुपात करिब ९० प्रतिशत रहेको छ। यस तथ्यले बचत अत्यन्त न्यून भएको अवस्था जनाउँछ। कूल गार्हस्थ बचत र कूल गार्हस्थ उत्पादन अनुपात करिब १० प्रतिशत मात्र रहेको छ तर कूल राष्ट्रिय बचत भने करिब ३२ प्रतिशत रहेको छ। यसले देशको आन्तरिक आर्थिक क्रियाकलाप सीमित भएको र बाह्य क्रियाकलापबाट देशमा आम्दानी भित्रने संकेत गर्छ। आत्मनिर्भर अर्थतन्त्रको लागि प्रयास गरिएको वर्तमान अवस्थामा बाह्य निर्भरता बढ्नु विरोधाभासको अवस्था हो। नेपालमा कूल लगानीको गार्हस्थ उत्पादनसँगको अनुपात ३७ प्रतिशत जति रहेको छ। तसर्थ बचत लगानी बीचको खाडल कूल गार्हस्थ उत्पादनको करिब २८ प्रतिशत रहेको देखिन्छ। हाल कूल गार्हस्थ उत्पादनसँग कूल स्थिर पूँजी निर्माण (gross fixed capital formation-GFCF) को अनुपात २९ प्रतिशत जति रहेको छ। तर कूल गार्हस्थ उत्पादनसँगको कूल लगानी भने ३४ प्रतिशत जति रहेको पाइन्छ। यसबाट सबै लगानीले पूँजी निर्माण गर्न नसक्ने देखाउँछ। राष्ट्रिय रूपमा नै लगानीको दक्षता (Investment efficiency) बढाउनु पर्ने स्पष्ट देखिन्छ। प्रदेश नं. १ मा पनि लगानीको दक्षता वृद्धि गर्नु पर्ने देखिन्छ। प्रदेशको प्रथम पञ्चवर्षीय योजना अनुसार सिमान्त पूँजी उत्पादन अनुपात (Incremental capital output ratio- ICOR) ४.९:१ रहेको उल्लेख

छ। प्रदेश नं. १ को प्रथम पञ्चवर्षीय योजनाका अनुसार लगानीका स्रोतहरूमा सरकारी क्षेत्रबाट ३८.७, निजी क्षेत्रबाट ५३.८, सहकारी क्षेत्रबाट ५.५ र सामुदायिक क्षेत्रबाट २.० प्रतिशत पुऱ्याउने अनुमान गरिएको छ।

नेपालको अर्थतन्त्रमा निजी क्षेत्रको अंश ठूलो रहेको छ। कूल गार्हस्थ उत्पादनमा करिब ७० प्रतिशत भन्दा बढी योगदान निजी क्षेत्रबाट हुने गरेको छ। कुल स्थिर पूँजी निर्माणमा निजी क्षेत्रको योगदान ७५ प्रतिशत रहेको छ भने सरकारी क्षेत्रको योगदान १९ प्रतिशत र सार्वजनिक संस्थानहरूको योगदान ६ प्रतिशत जति रहेको अवस्था छ। तसर्थ निजी क्षेत्रको लगानी क्षमता वृद्धि हुनु जरुरी छ। व्यवसायिक वातावरण सुधार गर्नु पर्ने त्यतिकै टड्कारो आवश्यकता छ।

(ख) नेपाल सरकारको आय व्ययको अवस्था

नेपाल सरकारको तीन आर्थिक वर्षको आय व्ययको विश्लेषण गर्दा औसतमा चालु खर्च (प्रदेश र स्थानीय तहलाई प्रदान गर्ने विभिन्न अनुदान समेत) ७८ प्रतिशत र पूँजीगत खर्च २२ प्रतिशत भएको देखिन्छ भने कुल खर्चमा राजस्व र अनुदानको योगदान ८१ प्रतिशत रहेको छ भने बजेट न्यूनता १९ प्रतिशतको हाराहारीमा रहेको छ। यसबाट के निष्कर्ष निकाल्न सकिन्छ भने संघीय सरकारको खर्च

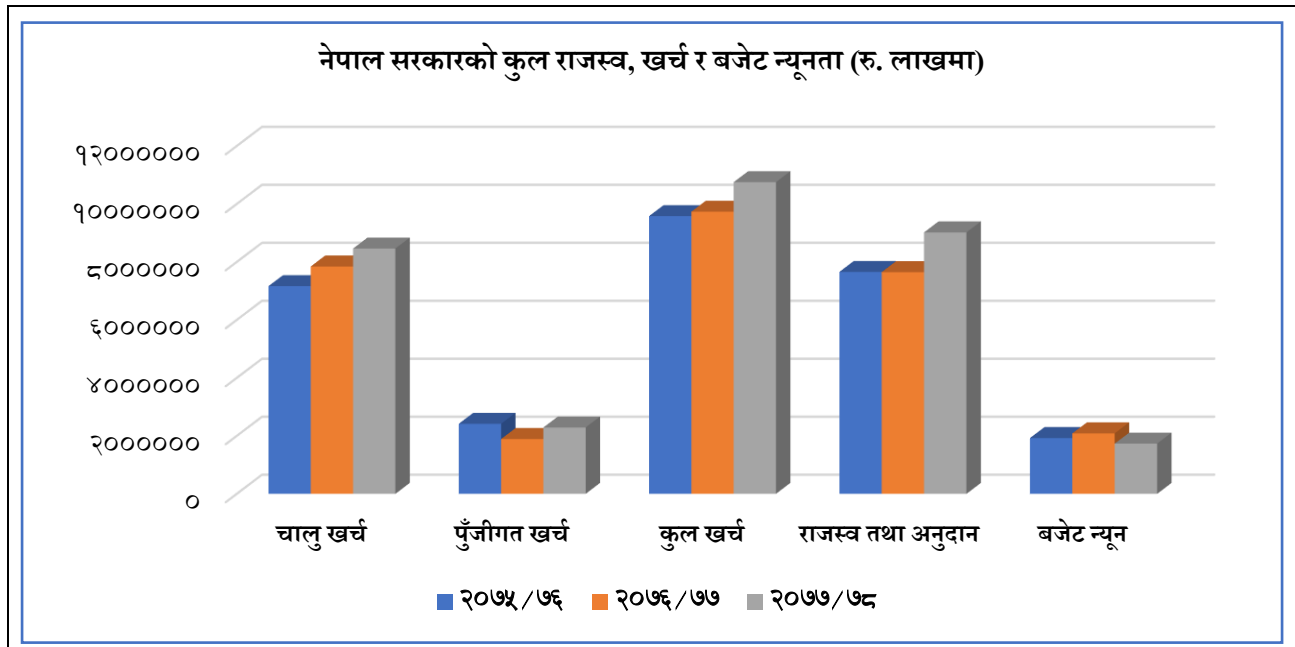
जिम्मेवारीको तुलनामा राजस्व जिम्मेवारी न्यून छ अथवा राजस्व जिम्मेवारीको प्रभावकारी कार्यान्वयनमा समस्या छ । नेपाल सरकारको आय व्यय सम्बन्धी विवरण तालिका २९ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

तालिका २९ : नेपाल सरकारको आय व्ययको विश्लेषण

| खर्च तथा राजस्व शीर्षकहरू | रकम रु. लाखमा | | | औसत | प्रतिशत |
|---------------------------|---------------|---------|----------|----------|---------|
| | २०७५/७६ | २०७६/७७ | २०७७/७८ | | |
| चालु खर्च | ७९६४९७६ | ७८४२९९४ | ८४६२९७३ | ७८२३०८८ | ७८ |
| पूँजीगत खर्च | २४९५६२५ | ९८९९४०९ | २२८८३६९ | २९९८४६२ | २२ |
| कुल खर्च | ९५७९८०९ | ९७३४३९५ | ९०७५०५३४ | ९००२९५५० | ९०० |
| राजस्व तथा अनुदान | ७६५५३९६ | ७६४८४४६ | ९०९८४९३ | ८९०७४९८ | ८९ |
| बजेट न्यून | १९२४४८५ | २०८५८६९ | १७३२०४९ | १९९४९३२ | १९ |

स्रोत: नेपाल सरकार, अर्थमन्त्रालय, वजेट वक्तव्य, आ.व. २०७७/७८, २०७८/७९ र २०७९/८०

माथिको तालिकालाई निम्नानुसार चार्टमा देखाइएको छ । विगत तीन आर्थिक वर्षमा नेपाल सरकारको चालु खर्च निरन्तर वृद्धि भई रहेको छ भने पूँजीगत खर्चमा उतार चढाव भएको देखिन्छ । त्यसैगरी आर्थिक वर्ष २०७५/७६ को तुलनामा आर्थिक वर्ष २०७६/७७ मा नेपाल सरकारको राजस्व तथा अनुदानको हिस्सा घटेको छ । त्यसैगरी २०७६/७७ मा नेपाल सरकारको बजेट न्यूनता सबैभन्दा बढी रहेको छ ।



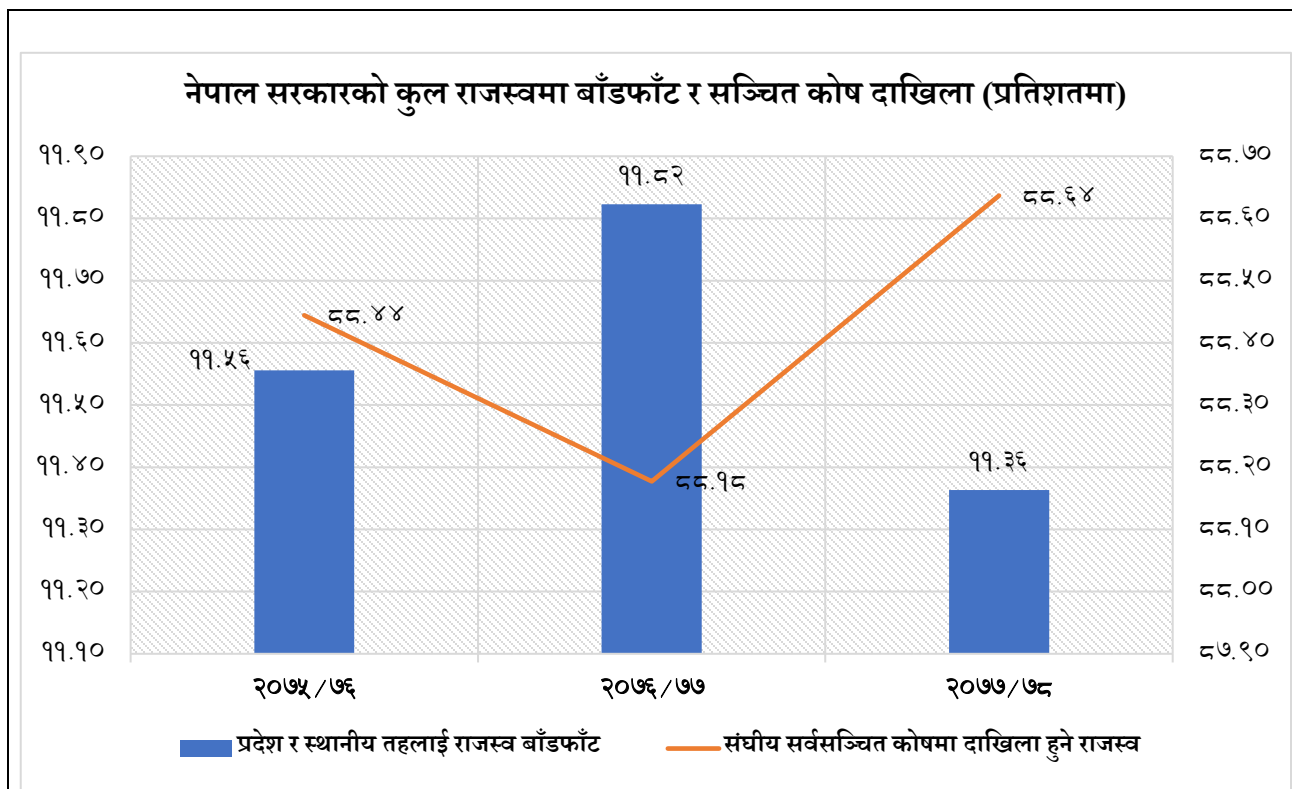
तालिका ३० : नेपाल सरकारको यथार्थ राजस्व प्राप्ति सम्बन्धी विवरण (रु. लाखमा)

| क्र.सं. | शीर्षक | आ.व. २०७५/७६ | | आ.व. २०७६/७७ | | आ.व. २०७७/७८ | |
|-------------------------|--|--------------|---------|--------------|---------|--------------|---------|
| | | रकम | प्रतिशत | रकम | प्रतिशत | रकम | प्रतिशत |
| क. कर राजस्व रकम | | | | | | | |
| १ | एकलौटी फर्म तथा व्यक्तिगत आयमा लाग्ने कर | ५४८९५३ | ६.५४ | ५७९२७८ | ६.८४ | ८३५३८५ | ८.५६ |
| २ | निकायको आयमा लाग्ने कर | ९०४८६८९ | ९२.४९ | ९२३९५९२ | ९४.५३ | ९०४६९८९ | ९०.७२ |

| क्र.सं. | शीर्षक | आ.व. २०७५/७६ | | आ.व. २०७६/७७ | | आ.व. २०७७/७८ | |
|---------|--|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|--------------|
| | | रकम | प्रतिशत | रकम | प्रतिशत | रकम | प्रतिशत |
| ३ | लगानीको आय तथा अन्य आयमा लाग्ने कर | २८५४०५ | ३.४० | ३२९५४० | ३.७९ | ३३३४४२ | ३.४२ |
| ४ | पारिश्रमिकमा आधारित कर | ६००६२ | ०.७२ | ६५०८९ | ०.७७ | ६८८९६ | ०.७९ |
| ५ | सम्पत्ति कर | ३४ | ०.०० | ४३ | ०.०० | ४ | ०.०० |
| ६ | मूल्य अभिवृद्धि कर | २४९६५७५ | २८.७८ | २२४०९६५ | २६.४४ | २८२००९८ | २८.८८ |
| ७ | अन्तः शुल्क | ९२३९९९९ | ९४.७६ | ९००६३७५ | ९९.८८ | ९३७३४४३ | ९४.०७ |
| ८ | विशेष सेवामा लाग्ने कर | ९५२४६ | ०.९८ | ४०८५३ | ०.४८ | २५६५५ | ०.२६ |
| ९ | पूर्वाधार सेवाको उपयोग तथा सवारी साधनमा लाग्ने कर | ३००७७९ | ३.५८ | २७६७३३ | ३.२७ | ४०८५७६ | ४.९८ |
| १० | वैदेशिक व्यापारमा आधारित कर | ९३७२४६२ | ९६.३५ | ९२३७९०३ | ९४.६९ | ९६८४७२३ | ९७.२६ |
| ११ | वैदेशिक व्यापारमा आधारित अन्य कर | ६०७२८ | ०.७२ | ६०९२४ | ०.७२ | ९०४७९९ | ९.०७ |
| १२ | अन्य कर (व्यवसायीले भुक्तानी गर्ने) | २३००३ | ०.२७ | ९०६९ | ०.०९ | ६ | ०.०० |
| १३ | व्यवसायी बाहेक अन्यले भुक्तानी गर्ने | ६५ | ०.०० | ९० | ०.०० | | |
| | जम्मा कर राजस्व | ७३७९९८४ | ८७.७८७६ | ७०६९४७८ | ८३.३३०६ | ८७०९९३६ | ८९.९२ |
| | ख. अन्य राजस्व | | ०.०० | | ०.०० | | ०.०० |
| १ | व्याज | ९७९८०३ | २.०५ | ५४९९३ | ०.६४ | ८४९०२ | ०.८६ |
| २ | लाभांश | २०५९९९ | २.४४ | २३४६४९ | २.७७ | ९२९८९५ | ९.३३ |
| ३ | भाडा र रोयल्टी | ७२४६० | ०.८६ | ९४४७९ | ९.९९ | ८९०२० | ०.९९ |
| ४ | वस्तु तथा सेवा बिक्रीबाट प्राप्त रकम | ९९८७९२ | ९.४९ | ९९०२३७ | ९.३० | ९९९२५६ | ९.९४ |
| ५ | प्रशासनिक सेवा शुल्क | ९२७३०३ | ९.५२ | ९३९४८६ | ९.५५ | ९९००९८ | ९.९३ |
| ६ | अन्य प्रशासनिक दस्तुर | ७५०९४ | ०.८९ | २२४९८ | ०.२७ | ३२६९२ | ०.३३ |
| ७ | दण्ड जरिवाना जफत (न्यायिक र प्रशासनिक) | २९०३९ | ०.३५ | २९४८९ | ०.२५ | २५५६४ | ०.२६ |
| ८ | चालु हस्तान्तरण | ७ | ०.०० | ५ | ०.०० | ६ | ०.०० |
| ९ | अन्य राजस्व | ९२४३७४ | ९.४८ | २६७८३० | ३.९६ | ७५०९५ | ०.७७ |
| १० | पूँजीगत राजस्व | ९९९३ | ०.०९ | ५३ | ०.०० | ९८९ | ०.०० |
| | अन्य राजस्व जम्मा | ९२५०९६ | ९९.०९६५ | ९३६९९९ | ९९.०५६२ | ६५७७५७ | ६.७३७ |
| | राजस्व जम्मा | ८२९६२०० | ९८.८०४९ | ७९९८३८९ | ९४.३८६९ | ९३५८८९३ | ९५.८६ |
| | ग. अन्य प्राप्ति (बेरुजू, निकासा फिर्ता, अनुदान फिर्ता) | ९००४९२ | ९.२० | ४७५६५८ | ५.६९ | ४०४२०९ | ४.९४ |
| | जम्मा (राजस्व/प्राप्ति) | ८३९६६९२ | ९०० | ८४७४०४७ | ९०० | ९७६३०९४ | ९०० |
| | घ. राजस्व बाँडफाँट | ९७०२९० | ९९.५६ | ९००९८६७ | ९९.८२ | ९९०९४९५ | ९९.३६ |
| | ड. संघीय सर्वसञ्चित कोषमा दाखिला हुने राजस्व | ७४२६३२२ | ८८.४४ | ७४७२९८० | ८८.९८ | ८६५३६७९ | ८८.६४ |

स्रोत: नेपाल सरकार, अर्थमन्त्रालय, वजेट वक्तव्य, आ.व. २०७७/७८, २०७८/७९ र २०७९/८०

तल प्रस्तुत चार्ट अनुसार नेपाल सरकारको कुल राजस्व र प्राप्ति मध्ये तीन आर्थिक वर्षको औसत ११.५८ प्रतिशत प्रदेश र स्थानीय तहलाई राजस्व बाँडफाँट वापत हस्तान्तरण हुँदै आएको छ भने बाँकी ८८.४२ प्रतिशत नेपाल सरकारको सर्वसञ्चित कोषमा दाखिला हुँदै आएको छ ।



४.२ प्रदेश परिवेश

हाल देशको कूल गार्हस्थ उत्पादनको वृद्धिदर ५.८४ भएकोमा प्रदेश नं. १ को पनि आर्थिक वृद्धिदर ५.१ प्रतिशत रहेको छ । विगत ४ आर्थिक वर्षको औसतमा प्रदेश नं. १ को आर्थिक वृद्धिदर ४.२२ प्रतिशत रहेको छ । देशको कूल गार्हस्थ उत्पादनमा यस प्रदेश नं. १ को योगदान १५.७ प्रतिशतको रहेको पाइन्छ । आर्थिक सर्वेक्षण २०७८/७९ का अनुसार नेपालमा कूल गार्हस्थ उत्पादनको संरचनामा कृषिको अंश २३.९, उद्योगको अंश १४.३, र बाँकी ६१.८ प्रतिशत सेवाक्षेत्रको अंश रहेको छ भने प्रदेश नं. १ मा यो अंश क्रमशः ३३ प्रतिशत, १७.८ प्रतिशत र ४९.१ प्रतिशत रहेको छ । प्रदेशगत रूपमा भने अनुपातमा हेर्दा प्रदेश नं. १ मा सेवा क्षेत्रको योगदान अन्य प्रदेशको तुलनामा न्यून रहेको देखिन्छ । तर कृषि क्षेत्रको अंश भने अन्य प्रदेशको भन्दा अनुपातमा बढी रहेको छ ।

सबै प्रदेशहरूको तुलनामा प्रदेश नं. १ मा कृषि र उद्योगको कुल गार्हस्थ उत्पादनमा सबैभन्दा बढी अंश अर्थात् २१.८ प्रतिशत रहेकोछ भने कूल गार्हस्थ उत्पादनमा उत्पादनमूलक उद्योगको हकमा बागमती प्रदेश पछि दोस्रो ठूलो अंश योगदान गर्ने प्रदेश यही प्रदेश नं. १ भएको छ । आर्थिक वर्ष २०७८/७९ मा प्रदेश नं. १ मा प्रतिव्यक्ति कूल गार्हस्थ उत्पादन १२६७ अमेरिकी डलर पुगेको छ ।

प्रदेश नं. १ मा आर्थिक वर्ष २०७८/७९ मा उद्योग दर्ताको संख्या ८०७ र घरेलु तथा साना उद्योगहरूको संख्या ७६०५९ पुगेको छ । उद्योगमा लगानी रु. ५५५.६ अर्ब रहेको छ भने कम्पनी दर्ताको संख्या २०८३७ पुगेको पाइन्छ । यसैगरी यस

प्रदेशमा विद्युत उत्पादन ३२७ मेगावाट भएको छ भने वन क्षेत्र प्रदेशको क्षेत्रफलको १७.१६ प्रतिशत रहेको छ । स्थानीय सडक १३१२९ कि. मि. रहेको छ । बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूको शाखा १८२८ पुगेको र प्रतिशाखा जनसंख्या २७२० पुगेको छ । जबकि नेपालमा प्रतिशाखा जनसंख्या २५७२ रहेको छ । यसैगरी विमकको शाखा ५०६ पुगेको छ ।

प्रदेश सरकारको खर्चको प्रवृत्ति हेर्दा आर्थिक वर्ष २०७७/७८ मा सबै प्रदेशहरूमा भएको कूल खर्च रु. १.८८ अर्ब ८३ करोडमा प्रदेश नं. १ को अंश २७ अर्ब ९५ करोड रहेको पाइन्छ, जुन १५ प्रतिशत हुन आउँछ । यसमा पूँजीगत खर्चको अंश करिब ५७ प्रतिशत रहेको छ । सातै प्रदेशको औसत अंश ५९ प्रतिशतको तुलनामा यो अंश भने केही कमी हो । प्रदेश नं. १ मा प्रदेशको कूल गार्हस्थ उत्पादनको अनुपातमा प्रदेशले गरेको खर्च ४.१४ प्रतिशत र प्रदेशमा उठेको राजस्व १.८४ प्रतिशत रहेको पाइन्छ । अन्य प्रदेशहरूको तुलनामा प्रदेश नं. १ मा राजस्व कूल गार्हस्थ उत्पादन अनुपात कमी रहेको पाइन्छ । यसले यस प्रदेशमा थप राजस्वको सम्भावना भएको अवस्था देखाउँछ । प्रथम पञ्चवर्षीय योजनाका अनुसार योजना अवधिमा खुद वस्तु तथा सेवा उत्पादनमा कर औसत वृद्धिदर ११.४ प्रतिशतले बढ्ने प्रक्षेपण गरिएको छ ।

नेपालमा संघीय सरकारको राजस्व कूल गार्हस्थ उत्पादनको २५ प्रतिशतको हाराहारीमा पुगेको छ । राजस्वका स्रोतहरूमा कर राजस्व र गैरकर राजस्व रहेका छन् । कर राजस्व अन्तर्गत प्रत्यक्ष कर र अप्रत्यक्ष कर रहेका छन् । प्रत्यक्ष करमा संस्थागत तथा व्यक्तिगत आयकर पर्छ भने अप्रत्यक्ष करमा वस्तु तथा सेवामा लाग्ने आधारित कर (जस्तै मूल्य अभिवृद्धिकर, अन्तशुल्क, भन्सार महशुल आदि) पर्छन् । कर राजस्वमा आय मुनाफा तथा पूँजीगत लाभमा लाग्ने कर, पारिश्रमिकमा आधारित कर, सम्पत्ती कर, वस्तु तथा सेवामा आधारित कर, वैदेशिक व्यापारमा आधारित कर, भन्सार महशुल आदि पर्दछन् । गैरकर राजस्वमा सम्पत्तीबाट प्राप्त कर (जस्तै ब्याज, लाभांस, भाडा, रोयल्टी आदि) र वस्तु तथा सेवा बिक्रीबाट हुने आय प्रशासनिक दस्तुर, दण्ड, जरीवाना इत्यादि पर्छन् ।

संघीय सरकारको कूल राजस्व संरचनामा करिब ९० प्रतिशत कर राजस्व र १० प्रतिशत जति गैरकर राजस्वको अंश छ । कर राजस्व तर्फ आर्थिक वर्ष २०७७/७८ मा आय मुनाफा तथा पूँजीगत लाभमा लाग्ने कर रु २२१ अर्ब; पारिश्रमिकमा लाग्ने कर रु ६.८८ अर्ब; वस्तु तथा सेवामा आधारित कर ४६२ अर्ब रहेको थियो जसमा मूल्य अभिवृद्धि कर रु २८२ अर्ब (६१%) र अन्तशुल्क १३७ अर्ब (३०%) रहेका थिए । वैदेशिक व्यापारमा आधारित कर भने १७८ अर्ब थियो । यसमध्ये भन्सार महशुल १६८ अर्ब (९४%) र बाँकी वैदेशिक व्यापारमा आधारित आयकर करिब १० अर्ब बराबर रहेको थियो ।

संघीय सरकारको विगत ३ वर्षको कूल राजस्वको संरचनामा मूल्य अभिवृद्धि कर २४ प्रतिशत, अन्त शुल्क १४ प्रतिशत, भन्सार महशुल २२ प्रतिशत, आयकर २६ प्रतिशत, गैर कर १० प्रतिशत र अन्य राजस्व करिब ४ प्रतिशत रहेको छ । आयातमा आधारित कर राजस्वको वृद्धिदर आन्तरिक कर राजस्वको वृद्धिदर भन्दा उच्च रहेकोले राजस्व संरचना त्रुटीपूर्ण रहेको देखिन्छ । पैठारीमा आधारित कर राजस्व र आन्तरिक तर्फको कर राजस्वको अनुपात क्रमशः ५५ प्रतिशत र ४५ प्रतिशत रहेको छ । करको दायरामा विस्तार भने भइरहेको पाइन्छ । करको आधार तथा दायरामा क्रमशः विस्तार हुदै गएको पनि छ । २०७८ फाल्गुनसम्म जम्मा स्थायी लेखा नं लिनेको संख्या ४६ लाख नाघेको छ । यसमा व्यवसायिक स्थायी लेखा नं. लिने १७ लाख ५२ हजार र व्यक्तिगत स्थायी लेखा नं लिनेको संख्या २८ लाख ५६ हजार रहेको छ । मूल्य अधिवृद्धि करमा मात्र ३ लाख भन्दा बढी दर्ता भएका छन् भने अन्तशुल्कमा दर्ता भएका व्यक्तिगत र व्यवसायिक स्थायी लेखा नं लिएका करदाताहरूको संख्या १ लाख १६ हजार रहेको छ ।

प्रदेश नं. १ मा चालु आर्थिक वर्षमा कोभिड-१९ महामारीको प्रभाव क्रमशः घट्दै गई प्रायः सबै आर्थिक गतिविधिहरू कोभिड-१९ पूर्वकै अवस्थामा सञ्चालन भएको हुँदा सोका आधारमा सबै प्रदेशको आर्थिक वृद्धिदर आर्थिक वर्ष २०७७/७८ को तुलनामा बढ्ने अनुमान गरिएको र आर्थिक वृद्धिदर गत आर्थिक वर्षको ४.३४ प्रतिशतबाट बढेर चालु

आर्थिक वर्षमा ५.४१ पुने अनुमान छ । चालु आर्थिक वर्ष सहित पछिल्लो ४ वर्षमा प्रदेश नं. १ को वार्षिक औसत आर्थिक वृद्धिदर ४.२ प्रतिशत रहेको छ (आर्थिक सर्वेक्षण, २०७८/७९, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नं. १) ।

विभिन्न चुनौतीका बाबजुद पनि आ.व. २०७८/७९ मा सबै प्रदेशहरूको तुलनामा प्रदेश नं. १ ले सबैभन्दा बढी रकम खर्च गरेर देशभरिकै उत्कृष्ट प्रदेश हुन सफल हुनु आफैँमा एउटा महत्वपूर्ण उपलब्धी हो । यसैगरी लक्ष्यभन्दा बढी राजस्व सङ्कलन गर्न यो प्रदेश सफल भएको छ । नेपाल सरकारबाट हस्तान्तरण भएका कार्यक्रमहरूमा पनि पर्याप्त थप बजेट प्राप्त भई आयोजनाहरूको कार्यान्वयन प्रभावकारी हुन सकेको र परिणाममुखी र ठोस प्रकृतिका बहुवर्षीय आयोजनामा लगानी हुने वातावरण सिर्जना हुँदा साना साना योजनामा बजेट छरिने प्रवृत्ति निरुत्साहित हुँदै गएकोले यसबाट आउने वर्षहरूमा सन्तोषजनक रूपमा आर्थिक तथा सामाजिक विकासमा योगदान पुग्न सक्ने सम्भावनाहरू रहेका छन् (प्रदेश नं. १ को बजेट कार्यान्वयनको वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन, आ.व. २०७८/७९, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नं. १) ।

यस अवधिमा नेपालको कुल गार्हस्थ उत्पादनमा प्रदेश नं. १ को योगदान १५.७ प्रतिशत रहेको छ भने यस प्रदेशको कुल गार्हस्थ उत्पादनमा सेवा क्षेत्रको योगदान ४९.१ प्रतिशत, कृषि क्षेत्रको योगदान ३३.१ प्रतिशत र उद्योग क्षेत्रको योगदान १७.८ प्रतिशत रहेको छ । यस आर्थिक वर्षमा रु. ३२ अर्ब ४६ करोड ९२ लाख बजेटमा रु. १५ अर्ब ९१ करोड ४२ लाख राजस्व सङ्कलन हुने अनुमान गरिएकोमा रु. ३२ अर्ब ३५ करोड ५५ लाख (९९.६ प्रतिशत) प्रगति भएको थियो । यस आ.व. को कुल राजस्वमा आन्तरिक राजस्व रु. ४ अर्ब ४२ करोड १४ लाख १० हजार (१३.६६ प्रतिशत) रहेको थियो । आ.व. २०७७/७८ को तुलनामा आ.व. २०७८/७९ मा आन्तरिक राजस्व करिब २६.४३ प्रतिशतले वृद्धि हुन पुगेको छ । यस किसिमको वृद्धिले आगामी दिनमा प्रदेश नं. १ को राजस्व प्रशासनमा सुधार र नीतिगत सुधार गरेर आन्तरिक राजस्व वृद्धि गर्न सकिने प्रबल सम्भावना देखिन्छ (प्रदेश नं. १ को बजेट कार्यान्वयनको वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन, आ.व. २०७८/७९, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नं. १) ।

प्रदेश सरकारको आमदानीको मुख्य स्रोतहरू आन्तरिक राजस्व परिचालन, राजस्व/रोयल्टी बाँडफाँट र नेपाल सरकारबाट प्राप्त हुने विभिन्न किसिमका अनुदानहरू जस्तै समानीकरण अनुदान, सशर्त अनुदान, विशेष अनुदान र समपूरक अनुदानहरू रहेका छन् । संविधानतः कृषि आयमा कर प्रदेश सरकारको राजस्व सम्बन्धी एकल अधिकार हो भने घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, मनोरञ्जन कर र विज्ञापन करहरू प्रदेश र स्थानीय तहको साझा अधिकार भित्र पर्दछन् । कोभिड-१९ ले विगत दुई आर्थिक वर्षमा प्रदेश तथा स्थानीय तहको आर्थिक सामाजिक गतिविधिहरूमा नकारात्मक प्रभावहरू पारेकोमा क्रमशः पछिल्लो समयमा कोभिडको असर न्यून हुँदै गएको हुँदा यसले प्रदेश तथा स्थानीय तहको आर्थिक सामाजिक गतिविधिमा सकारात्मक प्रभाव पार्न थालेको छ । उद्योगधन्दा एवम् व्यवसायहरू पूर्णरूपमा सञ्चालनमा आएका छन् । आन्तरिक तथा बाह्य पर्यटकको संख्यामा वृद्धि भएको छ । निर्माण क्षेत्रमा क्रमशः सुधारहरू आएका छन् । उर्जाको उत्पादन वृद्धि भएको छ । यसरी आर्थिक-सामाजिक गतिविधिमा आउने सकारात्मक प्रभावले प्रदेश तथा स्थानीय तहको आन्तरिक स्रोत परिचालनमा पनि सकारात्मक प्रभाव पार्दछ । फलस्वरूपः प्रादेशिक सार्वजनिक वित्तमा राजस्वको योगदान वृद्धि हुँदै गएको छ । आर्थिक वर्ष २०७५/७६ मा प्रादेशिक कुल गार्हस्थ उत्पादनमा राजस्व प्राप्तिको अनुपात १.५६ प्रतिशतमा सीमित रहेको थियो भने आ.व. २०७७/७८ मा १.९५ प्रतिशत पुगेको छ (आर्थिक सर्वेक्षण, २०७९, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नं. १) ।

४.३ प्रादेशिक कुल प्राप्ति

आर्थिक वर्ष २०७५/७६ मा प्रदेश नं. १ को कुल राजस्व रु २८ अर्ब ७६ करोड ६० लाख ३३ हजार ७ सय ७ रहेकोमा आ.व. २०७८/७९ मा रु. ३० अर्ब ६ करोड ५६ लाख ८८ हजार ७ सय ३८ रहेको छ । औसतमा यस प्रदेशको कुल राजस्वमा प्रदेश र स्थानीय तहबीच हुने राजस्व बाँडफाँटको हिस्सा १० प्रतिशत, संघीय सरकारबाट प्राप्त हुने रोयल्टी बाँडफाँटको

हिस्सा २७ प्रतिशत, आन्तरिक राजस्व ३ प्रतिशत र संघीय अनुदानको सबैभन्दा बढी हिस्सा ६० प्रतिशत रहेको छ। आर्थिक वर्ष २०७५/७६ को तुलनामा आ.व. २०७६/७७ मा प्रदेश नं. १ को कुल राजस्व ६.२२ प्रतिशतले न्यून भएको देखिन्छ भने २०७६/७७ को तुलनामा आ.व. २०७७/७८ मा १४.९६ प्रतिशतमा वृद्धि भएको देखिन्छ (तालिका ३१)। प्रदेश नं. १ को विगत चार वर्षको शीर्षकगत राजस्व सम्बन्धी विवरण अनुसूची १० मा प्रस्तुत गरिएको छ।

तालिका ३१ : प्रदेश नं. १ को कूल राजस्व प्राप्ति (रु.)

| शीर्षक | आ.व. २०७५/७६ | आ.व. २०७६/७७ | आ.व. २०७७/७८ | आ.व. २०७८/७९ | चार आ.व. को औसत | प्रतिशत (हिस्सा) |
|--|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|--------------------|---------------------|
| प्रदेश र स्थानीय तहबीच राजस्व बाँडफाँट | १६२७८९९२८३ | १९३२८४७०४४ | २८४४५११८२८ | ३१२८९६४३०५ | २३८६०५५६१५ | ८.१ |
| प्रदेशको आन्तरिक राजस्व | ८५१४५२५२९ | ५५५४७७५७३ | ६४३५४२५२२ | ९०६६४७४०० | ७३९२८०००६ | २.५ |
| संघीय सरकारबाट राजस्व बाँडफाँट | ६८६७६८२४७९ | ७३७९५५७९८४ | ८७०७४८५६२७ | ९७७४८१८८९८ | ८१८२३८६२४७ | २७.७ |
| संघीय सरकारबाट रोयल्टी बाँडफाँट | ० | १११६८५४५५ | २०५४४४५९६ | २४८७४००८४ | १४१४९२५३४ | ०.५ |
| संघीय अनुदान | १८४९४७६२००० | १७९८९९३८००० | १७६९०३२०७०४ | १८४६५५४८१८४ | १८१४०१४२२२२ | ६१.३ |
| जम्मा | २७८४१७९६२९१ | २७९६९५०६०५७ | ३००२१४०५२७८ | ३२५२४७१८८७१ | २९५८९३५६६२४ | १०० |
| वार्षिक वृद्धि प्रतिशत | | ०.४६ | ७.३४ | ८.३४ | | |

स्रोत: प्रदेश लेखा नियन्त्रकको कार्यालय, विराटनगर, २०७९

४.४ कुल राष्ट्रिय गार्हस्थ उत्पादनमा प्रदेशगत योगदान

विगत तीन आर्थिक वर्षको प्रचलित मूल्यको कुल गार्हस्थ उत्पादन (उपभोक्ताको मूल्यमा) प्रदेशगत योगदानको विश्लेषण गर्दा कुल राष्ट्रिय गार्हस्थ उत्पादनमा औसतमा सबैभन्दा बढी योगदान बागमती प्रदेशको ३७ प्रतिशत र सबैभन्दा कम योगदान कर्णाली प्रदेशको ४.१ प्रतिशतमात्र रहेको छ। प्रदेश नं. १ को कुल राष्ट्रिय गार्हस्थ उत्पादनमा औसतमा १५.७ प्रतिशत रहेको छ। कुल राष्ट्रिय गार्हस्थ उत्पादनमा प्रदेश नं. १ को योगदान बागमती प्रदेश पछिको दोश्रो बढी योगदान गर्ने प्रदेशको रूपमा रहेको छ (तालिका ३२)।

तालिका ३२ : कुल गार्हस्थ उत्पादन (उपभोक्ताको मूल्यमा) मा प्रदेशगत योगदान (प्रतिशतमा)

| प्रदेशहरू | आ.व. २०७५/७६ | आ.व. २०७६/७७ | आ.व. २०७७/७८ | तीन आ.व. को औसत | श्रेणी |
|--------------------|-----------------|-----------------|-----------------|--------------------|--------|
| प्रदेश नं. १ | १५.५ | १५.८ | १५.८ | १५.७ | २ |
| मधेश प्रदेश | १३ | १३.३ | १३.४ | १३.२ | ४ |
| बागमती प्रदेश | ३७.९ | ३६.४ | ३६.७ | ३७.० | १ |
| गण्डकी प्रदेश | ८.८ | ९ | ८.९ | ८.९ | ५ |
| लुम्बिनी प्रदेश | १४ | १४.२ | १४.१ | १४.१ | ३ |
| कर्णाली प्रदेश | ३.९ | ४.२ | ४.१ | ४.१ | ७ |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | ६.८ | ७.१ | ७ | ७.० | ६ |
| जम्मा (प्रतिशत) | १०० | १०० | १०० | १०० | |

स्रोत: आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नं. १, आर्थिक सर्वेक्षण, २०७७/७८, चार्ट १.१

४.५ राजस्व अनुमान र प्राप्ति

आर्थिक वर्ष २०७७/७८ मा सातवटै प्रदेशले गरेको कुल राजस्व प्रक्षेपण रु. १ खर्ब १९ अर्ब ८२ करोड ५१ लाखमध्ये रु. ९० अर्ब ८६ करोड ३४ लाख (७५.८३ प्रतिशत) यथार्थ प्राप्ति भएको छ। प्रदेश नं. १ ले सोही अवधिमा कुल २० अर्ब ७८ करोड ६१ लाख राजस्व सङ्कलन हुने अनुमान गरेकोमा रु. १३ अर्ब १५ करोड ४९ लाख (६३.२९ प्रतिशत) मात्र यथार्थ असुली भएको छ। जबकी सोही अवधिमा प्रक्षेपणको अनुपातमा सबैभन्दा कम ४४.७१ प्रतिशत सुदूरपश्चिम प्रदेश र सबैभन्दा बढी १०२.४४ प्रतिशत असुली बागमती प्रदेशको रहेको छ (तालिका ३३)।

तालिका ३३ : आर्थिक वर्ष २०७७/७८ मा राजस्व अनुमान र यथार्थ प्राप्तिको स्थिति

| प्रदेशहरू | राजस्व प्रक्षेपण (रु. लाखमा) | अनुदान बाहेकको राजस्व प्राप्ति (रु. लाखमा) | यथार्थ प्राप्ति (प्रतिशत) | प्रति व्यक्ति राजस्व प्रक्षेपण (रु.) | प्रति व्यक्ति अनुदान बाहेकको राजस्व प्राप्ति (रु.) | कुल गार्हस्थ्य उत्पादन (रु. लाखमा) | कुल गार्हस्थ्य उत्पादन र राजस्व प्रक्षेपणको अनुपात | कुलगार्हस्थ्य उत्पादन र अनुदान बाहेकको राजस्व प्राप्तिको अनुपात |
|--------------------|------------------------------|--|---------------------------|--------------------------------------|--|------------------------------------|--|---|
| प्रदेश नं. १ | २०७८६९ | ९३९५४९ | ६३.२९ | ४९८९ | २६४६ | ६६४०००० | ३.९३ | ९.९८ |
| मधेश प्रदेश | ९९९५५९ | ९२५९५५ | ६५.७६ | ३९२७ | २०५६ | ५६२०००० | ३.४९ | २.२४ |
| बागमती प्रदेश | २५९६७७ | २६६०९३ | ९०२.४४ | ४२६८ | ४३७२ | ९६०८०००० | ९.६९ | ९.६५ |
| गण्डकी प्रदेश | ९२८८२३ | ९८०९३ | ७६.९५ | ५९९५ | ३९५६ | ३७२०००० | ३.४६ | २.६४ |
| लुम्बिनी प्रदेश | ९४२६३५ | ९३४००७ | ९३.९५ | २७८४ | २६९५ | ५९६०००० | २.३९ | २.२५ |
| कर्णाली प्रदेश | ७६९६२ | ६७७२८ | ८८.०० | ४५४९ | ३९९६ | ९७२०००० | ४.४७ | ३.९४ |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | ९९०७४२ | ८५२८९ | ४४.७९ | ७०३५ | ३९४६ | २९२०००० | ६.५३ | २.९२ |

स्रोत: महालेखा परीक्षकको उनन्साठीऔं वार्षिक प्रतिवेदन, २०७९, पाना ६१२।

<https://www.investpaper.com/news/province-wise-gdp-contribution-to-economy-of-nepal/>

४.६ प्रदेशगत आन्तरिक स्रोत परिचालन

आर्थिक वर्ष २०७७/७८ मा सातवटै प्रदेशहरूको कुल खर्च रु. १ खर्ब ८९ अर्ब ५३ करोड ८६ लाख भएकोमा प्रदेशको आफ्नो आन्तरिक स्रोत (संघीय सरकारबाट प्राप्त राजस्व बाँडफाँट समेत) बाट रु. १ खर्ब २ अर्ब ६ करोड ४२ लाख (५३.८५ प्रतिशत) व्यहोरिएको छ। कुल खर्चमा आन्तरिक राजस्वको योगदान सबैभन्दा बढी बागमती प्रदेशको ६४.५२ प्रतिशत रहेको छ भने सबैभन्दा कम २९.७७ प्रतिशत कर्णाली प्रदेशको रहेको छ। सोही अवधिमा प्रदेश नं. १ को कुल खर्चमा आन्तरिक आयको योगदान ५२.१६ रहेको छ (तालिका ३४)।

तालिका ३४ : आर्थिक वर्ष २०७७/७८ मा कुल खर्चमा आन्तरिक स्रोतको योगदान

| प्रदेशहरू | कुल खर्च (रु. लाखमा) | प्रदेश स्रोतबाट खर्च (रु. लाखमा) | खर्च प्रतिशत | प्रति ब्यक्ति कुल खर्च (रु.) | प्रति ब्यक्ति प्रदेश स्रोतबाट खर्च (रु.) |
|--------------------|-------------------------|-------------------------------------|-----------------|---------------------------------|---|
| प्रदेश नं. १ | २७९५९३ | १४५७९० | ५२.९६ | ५६२२ | २९३२ |
| मधेश प्रदेश | २२५४५८ | १२५९५५ | ५५.८७ | ३६८० | २०५६ |
| बागमती प्रदेश | ३५५९४८ | २२९६६६ | ६४.५२ | ५८५१ | ३७७५ |
| गण्डकी प्रदेश | २५६२३४ | १४४५५५ | ५६.४२ | १०३३३ | ५८२९ |
| लुम्बिनी प्रदेश | ३२९०३० | १८९३७९ | ५६.५ | ६२६५ | ३५४० |
| कर्णाली प्रदेश | २२७५२० | ६७७२८ | २९.७७ | १३४२४ | ३९९६ |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | २२९६८३ | १२५५६९ | ५४.६७ | ८४७१ | ४६३१ |

स्रोत: महालेखा परीक्षकको उनन्साठीऔं वार्षिक प्रतिवेदन, २०७९, पाना ६१५।

प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगले आगामी आर्थिक वर्ष २०७९/८० का लागि संघीय सरकारबाट राष्ट्रिय वन, संरक्षित क्षेत्र, विद्युत, पर्वतारोहण, खानी तथा खनिज शीर्षकमा संघीय सरकारले असुल गर्ने कुल रोयल्टीको २५ प्रतिशतले हुन आउने रकम प्रदेशगत बाँडफाँट गर्ने गरी सिफारिस गरेको छ। कुल रोयल्टी रकम रु १ अर्ब ५९ करोड ७७ लाख ५ हजारमध्ये सबैभन्दा बढी बागमती प्रदेशले ३० प्रतिशत र सबैभन्दा कम मधेश प्रदेश र कर्णाली प्रदेशले २/२ प्रतिशतका दरले पाउने अनुमान गरिएको छ। प्रदेश नं. १ ले कुल अनुमानित रोयल्टी बाँडफाँटको १७ प्रतिशत हिस्सा पाउने अनुमान गरिएको छ (तालिका ३५)।

तालिका ३५: आ. व. २०७९/८० मा प्रदेश सरकारले प्राप्त गर्ने अनुमानित रोयल्टी (रु. हजारमा)

| क्र.सं. | प्रदेश | राष्ट्रिय वन | संरक्षित क्षेत्र | विद्युत | पर्वतारोहण | खानी तथा खनिज | जम्मा रोयल्टी | प्रतिशत |
|---------|--------------------|---------------|------------------|---------------|---------------|---------------|----------------|------------|
| १ | प्रदेश नं. १ | ९६४७६ | ६९७७ | ६५४२२ | ८७७०३ | १५१५२ | २७०९३१ | १७ |
| २ | मधेश प्रदेश | २९७५६ | १७६१ | ० | ० | ० | ३१५१७ | २ |
| ३ | बागमती प्रदेश | ४४२११ | १२४३० | ३६५६७८ | ९४३४ | ४२६८९ | ४७४४४३ | ३० |
| ४ | गण्डकी प्रदेश | ५८१८६ | ४२८० | ३२८३४० | ९१५९ | ८४५ | ४००८०९ | २५ |
| ५ | लुम्बिनी प्रदेश | ११३६८१ | ६२७० | ७८६२७ | ४८ | १२०८८९ | ३१९५१५ | २० |
| ६ | कर्णाली प्रदेश | १४१३० | १८८२८ | १४०३ | ४२४ | ९९ | ३४८८३ | २ |
| ७ | सुदूरपश्चिम प्रदेश | ५२०२२ | ५२३५ | ८०८९ | ७१ | १८९ | ६५६०७ | ४ |
| | जम्मा | ४०८४६२ | ५४९८१ | ८४७५५९ | १०६८४० | १७९८६४ | १५९७७०५ | १०० |

स्रोत: : <https://www.nnrfc.gov.np/>, September, 2022

आर्थिक वर्ष २०७७/७८ मा प्रदेशगत वार्षिक बजेट र खर्चका अनुपातको विश्लेषण गर्दा कुल बजेटमा औसतमा ७१ प्रतिशत बजेट खर्च भएको देखिन्छ। उक्त खर्चमा सबैभन्दा बढी खर्च लुम्बिनी प्रदेशको ८२ प्रतिशत र सबैभन्दा कम खर्च सुदूरपश्चिम प्रदेशको ६६ प्रतिशत रहेको छ। प्रदेश नं. १ को वार्षिक बजेटको तुलनामा ६८ प्रतिशत खर्च भएको छ जुन सातवटा प्रदेशहरूको औसत खर्चभन्दा पनि कम रहेको छ (तालिका ३६)। प्रदेश नं. १ को खर्च क्षमता बढाउन विशेष नीति, कार्यक्रम र क्षमता विकासमा जोड दिन आवश्यक देखिन आउँछ।

तालिका ३६ : आर्थिक वर्ष २०७७/७८ को बजेट तथा खर्च (रु. लाखमा)

| प्रदेशहरु | वार्षिक बजेट | चालु खर्च | पूँजीगत खर्च | अन्य खर्च | कुल खर्च | खर्च प्रतिशत | प्रति व्यक्ति कुल खर्च (रु.) |
|--------------------|----------------|---------------|----------------|--------------|----------------|--------------|------------------------------|
| प्रदेश नं. १ | ४०८९९९ | १२०८५२ | १५८६६० | ० | २७९५१२ | ६८ | ५६२२ |
| मधेश प्रदेश | ३३५७७५ | ८६४०७ | १३९०५१ | | २२५४५८ | ६७ | ३६८० |
| बागमती प्रदेश | ५१४२७४ | १४१८६६ | २०००८२ | १४००० | ३५५९४८ | ६९ | ५८५१ |
| गण्डकी प्रदेश | ३४८४२२ | ८०२७९ | १७५९५५ | ० | २५६२३४ | ७४ | १०३३३ |
| लुम्बिनी प्रदेश | ३९१५४२ | १३५९८८ | १८५०४२ | ० | ३२१०३० | ८२ | ६२६५ |
| कर्णाली प्रदेश | ३३७४१३ | ८४७६७ | १४२७५३ | ० | २२७५२० | ६७ | १३४२४ |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | ३४६४५० | १०३६६३ | १२६०२० | | २२९६८३ | ६६ | ८४७१ |
| जम्मा | २६८२८७५ | ७५३८२२ | ११२७५६३ | १४००० | १८९५३८५ | ७१ | |

स्रोत: महालेखा परीक्षकको उनन्साठीऔं वार्षिक प्रतिवेदन, २०७९, पाना ६१४।

४.७ प्रदेश नं. १ को सम्भाव्य राजस्वका क्षेत्रहरु

नेपालको संविधानको अनुसूची ६, ७ र ९ मा रहेका व्यवस्थाहरुले प्रदेशको राजस्वको स्रोतको संवैधानिक आधार प्रदान गर्दछन्। संविधानको अनुसूचीमा रहेका सम्भाव्य स्रोतको पनि प्रदेशले सोझै राजस्व निर्धारण र असुली गर्न मिल्दैन, धारा २०३ मा रहेको व्यवस्था अनुसार प्रदेश कानून बनाएर मात्र राजस्व उठाउन सकिन्छ।

संवैधानिक रुपमा प्रदेश-अधिकारमै परेको राजस्वका स्रोतबाट धारा २०३ बमोजिम बन्ने राजस्व कानून पनि आर्थिक ऐनका भरमा हुँदैन- कतिपय राजस्वका विषयगत कानून हुनु अनिवार्य हुन्छ। करारोपण गर्दा कानूनी रुपमा कराधार निर्धारण गरी कर गणना गर्नुपर्ने शीर्षकमा बेग्लै कानून आवश्यक पर्दछ। नियमित दस्तुर र सेवा शुल्कहरु भने आर्थिक ऐनमा सोझै व्यवस्था गर्दा पनि कर व्यवस्थापन गर्न सकिन्छ। दण्ड जरिवानाका लागि जुन कुरामा दण्ड जरिवाना लाग्ने हो त्यस विषयको विशेष कानूनमा व्यवस्था हुनु पर्दछ। त्यस्ता विशेष कानूनमा जरिवाना वा दण्डको रकम तोक्ने बेग्लै व्यवस्था भएमा त्यसको रकम आर्थिक ऐनमा समावेश गर्न सकिन्छ।

नेपालको संविधानको अनुसूची ६, ७ र ९ मा रहेका व्यवस्था अनुसार प्रदेशले निम्न चार प्रकारले प्रदेश राजस्व कानून बनाएर राजस्व असुल गर्न सक्दछ:-

(क) राजस्व कानूनबाट मात्रै राजस्व सम्भाव्यता

सामान्यतया स्थिर नीति चाहिने करका विषयमा, बेग्लै संस्थागत संरचना वा करदाता प्रशासन चाहिने, कराधार (व्यक्ति, स्रोतको किटानी, अवधि र लेखाङ्कन, गणना, असुलीमा प्राविधिकता), पुनरावेदन र गोप्यताका विषय लागू हुने राजस्वका शीर्षकमा बेग्लै राजस्व कानून हुनु पर्दछ। आर्थिक ऐनमा कुनै करका सम्बन्धमा यी सबै कराधार समावेश गर्न सम्भव नहुने, स्थायित्व वा विश्वसनीय पनि नहुने हुनाले राजस्व कानूनमा समावेश गर्नु पर्दछ। यस्ता विषयमा एकिकृत राजस्व कानून वा विषय विषयका बेग्लै राजस्व कानून बनाउन आवश्यक हुन्छ।

प्रदेश राजस्व कानूनमा कर, गैरकर लाग्ने तरिका, कराधार, आय र कर गणना, कर अवधि, राजस्व निर्धारण, तिर्ने विधि, पालना नहुँदाको शुल्क व्याज तोकी (राजस्व चुहावट नियन्त्रण व्यवस्था सहित) प्रदेश राजस्व कानून (एकल वा एकिकृत राजस्व संहिताका रूपमा) बनाउनु पर्ने राजस्वका स्रोत नेपालको संविधानको अनुसूची ६, ७ र ९ अनुसार निम्न छन्: (तालिका ३७) ।

तालिका ३७ : राजस्व कानूनमा समेटिनु पर्ने न्यूनतम विषयहरू

| बनाउनु पर्ने कानून | संवैधानिक आधार | कर/गैरकरको प्रकार |
|----------------------------|----------------|-------------------|
| कृषि आयमा कर | ६(४) | कर |
| घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क | ६(४) | शुल्क (गैरकर) |
| मनोरञ्जन कर | ६(४) | कर |
| विज्ञापन कर | ६(४) | कर |
| सवारी साधन कर | ६(४) | कर |

नोट: संवैधानिक आधारको अंकले नेपालको संविधानको अनुसूची र बुँदा जनाउँछ ।

प्रदेश राजस्व कानून (एकल वा एकिकृत राजस्व संहिताका रूपमा) नबनेसम्मका लागि सरल कराधार समावेश गरेर आर्थिक ऐनबाट यी कर लगाउन सकिन्छ । तर यो विधिबाट सम्भाव्य राजस्व पूरै असुल हुँदैन - नीतिगत वा संस्थागत दायरा सङ्कुचित रहन्छ, कर विवाद बढ्ने हुनाले कर-प्रशासनप्रति करदाताको भरोसा पनि कम हुन्छ र मिलोमतोको सम्भावना चाहिँ उच्च हुन्छ ।

राजस्व ऐन कार्यान्वयनको शुरु शुरुमा संस्थागत सुधार र कराधार अनुसारका कठिनाइ सामाना गर्नुपर्ने हुनाले राजस्व ऐनको संशोधन चाहिँ आर्थिक ऐनबाट गर्नु वान्छनीय हुन्छ ।

माथिका राजस्वको शीर्षकगत सम्भाव्यताको बेग्लै परिच्छेद रहेको छ ।

(ख) विषयगत प्रदेश कानून बनाई आर्थिक ऐनबाट राजस्व सम्भाव्यता

- प्रदेशलाई नियमन र कार्यान्वयनका अधिकार दिएका केही विषयका ती नियमन कानूनमा सम्भाव्य शुल्क, सेवा शुल्क, दस्तुर, अनुमति पत्र, नवीकरण, रोयल्टी, जरिवाना, व्याज जस्ता राजस्वका विषय समावेश गरी त्यस्तो राजस्व असुल गर्न सकिन्छ ।
- त्यस्तो शुल्क, सेवा शुल्क, दस्तुर, अनुमति पत्र, नवीकरण, रोयल्टी, जरिवाना, व्याज सम्बन्धित ऐनबाटै स्थिर रकम वा आर्थिक ऐनबाट परिवर्तनीय रूपमा समावेश गर्न सकिन्छ ।
- विषयगत कानूनले सम्बन्धित विषयको नियमन, सरलीकरण तथा नियन्त्रण गर्ने हुनाले ती विषयगत कानून नबनाई राजस्व उठाउन या त सम्भव हुँदैन या दायरा सङ्कुचित र मिलोमतो बढ्न जान्छ । त्यसकारणले प्रदेश विषयगत कानून बनाउँदा सो कानून बमोजिमका क्रियाकलापमा कर वा गैरकर लाग्ने तरिका, आधार, तोकन मिल्नेमा रकम तोकी सोही ऐनबाट (वा मिल्दोमा आर्थिक ऐनबाट) राजस्व असुल गर्न सकिने राजस्वका सम्भाव्य क्षेत्रमा निम्न विषयगत अधिकार (तालिका ३८) पर्दछन्:

तालिका ३८ : विषयगत कानून बनेपछि मात्र राजस्व सम्भाव्यता भएका क्षेत्रहरु

| क्र.सं. | बनाउनु पर्ने कानून | संवैधानिक आधार | कर/गैरकरको प्रकार |
|---------|--|----------------|---|
| १ | एफ. एम. | ६(३) | अनुमति सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| २ | कलकारखाना | ६(२०) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना, मापदण्ड तोकिएका विषयमा शुल्क दण्ड जरिवाना |
| ३ | जग्गाको अभिलेख | ६(१७) | तथ्याङ्क शुल्क |
| ४ | टेलिभिजन सञ्चालन | ६(३) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| ५ | दण्ड जरिवाना | ६(४) | अपराध सम्बन्धी विभिन्न कानून |
| ६ | दस्तुर | ६(४) | सेवा प्रवाह सम्बन्धी विभिन्न कानूनमा तोकिएका दस्तुर शुल्कहरु |
| ७ | प्रदेश तथ्याङ्क | ६(६) | तथ्याङ्क शुल्क (प्रशोधित वा अन्य) |
| ८ | प्रदेश लोकसेवा आयोग | ६(१५) | परीक्षा शुल्क |
| ९ | प्रदेश स्तरको विद्युत, सिचाइ र खानेपानी सेवा | ६(७) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| १० | यातायात | ६(२०) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना, मापदण्ड तोकिएका विषयमा शुल्क दण्ड जरिवाना |
| ११ | रेडियो | ६(३) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| १२ | सङ्ग्रहालय | ६(८) | प्रवेश शुल्क, तश्चिर भिडियो शुल्क, दण्ड जरिवाना |
| १३ | सेवा शुल्क | ६(४) | सेवा प्रवाह सम्बन्धी विभिन्न कानूनमा तोकिएका दस्तुर शुल्कहरु |

नोट: संवैधानिक आधारको अंकले नेपालको संविधानको अनुसूची र बुँदा जनाउँछ।

- ✓ यो समूहका राजस्वका लागि प्रदेशले विषयगत कानूनका साथसाथै माथि उल्लेख भए अनुसार कतिपय अवस्थामा भइरहेकै संघीय कानूनमा प्रदेशको कार्यक्षेत्र निश्चित गर्नुपर्ने हुन्छ। कतिपय अवस्थामा भने संघीय कानून नै खारेज गरी प्रदेश कानून बनाउनु पर्ने अवस्था छ।
- ✓ विषयगत कानून बनाउनु पर्ने र त्यस्तो कानून बनाउँदा माथि उल्लेखित राजस्वका सम्भाव्य क्षेत्रका के कति विषय समावेश हुने भन्ने कुरा सो कानूनको ढाँचा, अधिकार र प्रदेशको प्रशासकीय क्षमतामा भर पर्ने हुनाले यस समूहको राजस्व प्रक्षेपण गर्दा केवल ऐतिहासिक राजस्वको रकमको प्रवृत्तिको आधार लिइएको छ।

(ग) संघीय विषयगत कानून अनुसार प्रदेश आर्थिक ऐनबाट राजस्व सम्भाव्यता

- संघ र प्रदेशबिच साझा अधिकार वा तीनै तहका साझा अधिकारका विषयमा मुख्यतः संघीय कानूनले मुख्य भूमिका खेल्दछ। त्यसकारण यी विषयमा संघीय कानून अनुसार मात्र प्रदेश राजस्वको आधार सिर्जना हुन्छ।
- संघीय कानून अनुसार प्रदेशले पाउने राजस्वका लागि प्रदेशले उठाउनु पर्ने भए संस्थागत व्यवस्था सहित आर्थिक ऐनमा व्यवस्था हुनु पर्दछ। अर्को तहको सरकारले उठाइ प्रदेशलाई राजस्व बाँडफाँटबाट प्राप्त हुने भागका लागि आर्थिक ऐनमा व्यवस्था गरे पुग्दछ।
- संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर असुल गर्न सक्ने सम्भाव्य राजस्वका क्षेत्र निम्न (तालिका ३९) छन्:

तालिका ३९ : संघीय कानूनसँग तादम्यता भएका प्रदेश राजस्वका सम्भाव्य स्रोतहरू

| क्र.सं. | बनाउनु पर्ने कानून | संवैधानिक आधार | कर गैरकरको प्रकार |
|---------|---|-------------------|---|
| १ | आम्ची र अन्य पेशा | ७(१२) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| २ | आयुर्वेद चिकित्सा | ७(१२) | अनुमति नवीकरण सेवा शुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| ३ | आवश्यक वस्तु तथा सेवाको आपूर्ति, वितरण, मूल्य नियन्त्रण, गुणस्तर र अनुगमन | ७(२) | दण्ड जरिवाना |
| ४ | इन्जिनियरिङ्ग | ७(१२) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| ५ | उद्योग तथा खनिज र भौतिक पूर्वाधार | ७(१५) | रोयल्टी |
| ६ | औद्योगिक विवादको समाधान | ७(११) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| ७ | औषधि | ७(९) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| ८ | कानून व्यवसाय | ७(१२) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| ९ | क्यासीनो | ७(१६) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| १० | खानी तथा खनिज | ९(८) | रोयल्टी, प्रदुषण नियन्त्रण शुल्क, अनुमति शुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| ११ | खेलकुद | ७(१९) | अनुमति नवीकरण स्थान सेवा शुल्क |
| १२ | खेलकुद र पत्रपत्रिका | ९(२) | अनुमति नवीकरण सेवा शुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| १३ | चलचित्र | ७(१९) | अनुमति नवीकरण स्थान सेवा शुल्क |
| १४ | चिकित्सा | ७(१२) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| १५ | चिह्न | ७(१६) | अनुमति नवीकरण सेवा शुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| १६ | जल उपयोग | ९(७) | रोयल्टी, प्रदुषण नियन्त्रण शुल्क, अनुमति शुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| १७ | टाट पल्टेको र दामासाही सम्बन्धी | ७(८) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| १८ | दण्ड जरिवाना | ९(६) | अपराध सम्बन्धी विभिन्न कानून बमोजिमको दण्ड जरिवाना |
| १९ | दस्तुर | ९(६) | सेवा प्रवाह सम्बन्धी विभिन्न कानूनमा तोकिएका दस्तुर शुल्कहरू |
| २० | पर्यटन | ६(४), ७(१८), ९(६) | पर्यटन शुल्क, प्रदर्शनी शुल्क, अनुमति नवीकरण |

| क्र.सं. | बनाउनु पर्ने कानून | संवैधानिक आधार | कर गैरकरको प्रकार |
|---------|------------------------------------|----------------|---|
| २१ | पर्यावरण तथा जैविक विविधता | ९(७) | रोयल्टी, प्रदुषण नियन्त्रण शुल्क, अनुमति शुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| २२ | पशु चिकित्सा | ७(१२) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| २३ | प्राकृतिक स्रोतबाट प्राप्त रोयल्टी | ९(१४), ९(६) | रोयल्टी |
| २४ | प्राचीन स्मारक र सङ्ग्रहालय | ९(१२) | प्रवेश शुल्क, तस्विर भिडियो शुल्क |
| २५ | बीमा व्यवसाय सञ्चालन र व्यवस्थापन | ७(२०) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| २६ | लेखा परीक्षण | ७(१२) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| २७ | वन जंगल | ९(७) | रोयल्टी, प्रदुषण नियन्त्रण शुल्क, अनुमति शुल्क, अवलोकन शुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| २८ | वन्यजन्तु | ८(२१), ९(७) | रोयल्टी, प्रदुषण नियन्त्रण शुल्क, अनुमति शुल्क, अवलोकन शुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| २९ | वातावरण | ९(७) | रोयल्टी, प्रदुषण नियन्त्रण शुल्क, अनुमति शुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| ३० | विद्युत | ९(५) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| ३१ | विवाह र तथ्याङ्क | ९(११) | तथ्याङ्क शुल्क |
| ३२ | विषादी | ७(९) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| ३३ | व्यक्तिगत घटना | ९(११) | दर्ता, अद्यावधिक, प्रमाणीकरण शुल्क |
| ३४ | सञ्चार माध्यम सम्बन्धी | ७(१४) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| ३५ | सवारी साधन अनुमति | ९(१५) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| ३६ | सहकारी | ७(७), ९(१) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| ३७ | साझेदारी र ऐजेन्सी सम्बन्धी | ७(७) | अनुमति नवीकरण सेवाशुल्क, शर्त-मापदण्ड पालना नगर्दाको शुल्क जरिवाना |
| ३८ | सिनेमा हल | ७(१९) | अनुमति नवीकरण स्थान सेवाशुल्क |
| ३९ | सेवा शुल्क | ९(६) | सेवा प्रवाह सम्बन्धी विभिन्न कानूनमा तोकिएका दस्तुर शुल्कहरु |

नोट: संवैधानिक आधारको अंकले नेपालको संविधानको अनुसूची र बुँदा जनाउँछ ।

(घ) हाल लगाउन नसकिने जटिल राजस्वका स्रोत

संवैधानिक अधिकार भए पनि कतिपय क्षेत्रमा प्राविधिक र प्रशासनिक रुपमा वृहत सुधार र क्षमता भएपछि मात्र कर लगाउन सकिन्छ । प्राविधिक विषयको विकास र प्रशासनिक तयारी नभएका विषयमा कर लगाउँदा या त कठीन हुन्छ या कर असुलीको लागत धेरै हुन्छ वा करदाताको लागत धेरै हुन्छ र कर व्यवस्थापन जटिल हुन्छ । पर्याप्त प्राविधिक र प्रशासनिक आधार तय नभए सम्मका लागि राजस्वका लागि जटिल शीर्षक निम्न छन् (तालिका ४०):-

तालिका ४० : प्राविधिक प्रशासनिक रुपले जटिल राजस्वका स्रोतहरु

| अधिकार | संवैधानिक आधार | जटिलताका कारणहरु |
|---|----------------|-----------------------------------|
| अन्तर प्रादेशिक रुपमा फैलिएको जङ्गल, हिमाल, वन संरक्षण क्षेत्र जल उपयोग | ७(२३) | प्राविधिक तयारी र लागत बढी लाग्ने |
| जलमार्ग | ७(१३) | प्राविधिक तयारी र लागत बढी लाग्ने |
| जैविक विविधता | ७(१३) | प्राविधिक तयारी र लागत बढी लाग्ने |
| प्रदेश भित्रको राष्ट्रिय वन, जल उपयोग तथा वातावरण व्यवस्थापन | ६(१९) | प्राविधिक तयारी र लागत बढी लाग्ने |
| प्रदेश सीमा नदी | ७(१३) | प्राविधिक तयारी र लागत बढी लाग्ने |

नोट: कोष भित्रको अंकले नेपालको संविधानको अनुसूची र बुँदा जनाउँछ ।

समग्रमा कराधार जटिल र प्राविधिक भएता पनि यी अधिकारभित्र पर्ने प्राकृतिक स्रोत, वनपैदावार, खेलकूद तथा पर्यटनसँग सम्बन्धित आयलाई तत्कालै राजस्व सम्भाव्य सूचीमा समावेश गरिएको छ ।

४.८ विषयगत राजस्व सम्भाव्यता

(क) घरजग्गा रजिष्ट्रेशन

प्रदेश आर्थिक ऐन बनाउँदा घरजग्गा रजिष्ट्रेशन अन्तर्गत हालको स्रोतमा निम्न विषयक्षेत्रहरु थप गर्न सकिन्छ:

- स्वामित्व परिवर्तनमा राजिनामा, छोडपत्र, सट्टापट्टा, हक छाडी, सगोलनामा, चाक्लाबन्दी, जग्गा एकिकरण, अंशवण्डा, अपुताली, गुठी स्थापना, मूलभूत रुपमा घरजग्गा सम्पति भएको कम्पनीको शेयर हस्तान्तरण, वा सो सरहका कार्य समावेश हुनेछ ।
- “मूलभूत रुपमा घरजग्गा सम्पति भएको कम्पनीको शेयर हस्तान्तरण” भन्नाले कूल सम्पतिको बजार मूल्यको पचास प्रतिशतभन्दा बढी मूल्य घर वा जग्गा वा घरजग्गा रहेका कम्पनीको भुक्तानी भएका साधारण शेयरको पचास प्रतिशत भन्दा बढी शेयरको हस्तान्तरण सम्झनु पर्दछ ।
- जग्गाको न्यूनतम मूल्याङ्कन समितिमा घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्कको राजस्व प्राप्त गर्ने प्रदेश र स्थानीय तहको सहभागिता छैन भने उक्त न्यूनतम मूल्याङ्कन र वास्तविक कारोवार मूल्यमा अधिकांश स्थानमा अन्तर रहेको पाइन्छ ।

(ख) यातायात

यातायात सम्बन्धी विषयगत कानूनमा व्यवस्था गरे अनुसार यातायात सम्बन्धी राजस्व सम्भाव्य क्षेत्र निम्न छन्:

- **स्थलगत** - नगर र उपनगर क्षेत्रमा सञ्चालन हुने यात्रुवाहक स्थल यातायात; अन्य यात्रुवाहक स्थल यातायात; सडकमार्गबाट मालसामान ढुवानी; गोदामघर तथा भण्डारण; स्थल यातायातका लागि भइपरि आउने सेवाहरू; कार्गो सञ्चालन; अन्य ढुवानी सेवाका सहयोगी क्रियाकलापहरू; हुलाक सेवासम्बन्धी क्रियाकलापहरू; कुरियर सेवा सम्बन्धी क्रियाकलापहरू
- **हवाई** - यात्रुवाहक हवाई यातायात; हवाई यातायातबाट गरिने ढुवानी; हवाई यातायातका लागि भइपरि आउने सेवाहरू
- **जल** - आन्तरिक जल यात्रु यातायात सेवाहरू; आन्तरिक जल यातायात ढुवानी; जल यातायातका लागि भइपरि आउने सेवाहरू

(ग) मनोरञ्जन

विषयगत कानून बनाउनु पर्ने विषयमा त्यस्तो विषयगत कानून नबनाई वार्षिक आर्थिक ऐनबाट कर लगाउँदा कराधार कमजोर रहन्छ । मनोरञ्जन यस्तै विषयगत क्षेत्र हो । मनोरञ्जन प्रदेश र स्थानीय सरकारको क्षेत्राधिकारमा रहेकाले प्रदेश कानून बमोजिम स्थानीय कानून बन्दछ । मनोरञ्जनमा प्रदेश राजस्वको सम्भाव्यता भएका क्षेत्र निम्न छन्:-

- **ध्वनी-दृष्यजन्य मनोरञ्जन** - चलचित्र, भिडियो र टेलिभिजन कार्यक्रम उत्पादन गर्ने क्रियाकलापहरू; चलचित्र, भिडियो र टेलिभिजन कार्यक्रम उत्पादन पछिका क्रियाकलापहरू; चलचित्र, भिडियो र टेलिभिजन कार्यक्रमको वितरण क्रियाकलापहरू; चलचित्र प्रदर्शन क्रियाकलापहरू; ध्वनि रेकर्डिङ तथा सङ्गीत प्रकाशन गर्ने क्रियाकलापहरू ।
 - **कलाजन्य मनोरञ्जन** - सृजनात्मक कलाहरू तथा मनोरञ्जन क्रियाकलापहरू; मनोरञ्जन तथा विषयगत उद्यानहरूका क्रियाकलापहरू; अन्यत्र कतै वर्गीकरण नगरिएका अन्य मनोरञ्जन र मनोविनोदका क्रियाकलापहरू; मनोरञ्जन पार्कहरू, समुद्री किनारामा हुने क्रियाकलापका साथै सुविधाहरू जस्तै: स्नानघर, लकर तथा कुर्सीहरू आदि भाडामा लगाउने क्रियाकलाप; मनोविनोद-मनोरञ्जनका यातायातका साधनहरूको सञ्चालन जस्तै: मेरिना, डुङ्गा, प्याफिटड आदि; फुर्सद र आनन्दका क्षणमा एकीकृत मनोरञ्जनका सुविधाहरूका साधनहरूको भाडामा दिने कार्यहरू; मनोविनोद प्रकृतिका मेलाहरू तथा प्रदर्शनीहरूको सञ्चालन; डिस्को, पुल हाउस तथा नृत्यशाला, दोहरी, रोदीघरको सञ्चालन; अन्यत्र कतै वर्गीकृत नभएका अन्य रमाइला वा आनन्ददायक तथा मनोरञ्जनका क्रियाकलापहरू; आयोजक वा उद्यमीद्वारा आयोजित कलाहरू वा खेलकूदहरूका कार्यक्रमहरू बाहेकका सुविधाहरू सहित वा रहित प्रत्यक्ष रूपमा प्रस्तुति गर्ने क्रियाकलापहरू ।
 - **हारजितजन्य मनोरञ्जन** - जुवा तथा बाजी थाप्ने क्रियाकलापहरू; माछा मार्ने तथा शिकार आरक्षको सञ्चालन; मेसिनमा सिक्का छिराएर खेलिने खेलहरूको सञ्चालन ।
- ✓ कतिपय क्रियाकलाप खेलकूद र मनोरञ्जनमा दुवैतिर वर्गीकरण गर्न सकिन्छ । त्यस्ता क्रियाकलापलाई प्रदेशभित्र लगानी आकर्षित गर्ने गरी राजस्व वर्गीकरण मिलाउनु उचित हुने ।
- ✓ नयाँ तरीका वा नयाँ गन्तव्य वा नवीन पद्धतिका क्रियाकलापमा कर सहूलियतको विधिबाट उपभोक्ता आकर्षित गर्न सकिने
- ✓ प्रदेश सरकारसँग माथिका क्रियाकलापको तथ्याङ्क राख्ने तथा अद्यावधिक गर्ने पद्धति विकास नभइ सकेकाले यसको राजस्व प्रक्षेपण गर्न ऐतिहासिक प्राप्तिको प्रवृत्तिलाई आधार मानिएको ।

मञ्जुषा ५ मनोरञ्जन कर सम्बन्धी विराटनगर महानगरपालिकाको अनुकरणीय अभ्यास

मनोरञ्जन करको सन्दर्भमा विराटनगर महानगरपालिकाले एउटा अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत गरेको छ । विराटनगर महानगरपालिकाका वित्तीय महाशाखा प्रमुख सरोजकुमार गौतमका अनुसार विराटनगर महानगरपालिकाले विगतमा सेन्ट्रल मलमा रहेको सिनेमा हलबाट मनोरञ्जन करको रूपमा वार्षिक रु. ७५,०००।- (पचहत्तर हजार) सङ्कलन हुँदै आएकोमा प्रदेश आर्थिक ऐन २०७९/८० ले निर्धारण गरेको सिनेमाहलको टिकटमा लाग्ने दर ३ प्रतिशत सङ्कलन गर्न थालिएपछि उक्त सिनेमा हलबाट मात्र चालु आर्थिक वर्षको श्रावणदेखि मङ्सिरसम्म मासिक रूपमा रु. ४९,८४६।- देखि रु. १,०८,८९३।- सङ्कलन हुन थालेको छ । यो अभ्यासको अनुकरण हुन सकेमा कानूनको परिपालना हुनुको साथै स्थानीय तथा प्रदेश तहको राजस्व अभिवृद्धि हुने देखिन्छ ।

(घ) खेलकूद

विषयगत कानून बनाउनु पर्ने विषयमा त्यस्तो विषयगत कानून नबनाई वार्षिक आर्थिक ऐनबाट कर लगाउँदा कराधार कमजोर

रहन्छ । खेलकूद यसै विषयगत क्षेत्र हो । खेलकूद संघ र प्रदेश सरकारको क्षेत्राधिकारमा रहेकाले संघीय कानून बमोजिम प्रदेश कानून बन्न सक्दछ । खेलकूद कानून बन्दा छोटो समयमा खेलकूदका राजस्वका दर परिवर्तन हुने हुनाले या त कर शुल्कको दर वार्षिक रुपमा तोकिने गरी या वार्षिक आर्थिक ऐनमा तोकने गरी खेलकूद कानून बनाउनु उपयुक्त हुन्छ । खेलकूदमा प्रदेश राजस्वको सम्भाव्यता भएका क्षेत्र निम्न छन्:-

- **मनोरञ्जनात्मक खेलकूद** - शिकार खेल्ने, पासो थाप्ने र तत्सम्बन्धी सेवा क्रियाकलापहरू; व्यापारिक हिसाबले शिकार खेल्ने र पासो थाप्ने काम; खेलकूद वा मनोरञ्जनका लागि शिकार वा माछामार्न सहयोग गर्ने क्रियाकलापहरू; हिँउमा खेल्ने चिप्लेटी पहाडको सञ्चालन; उडान खेलहरू: एअर रेसिङ्ग, एक्रोब्याटिक्स, एरोमोडेलिङ्ग, ह्याङ्गग्लाइडिङ्ग, मान्छेले तान्ने हवाइजहाज, प्यारासुट, प्याराग्लाइडिङ्ग, स्काइ डाइभिङ्ग, स्काइ बन्जी, बेस जम्पिङ्ग, स्काइ सर्फिङ्ग, उड्ङ्गसुट फ्लाइङ्ग, बेलुन; वाण हान्ने (आर्चरी): इन्डोर आर्चरी, रनिङ्ग आर्चरी, आउटडोर आर्चरी, क्युडो; चढ्ने खेल (क्लाइमिङ्ग): डोरी चढ्ने (Abseiling), डोरी ओर्लने (Aid climbing), हिउँ चढ्ने (Ice climbing), हिउँ ढुङ्गा चढ्ने (Mixed climbing), हिमाल चढ्ने (Mountaineering), ढुङ्गा चढ्ने (Rock climbing), पानीमा कुदने (Deep-water soloing), क्यानोइङ्ग (Canyoning (Canyoneering)), हाइकिङ्ग (Hiking), पोल क्लाइमिङ्ग (Pole climbing); साइक्लिङ्ग: बाइसाइक्लिङ्ग, युनिसाइक्लिङ्ग, माउन्टेन साइक्लिङ्ग, वाटर साइक्लिङ्ग; एथलेटिक्स र जम्पिङ्ग; इलेक्ट्रोनिक खेल: रोबोट, प्रोग्रामिङ्ग, फिटनेस, भिडियो गेम; दौडहरू: साइकल, रथ, व्यक्तिगत, ह्विलचेयर, युनिसाइकल; वन क्षेत्रमा सञ्चालन हुने साहसिक खेल; जल तथा स्थल क्षेत्रमा सञ्चालन हुने साहसिक खेल; हिमाली क्षेत्रमा हुने साहसिक खेल ।
 - **शैक्षिक खेलकूद** - खेलकूद तथा मनोरञ्जनसम्बन्धी शैक्षिक कार्यक्रमहरू; खेलकूद क्लव सञ्चालन र सुधार; खेलकूद तालिम केन्द्र; खेल सिकाउने विद्यालय ।
 - **सामान्य खेलकूद** - खेलकूद क्रियाकलापहरूको सञ्चालन; खेलकूद क्लबका क्रियाकलापहरू; अन्य खेलकूदका क्रियाकलापहरू; सुविधासहित वा रहित खेलकूद कार्यक्रमहरूका प्रवर्द्धक वा आयोजकहरूको क्रियाकलापहरू; आफ्नै लागि खेल्ने खेलाडीहरू तथा एथलेट्स, रेफ्रीहरू, निर्णायकहरू (जजहरू), समयपालकहरू आदिका क्रियाकलापहरू; खेलकूद लिगहरू तथा नियामक संस्थाहरूको क्रियाकलापहरू; खेलकूद कार्यक्रमहरूको प्रवर्द्धनसँग सम्बन्धित क्रियाकलापहरू; दौडमा खेल्ने घोडाका तवेला, दौडमा खेल्ने कुकुरका केनेल र रेसिङ कारको ग्यारेजसम्बन्धी क्रियाकलापहरू; खेलकूद क्लवका सुविधा तयारी; गोल गरिने खेलहरू ।
- ✓ कतिपय क्रियाकलापलाई खेलकूद, मनोरञ्जन र पर्यटनमा वर्गीकरण गर्न सकिन्छ । त्यस्ता क्रियाकलापलाई प्रदेशभित्र लगानी आकर्षिक गर्ने गरी राजस्व वर्गीकरण मिलाउनु उचित हुने ।
 - ✓ नयाँ तरीका वा नयाँ गन्तव्य वा नवीन पद्धतिका क्रियाकलापमा कर सहुलियतको विधिबाट उपभोक्ता आकर्षित गर्न सकिने ।
 - ✓ प्रदेश सरकारसँग माथिका क्रियाकलापको तथ्याङ्क राख्ने तथा अद्यावधिक गर्ने पद्धति विकास नभइ सकेकाले यसको राजस्व प्रक्षेपण गर्न ऐतिहासिक प्राप्तिको प्रवृत्तिलाई आधार मानिएको ।

(ड) प्राकृतिक स्रोत

यस प्रदेशको आन्तरिक राजस्वको महत्वपूर्ण स्रोतका रुपमा विभिन्न किसिमका प्राकृतिक स्रोतहरू रहेका छन् । प्राकृतिक स्रोतबाट हुनसक्ने सम्भाव्य राजस्व परिचालन सम्बन्धी विवरण यसै प्रतिवेदनको खण्ड ६ मा विस्तृत व्याख्या गरिएको छ ।

(च) पर्यटन

प्रदेश नं. १ मा पर्यटन शुल्क सङ्कलन हुन सक्ने केही सम्भावनाहरू रहे तापनि सम्बन्धित स्थानीय तहहरूबाट प्राप्त सूचना अनुसार यस शीर्षक अन्तर्गत राजस्व सङ्कलन हुन सकेको पाइदैन । तसर्थ आगामी वर्षहरूमा यस सम्बन्धमा निश्चित मापदण्ड बनाई स्थानीय तहहरूसँगको सहकार्यमा राजस्व सङ्कलन हुन सक्ने सम्भावना देखिन्छ । तर पर्यटन शुल्क सम्बन्धी हालसम्म कुनै छुट्टै कानून नभएको र आर्थिक ऐनको भरमा मात्रै सङ्कलन गर्दा कराधार कमजोर रहन्छ । पर्यटन संघ, प्रदेश र स्थानीय तीनवटै तहका सरकारको क्षेत्राधिकारमा रहेकाले संघीय कानून बमोजिम प्रदेश कानून बन्न सक्दछ । पर्यटन कानून बन्दा छोटो समयमा पर्यटन सम्बन्धी राजस्वका दरहरू पनि परिवर्तन हुने हुनाले या त कर शुल्कको दर वार्षिक रूपमा तोकिने गरी या वार्षिक आर्थिक ऐनमा तोकने गरी पर्यटन कानून बनाउनु उपयुक्त हुन्छ । पर्यटनमा प्रदेश राजस्वको सम्भाव्यता भएका क्षेत्र निम्न छन्:-

- **भ्रमण पर्यटन** - होटल; रिसोर्ट होटल; मोटल; मोटर होटल; पाहुनाघर, धर्मशाला; पेन्सन्स आवास; होलिडे होम; ग्रामीण पर्यटन, होम स्टे तथा पर्यावरणीय पर्यटन, कृषि पर्यटन; ट्राभल एजेन्सी, टुर अप्रेटर, हिलिङ्ग सेण्टर, क्यासिनो, मसाज, स्पा,; पर्यटक आवास, मोटेल, होटेल, रिजोर्ट, बार तथा रेष्टुराँ,; वन्यजन्तु आरक्ष,; संग्रहालय; सांस्कृतिक, धार्मिक, सभा सम्मेलन तथा खेलकूद पर्यटन,; वनक्षेत्रभित्रको पर्यटकीय स्थल; तालतलैया; क्युरियो सामान बिक्री, मेला, प्रदर्शनी, आउटलेट ।
 - **धार्मिक पर्यटन** - गुफा, पूरातात्विक ऐतिहासिक स्थल, दर्शनीय स्थल, मठ मन्दिर, गुम्बा, मस्जिद आदि ।
 - **मनोरञ्जनात्मक पर्यटन** - शिविर स्थल, मनोरञ्जनका साधनयुक्त उद्यान र टेलर पार्क; वनस्पति, वन्यजन्तु उद्यानहरू तथा प्रकृति संरक्षणका क्रियाकलापहरू; केबुलकारको निर्माण गरी सञ्चालन गर्ने उद्योग ।
 - **खेलकूद पर्यटन** - गल्फ कोर्स, पोलो, पोनी ट्रेकिङ्ग, पदयात्रा, साइक्लिङ्ग; मनोरञ्जन पार्क, वाटर पार्क; साहसिक पर्यटन: ट्रेकिङ्ग, स्किङ्ग, पाराग्लाइडिङ्ग, वाटर ज्यापिङ्ग, हट एयर ब्यालुनिङ्ग, क्यानोनिङ्ग, प्यारासेलिङ्ग, घोडचढी, हात्तीचढी, बज्जी जम्पिङ्ग, हिमाल आरोहण, जिपफ्लायर, अल्ट्रालाइट, स्काइवाकिङ्ग, स्काइडाइभिङ्ग र यस्तै प्रकारका अन्य साहसिक खेल; पर्यटकीय उडान; रक क्लाइमिङ्ग ।
- ✓ कतिपय क्रियाकलाप खेलकूद र पर्यटनमा दुवैतिर वर्गीकरण गर्न सकिन्छ । त्यस्ता क्रियाकलापलाई प्रदेशभित्र लगानी आकर्षित गर्ने गरी राजस्व वर्गीकरण मिलाउनु उचित हुने ।
- ✓ नयाँ तरीका वा नयाँ गन्तव्य वा नवीन पद्धतिका क्रियाकलापमा कर सहूलियतको विधिबाट उपभोक्ता आकर्षित गर्न सकिने ।
- ✓ प्रदेश सरकारसँग माथिका क्रियाकलापको तथ्याङ्क राख्ने तथा अद्यावधिक गर्ने पद्धति विकास नभई सकेकाले यसको राजस्व प्रक्षेपण गर्न ऐतिहासिक प्राप्तिको प्रवृत्तिलाई आधार मानिएको ।

(छ) विज्ञापन

विज्ञापनमा प्रदेश राजस्वको सम्भाव्यता भएका क्षेत्र निम्न छन्:-

- लेख्य विज्ञापन - पत्रिका विज्ञापन; म्यागाजीन विज्ञापन; पोस्टर विज्ञापन; बिलबोर्ड विज्ञापन; सवारी साधन विज्ञापन; बाह्य विज्ञापन: होर्डिङ्ग बोर्ड, साइनबोर्ड, वा त्यस्तै बाह्य लेखनहरू ।
- डिजिटल विज्ञापन - डिस्प्ले विज्ञापन; मोबाइल विज्ञापन; वेभपेज विज्ञापन; क्विर्ड विज्ञापन; पेसर्च विज्ञापन; पोडकास्ट विज्ञापन; सामाजिक सञ्जाल विज्ञापन ।
- श्रव्य-दृश्य विज्ञापन - टेलिभिजन विज्ञापन; रेडियो विज्ञापन; भिडियो विज्ञापन; स्पोन्सर विज्ञापन; सिनेमाहल विज्ञापन ।

(ज) कृषि आयमा कर

वार्षिक आर्थिक ऐनबाट निरन्तरता रहने विषयमा कर लगाउन सकिन्न । कृषि आयकर लगाउन प्रदेश राजस्व कर ऐनमा कृषि आय सम्बन्धी पर्याप्त व्यवस्था गरेर प्रदेश राजस्व ऐन वा छुट्टै कृषि आयकर ऐन निर्माण गरेको हुनु अनिवार्य छ । कृषि आयकर कानून बनाउँदा राजस्व सम्भाव्यता भएका क्षेत्र निम्न छन्:-

कृषि उत्पादन समूह

कृषि आयकर सम्भाव्यताका हिसाबले कृषि उत्पादन समूहमा निम्न क्षेत्रका आयमा सम्भाव्य कर रहन्छन्:-

- गोलिया काठ उत्पादन; गैरकाठजन्य वन पैदावारको सङ्कलन; वनमा पाइने गैरकाठजन्य वस्तुहरूको सङ्कलन जस्तै: जङ्गली च्याउ, गोत्रे च्याउ, फुटूकी च्याउ, सुपारीहरू आदि ।
- खाद्यान्न (धानबाहेक), कोसेबाली र तेलबालीको उत्पादन; धान बाली; तरकारीबाली, खरबुजा र कन्दमूल उत्पादन; पात तथा काण्डका तरकारी बाली; फल लाग्ने तरकारी बाली; तरकारीको बीउ उत्पादन, चुकन्दरबाहेक; सुर्तीको उत्पादन; रेसा आउने बालीको उत्पादन; फूलको कोपिला, सबै फूलहरूको उत्पादन; फूलको बीउ उत्पादन; अमिलो जातका फलको उत्पादन; तेलजन्य फलको उत्पादन; चोप आउने अन्य रुख बाली; ब्याडको तयारी कार्यहरू(नर्सरी); गुँदजन्य फलहरूको सङ्कलन जस्तै: वलाटा, वेल; लाहा र खोटो तार्पिन; दाउरा वा मुढा सङ्कलनका लागि वनभित्र गरिने ढुवानी सेवाहरू ।
- चुकन्दरको उत्पादन; अन्य तरकारीहरूको उत्पादन; उखुको उत्पादन; कपास; जुट; सन्पाट; केतुकी; अवाका (केरा प्रजाति); अल्लो; रेसा आउने अन्य बालीहरू; अन्य अस्थायी बालीको उत्पादन; घाँस बालीहरू; चिनीजन्य वनस्पतिको बीउ उत्पादन (चुकन्दरबाहेकका); अङ्गुरको उत्पादन; उष्ण र समशीतोष्ण फलको उत्पादन; अनारजन्य तथा कडा कोया हुने फलफूल; अन्य रुख, झाडी फल र कडा बोक्रा भएका फलफूलको उत्पादन; पेय बालीको उत्पादन; मसला, सुगन्धित जडिबुटी तथा औषधीजन्य बालीको उत्पादन; अन्य स्थायी बालीको उत्पादन; रबर; क्रिसमस रुख; बाँस, बेत; सजीवन; मिश्रित खेती; बाली उत्पादन गर्ने सहयोगी क्रियाकलापहरू; शुल्क तथा सम्झौता करारका आधारमा गरिने कृषि क्रियाकलापहरू; सिँचाई गर्ने कृषि उपकरणको सञ्चालन; चालकको सहायताले कृषिको औजार मेसिन सञ्चालन; कृषिको लागि जमिन तयारीको सम्भार कार्य; सुर्तीको पातको सफाई र तयारी; वन लगाउने, काँटछाँट गर्ने र अन्य वनसम्बन्धी क्रियाकलापहरू; कर्क; वनस्पतीय झुस; औषधीजन्य घाँस; भालाया; काई तथा जङ्गली झार; पाँचऔँले, जटामसी, यार्चागुम्बा, टिमुर आदि वन औषधी (जडीबुटी) आदि सङ्कलन गर्ने; गुँद, सालधुप; वन पैदावारका लागि सहयोगी सेवाहरू ।
- कन्दमूल बाली; फूल वा सजावटका विरुवाहरू; च्याउ र टुफ्लेक्सको उत्पादन; बाली उठाउने वा थन्क्याउने क्रियाकलापहरू; उत्पादित बालीलाई बजारमा लैजान गरिने प्रारम्भिक कार्यहरू जस्तै: सफाई, काँटछाँट, ग्रेडिङ आदि गर्ने काम; कपासबाट बियाँ झिक्ने काम; फलफूललाई चम्काउने काम; फलफूल तथा तरकारीलाई घाममा सुकाउने काम; बीउ बिन्याउने वा प्रशोधन गर्ने कार्य; बयरजन्य फल ।
- सुपारीको पात: इलाम, मोरङ्ग, झापा र सुनसरी जिल्लामा व्यवसायिक सुपारीको सम्भावना रहेको र यसको पालतबाट प्लेटहरू बन्ने र यो जर्मनमा निर्यात हुँदै आएको हुँदा यसको सम्भावनाको थप अध्ययन गरी करको दायरामा ल्याउन सकिने देखिन्छ ।
- रबर खेती: झापा, मोरङ, सुनसरी, इलाम, चुरे र उदयपुर जिल्लामा रबर खेतीको सम्भावना छ । अहिले पनि झापा, मोरङ, सुनसरी र इलाममा व्यवसायिक खेती भइरहेको छ । नेपालमा वर्षेनी अरबौंको रबरका वस्तुहरू आयात हुन्छ । निजी क्षेत्रको पहलमा यस क्षेत्रमा केही लगानी भएको छ । यसमा सरकारी तहबाट नीतिगत सुधार र किसान

तथा व्यवसायीहरूलाई आवश्यक सहयोग हुन सकेमा आयात घटाउन सकिन्छ । दक्ष कामदार, नीतिगत व्यवस्था र प्राविधिक सहयोगको अभावले यो क्षेत्र ओझेलमा परेको छ । यसका लागि सरकारी तवरबाट अध्ययन, अनुसन्धान गरी निजी क्षेत्रलाई सहयोग गर्न सके रवर खेती/उद्योग फस्टाउन र यसले रोजगारी सिर्जना गर्न, आयात न्यूनीकरण गर्न र प्रदेश सरकारको राजस्व वृद्धिमा समेत योगदान गर्न सक्ने सम्भावना देखिएको छ ।

- वास्तविक करको दर कृषि आयकर कानून बनाउँदा ध्यान दिनु पर्दछ ।
- कृषि आयमा सरल तरिकाले न्यूनतम कर विधिबाट कर लगाउँदा कारोवार अड्कको १ देखि ५ प्रतिशत र आयमा आधारित कर लगाउँदा व्यक्तिगत फर्मतर्फ ०-५-१०-१५ र निकायतर्फ १५ प्रतिशतसम्म कर लगाउन सकिने ।
- आर्थिक वर्ष २०७९/८० देखि संघीय सरकारले कृषिमा आधारित आयकर हटाएकोले कम्तिमा संघीय आयकर बराबरको कृषिआयकर प्रदेशले तत्काल लगाउने गरी कानून बनाउन र कर लगाउन सक्ने ।

कृषि अनुसाङ्गिक पशुपालन समूह

कृषि आयकर सम्भाव्यताका हिसाबले कृषिसँग अनुसाङ्गिक पशुपालनका समूहमा निम्न आय र सम्भाव्य कर रहन्छन् । वास्तविक करको दर कृषि आयकर कानून बनाउँदा ध्यान दिनु पर्दछ:

- पन्छीपालनसम्बन्धी क्रियाकलापहरू (कुखुरा, हाँस, टर्की, लौकाट, परेवा आदि)
- सुँगुर बंगुरपालन; अन्य जनावर पालन; अष्ट्रिच, इमु; अन्य पन्छी (हाँस, कुखुरा, परेवा, टर्की, लौकाटबाहेक); कीरा फट्यांग्रा पालन; खरायो र अन्य भुवायुक्त जनावर; मौरीपालन, मह र चाका (मैन) उत्पादन; पशुजन्य उत्पादन गर्ने सहयोगी क्रियाकलापहरू; शुल्क तथा सम्झौता करारका आधारमा गरिने पशुपालन सम्बन्धी क्रियाकलापहरू; भुवा तथा छालाको लागि सरिसृप र पन्छीहरूका शिकार गर्ने वा पासोमा पार्ने कार्य; स्वच्छ पानीमा माछा मार्ने; शुद्ध पानीमा (नुनिलो पानीबाहेक) गरिने जलचर पालन ।
- गाईवस्तु तथा भैंसीपालन सम्बन्धी क्रियाकलापहरू; घोडा र घोडावर्गका वस्तु पालनसम्बन्धी क्रियाकलापहरू; उँट तथा उँटवर्ग पालन; भेडाबाखा पालन सम्बन्धी क्रियाकलापहरू; पशुपन्छी पाल्ने, ठूलाठूला घस्रने जीव (रेप्टायल) र चराको भुवा र छाला निकाल्ने कार्य; गँड्यौला पालन, शंखेकीरा/घोगी पालन; रेशमकीरा पालन र कोकन उत्पादन; सोखको लागि जनावरपालन; विरालो र कुकुर; मैना, सुगाजस्ता पन्छीहरू; मुसा आदि; अन्य जनावर तथा पन्छी पालन; घोडाको नाल राख्ने; भुवा, छाला वा खानका लागि वा अनुसन्धानको लागि वा घरमा पालन वा चिडियाखानाको लागि (जीवित वा मरेका) जनावरहरूको प्राप्ति सम्बन्धी क्रियाकलाप; सिल, वालरस जस्ता समुद्री स्तनधारी जलचरहरू जमिनमा पक्रने कार्य; समुद्री माछा मार्ने; सामुद्रिक जलचर पालन ।

✓ करप्रयोजनका लागि माथिका केही क्रियाकलापलाई मनोरञ्जन वर्गमा राख्न पनि सकिने

कृषि आयसँग सम्बन्धित सम्पति समूह

कृषि आयकर सम्भाव्यताका हिसाबले कृषि आयसँग सम्बन्धित सम्पति समूहमा निम्न आय र सम्भाव्य कर रहन्छन् । वास्तविक करको दर कृषि आयकर कानून बनाउँदा ध्यान दिनु पर्दछ:

- कृषि जमीन निसर्ग (Disposal) को लाभ
- कृषि सम्पतिको निसर्गको लाभ
- कृषि जमीन वा सम्पति सम्बन्धित कृषि उत्पादन कारोवारमा प्रयोग हुन छोड्दाको अवस्थाको लाभ
- मुख्य सम्पति कृषि सम्पति भएको कम्पनीको शेयर हस्तान्तरणको लाभ

✓ कृषि आय जस्तै लाग्ने तर कृषि आय नहुने कृषि प्रशोधन र मासु प्रशोधनका व्यवसायहरू यस सूचीमा समावेश छैन ।

खण्ड पाँच: राजस्व परिचालन र बाँडफाँट सम्बन्धी स्थानीय तहको अनुभव र अभ्यास

५.१ पृष्ठभूमि

यस खण्डमा अन्तरक्रिया कार्यक्रमको लागि छनौट गरिएका ६ वटा स्थानीय तहहरूमा गरिएको स्थलगत अवलोकन र अन्तरक्रिया कार्यक्रमका सहभागीहरूको विचार, अनुभव र सुझावहरूको विश्लेषण गरी राजस्व संकलन, परिचालन र बाँडफाँट सम्बन्धी मुख्य मुख्य विषयहरू प्रस्तुत गरिएको छ। स्थानीय तहस्तरीय अन्तरक्रिया कार्यक्रमको मुख्य उद्देश्य स्थानीय तह र प्रदेश सरकारका बीचमा राजस्व सङ्कलन र बाँडफाँट सम्बन्धमा भएका वर्तमान अभ्यास, अनुभव, भविष्यमा सुधार गर्नुपर्ने क्षेत्रहरूको पहिचान गर्नु रहेको थियो। छनौट गरिएको ति ६ वटा स्थानीय तहहरूमा गरिएको अन्तरक्रिया कार्यक्रमको नतिजालाई तल प्रस्तुत गरिएको छ।

५.२ इलाम नगरपालिका, इलाम

इलाम नगरपालिका देशका पुराना नगरपालिका मध्येको एक नगरपालिका हो। यो नगरपालिका वि.स. १८७५ मा सदरमुकाम तथा गौडा हुँदै वि.स. २०१५ मा नगरपालिका, वि.स. २०१९ मा नगरपञ्चायत र वि.स. २०४७ मा पुनः नगरपालिका भई हालसम्म निरन्तर नगरपालिकाको रूपमा रहेको छ। दुई सय वर्षदेखि जिल्ला सदरमुकाम रहेको यस नगरपालिकाले जिल्लासँग नाम मिल्नाले यसले जिल्लाकै प्रतिनिधित्व गर्दै आएको छ। यो नगरपालिका १७३.३२ वर्ग कि.मि. क्षेत्रमा फैलिएको छ। यस नगरपालिकाको कुल जनसंख्या ५०,४९५ रहेको छ। यस क्षेत्रमा पर्यटकीय पूर्वाधारका लागि विमानस्थल, जैविक विविधता युक्त विभिन्न पर्यटकीय स्थल, सभागृह र शैक्षिक संस्थाहरूको व्यवस्थापन कार्य तिब्रतर गतिमा भइरहेको छ। माई, जोगमाई, पुवामाई, चिया वगान यहाँका महत्वपूर्ण पर्यटकीय स्थलहरू हुन्।

(क) अन्तरक्रिया कार्यक्रम

वि.सं. २०७९ भाद्र २१ गते इलाम नगरपालिकामा प्रदेश नं. १ को आन्तरिक राजस्व सम्भाव्यता अध्ययन सम्बन्धमा स्थानीय तहस्तरीय अन्तरक्रिया कार्यक्रमको आयोजना गरिएको थियो। यस अन्तरक्रिया कार्यक्रममा नगर प्रमुख श्री केदार थापा,

उपप्रमुख श्री विष्णुकुमारी लिम्बु, कार्यपालिकाका सदस्यहरू, प्रमुख प्रशासकीय अधिकृत श्री गणेश खड्का, राजस्व शाखा प्रमुख तथा अन्य कर्मचारी, लेखा शाखा प्रमुख, भूमि व्यवस्था शाखा,



आलेप शाखा, प्रशासन शाखा प्रमुख लगायत कुल २४ जनाको सहभागिता रहेको थियो। कुल सहभागीहरू मध्य २ जना महिलाहरूको सहभागिता रहेको थियो। उक्त कार्यक्रमको सुरुवात इलाम नगर प्रमुखको अध्यक्षतामा प्रमुख प्रशासकीय

अधिकृतबाट सहभागीहरूलाई स्वागत मन्तव्य व्यक्त गर्नुका साथै प्रशासकीय अधिकृतबाट कार्यक्रम सञ्चालन गरिएको थियो । कार्यक्रममा सुशासन तथा विकास अनुसन्धान केन्द्रका तर्फबाट निम्नानुसारको दुईवटा कार्यपत्र प्रस्तुत गरिएको थियो ।

- (१) प्रदेश नं. १ को आन्तरिक राजस्व सम्भाव्यता अध्ययन सम्बन्धी उद्देश्य, विधि र अपेक्षित उपलब्धिका बारेमा सहभागीहरूलाई जानकारी गराउने सम्बन्धमा ।
- (२) आन्तरिक राजस्व सङ्कलन, प्रदेश सरकार र स्थानीय तहबीच संकलित राजस्व बाँडफाँट सम्बन्धी वर्तमान अभ्यास र भावी सुधारका क्षेत्रहरूको पहिचान सम्बन्धी सवालहरूका सम्बन्धमा ।

(ख) सहभागीहरूबाट व्यक्त धारणा तथा सुझाव

कार्यान्वयनका क्रममा देखापरेका समस्या र सवालहरू

- सवारी साधन कर तिर्न टाढा जानुपर्ने, अव्यवस्थित भीड र घण्टौं लाइन बस्नुपर्ने, विचौलियाको सहयोग लिनुपर्ने, खासगरी भाडाका सवारी साधन गरेको भुक्तानीमा थप जटिलता जस्ता कुराहरूले गर्दा सवारी साधन कर भुक्तानीमा नागरिकको उत्साहमा कमी रहेको ।
- घर जग्गाको न्यूनतम मूल्याङ्कन संयन्त्र संविधानको प्रावधान अनुरूप अद्यावधिक नभएको तथा मूल्याङ्कन प्रणाली पनि परम्परागत स्वरूपको रहेको हुँदा वास्तविक कारोवार मूल्य र न्यूनतम मूल्याङ्कनमा अधिकांश जग्गामा व्यापक अन्तर रहेको । उद्देश्य पिच्छे मूल्याङ्कन फरक हुँदा कर प्रशासनमा कठिनाई भएको तथा राजस्व चुहावटको सम्भावना रहेको । जग्गाको मूल्याङ्कन जग्गाधनीको उद्देश्य अनुसारको मूल्याङ्कन गर्नुभन्दा कित्ता अनुसारको एकल मूल्याङ्कनको व्यवस्था मिलाउनु पर्ने ।
- डिभिजन वन कार्यालय, सामुदायिक वन तथा विद्युत उत्पादन गृह र स्थानीय सरकार बीच क्षेत्राधिकार वारे स्पष्टता नहुँदा नदीजन्य पदार्थमा ठेक्का लिन ठेकेदार हिचकिचाउने गरेको । यसबाट भएको प्राकृतिक स्रोतको उपयोग हुन पनि नसकेको र राजस्व असुलीमा कमी हुन पुगेको अवस्था सिर्जना भएको ।
- नदीजन्य पदार्थ उपलब्ध भए तापनि पर्याप्त पूर्वाधार विकास नहुँदा सोको माग न्यून रहेको हुँदा ठेक्का लाग्न नसकेको अवस्था । पहाडी क्षेत्रमा नदीबाट नदीजन्य पदार्थ उठाइ ल्याउने सवारी साधनसँग प्रति सवारी साधनका दरले कर उठाउने गरेको ।
- भारतीय सीमा क्षेत्रका बजारबाट हुने चोरी निकासी तथा उपभोग्य वस्तुको आयातबाट नेपाली उत्पादक र व्यवसायलाई प्रभाव पारेकाले राजस्वमा समेत असर परेको । प्रदेश नं. १ को उत्पादनहरू चिज, छुर्पी, पनिर, चिया आदि भारतबाट आयात भई स्थानीय उत्पादनले बजार नपाउने गरेकाले सोको उचित प्रबन्ध हुनुपर्ने ।
- कृषिमा लाग्ने आयकर कृषिको उत्पादनको आधारमा लाग्ने कर भएकोले कृषि उत्पादनको यथार्थपरक अभिलेख राख्ने व्यवस्था हुनुपर्ने र नाफामा निश्चित सीमा तोकी त्यस भन्दा माथि मात्र कर लगाउने व्यवस्था मिलाउनु पर्ने ।

राजस्वको दायरा, दर र राजस्व प्रशासन

- स्थानीय तह बलियो भएमा मात्र प्रदेश सरकारको राजस्व समेत बढ्ने भएकाले स्थानीय कृषक, व्यवसायी तथा नागरिकका आर्थिक गतिविधि वृद्धिका लागि आवश्यक लगानी, पूर्वाधारको विकास र लगानीको वातावरण निर्माणमा ध्यान दिनुपर्ने । उदाहरणको लागि समयमा मल विउको व्यवस्थापन, विद्युतको भरपर्दो व्यवस्था, अन्तरपालिका सहज र भरपर्दो पहुँच सडकको व्यवस्था, सिंचाई, पर्यटन पूर्वाधारको विकास आदि ।

- जग्गाको मूल्याङ्कन समितिमा स्थानीय तहको प्रतिनिधित्वको व्यवस्था गर्नुपर्ने, कित्तामा आधारित मूल्याङ्कन प्रणालीको विकास गरी भू-अभिलेख सूचना व्यवस्थापन प्रणाली (एल.आर.आई.एम.एस.) मा अद्यावधिक गर्ने र सोही मूल्याङ्कनलाई धितो मूल्याङ्कन, सम्पत्ति कर, घर जग्गा रजिष्ट्रेशन लगायतका सबै प्रयोजनका लागि उपयोग हुनेगरी सम्बन्धित निकायका सूचना प्रणालीसँग आवद्ध गर्न उपयुक्त हुने। यसरी आवद्ध गरेपछि विद्यमान दर बढी भएकाले पुनरावलोकन गर्नुपर्ने।
- स्थानीय स्तरमा वन पैदावार कुहिएर जाने अवस्था रहेको तर आयात गरी बजारको माग पूरा भइरहेकोले प्रदेश सरकारबाट वन पैदावार उपयोग सम्बन्धी आवश्यक पहल गर्नुपर्ने।
- स्थानीय कृषि उपजको बजारीकरणमा प्रोत्साहन गरी प्रदेशको समग्र आर्थिक गतिविधिमा जोड दिनुपर्ने।
- करदातालाई सहज रूपमा कर भुक्तानी गर्ने वातावरण निर्माणले राजस्व असुली वृद्धि हुने। खासगरी व्यापक गुनासो रहेको सवारी साधन कर भुक्तानीका लागि सहज प्रणालीको विकास गर्नुपर्ने जस्तै: बैंकको जुनसुकै शाखाबाट भुक्तानी गर्न मिल्ने, विद्युतीय माध्यमबाट भुक्तानी गर्ने र सो रसिद वा भौचरका आधारमा सम्बन्धित कार्यालयले प्रमाणीकरण गरिदिने आदि।
- ऐन, कानूनमा तजविजी अधिकारको व्यवस्था खारेज गरी प्रोत्साहन र दण्ड सम्बन्धी स्पष्ट रूपमा कितान गर्नुपर्ने।
- छिमेकी देशको कृषि उत्पादनसँग नेपाली उत्पादनको प्रतिस्पर्धी क्षमता कमजोर रहेको वर्तमान अवस्थामा कृषि उत्पादनमा कर लगाउँदा आयातमा अझ वृद्धि हुने सम्भावनालाई समेत मध्यनजर गरी कृषि आयमा कर भन्ने विषयको उचित परिभाषा गरी किसानलाई नकारात्मक असर नपर्ने गरी कर लगाउने उपायको अवलम्बन गर्नुपर्ने।

अनुगमन तथा मूल्याङ्कन

- राजस्व लक्ष्य र असुलीको आवधिक रूपमा पुनरावलोकन गर्नुपर्ने। यसबाट राजस्व असुलीमा देखापरेका समस्याहरू तत्कालै जानकारी हुने र समस्याको समाधान भई लक्ष्य अनुरूपको राजस्व असुलीमा सहयोग पुग्ने।
- एउटा छुट पूर्वीका आधारमा सोभन्दा बढी परिमाणको काठ निकासी हुने सम्भावना देखिएकोले निजी वनका काठ निकासी र जडिबुटी लगायतका गैरकाष्ठजन्य वन पैदावार निकासी सम्बन्धमा प्रभावकारी अनुगमनको व्यवस्था हुन आवश्यक रहेको।
- राजस्वका दर, सम्भाव्यता र कार्यान्वयन अवस्थाको नियमित अध्ययन, मूल्याङ्कन गरी अध्ययनका आधारमा राजस्वका दर र क्षेत्र निर्धारण गर्नुपर्ने।
- नियम कानूनमा भएका बाझिएका व्यवस्थालाई हटाउनु पर्ने। जस्तै: वन ऐन, २०७६; नियमावली २०७९ र स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४; र ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा उत्खनन, बिक्री तथा व्यवस्थापन सम्बन्धी मापदण्ड, २०७७ आदि।

क्षमता विकास आवश्यकता

- डिभिजन वन कार्यालय, सामुदायिक वन तथा विद्युत उत्पादन गृह र स्थानीय सरकार बीच क्षेत्राधिकार बारे प्रदेश सरकारले सबै पक्षसँग छलफल गरी स्पष्ट गर्नुपर्ने।
- राजस्व कार्यालय तथा शाखाहरूमा कार्यरत कर्मचारीको कार्यसम्पादन दक्षता अभिवृद्धिका लागि क्षमता विकासमा ध्यान दिनु पर्ने।
- केही स्थानमा जलविद्युत कम्पनीहरूले नदीजन्य पदार्थ स्थानीय तहसँग समन्वय वा अनुमति विनै उपयोग गर्ने (विक्री वितरण गर्ने) र संघीय निकायबाट स्वीकृति लिएको भन्ने गरेको देखिएकाले सो सम्बन्धी स्पष्टताका लागि प्रदेश

सरकारले सम्बन्धित स्थानीय सरकार र जलविद्युत कम्पनी बीच समन्वय र सहजीकरण गरी स्पष्ट गराउन आवश्यक देखिएको ।

- छिमेकी मुलुकबाट आई व्यवसाय गर्ने व्यक्तिहरुलाई राजस्वको दायरामा ल्याउने विधि र प्रक्रिया वारे स्पष्टताको आवश्यकता देखिएको ।

नयाँ सम्भावनाका क्षेत्रहरु

- प्रदेश सरकारबाट पर्यटकीय क्षेत्र पहिचान र पूर्वाधार निर्माणमा उल्लेखनीय कार्य भएको र उक्त पर्यटकीय स्थललाई प्रवर्द्धन गरी स्थानीय उत्पादन र रोजगारीसँग जोड्ने कार्यक्रम आवश्यक रहेको । यसले प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रुपमा राजस्वमा महत्वपूर्ण योगदान गर्ने सम्भावना रहेको ।
- वन मुद्दा लागेका तथा जफत भई वन कार्यालयहरुमा रहेका काठ तथा सवारी साधन बारे निर्णय प्रक्रिया र लिलाम प्रक्रियालाई छिटो, छरितो बनाउँदा सड्ने तथा नष्ट हुने स्रोत र साधनबाट राजस्व प्राप्त हुने सम्भावना रहेको ।
- स्थानीय सम्भावनाका आधारमा प्रदेश सरकारले पूँजी लगानी गरी राजस्वको दायरा बढाउनु पर्ने ।
- निर्माण सामग्रीको लागि प्रयोग हुने ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवाको गुणस्तर मापन हुनुपर्ने र सोही बमोजिम प्रयोग गर्न आवश्यक समन्वय गर्ने ।
- महिलाको सशक्तीकरणको लागि करमा छुट दिएर मात्र होइन आर्थिक अवसरहरु समेत वृद्धि गर्नुपर्ने ।
- निष्कृत सामुदायिक वनको सदुपयोग हुन नसक्दा त्यहाँबाट प्राप्त हुनसक्ने राजस्व नउठेको हुँदा स्थानीय सरकारसँग समन्वय र सहकार्य गरी त्यस्ता सामुदायिक वनको व्यवस्थापनमा सुधार गर्नुपर्ने ।

५.३ पाथीभरा याडवरक गाउँपालिका, ताप्लेजुङ

पाथीभरा याडवरक गाउँपालिका प्रदेश नं. १ को ताप्लेजुङ्ग जिल्लाको पूर्वी भागमा अवस्थित एक सुन्दर गाउँपालिका हो । यसको क्षेत्रफल ९२.७६ वर्गकिलोमिटर रहेको छ । यस गाउँपालिकाको कुल जनसंख्या ११,७९७ (२०७८ को जनगणनाको प्रारम्भिक प्रतिवेदन) रहेको छ । यस गाउँपालिकामा अवस्थित पर्यटकीय स्थलहरु केसानी नाम्सानी, टोङ्के पहरा, धापापोखरी, सिरीजंघा माङ्हिम, साम्बाछयो खोर्लिङ्ग गुम्बा आदि रहेका छन् ।

(क) अन्तरक्रिया कार्यक्रम



यस गाउँपालिकामा २०७९ भाद्र २३ गते अन्तरक्रिया कार्यक्रमको आयोजना गरिएको थियो । गाउँपालिकाका अध्यक्ष श्री केशर कुमार मेन्याङ्बोज्युको अध्यक्षतामा कार्यक्रम सञ्चालन गरिएको थियो । गाउँपालिकाकी उपाध्यक्ष श्री रनमाया गुरुङ, प्रमुख प्रशासकीय अधिकृत श्री जनार्दन

निरौला, वडा अध्यक्षहरु, कार्यपालिका सदस्यहरु र शाखा प्रमुखहरु लगायत कुल १५ जनाको सहभागिता रहेको थियो । कुल सहभागीमध्ये १ जना महिलाको सहभागितामा उक्त कार्यक्रम सम्पन्न भएको थियो । सो कार्यक्रम प्रमुख प्रशासकीय अधिकृतबाट सञ्चालन भएको थियो ।

सहजकर्ताहरुबाट अन्तरक्रिया आयोजनाको उद्देश्यमाथि प्रकाश पार्नुका साथै कार्यक्रम सम्बन्धी जानकारी गराइएको थियो । साथै प्रदेश नं. १ को राजस्व सम्भाव्यता अध्ययनका लागि अवलम्बन गरिएको विधि तथा प्रक्रिया बारे र प्रदेश र स्थानीय तहको राजस्वका साझा अधिकारहरु बारे संवैधानिक र कानूनी प्रावधानका साथै देखिएका मुख्य सवालहरु सम्बन्धी दुईवटा प्रस्तुति गरिएको थियो । विषयवस्तु प्रस्तुति पश्चात सहभागीहरुको धारणा, सुझाव तथा प्रतिक्रियाका लागि अन्तरक्रिया गरिएको थियो ।

(ख) सहभागीहरुबाट व्यक्त धारणा तथा सुझाव

कार्यान्वयनका क्रममा देखापरेका समस्या र सवालहरु

- जग्गाको मूल्याङ्कन जग्गाधनीको उद्देश्य अनुसार नभई कित्ता अनुसारको एकल मूल्याङ्कनको व्यवस्था मिलाई सवै प्रयोजनका लागि उपयोग हुने प्रणाली विकास गर्नुपर्ने ।
- डिभिजन वन कार्यालय, सामुदायिक वन र स्थानीय सरकार बीच क्षेत्राधिकार बारे स्पष्टता नहुँदा नदीजन्य पदार्थ ठेक्कामा लिन ठेकेदार हिचकिचाउने गरेको । यसबाट प्राकृतिक स्रोतको उपयोग हुन पनि नसकेको र राजस्व असुलीमा कमी हुन पुगेको अवस्था सिर्जना भएको ।
- निर्माण व्यवसायी तथा उपभोक्ता समितिहरुले प्रयोग गर्ने ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा जस्ता निर्माण सामग्री वातावरणीय परीक्षणले तोके वमोजिमको परिमाण र दरमा गराउन सकेमा नदीजन्य पदार्थबाट प्राप्त हुने राजस्व वृद्धि हुने सम्भावना रहेको ।
- नदीजन्य पदार्थको निश्चित परिमाण र मूल्यको आधारमा ठेक्का लगाई नदीबाट नदीजन्य पदार्थ उठाइ ल्याउने सवारी साधनसँग प्रति सवारी साधनका दरले कर उठाउने गरेको ।
- जडिबुटी लगायतका गैरकाष्ठजन्य वन पैदावार र निजी वनका काठ निकासी हुँदा, निकासी भएको सामग्रीको तुलनामा राजस्व असुलीमा चुहावट हुने सम्भावना रहेको ।

राजस्वको दायरा, दर र राजस्व प्रशासन

- जग्गाको मूल्याङ्कन समितिमा स्थानीय तहको प्रतिनिधित्वको व्यवस्था गर्नुपर्ने ।
- कित्तामा आधारित मूल्याङ्कन प्रणालीको विकास गरी भू-अभिलेख सूचना व्यवस्थापन प्रणाली (एलआरआईएमएस) मा अद्यावधिक गर्ने र सोही मूल्याङ्कनलाई धितो मूल्याङ्कन, सम्पत्ति कर, घर जग्गा रजिष्ट्रेशन लगायतका सबै प्रयोजनका लागि उपयोग हुनेगरी सम्बन्धित निकायका सूचना प्रणालीसँग आवद्ध गरी हालको दर पुनरावलोकन गर्नुपर्ने ।
- स्थानीय कृषि उपजको बजारीकरणमा प्रोत्साहन गरी कृषि उत्पादन वृद्धिको वातावरण बनाई प्रदेशको समग्र आर्थिक गतिविधिमा जोड दिनुपर्ने ।

अनुगमन तथा मूल्याङ्कन

- एउटा छुट पूर्जाका आधारमा सोभन्दा बढी परिमाणको काठ निकासी हुने सम्भावना देखिएकोले निजी वनका काठ निकासी र जडिबुटी लगायतका गैरकाष्ठजन्य वन पैदावार निकासी सम्बन्धमा प्रभावकारी अनुगमनको व्यवस्था हुन आवश्यक रहेको ।
- नियम कानूनमा भएका बाझिएका व्यवस्थालाई हटाउनुपर्ने । जस्तै: वन ऐन, २०७६; नियमावली २०७९; स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ र ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा उत्खनन, बिक्री तथा व्यवस्थापन सम्बन्धी मापदण्ड, २०७७ आदि ।

क्षमता विकास आवश्यकता

- गाउँपालिकामा राजस्व सम्बन्धी दक्ष कर्मचारी व्यवस्थापनमा ध्यान दिनु पर्ने ।
- डिभिजन वन कार्यालय, सामुदायिक वन तथा विद्युत उत्पादन गृह र स्थानीय सरकार बीच क्षेत्राधिकार बारे प्रदेश सरकारले सबै पक्षसँग छलफल गरी स्पष्ट गर्नुपर्ने ।
- प्रदेश नं. १ को राजस्व सम्भाव्यता अध्ययन प्रतिवेदनका बारेमा सबै स्थानीय तहहरूसँग छलफल गराई कार्यान्वयनमा जान सके प्रभावकारी हुने ।

नयाँ सम्भावनाका क्षेत्रहरू

- राजस्व सम्बन्धी स्थानीय सम्भावनाको पहिचान गरी सोही आधारमा प्रदेश सरकारले लगानी गरी राजस्वको दायरा बढाउनु पर्ने ।
- महिलाको आर्थिक सशक्तीकरणका लागि अवसरहरू समेत वृद्धि गर्नुपर्ने ।

५.४ इटहरी उपमहानगरपालिका, सुनसरी

इटहरी उपमहानगरपालिका देशकै एउटा उदाउँदो स्थानीय सरकारहरू मध्येको एक हो । वि.स. २०७१ मंङ्सिर १६ को मन्त्रिपरिषद्को निर्णय अनुसार तत्कालिन खनार गाविस, पकली गाविस, एकम्बा गाविस र हासपोसा गाविस मिलेर हालको उपमहानगरपालिका गठन भएको हो । पूर्व पश्चिम लोकमार्ग र कोशी लोकमार्गको संगमस्थलको रूपमा रहेको यस उपमहानगरपालिकामा विभिन्न ताल तलैयाहरू र धार्मिकस्थलहरू रहेका छन् । यो उपमहानगरपालिका ९३.३२ वर्ग कि.मि. क्षेत्रमा फैलिएको छ (नगर वस्तुगत विवरण २०७५) । यस उपमहानगरपालिकाको कुल जनसंख्या १,९८,०९८ रहेको छ । जस मध्ये पुरुष ९४,३०८ र महिला १,०३,७९० रहेका छन् ।

(क) अन्तरक्रिया कार्यक्रम

वि.स. २०७९ कार्तिक २ गते इटहरी उपमहानगरपालिकामा प्रदेश नं. १ को आन्तरिक राजस्व सम्भाव्यता अध्ययन सम्बन्धमा स्थानीय तहस्तरीय अन्तरक्रिया कार्यक्रमको आयोजना गरिएको थियो । यस अन्तरक्रिया कार्यक्रममा नगर प्रमुख श्री हेमकर्ण पौडेल, उपप्रमुख श्री संगिता कुमारी चौधरी, प्रमुख प्रशासकीय अधिकृत श्री रामचरित्र मेहता, वडा अध्यक्षहरू तथा कार्यपालिकाका अन्य सदस्यहरू, राजस्व शाखा प्रमुख तथा अन्य कर्मचारी गरी कुल २७ जना सहभागीहरू रहेका थिए । कुल सहभागीहरू मध्ये ७ जना महिलाहरूको सहभागिता रहेको थियो । उक्त कार्यक्रम उपप्रमुख एवं राजस्व परामर्श समितिका संयोजक श्री संगिताकुमारी चौधरीको अध्यक्षता तथा नगरप्रमुख श्री हेमकर्ण पौडेलको प्रमुख आतिथ्यता र प्रमुख प्रशासकीय अधिकृत श्री रामचरित्र मेहताको मार्गनिर्देशनमा सञ्चालन भएको थियो । कार्यक्रममा सुशासन तथा विकास अनुसन्धान केन्द्रका तर्फबाट निम्नानुसारको दुईवटा कार्यपत्र प्रस्तुत गरिएको थियो भने प्रस्तुती पछि सहभागीहरूको धारणा सङ्कलन गर्ने कार्य गरिएको थियो ।



- (१) प्रदेश नं. १ को आन्तरिक राजस्व सम्भाव्यता अध्ययन सम्बन्धी उद्देश्य, विधि र अपेक्षित उपलब्धिका बारेमा सहभागीहरूलाई जानकारी गराउने सम्बन्धमा ।
- (२) आन्तरिक राजस्व सङ्कलन र प्रदेश सरकार र स्थानीय तहबीच संकलित राजस्व बाँडफाँट सम्बन्धी वर्तमान अभ्यास र भावी सुधारका क्षेत्रहरूको पहिचान सम्बन्धी सवालहरूका सम्बन्धमा ।

(ख) सहभागीहरूबाट व्यक्त धारणा तथा सुझाव

कार्यान्वयनका क्रममा देखापरेका समस्या र सवालहरू

- घर जग्गाको मूल्याङ्कन चलन चलितको मूल्याङ्कन भन्दा पनि बढी रहेको अवस्था भएकोले आवश्यक अध्ययन गरी बजारभाउ भन्दा बढी नहुनेगरी दर निर्धारण गर्नुपर्ने । यदि घर जग्गाको कर बढी भएमा कारोबार कम हुने वा चुहावट हुनसक्ने वा गैरकानूनी बाटाको अवलम्बन हुनसक्ने भएकोले यसमा ध्यान दिनु आवश्यक भएको । यसको समस्या समाधानको लागि जग्गाको कित्ता अनुसार मूल्याङ्कन निर्धारण गर्ने परिपाटीको विकास गर्न आवश्यक भएको ।
- महिलाको नाममा घर जग्गा रजिष्ट्रेशन गर्दा दिईदैं आएको छुट पुरुष सहितको नाममा संयुक्त रुपमा गर्दा पनि दिने व्यवस्थाले राजस्वमा कमी आउन सक्ने र यसो गर्नु न्यायोचित पनि नहुने ।
- जनताबाट कर उठाउँदा उनीहरू यसको सदुपयोग हुने कुरामा विश्वस्त हुने वातावरण तयार गर्नुपर्ने र करलाई विकास र सेवासँग जोड्नु पर्ने वा तिनीहरू बीच तालमेल हुनुपर्दछ ।
- कर किन तिर्ने र कसरी तिर्ने भन्नेबारेमा आम मानिसहरूमा जनचेतना जगाउनु पर्दछ । यसबाट उनीहरूको कर प्रतिको धारणा सकारात्मक बन्ने र उनीहरूको क्षमता विकास हुने ।
- केन्द्र र स्थानीय तहबीच संस्थागत र व्यक्तिगत घरवहाल करको विषयमा विवाद कायम रहेको र यो समस्याको चाँडो निरूपण गर्न आवश्यक भएको ।
- परम्परागत शैलीको राजस्व सङ्कलन प्रणाली र प्रशासनबाट राजस्व चुहावट हुनसक्ने भएकाले राजस्व प्रशासनलाई सकेसम्म प्रविधिमैत्री बनाउनु पर्ने र यसमा प्रदेश सरकारले स्थानीय सरकारलाई सहयोग गर्नुपर्ने ।
- साना सवारी साधनहरू (रिक्सा, अटोरिक्सा आदि) स्थानीय तहको जिम्मेवारीमा आएपनि यातायात कार्यालयमा दर्ता हुने गरेको र यसबाट स्थानीय तहले राजस्व प्राप्त गर्न सकेको अवस्था छैन ।
- राजस्व बढाउने कुरा गर्दा आम मानिसहरूमा नकारात्मक धारणा पैदा हुने भएकाले आम मानिसहरूको धारणा बुझेर मात्र करको बारेमा निर्णय गर्न उचित हुने ।
- कृषिमा लाग्ने आयकर कृषिको उत्पादनको आधारमा लाग्ने कर भएकोले यसको उत्पादनको यथार्थपरक अभिलेख राख्ने व्यवस्था हुनुपर्ने ।

राजस्वको दायरा, दर र राजस्व प्रशासन

- करको दर निर्धारण व्यापक जनसहभागितामा हुनु पर्ने । यसले करदाताहरूमा अपनत्वको भावना जागृत हुने र कार्यान्वयनमा सहजता हुने । यसको लागि कर सम्बन्धी छलफल वडा तहमा गर्नुपर्ने ।
- राजस्व सम्भाव्यताको आकलन हुने गरेको तर यो व्यापक अध्ययन र अनुसन्धान विनै हचुवाको भरमा हुने गरेकाले कुनै वैज्ञानिक आधारमा नभएको र यथार्थपरक हुन नसकेको ।
- आर्थिक सर्वेक्षण जस्ता अध्ययनको आधारमा मात्र राजस्व सम्भाव्यताको आँकलन गरिनुपर्छ ।
- प्राकृतिक स्रोतहरू जस्तै खोलानालामा भएको ढुङ्गा, गिट्टी बालुवा तथा दहत्तर बहत्तरको सदुपयोग हुन नसकेको ।
- लामो समयसम्म पुराना गाडीहरू थन्किएर बस्दा वातावरणीय जोखिम बढ्नुको साथै राजस्वमा नोक्सानी भएको ।

- ऐन, कानूनमा तजविजी अधिकारको व्यवस्था खारेज गरी प्रोत्साहन र दण्ड सम्बन्धी व्यवस्थाको स्पष्ट रूपमा किटान गर्नुपर्ने ।

अनुगमन तथा मूल्याङ्कन

- राजस्व लक्ष्य र असुलीको आवधिक रूपमा पुनरावलोकन गर्नुपर्ने । यसबाट प्रशासनमा देखा परेका विभिन्न समस्याहरूको समाधान सहयोग पुग्ने ।
- राजस्वका दर र राजस्व असुलीको कार्यान्वयन अवस्थाको नियमित रूपमा मूल्याङ्कन गरी प्रतिवेदनको आधारमा राजस्वका दर र प्रशासनको बारेमा आवश्यक परिमार्जन गर्नुपर्ने ।
- नियम कानूनमा भएका बाझिएका व्यवस्थालाई हटाउनुपर्ने ।

नयाँ सम्भावनाका क्षेत्रहरू

- घर जग्गा कारोबारलाई राजस्वको प्रमुख स्रोतको रूपमा ग्रहण गरी राजस्व सङ्कलन गर्ने कार्य उपयुक्त हुन सक्ने । यसको सट्टा उत्पादनमूलक क्षेत्रको विकासमा जोड दिनु पर्ने ।
- स्थानीय तहमा राजस्व सङ्कलन चुनौतीपूर्ण भएकोले विज्ञापन कर लगायत केही करहरू स्थानीय तहहरूले संयुक्त रूपमा कार्यान्वयन गर्दा उपयुक्त हुने ।
- पर्यटन क्षेत्रको विकास आर्थिक विकासको एउटा आधार भएकोले पर्यटन क्षेत्रको विकासको लागि प्रदेश सरकारले पर्याप्त लगानी गर्नुपर्ने ।
- धार्मिक पर्यटनको विकासमा जोड दिनु पर्ने ।

५.५ विराटनगर महानगरपालिका, मोरङ

विराटनगर महानगरपालिका प्रदेश नं. १ को एकमात्र महानगरपालिका हो । यो प्रदेश नं. १ को वर्तमान राजधानी पनि हो । ऐतिहासिक र आर्थिक नगरीको रूपमा चिनिने यो महानगरपालिका वि. सं २०७४ को स्थानीय तहको पुनर्संरचनासँगै महानगरपालिकाको रूपमा गठन भएको हो । १९ वटा वडामा विभाजित यस महानगरपालिकाको क्षेत्रफल ७६.९९ वर्गकिलोमिटर रहेको छ । २०७८ को जनगणनाको प्रारम्भिक प्रतिवेदन अनुसार यस महानगरपालिकाको कुल जनसंख्या २,४४,७५० रहेको छ ।

(क) अन्तरक्रिया कार्यक्रम

प्रदेश नं. १ को राजस्व सम्भाव्यताको सम्बन्धमा यस महानगरपालिकामा २०७९ कार्तिक २ गते एक अन्तरक्रिया कार्यक्रमको आयोजना गरिएको थियो । महानगरपालिकाका प्रमुख श्री नागेश कोइरालाको अध्यक्षतामा कार्यक्रम सञ्चालन गरिएको



थियो । महानगरपालिकाको प्रमुख प्रशासकीय अधिकृत श्री विष्णुप्रसाद कोइरालाको मार्ग निर्देशनमा संचालित उक्त कार्यक्रममा वडा अध्यक्ष तथा कार्यपालिकाका अन्य सदस्यहरू र शाखा प्रमुखहरू गरी कुल २१ जनाको सहभागिता रहेको थियो । कुल सहभागीमध्ये ५ जना महिलाहरूको सहभागिता रहेको थियो ।

सहजकर्ताहरूबाट अन्तरक्रिया कार्यक्रम आयोजनाको उद्देश्यमाथि प्रकाश पार्नुका साथै कार्यक्रम सम्बन्धी जानकारी गराईएको थियो । साथै प्रदेश नं. १ को राजस्व सम्भाव्यता अध्ययनका लागि

अवलम्बन गरिएको विधि तथा प्रक्रिया बारे र प्रदेश र स्थानीय तहको राजस्वका साझा अधिकारहरु बारे संवैधानिक र कानूनी प्रावधानका साथै देखिएका मुख्य सवालहरु सम्बन्धी दुईवटा प्रस्तुति गरिएको थियो । विषयवस्तु प्रस्तुति पश्चात सहभागीहरुको धारणा, सुझाव तथा प्रतिक्रियाका लागि अन्तरक्रिया गरिएको थियो ।

(ख) सहभागीहरुबाट व्यक्त धारणा तथा सुझाव

कार्यान्वयनका क्रममा देखापरेका समस्या र सवालहरु

- मालपोत कार्यालयको क्षमता विकासमा स्थानीय तह र प्रदेश सरकारको ध्यान पुग्न नसकेको,
- व्यवसाय करमा सहकारी संस्थाहरुलाई ल्याउन नसकिएको,
- स्थानीय तहस्तरीय सहकारीहरु प्रदेश स्तरमा दर्ता हुने प्रवृत्ति बढेको, यसले स्थानीय तहको करको दायरा साँगुरिएको,
- घर बहाल कर, सम्पत्ति कर र व्यवसाय कर सम्बन्धी स्थानीय कानून बनाउन नसकिएकोले कार्यान्वयनमा समस्या रहेको छ । यसका लागि प्रदेश सरकारले सहयोग गर्नुपर्ने,
- व्यापारीहरुको अवरोधका कारण कवाडी कर लगाउन नसकिएको ।

राजस्वको दायरा, दर र राजस्व प्रशासन

- राजस्वको दायरा बढाउने तर्फ ठोस नीति र कार्यक्रम कार्यान्वयन हुन नसकेको,
- मनोरञ्जन कर र विज्ञापन करलाई मुख्य स्रोतको रूपमा ल्याउन यस सम्बन्धी अध्ययन गर्न जरुरी रहेको,
- जिल्ला निकासी कर लगाउने पुरानो नियमलाई स्थापित गरी राजस्व वृद्धि गर्न सकिने सम्भावना रहेको,
- नदीजन्य पदार्थ (निर्माणजन्य वस्तु) को दुरुपयोग रोक्न सम्बद्ध सबै पक्षको प्रतिवद्धताको खाँचो रहेको ।

अनुगमन तथा मूल्याङ्कन

- अनुगमन तथा मूल्याङ्कन कार्यलाई प्रभावकारी बनाउन स्थानीय राजस्व परामर्श समितिलाई थप प्रभावकारी बनाउनु पर्ने ।
- अनुगमन कार्यलाई बलियो बनाउन स्थानीय प्रशासनको पूर्ण सहयोगको प्रत्याभूत हुनु पर्ने ।

क्षमता विकास आवश्यकता

- स्थानीय राजस्व परामर्श समिति र राजस्व शाखाका कर्मचारीहरुको क्षमता विकासमा जोड दिनुपर्ने ।

नयाँ सम्भावनाका क्षेत्रहरु

- राजस्व सम्बन्धी वृहत अध्ययन गरी राजस्वका नयाँ सम्भाव्य क्षेत्रहरुको पहिचान गर्नुपर्ने,
- पर्यटन क्षेत्रको विकासमा जोड दिनुपर्ने ।

५.६ सोलुदुधकुण्ड नगरपालिका, सोलुखुम्बु

सोलुखुम्बु जिल्लाको सदरमुकाममा अवस्थित सोलुदुधकुण्ड नगरपालिका नयाँ नगरपालिका मध्ये एक हो । यो नगरपालिका वि.स. २०७१ मङ्सिर १७ को मन्त्रिपरिषद्को निर्णय अनुसार तत्कालिन बेनी, लोदिङ, सल्लेरी र गार्मा गाविस मिलेर हालको सोलुदुधकुण्ड नगरपालिकाको गठन भएको हो । २०६८ सालको जनगणना अनुसार यस नगरपालिकाको जनसंख्या २०३९९ र क्षेत्रफल ५३८.०९ वर्ग किलोमिटर रहेकोमा मिति २०७४/११/१४ गते साविकको नेचासल्यान ६, तिडला वडा समेत समावेश भई नगरपालिकाको हालको संरचना निर्माण भएको हो । २०७८ सालको प्रारम्भिक जनगणनाको नतिजा अनुसार यस नगरपालिकाको जनसंख्या २७,०१३ रहेको छ भने र क्षेत्रफल ५६५.०६ वर्ग किलोमिटर कायम रहेको छ ।

(क) अन्तरक्रिया कार्यक्रम

प्रदेश नं. १ को आन्तरिक राजस्व सम्भाव्यता अध्ययन सम्बन्धमा २०७९ कार्तिक २४ गते स्थानीय तहस्तरीय अन्तरक्रिया



कार्यक्रमको आयोजना सोलुदुधकुण्ड नगरपालिका, सल्लेरीमा गरिएको थियो । यस अन्तरक्रिया कार्यक्रम नगर उपप्रमुख श्री गान्धीमाया तामाङज्यूको अध्यक्षतामा भएको थियो भने प्रमुख प्रशासकीय अधिकृत श्री कोपिला राई, वडा अध्यक्षहरु तथा कार्यपालिकाका अन्य सदस्यहरु, राजस्व शाखा प्रमुख तथा अन्य कर्मचारी गरी कुल १८ जना सहभागीहरु रहेका थिए । कुल सहभागी मध्ये ६ जना महिलाहरुको सहभागिता रहेको थियो । कार्यक्रममा सुशासन तथा विकास अनुसन्धान केन्द्रका तर्फबाट दुईवटा कार्यपत्र प्रस्तुत गरिएको थियो भने प्रस्तुती पछि सहभागीहरुको धारणा सङ्कलन गर्ने कार्य गरिएको थियो ।

(ख) सहभागीहरुबाट व्यक्त धारणा तथा सुझाव

कार्यान्वयनका क्रममा देखापरेका समस्या र सवालहरु

- नदीजन्य पदार्थ (बालुवा) को ठेक्का लाग्न सकेको छैन ।
- खोलालाई निजी जग्गामा फर्काएर व्यक्तिले बालुवा बिक्री गर्ने गरेका छन् । यसलाई नगरपालिकाले नियन्त्रण गर्न सकेको छैन ।
- परम्परागत शैलीको राजस्व सङ्कलन प्रणाली र प्रशासनबाट राजस्व चुहावट हुन सक्ने भएकाले राजस्व प्रशासनलाई सकेसम्म प्रविधिमैत्री बनाउनु पर्ने र यसमा प्रदेश सरकारले स्थानीय सरकारलाई सहयोग गर्नुपर्ने ।
- कर सम्बन्धमा आम नागरिकहरुमा जनचेतना जगाउन नसकिएको ।

राजस्वको दायरा, दर र राजस्व प्रशासन

- करदातामैत्री कर प्रशासन बनाउन सके सहजै कर सङ्कलन गर्न सकिन्छ । यातायात कार्यालय धरानबाट ओखलढुङ्गासम्म आएको छ । यो कार्यालय सल्लेरीमा आउनु पर्छ ।
- निजी जग्गाबाट ढुङ्गा, गिट्टी बिक्री हुँदै आएको छ । यसलाई करको दायरामा ल्याउन सकिएको छैन । यसका लागि कानूनी व्यवस्था हुनु पर्ने ।
- प्रदेश सरकारबाट निश्चित कृषि अनुदान लिएर कृषि व्यवसाय गर्ने कृषकहरुबाट कृषि आयमा कर लिनु पर्दछ ।
- यस नगरपालिकामा किबि प्रशस्त उत्पादन हुन्छ यसले बजार पाउन सकेको छैन । यस्ता उत्पादनलाई पनि करको दायरामा ल्याउन सकिन्छ ।
- शुरुका एक दुई वर्ष थोरै भएपनि विज्ञापन कर लागेको थियो तर पछिल्ला वर्ष ठेक्का लाग्न सकेको छैन ।
- नगरपालिकाले मनोरञ्जन कर सङ्कलन गर्ने गरेको छैन ।
- प्रदेश सरकारले स्थानीय तहको राजस्व क्षमता अभिवृद्धि र जनचेतनामूलक कार्यक्रम सञ्चालन गर्न नियमित रुपमा सहयोग तथा सहजीकरण गर्नु पर्दछ ।
- स्थानीय तहको बजेट तर्जुमा पूर्व प्रदेश सरकारले राजस्व परिचालन सम्बन्धी विषयमा अनुशिक्षण दिनु पर्दछ ।

- नगरपालिकामा राजस्व परिचालनको विषयमा सबै सरोकारवालाहरूसँग छलफल गरी कर राजस्व वृद्धिमा जोड दिनु पर्दछ ।
- जनचेतना वृद्धि गर्न नसक्दा राजस्व असुली गर्न सकिएको छैन ।
- नगरपालिकाले सम्पत्ती कर उठाउने गरेको छैन ।
- फोहरमैला सङ्कलन शुल्क नलिई निःशुल्क नगरपालिकाले सेवा प्रदान गर्दै आएको छ ।
- अटो रिक्सा प्रदेशमा दर्ता हुने गरेको र यसको राजस्व नगरपालिकाले प्राप्त गर्न सकेको छैन ।

अनुगमन तथा मूल्याङ्कन

- राजस्व लक्ष्य र असुलीको आवधिक रुपमा पुनरावलोकन गर्नुपर्ने । यसबाट प्रशासनमा देखा परेका विभिन्न समस्याहरूको समाधानमा सहयोग पुग्ने ।
- राजस्वका दर र राजस्व असुलीको कार्यान्वयन अवस्थाको नियमितरुपमा मूल्याङ्कन गरी प्रतिवेदनको आधारमा राजस्वका दर र प्रशासनको बारेमा आवश्यक परिमार्जन गर्नुपर्ने ।

नयाँ सम्भावनाका क्षेत्रहरू

- सल्लेरीमा बजार बढ्दै गएकोले भविष्यमा विज्ञापन करको सम्भावना रहेको छ ।
- निजी वनलाई व्यवस्थित गरी करको दायरामा ल्याउन सकिने ।
- अनौपचारिक क्षेत्रलाई पनि राजस्वसँग जोड्न सकिने ।
- कवाडी करको सम्भावना रहेको ।
- धार्मिक पर्यटनको विकास गर्न सकिने सम्भावना रहेको ।

५.७ मानेभञ्ज्याङ गाउँपालिका, ओखलढुङ्गा

ओखलढुङ्गा जिल्लामा रहेको १ नगरपालिका र सात गाउँपालिका मध्ये मानेभञ्ज्याङ गाउँपालिका एक हो । यो गाउँपालिका १४६.६१ वर्ग किलोमिटर क्षेत्रफलमा फैलिएको छ । यस गाउँपालिकाको केन्द्र मानेभञ्ज्याङ वडा नं. ५ मा रहेको छ । ४,७९५ घरधुरी रहेको यस गाउँपालिकाको जनसंख्या १९,८८३ रहेको छ जसमध्ये पुरुष ९,६२६ र महिला १०,२५७ रहेका छन् (जनगणना २०७८) । यस गाउँपालिकामा मुख्यतः राई, मगर, तामाङ, क्षेत्री, बाहुन, नेवार, भुजेल, माझी, कामी, दमाई, सार्की आदि जातजाति र भाषाभाषीको बसोबास रहेको छ ।

(क) अन्तरक्रिया कार्यक्रम

प्रदेश नं. १ को आन्तरिक राजस्व सम्भाव्यता अध्ययन सम्बन्धमा मानेभञ्ज्याङ गाउँपालिकामा २०७९ कार्तिक २६ गते स्थानीय तहस्तरीय अन्तरक्रिया कार्यक्रमको आयोजना गरिएको थियो । गाउँपालिकाका अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र रुम्दालीज्यूको अध्यक्षतामा भएको उक्त अन्तरक्रिया कार्यक्रममा गाउँपालिका उपाध्यक्ष श्री आश्रचन राई, प्रमुख प्रशासकीय अधिकृत श्री छविलाल राई, वडा अध्यक्षहरू तथा कार्यपालिकाका अन्य सदस्यहरू, राजस्व शाखा प्रमुख तथा अन्य कर्मचारी गरी कुल २३ जना सहभागीहरू रहेका थिए । कूल सहभागी मध्ये ३ जना



महिलाहरूको सहभागिता रहेको थियो । कार्यक्रममा सुशासन तथा विकास अनुसन्धान केन्द्रका तर्फबाट दुईवटा कार्यपत्र प्रस्तुत गरिएको थियो भने प्रस्तुती पछि सहभागीहरूको धारणा सङ्कलन गर्ने कार्य गरिएको थियो ।

(ख) सहभागीहरूबाट व्यक्त धारणा तथा सुझाव

कार्यान्वयनका क्रममा देखापरेका समस्या र सवालहरू

- सुनकोशी, दुधकोशी, मोलुङ जस्ता नदीबाट उत्खनन गर्न सकिने नदीजन्य पदार्थ (बालुवा) को ठेक्का लगाई राजस्व आम्दानी गर्ने गरेको छ ।
- सम्पत्ति कर लगाउने नीतिगत निर्णय भए तापनि कार्यान्वयनमा आउन सकेको छैन ।
- गाउँपालिकामा करदाता सम्बन्धी डाटावेश नभएका कारण करको अनुमान गर्न सकिएको छैन ।
- व्यवसाय कर र घरजग्गा वहाल कर सङ्कलन गर्न सकिएको छैन ।
- प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण (IEE) का लागि पटक पटक ठेक्का आव्हान गर्दा पनि ठेक्का नलाग्दा प्रक्रियामा मात्रै गाउँपालिकाको खर्च हुने गरेको छ ।

राजस्वको दायरा, दर र राजस्व प्रशासन

- राजस्व सम्भाव्यताको आँकलन हुने गरेको तर यो व्यापक अध्ययन र अनुसन्धान विनै हचुवाको भरमा हुने गरेकाले कुनै वैज्ञानिक आधारमा नभएको र यथार्थपरक हुन नसकेको ।
- व्यापक अध्ययनको आधारमा मात्र राजस्व सम्भाव्यताको आँकलन गरिनुपर्छ ।
- सवारी साधन दर्ता गर्दा सवारी धनीको स्थानीय ठेगानालाई आधार मानिनु पर्दछ ।
- प्रदेश सरकारले उपलब्ध गराउने कृषि अनुदान व्यक्तिलाई नभई संस्थागत रूपमा सहकारी तथा फर्मलाई दिने परिपाटी स्थापित गरी करको दायरामा ल्याउनु पर्ने ।
- गाउँपालिकाले सम्पत्ति कर उठाउने गरेको छैन ।

अनुगमन तथा मूल्याङ्कन

- गाउँपालिकाले मनोरञ्जन कर सङ्कलन गर्ने गरेको छैन र यसबारे थप स्पष्टताको आवश्यकता महशुस गरेको ।
- गाउँपालिकामा राजस्व परिचालनको विषयमा सबै सरोकारवालाहरूसँग छलफल गरी कर राजस्व वृद्धिमा जोड दिनु पर्दछ ।
- आफ्नो गाउँपालिका भित्र कति व्यक्ति तथा व्यवसायहरू भाडामा छन् भन्ने अभिलेख गाउँपालिकामा नभएको र यसको लागि प्रयास पनि नभएको हुँदा राजस्वको दायरामा ल्याउन नसकिएको ।

नयाँ सम्भावनाका क्षेत्रहरू

- यस भेगमा सल्लो जातको काठ पर्याप्त मात्रामा उपलब्ध रहेको तर यसले राजस्वका योगदान गर्न नसकेकोले यसलाई विस्तारित गरी जडिवुटी, फलफूलहरू, ओखर, च्यूरी, अमला, किवी जस्ता खेतीमा जोड दिन सके राजस्व सङ्कलन गर्न सकिने सम्भावना रहेको ।
- हलेसी मन्दिर, सगरमाथा जाने मार्ग तथा अन्य कारणहरूले पर्यटन प्रवर्द्धनको प्रवल सम्भावना रहेको र तीनै तहका सरकारहरूले यसका लागि लगानी बढाउनु पर्ने ।
- अटो-रिक्सा प्रदेशमा दर्ता हुने गरेको र यसको राजस्व गाउँपालिकाले प्राप्त गर्न सकेको छैन ।
- विज्ञापन कर तथा मनोरञ्जन कर व्यवस्थित गरी राजस्वसँग जोड्न सकिने सम्भावना छ ।

५.८ स्थानीय तहहरूबाट प्राप्त सवाल तथा सुझावहरू

स्थलगत अध्ययनका लागि तयार गरिएको प्रश्नावली प्रयोग गरी गणकहरूद्वारा प्रदेश नं. १ अन्तर्गतका सबै १३७ स्थानीय तहहरूबाट सङ्कलन गरिएको सूचनालाई विश्लेषण गरी स्थानीय तह स्तरीय राजस्व परिचालनका सवालहरूलाई संक्षिप्त रूपमा यहाँ प्रस्तुत गरिएको छ ।

१. प्राकृतिक स्रोत परिचालन सम्बन्धमा

- ✓ नदीजन्य पदार्थको उत्खनन् क्षेत्र वरपर व्यक्तिगत स्वामित्वमा रहेका जग्गाहरू भएका कारण उत्खनन्मा समस्या रहेको ।
- ✓ यातायात पूर्वाधारको अवस्था राम्रो नभएकोले उत्खनन्मा समस्या रहेको अथवा सडक सञ्जालको अभाव (स्रोतसम्मको पहुँच) का कारण ठेक्का लगाउन समस्या रहेको ।
- ✓ बाढीपहिरोको जोखिमको कारण नदीजन्य पदार्थ उत्खनन्मा समस्या ।
- ✓ नदीजन्य पदार्थहरू संरक्षण क्षेत्रभित्र पर्ने भएकोले उत्खनन्मा समस्या ।
- ✓ नियमन र अनुगमनको अभावले नदी जन्य पदार्थको अधिक उत्खनन् हुँदा दिगो उपयोगमा चुनौती रहेको ।
- ✓ व्यक्तिगत स्वामित्वको खेतवारीमा खोलालाई मोडेरे बालुवाको उपयोग गर्ने गरेकाले स्थानीय तहले यसबाट राजस्व सङ्कलन गर्न नसकेको (पाथिभर याङ्वरक गापा) ।
- ✓ मिलेमतोमा नदीजन्य पदार्थको ठेक्का लाग्न नदिने अवस्थाको समेत सिर्जना हुने गरेको ।
- ✓ नदीजन्य पदार्थको मागको अभाव/बजार उपलब्ध नहुनु (आठराई त्रिवेणी गापा) ।
- ✓ स्थानीयहरूबाट चोरी हुने (सुन्दरहरैचा) ।
- ✓ स्वीकृत IEE प्रतिवेदन बमोजिम नियमन गर्न चुनौती ।
- ✓ नदीका वरपर रहेका सिँचाई प्रणालीमा समस्या आउने गरेको ।
- ✓ उत्खनन् अनुगमनका लागि आवश्यक विज्ञको कमी ।
- ✓ तोकिएको परिमाण र स्थान बाहेक पनि अनधिकृत रूपमा उत्खनन् हुने गरेको ।
- ✓ नदीजन्य पदार्थको प्रदेश आर्थिक ऐनले तोकेको दर र जिल्ला दररेटका बीचमा ठूलो अन्तर भएकोले यी दुई दरको समायोजन गर्नु पर्ने ।
- ✓ प्रदेशसँग बाँडफाँट हुने राजस्व सङ्कलन हुन नसकेको (फालेलुङ गापा)
- ✓ प्रारम्भिक वातावरणीय मूल्याङ्कन (आईइइ) प्रतिवेदन अनुसारको परिमाणमा ठेक्का नलाम्ने गरेको (माइजोगमाई गापा) ।
- ✓ प्राकृतिक स्रोतको चोरी निकासी हुने गरेको (सागुरीगढी गापा) ।
- ✓ प्रारम्भिक वातावरणीय मूल्याङ्कन (आईइइ) हुन नसकेको (शाहिदभूमी गापा) ।
- ✓ प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण गरी सोही अनुसार स्थानीय तहहरूले नै घाटगद्दी गरेर बालुवाको ठेक्का लगाउन सके चुहावट नियन्त्रण हुन सक्ने ।

२. स्थानीय तह र प्रदेश सरकारबीचको राजस्व बाँडफाँट सम्बन्धमा

- ✓ राजस्व बाँडफाँट सम्बन्धी कार्यविधि निर्माण गरी कार्यान्वयन गर्नु पर्ने ।
- ✓ आर्थिक स्रोत र साधनको न्यायोचित वितरणको आधार तथा ढाँचा तयार गरी कार्यान्वयन गर्नु पर्ने ।
- ✓ राजस्व सङ्कलन सम्बन्धी कार्यविधि निर्माण गरी अनुशिक्षण कार्यक्रम सञ्चालन गर्नु पर्ने ।
- ✓ राजस्व बाँडफाँट सम्बन्धी आवश्यक तालिम तथा गोष्ठीहरू सञ्चालन गर्नु पर्ने ।

- ✓ राजस्व बाँडफाँट सम्बन्धमा प्रदेश र स्थानीय तहका बीचमा आवश्यक सहमति र सहकार्य हुनु पर्ने ।
- ✓ स्थानीय स्रोतलाई स्थानीय तहमै प्रयोग गर्न पाउनु पर्ने ।
- ✓ स्थानीय तहले प्रदेश सरकारलाई नदीजन्य पदार्थको राजस्व बाँडफाँट वापत उपलब्ध गराउने रकमको आधारमा प्रदेश सरकारले पनि थप अनुदान उपलब्ध गराउनु पर्ने (मिक्लाजुड गापा) ।
- ✓ प्रदेश सरकारले स्थानीय तहहरूलाई थप प्रभावकारी रूपमा समन्वय गर्नु पर्ने ।
- ✓ राजस्व सम्बन्धी क्षेत्राधिकारलाई थप स्पष्ट पार्नु पर्ने ।

३. प्रदेश र स्थानीय तह बीचको सहकार्य सम्बन्धमा

- ✓ प्रदेश सरकार र स्थानीय तह बीच राजस्व परिचालनका विषयमा थप सहकार्य आवश्यक रहेको ।
- ✓ राजस्व बाँडफाँट सम्बन्धी समस्याहरूको पहिचान गरी समाधानका उपायहरू अबलम्बन गर्ने ।
- ✓ नीतिगत व्यवस्था र कार्यक्रमहरूलाई कडाईका साथ लागू गर्ने ।
- ✓ स्थानीय तह र संरक्षण क्षेत्रबीचमा आवश्यक समन्वय स्थापित गर्नु पर्ने ।
- ✓ प्रदेश सरकारले जिल्ला समन्वय समिति मार्फत स्थानीय तहहरूमा राजस्व सङ्कलन सम्बन्धी कार्यक्रम सञ्चालन गर्नु पर्ने ।
- ✓ राजस्व सङ्कलनका सम्भावित क्षेत्रहरू पहिचान गरी राजस्व सङ्कलन तथा बाँडफाँट सम्बन्धमा अन्तरक्रिया कार्यक्रम सञ्चालन गर्नु पर्ने ।
- ✓ समय समयमा प्रदेश सरकार मार्फत स्थानीय तहका जनप्रतिनिधि तथा कर्मचारीहरूलाई राजस्व सङ्कलन र बाँडफाँट सम्बन्धी अभिमुखीकरण गर्नु पर्ने ।
- ✓ न्यून आयस्रोत भएका स्थानीय तहहरूको आन्तरिक आय वृद्धिका लागि पूर्वाधार विकासमा प्रदेश सरकारले सहयोग गर्नु पर्ने ।
- ✓ मनोरञ्जन र विज्ञापन करको कार्यान्वयन प्रदेश सरकारले गर्दा उपयुक्त हुने ।
- ✓ स्थानीय तहको करको दायरा बढाउन आवश्यक अध्ययन अनुसन्धानमा प्रदेश सरकारले सहयोग गर्नु पर्ने ।
- ✓ सुकुम्वासी वस्तीबाट अवरोध हुने गरेकोले राजस्व सङ्कलन हुन नसकेको (पथरी शनिश्चरे) ।
- ✓ पर्यटन प्रवर्धनका लागि स्थानीय तहमा प्रदेश सरकारले लगानी बढाउनु पर्ने ।

४. प्रदेश सरकारको थप राजस्व अधिकार सम्बन्धमा

- ✓ स्थानीय तहलाई थप अधिकार दिनु पर्ने ।
- ✓ प्रदेश सरकारले स्थानीय तहको राजस्व सम्बन्धी क्षमता विकासमा सहयोग गर्नु पर्ने ।
- ✓ हाल उपलब्ध अधिकारनै पर्याप्त छ । यसलाई प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयनमा ल्याउन सक्नु पर्छ (लालीगुरास नपा) ।

५. समग्र सवालहरू

- ✓ स्थानीय तहले सङ्कलन गरेको राजस्व प्रदेश सरकारलाई बाँडफाँट नगर्ने कानून हुनु पर्ने (माईजोगमाई गापा)
- ✓ राजस्व बाँडफाँट हुँदा सङ्कलन गर्ने निकायको खर्चलाई समेत ध्यानमा राखी काम गर्नु पर्ने ।
- ✓ आन्तरिक स्रोत न्यून भएको र संघ र प्रदेश सरकारबाट सिलिङ्ग अनुसार राजस्व बाँडफाँटको रकम नआउने हुँदा नदीजन्य पदार्थको बिक्रीबाट प्राप्त रकमको हिस्सा प्रदेश सरकारलाई नपठाउने गरेको (म्याङलुङ नपा) ।
- ✓ विज्ञापन करको सम्भावना भए तापनि ध्यान पुऱ्याउन नसकिएको (म्याङलुङ नपा) ।
- ✓ नदीजन्य पदार्थ बिक्रीबाट प्राप्त राजस्व प्रदेश सरकारसँग बाँडफाँट गरेको छैन (फेदाप गापा) ।

६ खण्ड छः प्राकृतिक स्रोत र राजस्व परिचालन

६.१ पृष्ठभूमि

मानिसको आवश्यकता पूरा गर्ने र मानवीय जीवनका लागि उपयोगी हुने प्राकृतिक रूपमा पृथ्वीमा अस्तित्वमा रहेको स्रोतलाई प्राकृतिक स्रोत भनिन्छ। अर्को अर्थमा प्रकृति प्रदत्त त्यस्ता वस्तु जुन मानिस लगायत प्राणी वनस्पति सबैको लागि आवश्यक छन् र बिना मानवीय प्रयास प्रकृतिमा उपलब्ध हुन्छन्। यस्ता वस्तुमा जग्गा जमीन, जमीनको सतह वा जमीन भित्र रहेको खनिज सम्पदा, वन, वनस्पति, जलस्रोत, इन्धन, कोइला, प्राकृतिक ग्याँस, धातु, ढुङ्गा, बालुवा वायु, सूर्यको प्रकाश आदि पर्दछन्। संयुक्त राष्ट्रसंघ तथा यसका सहकार्य संस्थाहरूको परिभाषा अनुसार प्राकृतिक स्रोत भन्नाले सामान्यतः प्रकृतिमा विद्यमान जीवित तथा निर्जीव स्रोतहरू जसलाई मानिसको न्यूनतम श्रम, समय र सीप वा प्रविधि लगाएपछि वित्तीय पूँजीमा परिणत गराउन सकिने वस्तु तथा पदार्थलाई प्राकृतिक स्रोतका रूपमा मानेको छ।

प्राकृतिक स्रोतको उपलब्धता भौगोलिक विविधता अनुसार रहने हुँदा यसको उपयोग समग्र मानव जातिको हित प्रवर्द्धन गर्न र सम्पूर्ण राष्ट्रको फाइदा हुनेगरी प्रयोग गर्नु पर्दछ। यसैले प्राकृतिक स्रोत माथि राज्यको एकल स्वामित्व रहन्छ र राज्यको स्वीकृति वा कानूनको परिधिमा रही यसको उपयोग गर्नुपर्ने हुन्छ। प्राकृतिक स्रोतसाधन सम्पूर्ण राष्ट्रको फाइदाको लागि हुनुपर्छ भन्ने अवधारणा अनुसार भारत, चीन, दक्षिण अफ्रिका, इन्डोनेसिया, नाइजेरिया, बोलिभिया, पपुवान्युगिनीका संविधानहरू यसै अवधारणा अनुरूप निर्माण गरिएका छन्।

६.२ संवैधानिक तथा कानूनी व्यवस्था

(क) नेपालको संविधान

नेपालको संविधानको धारा ५१ (५) मा देशमा उपलब्ध प्राकृतिक स्रोत साधनको संरक्षण, सम्बर्द्धन र वातावरण अनुकूल दीगो रूपमा उपयोग गर्ने कार्यमा राष्ट्रिय हित तथा अन्तरपुस्ता समन्यायको मान्यतालाई आत्मसात गर्नुपर्ने उल्लेख गरेको छ। यसरी व्यवस्थापन गर्दा वातावरण सन्तुलन, जैविक विविधता संरक्षण गर्न सम्भाव्य उपायहरू अवलम्बन गर्ने र प्राकृतिक स्रोत तथा मानव जीवनबीच अन्योन्याश्रित सम्बन्धमा खलल नपर्ने गरी भावी पुस्ताको अधिकारलाई समेत ध्यान दिई दीगो उपयोगलाई जोड दिएको छ। प्राकृतिक स्रोतको उपयोगका लागि प्राप्त लाभको बाँडफाँट गर्दा दिगो विकासको सिद्धान्त, पूर्व सावधानीको सिद्धान्त, दायित्वको समूचित बाँडफाँटको सिद्धान्त, सार्वजनिक विश्वासको सिद्धान्त, प्रदुषकले दायित्व वहन गर्नुपर्ने सिद्धान्त, प्राकृतिक स्रोतमाथिको सम्प्रभु अधिकारको सिद्धान्त तथा लाभको समन्यायिक वितरणको सिद्धान्तमा आधारित भई कार्य गर्नु पर्दछ।

नेपालको संविधानको धारा २५० अनुसार नेपाल सरकारले राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगको गठन गरेको छ। धारा २५१ बमोजिम आयोगको कार्य जिम्मेवारी अन्तर्गत प्राकृतिक स्रोतको परिचालन गर्दा नेपाल सरकार, प्रदेश सरकार र स्थानीय तहको लगानी तथा प्रतिफलको हिस्सा निर्धारणको आधार तयार गरी सिफारिस गर्ने, प्राकृतिक स्रोतको बाँडफाँट सम्बन्धी विषयमा संघ र प्रदेश, प्रदेश र प्रदेश, प्रदेश र स्थानीय तह तथा स्थानीय तहहरूबीच उठ्न सक्ने सम्भावित विवादको विषयमा अध्ययन अनुसन्धान गरी त्यसको निवारण गर्न सवन्वयात्मक रूपमा काम गर्न सुझाव दिने र प्राकृतिक स्रोतको बाँडफाँट गर्दा सोसँग सम्बन्धित वातावरणीय प्रभाव मूल्याङ्कन सम्बन्धमा आवश्यक अध्ययन र अनुसन्धान गरी नेपाल सरकारलाई सिफारिस गर्ने गर्दछन्।

नेपालको संविधानको धारा ५६ अनुसार तहगत सरकारको अधिकार सूची संविधानको अनुसूची ५, ६, ७, ८ र ९ मा क्रमशः संघको एकल, प्रदेशको एकल, संघ प्रदेशको साझा, स्थानीय तहको एकल र संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको साझा अधिकार सूची उल्लेख छ। प्राकृतिक स्रोतसँग सम्बन्धित तीनै तहको एकल र साझा अधिकारहरू तल तालिका ४१ मा प्रस्तुत गरिएको छ।

तालिका ४१ : प्राकृतिक स्रोतसँग सम्बन्धित अधिकारहरू

| संघको एकल (अनुसूची ५) | प्रदेशको एकल (अनुसूची ६) | संघ र प्रदेशको साझा (अनुसूची ७) | स्थानीय तहको एकल (अनुसूची ८) | तीनै तहको साझा (अनुसूची ९) |
|---|---|---|---|--|
| (११) जलस्रोतको संरक्षण र बहुआयामिक उपयोग सम्बन्धी नीति र मापदण्ड, (२६) खानी उत्खनन, (२७) राष्ट्रिय निकुञ्ज, वन्यजन्तु आरक्ष तथा सिमसार क्षेत्र, राष्ट्रिय वन नीति, कार्बन सेवा, (२९) भू-उपयोग नीति, वातावरण अनुकूलन | (१६) भूमि व्यवस्थापन, जग्गाको अभिलेख, (१७) खानी अन्वेषण र व्यवस्थापन (१९) प्रदेशभित्रको राष्ट्रिय वन, जल उपयोग तथा वातावरण व्यवस्थापन | (१३) प्रदेश सीमा नदी, वातावरण संरक्षण, जैविक विविधता, (१५) उद्योग तथा खनिज र भौतिक पूर्वाधार (२३) अन्तर प्रादेशिक रुपमा फैलिएको जङ्गल, हिमाल, वन संरक्षण क्षेत्र, जल उपयोग (२४) भूमि नीति र सो सम्बन्धी कानून | (१०) वातावरण संरक्षण र जैविक विविधता, वन्यजन्तु (१९) साना जलविद्युत आयोजना, बैकल्पिक उर्जा, खानेपानी (२१) जलाधार, वन्यजन्तु, खानी तथा खनिज पदार्थको संरक्षण | (५) विद्युत, खानेपानी (७) वन, जङ्गल, वन्यजन्तु, चराचुरुङ्गी, जल उपयोग, वातावरण, पर्यावरण तथा जैविक विविधता (८) खानी तथा खनिज (१४) प्राकृतिक स्रोतबाट प्राप्त रोयल्टी |

स्रोत: नेपालको संविधान, २०७२

(ख) कानूनी व्यवस्था

अन्तर सरकारी वित्त वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ ले प्राकृतिक स्रोतहरूलाई पाँच वटा क्षेत्रहरू निर्धारण गरी राजस्व वाँडफाँटको मापदण्ड तयार गरेको छ। यस सम्बन्धी विवरण तल प्रस्तुत गरिएको छ।

(१) पर्वतारोहण

नेपालमा ५ हजार ९ सय मिटरभन्दा अग्ला १९१३ ओटा चुलीमध्ये १३१० चुलीको नामाकरण भएको छ। तीमध्ये ४१४ चुली पर्वतारोहणको लागि नेपाल सरकारले अनुमति खुला गरेको छ। नेपाल सरकारले २७ वटा चुलीको रोयल्टी सङ्कलन गर्न नेपाल पर्वतारोहण संघलाई अनुमति प्रदान गरेको छ र बाँकी चुलीहरूको अनुमति पर्यटन विभागले दिँदै आएको छ। सगरमाथा र यस वरपरको चुलीबाट पर्वतारोहणको रोयल्टी बढी सङ्कलन हुँदै आएको छ भने सुदूरपश्चिम र कर्णाली प्रदेशका हिमालबाट ज्यादै कम रोयल्टी सङ्कलन हुने गरेको छ। राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगको प्रतिवेदन, २०७८ अनुसार प्रदेश नं. १ अन्तर्गत विश्वकै सबैभन्दा अग्लो सगरमाथा (८८४८ मिटर) लगायत ४८ वटा हिमचुलीहरू रहेका छन्।

प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगको सिफारिस अनुसार नेपाल सरकारले प्रदेश नं. १ लाई आ.व. २०७८/७९ मा पर्वतारोहण रोयल्टी वापत रु. ११ करोड ९५ लाख १८ हजार ६ सय १९ प्राप्त हुने अनुमान गरेकोमा (अनुसूची ११) प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालय, विराटनगर, २०७९ को वित्तीय विवरण (अनुसूची १०) अनुसार रु. १२ करोड ११ लाख ४४ हजार २ सय २१ प्राप्त गरेको छ। हिमचुलीमा आरोहण गर्ने पर्वतारोहीहरूबाट पर्वतारोहण गरे वापत नेपाल सरकारले पर्वतारोहण रोयल्टी सङ्कलन गरी तोकिएको मापदण्ड अनुसार विभिन्न तहका सरकारहरूबीच बाँडफाँट गर्दै आएको छ।

(२) विद्युत

नेपालमा प्राकृतिक स्रोतको रोयल्टी बाँडफाँटको महत्वपूर्ण स्रोत भनेको जल विद्युत हो। विद्युतबाट प्राप्त रोयल्टीलाई राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगले जलाधार क्षेत्रको संरक्षणमा लक्षित गरी लगानी गर्न सिफारिस गरेको छ। नेपाल सरकार विद्युत विकास विभागका अनुसार यस प्रदेशमा ४५ वटा जलविद्युत परियोजनाले ३,६५६.९८९ मेघावाट बराबरको सर्भे गर्ने अनुमति प्राप्त गरेका छन्। ६७ वटा जलविद्युत परियोजनाले २,६०५.४३४ मेघावाट विद्युत उत्पादन गर्ने गरी अनुमति प्राप्त गरेका छन्। ३ वटा जलविद्युत परियोजनाले ३२.८०० मेघावाट जलविद्युत उत्पादनका लागि सर्भे अनुमतिका लागि निवेदन गरेका छन् भने २८ वटा जलविद्युत परियोजनाले १,५३८.१६० मेघावाट बराबरको विद्युत उत्पादनका लागि निवेदन गरेका छन्। यसैगरी झापा, मोरङ्ग, उदयपुर र सोलुखुम्बुमा ६ वटा सोलार परियोजनाले ३४५ मेघावाट बराबरको सोलार (सौर्य) उर्जा सर्भेका लागि अनुमति माग गरेका छन् भने ४ वटा सोलार परियोजनाले २९.८०० मेघावाट सौर्य उर्जा उत्पादनका लागि अनुमति प्राप्त गरेका छन्। यस सम्बन्धी विस्तृत विवरण **अनुसूची १४** मा उल्लेख गरिएको छ।

नेपाल सरकारबाट सङ्कलन हुँदै आएको जलविद्युत रोयल्टी तोकिएको मापदण्ड अनुसार विभिन्न तहका सरकारहरू बीच बाँडफाँट हुँदै आएको छ। प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगको सिफारिस अनुसार नेपाल सरकारले प्रदेश नं. १ लाई आ.व. २०७८/७९ मा जलविद्युत रोयल्टी वापत रु. ५ करोड ४५ लाख ५२ हजार १९ प्राप्त हुने अनुमान गरेकोमा (**अनुसूची ११**) प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालय, विराटनगर, २०७९ को वित्तीय विवरण (**अनुसूची १०**) अनुसार रु. ३ करोड ७४ लाख ८४ हजार २१ प्राप्त गरेको छ।

(३) वन

सामान्यतः वनलाई प्राकृतिक स्रोतको मुख्य स्रोतका रूपमा बुझ्ने गरिन्छ। नेपालको कुल क्षेत्रफलको ४५ प्रतिशतभन्दा बढी क्षेत्रफल वनले ओगटेको छ। वन क्षेत्रलाई राष्ट्रिय वन, सामुदायिक वन, साझेदारी वन, संरक्षित वन, धार्मिक वन र कवुलियत वनका रूपमा विभाजन गरिएको छ। तराई, मध्य तथा उच्च पहाडी क्षेत्रमा पनि वन क्षेत्र उल्लेखनीय मात्रामा रहेको छ। यस प्रदेश अन्तर्गत कञ्चनजङ्घा, कोशी टम्पु, मकालु बरुण र सगरमाथा गरी ४ वटा संरक्षित वन सहित राष्ट्रिय वन रहेका छन्। यस प्रदेशको ४३.३ प्रतिशत क्षेत्रफल वनले ढाकेको छ। राष्ट्रिय वन र संरक्षित क्षेत्रहरूबाट प्राप्त हुने रोयल्टीको लागि प्रकृति अनुसार छुट्टा छुट्टै सूचकहरू र सो बमोजिमको रोयल्टीको हिस्सा बाँडफाँट विभिन्न तहका सरकारहरूबीच हुँदै आएको छ।

प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगको सिफारिस अनुसार नेपाल सरकारले प्रदेश नं. १ लाई आ.व. २०७८/७९ मा राष्ट्रिय वन रोयल्टी वापत रु. २ करोड ६० लाख ५८ हजार ४ सय ५४ र संरक्षित वन रोयल्टी वापत रु. २४ लाख ३५ हजार ५ सय २५ प्राप्त हुने अनुमान गरेकोमा (**अनुसूची ११**) प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालय, विराटनगर, २०७९ को वित्तीय विवरण (**अनुसूची १०**) अनुसार रु. १९ करोड १८ लाख ३० हजार ६ सय ९० प्राप्त गरेको छ।

(४) खानी तथा खनिज

नेपालमा प्राकृतिक स्रोत अन्तर्गत खानी तथा खनिज पदार्थ पनि पर्दछ। खानी तथा खनिज पदार्थलाई मुख्यतः धातु, गैरधातु, बहुमूल्य खनिज, श्रङ्गारिक वा सजावट, निर्माणजन्य र इन्धनजन्य वर्गमा वर्गीकरण गरिन्छ। सुन, चाँदी, फलाम, तामा, कोवाल्ट, निकेल, टिन, यूरेनियम लगायत धातुहरू नेपालमा पाईने अभिलेख रहेकोछ। गैरधातुमा चुनढुङ्गा, डोलामाईट, क्वार्जइट, फोस्फोरस, म्याग्नेसाइट, टाल्क, माइक, सेरामिक, वाक्साइट, रातोमाटो, सिलिकन लगायतका खनिजहरू नेपालमा पाइन्छन्। तर, सीमित मानवीय स्रोत तथा साधनका कारण खानी तथा खनिज सम्बन्धमा उल्लेख्य अध्ययन हुन सकेको छैन। ताप्लेजुङ्गमा आर्सेनिक, तामा, फलाम, सिसा, ग्रेनाईट; मार्बल, पाँचथरमा टर्मालिन र गार्नेट; इलाममा आर्सेनिक, विस्मथ, तामा, निकेल, चाँदी, जिङ्ग; झापामा कोइला; सुनसरीमा तामा; धनकुटामा तामा, क्ले, चुनढुङ्गा; भोजपुरमा तामा; सोलुखुम्बुमा विस्मथ, तामा, सिसा, जिंक र ग्रेनाईट; ओखलढुङ्गामा तामा; खोटाङमा चुनढुङ्गा र उदयपुरमा आर्सेनिक,

बिस्मथ, तामा, ग्रेनाइट, क्ले, चुनढुङ्गा र डोलोमाइट जस्ता खनिज तत्वहरू उपलब्ध रहेको अनुमान गरिएको भए तापनि खानी तथा उत्खनन् सम्बन्धी कार्यको अनुसन्धान हुन सकेको छैन (प्रदेश नं. १ को प्रदेश पाश्र्वचित्र, २०७६/७७, तालिका ४.५४)।

राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगको प्रतिवेदन, २०७८ अनुसार यस प्रदेश अन्तर्गत उदयपुरमा रातोमाटो, चुनढुङ्गा, संखुवासभामा क्वार्ज र धनकुटामा चुनढुङ्गा उपलब्ध रहेको छ। ओखलढुङ्गा र ताप्लेजुङ्गमा फलाम खानीको सम्भावना रहेको छ भने सोलुखुम्बुमा सानो मात्रामा वाप्सा कपर सञ्चालनमा रहेको छ। कुरुले (उदयपुर), छिल्दिङ्ग खोला (भोजपुर), जन्तर खानी (ओखलढुङ्गा) र सिद्धिखानी (इलाम) मा कपर खानीको सम्भावना रहेको छ। साथै, धनकुटामा पनि कपरको सम्भावना रहेको छ। फकुवा (संखुवासभा), पन्जुङ्ग (सोलुखुम्बु), खोलाखानी (ताप्लेजुङ्ग) मा जिङ्कको सम्भावना रहेको छ। इलामको सुनमाई क्षेत्रमा सुन र चाँदी खानीको सम्भावना देखिन्छ। संखुवासभाको ह्याकुले र फकुवामा लिथियम र बेरिलियम खानीको सम्भावना देखिन्छ। इलाम र ताप्लेजुङ्ग जिल्लामा पनि बेरिलियम खानीको सम्भावना देखिन्छ। उदयपुरको काम्पुघाटमा मैग्नेसाईटको सम्भावना देखिन्छ (काफ्ले, कृष्णप्रसाद, २०२०)। नेपालको सन्दर्भमा खनिज सम्बन्धी सम्पूर्ण कार्यहरू गर्ने सरकारी निकाय भनेको खानी तथा भूगर्भ विभाग हो।

प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगको सिफारिस अनुसार नेपाल सरकारले प्रदेश नं. १ लाई आ.व. २०७८/७९ मा खानी तथा खनिज रोयल्टी वापत रु. १ करोड २२ लाख ७२ हजार ७ सय १२ प्राप्त हुने अनुमान गरेकोमा (अनुसूची ११) प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालय, विराटनगर, २०७९ को वित्तीय विवरण (अनुसूची १०) अनुसार रु. १ करोड २४ लाख ८ हजार ७ सय ३६ प्राप्त गरेको छ। नेपाल सरकारबाट प्रदेश नं. १ सरकारलाई विभिन्न रोयल्टी वापत प्राप्त हुने अनुमान गरिएको र यथार्थ प्राप्त भएको रकमको विवरण तालिका ४२ मा प्रस्तुत गरिएको छ।

तालिका ४२ : आ.व. २०७८/७९ को रोयल्टी सम्बन्धी रकम

| क्र. सं. | रोयल्टीको किसिम | आयोगले सिफारिस गरेको रोयल्टी रकम रु. | प्रदेशले प्राप्त गरेको यथार्थ रकम रु. | फरक रु. |
|----------|-----------------|--------------------------------------|---------------------------------------|----------------|
| १ | पर्वतारोहण | ११९५१६६९९ | १२११४४२२९ | (१,६२५,६०२.००) |
| २ | वन | २६४९३९७९ | ३४५०७६९९ | (६,०१३,६४०.००) |
| ३ | विद्युत | ५४५५२०९९ | ३७४६४०२० | १७,०६७,९९९.०० |
| ४ | खानी तथा खनिज | १२२७२७९२ | १२४०६७३५ | (१३६,०२३.००) |
| | जम्मा | २१४६३७३२९ | २०५५४४५९५ | ९,२९२,७३४.०० |

स्रोत: राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगको प्रतिवेदन, २०७८ र आ.व. २०७८/७९ को प्रदेश नं. १ को आय व्यय तथा संचित कोषको वार्षिक आर्थिक विवरण।

(५) पानी तथा अन्य प्राकृतिक स्रोत

नेपालमा हालसम्म पानी तथा अन्य प्राकृतिक स्रोतहरूको पहिचान हुन सकेको छैन। यी प्राकृतिक स्रोतहरूको पहिचान हुन नसक्दा ती स्रोतबाट रोयल्टी सङ्कलन हुन पनि सकेको छैन।

(६) रेडियो फ्रिक्वेन्सी

दुर सञ्चार ऐन, २०५३ (नेपालको संविधान अनुकूल बनाउने केही नेपाल ऐनलाई संशोधन गर्ने ऐन, २०७५) ले सञ्चार तथा सूचना प्रविधि मन्त्री वा राज्य मन्त्रीको अध्यक्षतामा रेडियो फ्रिक्वेन्स सम्बन्धी नीति निर्धारण तथा बाँडफाँट गर्नका लागि एक रेडियो फ्रिक्वेन्सी नीति निर्धारण समिति रहने व्यवस्था गरेको छ। उक्त ऐनको दफा ४९ ले दिएको अधिकार प्रयोग गरी उक्त समितिले दुरसञ्चार सेवाको रेडियो फ्रिक्वेन्सी (बाँडफाँट तथा मूल्य) सम्बन्धी नीति, २०६९ तर्जुमा गरेको छ।

रेडियो फ्रिक्वेन्सीको प्रयोग, ट्रान्समिटर, रिसिभर, कम्प्युटर, टेलिभिजन र मोबाइल फोनहरुमा प्रयोग हुन्छ । यो नेपालको सन्दर्भमा दुर्लभ राष्ट्रिय स्रोतका रूपमा लिइन्छ । तसर्थ प्रभावकारी र कार्यकुशलतापूर्वक यसको उपयोग गर्ने कुरामा राज्यको नीतिले जोड दिएको छ । राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगले यसको उपयोगबाट प्राप्त रोयल्टी मापदण्ड/सुत्रको आधारमा तीनै तहको सरकार (संघ, प्रदेश र स्थानीय तह) लाई बाँडफाँट गर्ने गरी नीतिगत व्यवस्था गरेकोले आगामी आर्थिक वर्षदेखि प्रदेश सरकारले यसबाट थप राजस्व प्राप्त गर्न सक्नेछ ।

(७) तालतलैया

तालतलैयाहरु प्राकृतिक स्रोतमध्येको एक स्रोत हो । प्रदेश अन्तर्गत उपलब्ध रहेका ताल तलैयाहरुले एकातिर प्राकृतिक सौन्दर्यता दिन्छन भने अर्कातिर यसको विकास गरी पर्यटकहरु आकर्षण गर्न सकिन्छ । प्रदेश नं. १ अन्तर्गत रहेका ३,००० masl भित्र ८० वटा तालहरु रहेका छन् । ती तालहरु तराई, पहाड र हिमालमा क्रमशः ४३ प्रतिशत, ४४ प्रतिशत र १३ प्रतिशत रहेका छन् । प्रदेश नं. १ का १३७ स्थानीय तहमध्ये झापा जिल्लाको शिवसताक्षी नगरपालिकामा अन्य स्थानीय तहहरुको तुलनामा सबैभन्दा बढी (८) ताल छन् । प्रदेश नं. १ अन्तर्गत रहेका ताल तलैयाहरुको संरक्षण, प्रवर्धन र प्रचारप्रसार गरी पर्यटन व्यवसायको विकास गर्न सकिने र यसबाट राजस्वको सम्भावित स्रोत हुन सक्ने देखिन्छ । तालतलैयाहरु सम्बन्धी विस्तृत विवरण **अनुसूची १२** मा प्रस्तुत गरिएको छ । यस प्रदेश अन्तर्गत रहेका तालतलैया सम्बन्धी संक्षिप्त विवरण तल **तालिका ४३** मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

तालिका ४३ : तालतलैया सम्बन्धी संक्षिप्त विवरण

| क्र.सं. | जिल्ला | संख्या | क्षेत्रफल (हे.) | | हालको अवस्था | | |
|---------|--------------|-----------|---------------------|---------------|--------------|-----------|-------------|
| | | | कोर (पानीको भाग) | बेसिन | राम्रो | बिग्रंदो | बिग्रिसकेको |
| १ | झापा | २० | २७.९ | १९९६.२ | ६ | १३ | १ |
| २ | मोरङ | ११ | २६.४ | ९६३.४ | ५ | ४ | २ |
| ३ | पाँचथर | ९ | १.७५ | ४८.१ | २ | ७ | ० |
| ४ | इलाम | ७ | ४.६४ | ५५.५ | १ | ५ | १ |
| ५ | खोटाङ | ७ | ४.४ | १४६.८ | १ | ६ | ० |
| ६ | सुनसरी | ५ | ४९.४ | ९२२.८ | १ | ३ | १ |
| ७ | भोजपुर | ४ | २.३ | ३१.६ | ० | ४ | ० |
| ८ | तेह्रथुम | ४ | ०.७ | २४.४ | १ | ३ | ० |
| ९ | उदयपुर | ४ | २.८ | ५५.५ | १ | ३ | ० |
| १० | ताप्लेजुङ | ३ | ०.४५ | १४.६ | ० | ३ | ० |
| ११ | धनकुटा | २ | ६.४ | २७८.६ | ० | २ | ० |
| १२ | संखुवासभा | २ | ०.५ | ५०.९ | १ | ० | १ |
| १३ | सोलुखुम्बु | २ | ०.४ | ३०.७ | ० | २ | ० |
| १४ | ओखलढुङ्गा | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| | जम्मा | ८० | १२८.०४ | ४६१९.१ | १९ | ५५ | ६ |

नोट: कोष्ठ भित्रको अंकले जिल्लामा तालहरुको सङ्ख्या जनाउँछ ।

स्रोत: *Inventory of Lakes in Nepal, Main Report, 2021*, retrieved from <https://nepallake.gov.np/map-based-2/province-1/>, January 20, 2023

६.३ नदीजन्य पदार्थको भौगोलिक सूचना नक्सा

प्रदेश नं. १ अन्तर्गतका स्थानीय तहहरुबाट प्राप्त नदीजन्य पदार्थको अवस्थिति सम्बन्धी विवरण तल भौगोलिक सूचना नक्सामा देखाइएको छ ।

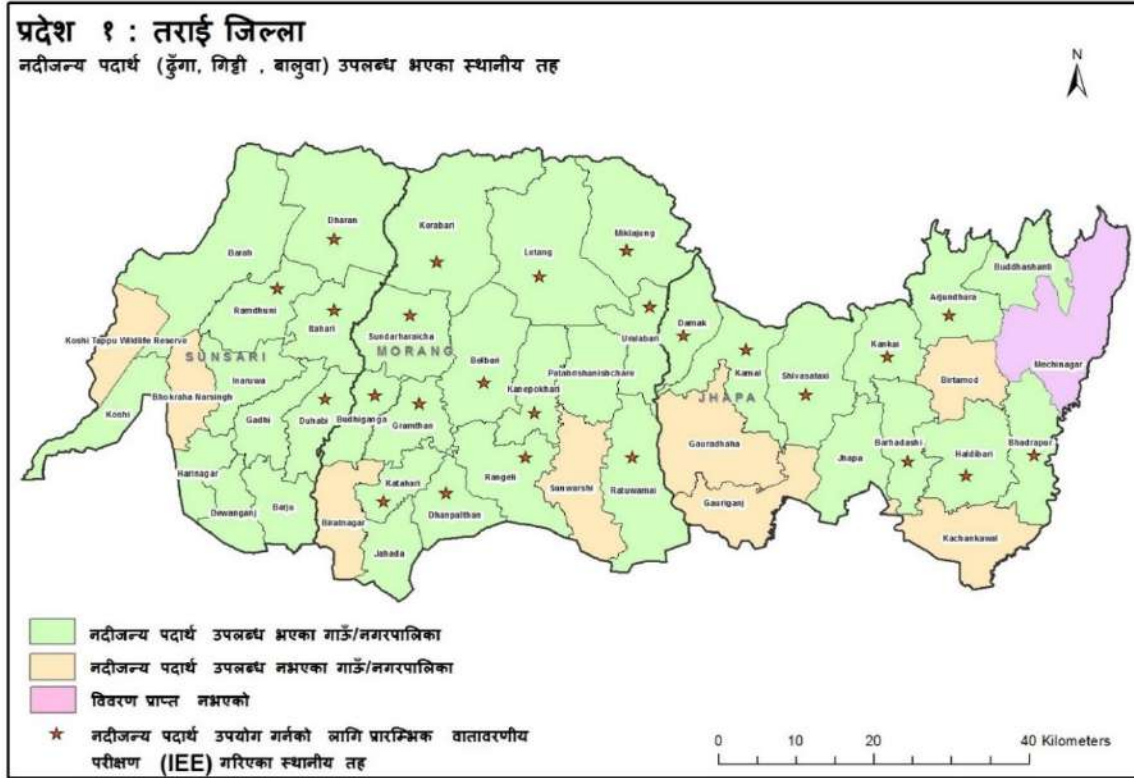
(क) हिमाली जिल्ला अन्तर्गतका स्थानीय तहहरूको नदीजन्य पदार्थ सम्बन्धी नक्साङ्कन



(ख) पहाडी जिल्ला अन्तर्गतका स्थानीय तहहरूको नदीजन्य पदार्थ सम्बन्धी नक्साङ्कन



(ग) तराईका जिल्ला अन्तर्गतका स्थानीय तहहरूको नदीजन्य पदार्थ सम्बन्धी नक्साङ्कन



७ खण्ड सात: राजस्व अधिकार सम्बन्धी कानूनी ढाँचा

७.१ वर्तमान कानूनी व्यवस्था

प्रदेश सरकारको कर र गैर कर सम्बन्धमा विद्यमान कानूनी संरचना हेर्ने हो भने नेपालको संविधानको धारा ५६ देखि ६० मध्ये धारा ५७ बढी महत्वपूर्ण देखिन्छ। अनुसूची ६ यसको आधार विन्दु नै हो। अर्थात् कर र गैरकरको कानूनी संरचना भन्नाले संवैधानिक तथा कानूनी व्यवस्था नै हो। कर र गैरकर सम्बन्धी कानूनी संरचना अन्तर्गत मूलतः निम्न कुराहरू पर्दछन्।

क) कर र गैर कर सम्बन्धी संवैधानिक प्रावधानहरू,

ख) संघीय वा प्रादेशिक संसदले पारित गरेका कर र गैरकर सम्बन्धी ऐन तथा कर प्रशासनलाई प्रभावित पार्ने अन्य सबै ऐनहरू,

ग) कर र गैरकर सम्बन्धी अध्यादेशहरू,

घ) प्रादेशिक सरकारले बनाएका नियमावलीहरू,

ङ) कर र गैर कर सम्बन्धी महत्वपूर्ण निर्देशिका, कार्यविधि, आदेश तथा आचारसंहिताहरू आदि पर्दछन्।

त्यसैले विद्यमान कानूनमा के के संशोधन गर्नु पर्ने हो र कुन कुन नयाँ कानून बनाउनु पर्ने हो भन्ने विषयहरू मात्र यस अध्ययनको कार्यक्षेत्र रहेको छ। यस सम्बन्धमा निम्नानुसार पुनरावलोकन तथा सुझाव तयार गरिएको छ।

(१) नेपालको संविधान

संघ, प्रदेश र स्थानीय तहले आफ्नो अधिकारभित्रको आर्थिक अधिकार सम्बन्धी विषयमा (क) कानून बनाउने, (ख) वार्षिक बजेट बनाउने, (ग) निर्णय गर्ने, (घ) नीति तथा योजना तयार गर्ने र त्यसको कार्यान्वयन गर्न सक्नेछन्। यी अधिकारहरू तिनै तहका सरकारका आ-आफ्ना एकल अधिकार (Exclusive Power) भित्र पर्दछन्। यसलाई सबै सरकारका आत्मनिर्णयको अधिकार (Right to Self-Determination) पनि भन्ने गरिन्छ। यी अधिकारहरू सबै सरकारका कार्यकारी अधिकार पनि हुन्। यिनै कार्यकारी अधिकार अन्तर्गत सबै तहका संसद र सभाले आ-आफ्ना कानून निर्माण गरी कार्यान्वयन गर्न सक्दछन्। एकात्मक शासन व्यवस्था एउटा मात्र सरकारले कानून बनाउने, वार्षिक बजेट बनाउने, निर्णय गर्ने, नीति तथा योजना तयार गर्ने र त्यसको कार्यान्वयन गर्ने अधिकार एकलौटी रहेको हुन्थ्यो। संघीयतामा गएपछि सबै तहका सरकारले उल्लेखित कार्य गर्न आफैँ सक्षम रहन्छन्। नेपालको संविधानको प्रावधान अनुसार ७६१ वटै सरकार तथा संसद एवम् सभाले उल्लेखित कार्य गर्न आफैँ स्वतन्त्र छन्। कसैको अधिनस्थ पनि रहनु पर्दैन।

नेपालको संविधानमा तीन तहका सरकारको एकल आर्थिक अधिकार

संघ, प्रदेश र स्थानीय तहले क्रमशः संघीय, प्रादेशिक र स्थानीयतहका एकल अधिकार अन्तर्गत आफ्नो आर्थिक अधिकारक्षेत्र भित्रको विषयमा कर लगाउन र ती स्रोतहरूबाट राजस्व उठाउन सक्ने तिनै तहका सरकारहरूलाई संवैधानिक प्रत्याभूति देखिन्छ।

(क) संघीय एकल आर्थिक अधिकार:

अनुसूची ५ मा भन्सार, अन्तःशुल्क, मूल्य अभिवृद्धि कर, संस्थागत आयकर, व्यक्तिगत आयकर, पारिश्रमिक कर, राहदानी शुल्क, भिसा शुल्क, पर्यटन दस्तुर, सेवा शुल्क दस्तुर, दण्ड जरिवाना संघीय सरकारको आर्थिक अधिकार रहेको छ।

(ख) प्रादेशिक एकल आर्थिक अधिकार

अनुसूची ६ मा घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, मनोरञ्जन कर, विज्ञापन कर, पर्यटन, कृषि आयमा कर, सेवा शुल्क दस्तुर, दण्ड जरिवाना प्रादेशिक सरकारको आर्थिक अधिकार रहेको छ ।

(ग) स्थानीय एकल आर्थिक अधिकार

स्थानीय तहका सरकारहरूको एकल आर्थिक अधिकार अनुसूची ८ मा उल्लेख छन् । जसमा स्थानीय कर (सम्पत्ति कर, घरजग्गा बहाल कर, घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर), सेवा शुल्क दस्तुर, पर्यटन शुल्क, विज्ञापन कर, व्यवसाय कर, भूमिकर (मालपोत), दण्ड जरिवाना, मनोरञ्जन कर, मालपोत सङ्कलन आदि स्थानीय तहका सरकारहरूलाई एकल आर्थिक स्रोतको बाँडफाँट गरिएको छ । यी अधिकार अन्तर्गत स्थानीयसभा, प्रादेशिक र संघीय संसदले सोही अधिकार अन्तर्गत एकल कानून बनाउन सक्दछन् ।

(घ) साझा सूची (Concurrent Power) को तीन तहको सरकारको आर्थिक अधिकार

अनुसूची ९ मा सेवा शुल्क, दस्तुर, दण्ड जरिवाना तथा प्राकृतिक स्रोतवाट प्राप्त रोयल्टी, पर्यटन शुल्क स्थानीय, प्रादेशिक र संघीय सरकारको साझा आर्थिक अधिकार अन्तर्गत संवैधानिक प्रत्याभूति रहेको छ । कुनै पनि तहको सूचीमा नपरेका विषयमा कर लगाउने र राजस्व उठाउने व्यवस्था नेपाल सरकारले निर्धारण गरेको कानून बमोजिम उठाउन सक्दछ । यसरी नेपाल सरकारले सङ्कलन गरेको राजस्व संघ, प्रदेश र स्थानीय तहलाई न्यायोचित वितरण गर्ने व्यवस्था संघले मिलाउनै पर्ने हुन्छ ।

७.२ संशोधन प्रस्तावहरू

नेपालको संविधानमा संशोधन प्रस्ताव

(क) भाग ५

राजस्व स्रोतको बाँडफाँट

धारा ६० (६) नेपाल सरकारले संघीय संचित कोषबाट प्रदान गर्ने सशर्त अनुदान, समपूरक अनुदान वा अन्य प्रयोजनका लागि दिने विशेष अनुदान वितरण सम्बन्धी व्यवस्था संघीय कानून बमोजिम हुनेछ ।

प्रस्तावित संशोधन गर्नुपर्ने बुँदा

- नेपाल सरकारले संघीय संचित कोषबाट प्रदान गर्ने सशर्त अनुदान, समपूरक अनुदान वा अन्य प्रयोजनका लागि दिने विशेष अनुदान वितरण सम्बन्धी व्यवस्था संघीय कानून बमोजिम सन्तुलित र न्यायोचित रुपमा गर्नु पर्ने छ” भन्ने शब्द थप गर्नुपर्ने ।

फाईदा

- संघीय संचित कोषबाट प्रदान गर्ने सशर्त अनुदान, समपूरक अनुदान वा अन्य प्रयोजनका लागि दिने विशेष अनुदान वितरण न्यून भई नाम मात्रको भएकोमा संशोधन भएको खण्डमा सन्तुलित भई अनुदानमा वृद्धि हुन जान्छ ।

(१) समानीकरण अनुदान

प्रदेश र स्थानीय तहले प्राप्त गर्ने वित्तीय हस्तान्तरणको परिमाण राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगको सिफारिस बमोजिम हुने संवैधानिक प्रत्याभूति रहेको छ । नेपाल सरकारले प्रदेश र स्थानीय तहलाई खर्चको आवश्यकता र राजस्वको क्षमताको आधारमा वित्तीय समानीकरण अनुदान वितरण गर्नु पर्ने हुन्छ ।

(२) सशर्त अनुदान, समपूरक अनुदान र विशेष अनुदान

प्रदेशले नेपाल सरकारबाट प्राप्त अनुदान र आफ्नो स्रोतबाट उठ्ने राजस्वलाई मातहतको स्थानीय तहको खर्चको आवश्यकता र राजस्व क्षमताको आधारमा प्रदेश कानून बमोजिम वित्तीय समानीकरण अनुदान वितरण सबै प्रादेशिक सरकारहरूको हुन्छ। नेपाल सरकारले संघीय सञ्चित कोषबाट प्रदान गर्ने सशर्त अनुदान, समपूरक अनुदान वा अन्य प्रयोजनका लागि दिने विशेष अनुदान वितरण सम्बन्धी व्यवस्था संघीय कानून बमोजिम हुने हुँदा यस्ता कानून संघीय सरकारले अनिवार्य बनाउनु पर्दछ।

संघ, प्रदेश र स्थानीय तह बीच राजस्वको बाँडफाँट गर्दा सन्तुलित र पारदर्शी रूपमा गर्नु पर्ने, राजस्व बाँडफाँट सम्बन्धी संघीय ऐन बनाउँदा राष्ट्रिय नीति, राष्ट्रिय आवश्यकता, प्रदेश र स्थानीय तहको स्वायत्तता, प्रदेश र स्थानीय तहले जनतालाई पुऱ्याउनु पर्ने सेवा र उनीहरूलाई प्रदान गरिएको आर्थिक अधिकार, राजस्व उठाउन सक्ने क्षमता, राजस्वको सम्भाव्यता र उपयोग, विकास निर्माणमा गर्नुपर्ने सहयोग, क्षेत्रीय असन्तुलन, गरीबी र असमानताको न्यूनीकरण, वञ्चितीकरणको अन्त्य, आकस्मिक कार्य र अस्थायी आवश्यकता पूरा गर्न सहयोग गर्नु पर्ने विषयहरूमा ध्यान दिई राजस्व बाँडफाँट गर्नु पर्ने हुन्छ। यदि यसो भएन भने वित्तीय संघीयता मजबूत हुन सक्दैन।

अतः राजस्व स्रोतको बाँडफाँट आर्थिक विकासमा कुन तहका सरकारको के कस्तो भूमिका रहन्छ, राजस्व सङ्कलन के कति मात्रामा गरिरहेका छन्, जनतालाई कति सम्म कुन चाहिँ सरकारले प्रभाव पार्न सक्दछ, कुन कुन सरकारको राजस्व सङ्कलन र परिचालनमा के कस्तो भूमिका खेल्न सक्दछन सोही आधारमा राजस्व स्रोतका बाँडफाँट गर्नुपर्ने हुन्छ। कुनै पनि भूमिका वा योगदान वेगै जथाभावि आर्थिक अधिकार बाँडफाँट गर्नु हुँदैन।

माथिल्ला तहका सरकारहरूबाट तल आर्थिक अधिकार प्रत्याभूत गर्ने र तल्ला तहका सरकारहरूसँग अर्थ सम्बन्ध राख्ने प्रक्रिया निरन्तर रूपमा रहनु पर्ने हुन्छ। स्थानीय तहका सरकारहरूले तलवाट माथि सम्मका सरकारहरूलाई राजस्व उठाउने र माथिका सरकारहरूसँग अर्थ सम्बन्ध राख्दै स्थानीयतहका सरकारहरूसँग प्रतिस्पर्धाको सम्बन्ध बढाउँदा नै आर्थिक स्रोतको बाँडफाँटको औचित्य रहन्छ।

(ख) अनुसूची (५) धारा ५७ को उपधारा (१) र धारा १०९ सँग सम्बन्धित संघको अधिकारको सूचीको खण्ड ९ मा अन्तःशुल्क

प्रस्तावित संशोधन प्रस्ताव

क) अनुसूची (५) धारा ५७ को उपधारा (१) र धारा १०९ सँग सम्बन्धी संघको अधिकारको सूचीको खण्ड ९ मा रहेको “अन्तःशुल्क” शब्द सो ठाउँमा खारेज गरी अनुसूची ६ प्रदेशको अधिकारको सूची अन्तर्गत खण्ड ४ मा” थप गर्नुपर्ने।

फाईदा

अन्तःशुल्क प्रदेश सरकारको अधिकार अन्तर्गत आउँदा प्रदेशहरू आत्मनिर्भर हुन जान्छन्।

ग) अनुसूची – ६ को प्रदेशको अधिकार सूची अन्तर्गत खण्ड ४ मा घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, मनोरञ्जन कर, विज्ञापन कर उल्लेख र अनुसूची ८ स्थानीयतहको अधिकार सूची अन्तर्गत पनि घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, मनोरञ्जन कर, विज्ञापन कर उल्लेख भएको।

घ) अनुसूची – ६ को प्रदेशको अधिकार सूची अन्तर्गत खण्ड ४ मा घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, मनोरञ्जन कर, विज्ञापन कर उल्लेख भएकोमा अनुसूची ८ स्थानीय तहको अधिकार सूची अन्तर्गत पनि घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, मनोरञ्जन कर, विज्ञापन कर उल्लेख भई दोहोरिन पुगेकोले उक्त दोहोरिन पुगेको बाक्यांश खारेज गर्नुपर्ने।

फाईदा

घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, मनोरञ्जन कर, विज्ञापन कर उल्लेख भएकोमा अनुसूची ८ स्थानीयतहको अधिकार सूची अन्तर्गत पनि घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, मनोरञ्जन कर, विज्ञापन कर उल्लेख भई दोहोरिन पुगेकोले कर तथा गैरकर लगाउन र उठाउन दुई सरकार बीच द्वन्द्व सिर्जना हुने गएकोले एकरूपता प्रदान गर्न आवश्यक भएको र यसले आर्थिक मामिलामा प्रदेशहरु आत्मनिर्भर हुन जान्छन ।

अतः उल्लेखित प्रदेशको संवैधानिक अधिकार अन्तर्गत अनुसूची ६ (४) बमोजिमका कर सम्बन्धी प्रदेश सरकारका एकल अधिकारहरुको प्रयोग निम्न बमोजिम गर्नुपर्ने हुन्छः-

नेपालको संविधानको धारा ५७ (२) बमोजिम अनुसूची ६ मा उल्लेखित विषयमा निहित रहेको छ । यस किसिमका अधिकारको प्रयोग संविधान र कानूनमा उल्लेख भए बमोजिम हुने संवैधानिक व्यवस्था रहेको छ । धारा १६२ ले संविधानकै अधिनमा रही प्रदेशले आफ्नो कार्यकारिणी अधिकार प्रयोग गर्न सक्नेछ । यस कार्यकारिणी अधिकारभित्र एकल अधिकार, साझा अधिकार समेत प्रयोग गर्न पाउने छन् । एकल अधिकार अनुसूची ६, साझा अधिकार अनुसूची ७ र अनुसूची ९ बमोजिमका विषयमा हुनेछन् ।

एकल अधिकार संविधानसँग नबाझिने गरी प्रदेश सभाले धारा १९७ बमोजिम प्रदेश सभाको संसदले आफ्नो कानून आफैं बनाउन सक्नेछ तर साझा अधिकारहरुको सवालमा र अन्य क्षेत्रमा समेत धारा ५९(२) बमोजिम संघले प्रदेश समेतलाई लागू हुने गरी आवश्यक नीति, मापदण्ड र कानून बनाउनु पर्ने संघीय सरकारको दायित्व रहनेछ । अर्कोतर्फ दुई वा दुई भन्दा बढी प्रदेशहरुले एकल अधिकारका कुनै विषयमा कानून बनाउन नेपाल सरकार समक्ष अनुरोध गरेमा संघीय संसदले कानून बनाई दिन सक्छ । तर त्यस्तो कानून सम्बन्धित प्रदेशको हकमा मात्र लागू हुन्छ ।

यस्तै कुनै प्रदेशमा संघीय शासन कायम रहेको अवस्थामा संघीय संसदले अनुसूची ६ बमोजिमका सूचीमा रहेका विषयमा कानून बनाउन सक्नेछ । त्यस्तो कानून सम्बन्धित प्रदेशसभाले अर्को कानून बनाई खारेज नगरेसम्म बहाल रहने व्यवस्था अन्य संघीय मुलुकमा पनि रहेको र नेपालमा पनि यो व्यवस्थालाई घरेलुकरण गरिएको छ । यस्तो व्यवस्था राख्नु पर्ने कारण प्रदेशमा संकटकाल रहेको अवस्थामा हुन सक्छ । अर्कोतर्फ सिमाना सम्बन्धमा वा परिवर्तन गर्ने विषयसँग अनुसूची ६ सँग सम्बन्धित भएमा त्यस्तो विधेयक संघीय संसदमा पेश भएको ३० दिन भित्र सम्बन्धित सदनको सभामुख वा अध्यक्षले सहमतिका लागि प्रदेशसभामा पठाउनु पर्नेछ ।

साझा सूची (Concurrent) का विषयमा र आर्थिक अधिकारका अन्य क्षेत्रमा प्रदेशलाई समेत लागू हुने गरी आवश्यक नीति, मापदण्ड र कानून बनाउन सक्ने अधिकार रहेको छ । तर हालसम्म पनि संघीय सरकारले धारा ५९ (२) बमोजिम अनुसूची ७ बमोजिमका अधिकार प्रयोग गर्दा ७ प्रादेशिक सरकारसँग आवश्यक परामर्श लिई नीति तथा मापदण्ड बनाई संघिय संसदबाट पारित गरी कार्यान्वयन गर्नु पर्नेमा सो हुन सकेको पाइदैन । त्यस्तै अनुसूची ९ का साझा अधिकारको प्रयोग गर्दा पनि ७५३ स्थानीय सरकार, ७ प्रदेश सरकारसँग संघीय सरकारले परामर्श लिई नीति र मापदण्ड बनाउनु पर्नेमा मापदण्ड नबनाई केही साझा सूचीका विषयमा कानून निर्माण गरेको पाइएको छ । यसले नेपालको संविधानको धारा ५९ (२) प्रत्यक्षतः उल्लंघन हुन गएको छ ।

अतः संघीय सरकारले धारा ५९(२) बमोजिम अनुसूची ७ बमोजिमका अधिकार प्रयोग गर्दा ७ प्रादेशिक सरकारसँग आवश्यक परामर्श लिई नीति तथा मापदण्ड बनाई संघीय संसदबाट पारित गरी अविलम्ब कार्यान्वयन गर्नु पर्दछ ।

त्यस्तै अनुसूची ९ का साझा अधिकारको प्रयोग गर्दा पनि ७५३ स्थानीय सरकार, ७ प्रादेशिक सरकारसँग संघीय सरकारले परामर्श लिई नीति र मापदण्ड अविलम्ब बनाउनु पर्दछ । यसले प्रदेशका राजश्वको दायरा अझ अरु बढ्न जानेछ ।

(२) अन्तर सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४, मा संशोधन

अन्तर सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ को परिच्छेद ३ को राजश्व बाँडफाँट अन्तर्गतको व्यवस्था (मुख्य खण्ड र दफा) मा संशोधन

विद्यमान व्यवस्था

क) उपदफा (१) बमोजिम संघीय विभाज्य कोषमा जम्मा भएको रकम मध्ये सत्तरी प्रतिशत नेपाल सरकारलाई, पन्ध्र प्रतिशत प्रदेशलाई र पन्ध्र प्रतिशत स्थानीय तहलाई बाँडफाँट गरिनेछ ।

प्रस्तावित संशोधन

संघीय विभाज्य कोषमा जम्मा भएको रकममध्ये ५० प्रतिशत नेपाल सरकारलाई, २५ प्रतिशत प्रदेश सरकारलाई र २५ प्रतिशत स्थानीयतहलाई बाँडफाँट गरिने छ भन्ने वाक्यांश थप गर्नुपर्ने ।

फाईदा

राजश्व बाँडफाँट संविधान बमोजिम तहगत सरकार अनुसार प्राथमिकतामा प्राप्त हुने । समग्र प्रदेशहरूमा संघीय विभाज्य कोषमा थप राजस्व जम्मा हुने ।

(३) प्रदेश नं. १ को कर तथा गैरकर राजश्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ मा संशोधन

क) घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सेवा शुल्क र रोक्का दस्तुर

- घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सेवा दस्तुरको ६० प्रतिशत स्थानीय तहको संचित कोषमा र ४० प्रतिशत हुन आउने रकम प्रदेशको संचित कोषमा दाखिला गरिने गरी कानूनी व्यवस्था गरिएको पाइयो । राजश्व बाँडफाँटको विवरण प्रत्येक महिना समाप्त भएको मितिले २५ दिन भित्र सम्बन्धित स्थानीय तह र आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालयमा पठाउने व्यवस्था गरिएको देखिन्छ । घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क प्रदेशको एकल अधिकार अन्तर्गत अनुसूची ६ मा संवैधानिक व्यवस्था रहेको छ । तर स्थानीय तहको अनुसूची ८ अन्तर्गत खण्ड ४ मा स्थानीय कर भित्र अन्य सम्पत्ति कर, घर बहाल कर, सवारी साधन करको अलावा घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क थपिएको छ । यो व्यवस्था संविधानको एउटा व्यवस्थामा प्रदेश तहको सरकारलाई संवैधानिक व्यवस्था गरिसकेपछि पुनः स्थानीयलाई करसँग जोडेर घरजग्गा शुल्क थपिनु आफैँमा एक धारा र अर्को धारा बाझिन पुगेको छ । त्यसैले घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क प्रदेशमै राखेर स्थानीय तहबाट झिकी संशोधन गर्नु पर्ने हुन्छ ।
- बरु सेवा शुल्क स्थानीय तहको अनुसूची ८ मा स्थानीय तहको एकल अधिकार अन्तर्गत पर्ने भएकोले प्रदेशका आर्थिक ऐन, २०७९ र कर तथा गैर करको राजश्व ऐन, २०७५ बाट हटाई स्थानीय तहमै राखिनु पर्दछ । सेवा दस्तुर स्थानीय तहको जिम्मेवारीमै छोडिदिँदा उपयुक्त हुन्छ ।

ख) सवारी साधन कर

त्यस्तै प्रदेश भित्र दर्ता हुने र दर्ता भई प्रयोगमा रहेका सवारी साधनमा कर लगाइने र असुली गरिने व्यवस्था कर तथा गैरकर सम्बन्धी ऐन र आर्थिक ऐनमा गरिएको छ । तर टाँगा, रिक्सा, विद्युतीय रिक्सा (ईरिक्सा) र पावर ट्रीलरमा सम्बन्धित नगरपालिका र गाउँपालिकाले सवारी साधन कर लगाई असुल गर्नेछन् । तर अन्यको हकमा भने प्रदेश विभाज्य कोषमा जम्मा हुने र जम्मा भएको रकमको ६० प्रतिशत प्रदेश संचित कोषमा र ४० प्रतिशत स्थानीय विभाज्य कोषमा दाखिला गरी स्थानीय संचित कोषमा मासिक रूपमा दाखिला गर्नुपर्ने कानूनी वाध्यता देखिन्छ । यो कानूनी व्यवस्था बमोजिम सवारी साधन कर उठाउन आवश्यक पर्ने साधन स्रोत, प्रविधि, जनशक्ति र कार्यालयको व्यवस्था नभएसम्म प्रदेश सरकारबाट तोकिएको कार्यालयले सङ्कलन गर्ने व्यवस्था गरिएको देखिन्छ । सवारी साधन करको एकल अधिकार प्रदेश र स्थानीय दुवैमा संवैधानिक व्यवस्था रहेकोले जनतालाई सेवा सुविधा दिनु भन्दा सवारी धनीहरूलाई कुन सरकारलाई तिर्नुपर्ने हो अलमल

हुने, दुख झन्झट पनि हुने देखिन्छ । हाल संविधानको व्यवस्था बमोजिम दुवै सरकारको एकल अधिकार देखिएकोले अन्य व्यवस्था नहुँदा सम्म ६० प्रतिशत र ४० प्रतिशत गर्नु भन्दा ५०/५० प्रतिशत दुवै सरकारका संचित कोषमा जम्मा गरी संशोधन गर्नु जरुरी छ । यसबाट दुवै सरकार आर्थिक हिसाबले बलिया बन्न पुग्दछन् । संविधान संशोधन गर्दा भने एउटा सरकारको एकल अधिकारमा मात्र राख्दा उपयुक्त हुनेछ ।

ग) सवारी चालक अनुमतिपत्र र सवारी दर्ता किताब (ब्लुबुक) सम्बन्धी दस्तुरहरु

प्रदेश भित्र सवारी चालक अनुमतिपत्रको ईजाजत दस्तुर, दरखास्त दस्तुरहरु, नविकरण दस्तुर, जरिवाना, पुनः प्रयोगातात्मक परिक्षा (ट्रायल) दस्तुर, सवारीको दर्ता किताब (ब्लुबुक) दस्तुर, सवारी जाँचपास दस्तुर तथा सोको नविकरण दस्तुर र अन्य दस्तुर सम्बन्धी व्यवस्था प्रचलित सवारी तथा यातायात सम्बन्धी कानून बमोजिम लगाइने र असुल गरिनेछ । सवारी चालक अनुमतिपत्र सम्बन्धी दस्तुर प्रदेश सरकारबाट तोकिएको कार्यालयले सङ्कलन गर्नेछ । यो व्यवस्थाले यो कानून बनाउनु र नबनाउनुमा कुनै औचित्य देखिँदैन । अन्य प्रचलित कानून संघीय कानून भएकोले सो कानूनको प्रयोग संघीय सरकारले नै गर्दछ ।

केवल सवारी चालक अनुमतिपत्र सम्बन्धी दस्तुर प्रदेश सरकारबाट तोकिएको कार्यालयबाट सङ्कलन गर्ने र प्रदेश संचित कोषमा दाखिला गरिने हुँदा यो राजश्वमा मात्र प्रदेशको एकल अधिकारको प्रयोग हुने देखिन्छ । नेपालको संविधानको अनुसूची ६ मा उल्लेखित राजश्वको अधिकार अन्तर्गत रहेको अन्य प्रचलित कानून बमोजिम लगाइने गैर करलाई संविधानले प्रदेश सरकारलाई दिएपनि प्रदेश सवारी चालक अनुमतिपत्रको ईजाजत दस्तुर, नवीकरण दस्तुर, जरिवाना, पुनः प्रयोगातात्मक परीक्षा दस्तुर, सवारीको दर्ता किताब दस्तुर, सवारी जाँचपास दस्तुर तथा सोको नवीकरण दस्तुर र अन्य दस्तुरसम्बन्धी कर संघीय सरकारमै राख्दा संविधानको प्रत्यक्ष प्रावधानसँग बाझिन पुगेको छ ।

घ) मनोरञ्जन कर

प्रदेशभित्र सञ्चालन हुने मनोरञ्जनजन्य क्रियाकलापमा मनोरञ्जन कर लगाई असुल उपर गरिने व्यवस्था गरिएको छ । मनोरञ्जन कर प्रदेश भित्र सञ्चालन हुने मनोरञ्जन क्रियाकलापमा कर लगाई असुल उपर गरिनेछ । मनोरञ्जन करको टिकटमा लगाईएको कर स्थानीयतहका गाउँपालिका र नगरपालिकाका प्रशासनले सङ्कलन गर्नेछन । सङ्कलन गरिएको रकम स्थानीय तहको संचित कोषमा ६० प्रतिशत जम्मा हुने र ४० प्रतिशत मात्र सम्बन्धित प्रदेशको संचित कोषमा मासिक रुपमा दाखिला गर्नुपर्ने छ । ६० प्रतिशत स्थानीय तहमा जम्मा हुने भन्ने कानूनी व्यवस्थाले यो अधिकार समेत एकलबाट साझा अधिकारको रुपमा परिणत भएको देखिन्छ । प्रदेशभित्रको मनोरञ्जन कर संविधानतः प्रदेशकै अनुसूची ६ मा एकल अधिकार भित्र रहेको र स्थानीय तहको पनि अनुसूची ८ मा रहेकोमा स्थानीय तहमा जाने ६० प्रतिशत नभई ५० र प्रदेशमा पनि ५० प्रतिशत प्रदेश संचित कोषमा राखिने संवैधानिक तथा कानूनी व्यवस्था गरिनु पर्ने देखिन्छ । त्यसको लागि संविधान नै संशोधन हुनुपर्ने हुन्छ । विगत आर्थिक वर्षहरुको संकलित मनोरञ्जन कर एकमुष्ट २०७९ साल फागुन मसान्तसम्ममा बुझाएमा सोमा लाग्ने ब्याज छुट दिइने व्यवस्था पनि कतिपय प्रदेश तहका सरकारले गरेको पाइन्छ । चालु आर्थिक वर्ष २०७९/८० देखि स्थानीय तहले अनिवार्य रुपमा अनुगमन गरी मनोरञ्जन कर असुल उपर गनुपर्ने पनि देखिन्छ ।

ङ) पर्यटन शुल्क

नेपाल सरकारबाट हस्तान्तरण भई आएका प्रदेश सरकारले तोकेका प्रदेश अन्तर्गतका वन क्षेत्र भित्र पर्ने पर्यटन स्थल, पर्यटकीय पदमार्ग, पर्यटकीय हवाई चार्टर्ड उडान, तालतलैया, गुफा, धार्मिक स्थल तथा प्रदेश भित्रका पूरातात्विक, ऐतिहासिक, धार्मिक तथा साँस्कृतिक स्थल, सङ्ग्रहालय, पार्क, रक क्लाइबिङ, बन्जिजम्पीङ्ग, च्यापटिङ्ग, क्यानोनिङ, जिपफ्लाएर, प्याराग्लाइडिङ, केबलकार, पिकनिक स्थल, भ्युटावर, ट्रेकिङ तथा ट्राभल एजेन्सी, क्युरीयो तथा पर्यटकीय

सामग्रीहरू बिक्री वितरण गर्ने व्यवसाय जस्ता पर्यटकीय स्थल, पर्यटन व्यवसाय र पर्यटकीय क्रियाकलापमा पर्यटन शुल्क लगाई असुल उपर गरिने व्यवस्था गरिएको देखिन्छ ।

गाउँपालिका र नगरपालिका भित्र रहेका उद्यान, पार्क, सङ्ग्रहालय तथा नेपाल सरकारले प्रवेश शुल्क उठाउन अनुमति दिएका प्राचीन स्मारक र पूरातात्विक लगायत अन्य पर्यटकीय स्थल प्रवेश गरेवापत सम्बन्धित गाउँपालिका र नगरपालिकाले पर्यटन शुल्क लगाई असुल गरिरहेका छन् । पर्यटन शुल्कको प्रशासन सम्बन्धी सम्पूर्ण कार्य प्रदेश सरकारको हुनेछ । पर्यटन शुल्क वन तथा वातावरण तथा भुसंरक्षण मन्त्रालय अन्तर्गतको वन कार्यालय वा वन कार्यालयले सङ्कलन गरेपछि प्रदेश सञ्चित कोषमा दाखिला गर्नुपर्ने हुन्छ । पर्यटन शुल्कको नियमन र प्रशासन सम्बन्धित नगरपालिका वा गाउँपालिकाले गर्नेछन् । संकलित रकमको बाँडफाँट गरी विद्यमान ४० प्रतिशत रकम प्रदेशको सञ्चित कोषमा दाखिला हुँदा यो अधिकार पनि एकल अधिकारमा राखिनु र कानून बनाएर स्थानीय तहमा ६० प्रतिशत पठाउनुले पर्यटन दस्तुरमा एकल अधिकार हो भनी मख्ख पर्नु मात्र देखिन्छ । हुनतः पर्यटन दस्तुर तीनै तहका एकल अधिकारमा राखिएको छ । प्रदेशमा जाने ४० प्रतिशतको सङ्का ५० प्रतिशत बढाउनु पर्ने देखिन्छ तर यस किसिमको अधिकार एक तहमा मात्र राख्ने गरी संविधान नै संशोधन गर्नु पर्ने देखिन्छ ।

च) विज्ञापन कर

स्थानीय तहको केन्द्र लगायत मुख्य मुख्य बजार तथा व्यापारिक केन्द्रहरूमा विज्ञापन कर लगाउनुपर्ने हुन्छ । यस्तो विज्ञापन कर सम्बन्धित गाउँपालिका र नगरपालिकाले लगाउने र असुल गर्नेछन भन्ने सबै प्रदेश तहका कानूनी व्यवस्था पाइयो । यसको अलावा संकलित गरिएको कर स्थानीय विभाज्य कोषमा जम्मा गरी उठेको रकमको रकमको ६० प्रतिशतले हुन आउने रकम सम्बन्धित स्थानीय सञ्चित कोषमा र ४० प्रतिशतले हुन आउने रकम प्रदेश सञ्चित कोषमा मासिक रुपमा दाखिला गर्नुपर्नेछ भन्ने कानूनी व्यवस्था सबै तहमा देखिन्छ । संविधानतः यो विज्ञापन कर समेत स्थानीय र प्रदेशमा एकल रुपमा राखिएको छ । स्थानीयमा ६० र प्रदेशमा ४० प्रतिशत राखिनु संविधानसम्मत देखिँदैन । बरु ५० प्रतिशत स्थानीय तहमा र ५० प्रतिशत प्रदेशमा गरिएको भए संविधानसम्मत हुने थियो ।

छ) प्राकृतिक स्रोत सङ्कलन तथा विक्रि शुल्क

प्राकृतिक स्रोत सङ्कलन तथा बिक्री बापतको शुल्क लगाई असुल उपर गरिनेछ भन्ने कानूनी व्यवस्था प्रदेश तहमा पाइयो । यसको सङ्कलन सम्बन्धित गाउँपालिका र नगरपालिकाले गर्ने, नगरपालिका तथा गाउँपालिकाका क्षेत्रभित्र ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, माटो र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गर्नु अघि वातावरणीय अध्ययन प्रतिवेदन स्वीकृति गराउनुपर्ने, प्राकृतिक स्रोत सङ्कलन तथा बिक्रि शुल्क स्थानीय विभाज्य कोषमा दाखिला गरी ४० प्रतिशत प्रदेश संचित कोषमा दाखिला गर्नुपर्ने कानूनी व्यवस्था देखिन्छ । यो न त प्रदेशको एकल अधिकार अन्तर्गत देखिन्छ नत स्थानीय तहको संविधानतः एकल अधिकार अन्तर्गत नै पर्दछ । यस्तो अवस्थामा स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ मा भएको व्यवस्था नत संविधानसम्मत नै छ । त्यसैले संविधान संशोधन गर्दा नै यो अधिकार थप गरी प्रदेशको एकल अधिकार हुने गरी संविधान नै संशोधन गर्नु पर्ने देखिन्छ ।

ज) कृषि सेवा शुल्क

कृषि मन्त्रालय र मातहतका कार्यालयहरूबाट प्रवाह गरिने सेवामा सेवा शुल्क लगाइने र असुल उपर गरिने कानूनी व्यवस्था सबै प्रदेश तहमा रहेको पाइन्छ । सेवा शुल्क प्रशासन प्रदेश सरकारबाट हुने, कृषि कर र सेवाशुल्क कृषि मन्त्रालय अन्तर्गतका निकायहरूले सङ्कलन गरी प्रदेश संचित कोषमा दाखिला गर्नु पर्ने व्यवस्था गरिएको देखिन्छ । यो भने राम्रो देखिन्छ । अतः सङ्कलन भएको कर तथा गैरकर राजश्व रकम प्रदेश संचित कोषमा दाखिला गरी सोको विवरण प्रदेश लेखा नियन्त्रण कार्यालय, सम्बन्धित मन्त्रालय र आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालयमा पठाउनु पर्ने गरी आर्थिक ऐन तथा प्रदेशमा राजश्व

लगाउने अथवा नलगाउने सम्बन्धी सबै प्रदेशहरूका कानूनी व्यवस्थामा स्पष्ट गरिनु पर्दछ । ऐनमा उल्लेखित व्यवस्था बाहेक निम्न कुरा समेत संशोधन गरिनु आवश्यक देखिन्छ ।

प्रदेश नं. १ को कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ मा संशोधन प्रस्ताव, २०७९

साविक व्यवस्था

१) कर प्रशासन: (१) यस ऐन बमोजिमको कर तथा गैरकरको प्रशासन प्रदेश सरकारले गर्नेछ । (२) उपदफा (१) बमोजिमको कर प्रशासन व्यवसायिक, दुरुस्त र प्रभावकारी बनाउन आवश्यकता अनुसार कर कार्यालय रहन सक्नेछन् ।

प्रस्तावित संशोधन व्यवस्था

दफा २ मा रहेको “आवश्यकता अनुसार कर कार्यालय रहन सक्नेछन्” भन्ने शब्दको सट्टा “आवश्यकता अनुसार कर कार्यालय रहनेछन्” भन्ने वाक्यांश थप गर्नुपर्ने ।

फाईदा

कर कार्यालयहरू आवश्यकता अनुसार जनताको घर दैलोमा अनिवार्य रूपमा स्थापना हुने ।

साविक व्यवस्था

२. दफा ४ को उपदफा (५) बमोजिम उठाएको रजिष्ट्रेशन शुल्क मध्येबाट ६० प्रतिशतले हुने रकम स्थानीय तहले स्थानीय संचित कोषमा राखी ४० प्रतिशतले हुने रकम मासिक रूपमा प्रदेश संचित कोषमा जम्मा गर्नुपर्नेछ ।

प्रस्तावित संशोधन व्यवस्था

दफा ४ को उपदफा (५) बमोजिम उठाएको रजिष्ट्रेशन शुल्क मध्येबाट ६० प्रतिशतले हुने रकम स्थानीय तहले स्थानीय संचित कोषमा राखि ४० प्रतिशतले हुने रकम मासिक रूपमा प्रदेश संचित कोषमा जम्मा गर्नुपर्नेछ भन्ने शब्दको सट्टा “रजिष्ट्रेशन शुल्क मध्येबाट ५० प्रतिशतले हुने रकम स्थानीय तहले स्थानीय संचित कोषमा राखि ५० प्रतिशतले हुने रकम मासिक रूपमा प्रदेश संचित कोषमा जम्मा गर्नुपर्नेछ” भन्ने वाक्यांश थप गर्नु पर्ने ।

फाईदा

प्रदेश र स्थानीय तहको समेत दुवैको संविधानमै एकल अधिकार भएकोले समान अधिकारको उपभोग गर्न पाउने हुन्छ ।

थप गर्नुपर्ने

३. दफा १० को उपदफा ६ थप गर्ने

प्रस्तावित संशोधन व्यवस्था

टाँगा, रिक्सा, अटो रिक्सा, विद्युतीय रिक्सा र पावर ट्रेलरमा सम्बन्धित नगरपालिका वा गाउँपालिकाले सवारी साधन कर लगाई असुल गर्नेछ । संकलित रकम प्रदेश विभाज्य कोषमा जम्मा गरी जम्मा भएको कुल रकम मध्ये साठी प्रतिशतले हुन आउने रकम प्रदेश संचित कोषमा र चालिस प्रतिशतले हुन आउने रकम स्थानीय विभाज्य कोषमा दाखिला गरी स्थानीय तहलाई तोकिए बमोजिम बाँडफाँट गरी स्थानीय संचित कोषमा मासिक रूपमा दाखिला गरिने छ भन्ने वाक्यांश थप गर्ने ।

फाईदा

प्रदेश आर्थिक ऐनमा समेत यो व्यवस्था भएकोले एकरूपता कायम गर्दा समन्यायिक हुन जाने ।

साविक व्यवस्था

४) दफा १२ को उपदफा (४) मा उपदफा (३) बमोजिम जम्मा भएको रकम मध्येबाट ६० प्रतिशतले हुन आउने रकम स्थानीय तहले संचित कोषमा राखी बाँकी ४० प्रतिशतले हुने रकम मासिक रूपमा प्रदेश संचित कोषमा जम्मा गर्नुपर्नेछ ।

प्रस्तावित संशोधन व्यवस्था

दफा १२ को उपदफा (४) मा उपदफा (३) बमोजिम जम्मा भएको रकम मध्येबाट ६० प्रतिशतले हुन आउने रकम स्थानीय तहले संचित कोषमा राखी बाँकी ४० प्रतिशतले हुने रकम मासिक रूपमा प्रदेश संचित कोषमा जम्मा गर्नुपर्नेछ भन्ने बाक्यांशको सट्टामा “मनोरञ्जन कर बापत सङ्कलित रकमको ५० प्रतिशतले हुन आउने रकम सम्बन्धित स्थानीय तहको संचित कोषमा र ५० प्रतिशतले हुन आउने रकम प्रदेश संचित कोषमा मासिक रूपमा दाखिला गर्नुपर्नेछ” भन्ने वाक्यांश थप गर्नु पर्ने ।

फाईदा

प्रदेश र स्थानीयको समेत दुवैको संविधानमै एकल अधिकार भएकोले समन्यायिक हुने ।

प्रदेश नं. १ को प्रदेश वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७५

प्रदेश तथा स्थानीयतहको राजस्व सङ्कलन, राजस्व बाँडफाँट, अनुदान, ऋण र वित्त व्यवस्थापन सम्बन्धमा कानूनी व्यवस्था गर्न आवश्यक भएकोले प्रदेश नं. १ को सभाले पारित गरी मिति २०७५।६।१९ मा प्रमाणीकरण भई लागू भएको देखिन्छ ।

प्रदेश र स्थानीय तह दुवैको अधिकार क्षेत्र बढीमा प्रदेशले कर निर्धारण गरी उठाएको कर तथा गैरकर राजस्वको रकम बाँडफाँट गर्न प्रदेश सरकारले प्रदेश विभाज्य कोषको व्यवस्था गरी त्यस्तो रकम सो कोषमा जम्मा गरिने कानूनी व्यवस्था रहेको छ ।

यस कानूनमा प्रदेश र स्थानीय तहबीच बाँडफाँट गरिने रकम मध्ये प्रदेश सरकारले प्राप्त गर्ने ६० प्रतिशत रकम प्रदेश संचित कोषमा दाखिला गरिने व्यवस्था गरिएको छ । स्थानीय तहलाई बाँडफाँट गर्नुपर्ने ४० प्रतिशत रकम प्रदेश सरकारले स्थानीय विभाज्य कोष खडा गरी त्यस्तो रकम सो कोषमा जम्मा गरिने व्यवस्था समेत यो ऐनले गरेको देखिन्छ ।

यसरी स्थानीय विभाज्य कोषमा जम्मा भएको रकम राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगको सिफारिस अनुसार स्थानीय तहलाई बाँडफाँट गरिने व्यवस्था रहेको पाइन्छ । बाँडफाँटबाट प्रत्येक स्थानीय तहले प्राप्त गर्ने रकम प्रदेश सरकारले मासिक रूपमा सम्बन्धित स्थानीय तहको संचित कोषमा जम्मा गर्नुपर्ने हुन्छ । यसरी बाँडफाँट हुने रकम आर्थिक वर्षको अन्तिम महिनामा मिलान गरिने व्यवस्था समेत रहेको छ ।

नोट: यो व्यवस्थालाई संविधान, प्रदेश नं १ को प्रदेश कर तथा गैर कर सम्बन्धी ऐन, २०७५ बमोजिम संशोधन गरी अनुकूल बनाउनु पर्ने हुन्छ ।

प्रदेश नं १ को प्रदेश सरकारको अर्थ सम्बन्धी प्रस्तावलाई कार्यान्वयन गर्न बनेको आर्थिक विधेयक, २०७९

प्रदेश नं १ सरकारको आर्थिक बर्ष २०७९/८० को अर्थ सम्बन्धी प्रस्तावलाई कार्यान्वयन गर्नको निमित्त राजस्व सङ्कलन गर्ने, कर लगाउने, कर घटाउने, बढाउने, छुट दिने तथा राजस्व प्रशासन सम्बन्धी कानून तथा मौजुदा कानूनलाई समयानुकुल संशोधन गर्न आवश्यक भएकोले प्रदेश आर्थिक ऐन, २०७९ ल्याइएको र यसको प्रारम्भ २०७९।४।१ गते देखि लागू भैसकेको छ । नेपालको संविधानको धारा १७५ बमोजिम प्रदेश नं. १ को प्रदेशसभाले प्रदेश आर्थिक ऐन, २०७९ बनाई २०७४।४।१ देखि लागू गरी २०७९ साउन १ गते प्रदेश राजपत्रमा समेत प्रकाशित गरेको छ । यो ऐन प्रदेश सरकारको आर्थिक वर्ष २०७९/८० को अर्थ सम्बन्धी प्रस्तावलाई कार्यान्वयन गरी राजस्व सङ्कलन गर्न समेतको लागि राजस्व प्रशासन सम्बन्धी कानून र मौजुदा कानूनलाई समयानुकुल बनाउन यो ऐन जारी गरिएको देखिन्छ । यो ऐनले निम्न बमोजिमको कर, शुल्क, र दस्तुर लगाउन तथा उठाउन सक्ने व्यवस्था गरेको छ । घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सेवा शुल्क र रोक्का दस्तुर, सवारी साधन कर सवारी चालक अनुमतिपत्र, सवारी दर्ता किताब (ब्लू बुक) सम्बन्धी दस्तुर, मनोरञ्जन कर, प्राकृतिक स्रोत सङ्कलन तथा बिक्री शुल्क, वन पैदावार बिक्री शुल्क, पर्यटन शुल्क, विज्ञापन कर, कृषि सेवा शुल्क, फर्म नवीकरण र खारेजीका लागि विशेष व्यवस्था, करका दर घटाउन, बढाउन वा छुट दिन सकिने व्यवस्था गरिएको छ ।

संशोधन प्रस्ताव

प्रदेश नं. १ सरकारको आर्थिक बर्ष २०८०/८१ को अर्थ सम्बन्धी प्रस्तावलाई कार्यान्वयन गर्नको निमित्त राजश्व सङ्कलन गर्ने, कर लगाउने, कर घटाउने, बढाउने, छुट दिने तथा संविधान, राजश्व प्रशासन सम्बन्धी कानून तथा मौजुदा कानूनलाई समयानुकूल संशोधन गर्न आवश्यक भएकोले प्रदेश आर्थिक ऐन, २०८० ल्याई लागू गर्नु पर्ने हुन्छ ।

अतः प्रदेशको कर तथा गैरकर सम्बन्धी कर लगाउने तथा राजश्व उठाउन नेपालको संविधानको धारा ५७ (२) बमोजिम अनुसूची ६ मा उल्लेखित विषयमा पूर्ण अधिकार निहित रहेको छ । यस किसिमका अधिकारको प्रयोग संविधान र कानूनमा उल्लेख भए बमोजिम हुने संवैधानिक व्यवस्था बमोजिम धारा १६२ ले संविधानकै अधिनमा रही प्रदेशले आफ्नो कार्यकारिणी अधिकार प्रयोग गर्न सक्नेछ । यस कार्यकारिणी अधिकार भित्र एकल अधिकार, साझा अधिकार समेत प्रयोग गर्न पाउने छन् । एकल अधिकार अनुसूची ६, साझा अधिकार अनुसूची ७ र अनुसूची ९ बमोजिमका विषयमा हुनेछन् । एकल अधिकार संविधानसँग नवाझिने गरी प्रदेशसभाले धारा १९७ बमोजिम प्रदेश सभाको संसदले आफ्नो कानून आफै बनाउन सक्नेछ तर साझा अधिकारहरूको सवालमा र अन्य क्षेत्रमा समेत धारा ५९(२) बमोजिम संघले प्रदेश समेतलाई लागू हुने गरि आवश्यक नीति, मापदण्ड र कानून बनाउनु पर्ने संघीय सरकारको दायित्व रहने हुन्छ । अर्कोतर्फ दुई वा दुई भन्दा बढी प्रदेशहरूले एकल अधिकारका कुनै विषयमा कानून बनाउन नेपाल सरकार समक्ष अनुरोध गरेमा संघीय संसदले कानून बनाई दिन सक्छ । तर त्यस्तो कानून सम्बन्धी त प्रदेशको हकमा मात्र लागू हुन्छ ।

यस्तै कुनै प्रदेशमा संघीय शासन कायम रहेको अवस्थामा संघीय संसदले अनुसूची ६ बमोजिमका सूचीमा रहेका विषयमा कानून बनाउन सक्नेछ । त्यस्तो कानून सम्बन्धित प्रदेशसभाले अर्को कानून बनाई खारेज नगरेसम्म बहाल रहने व्यवस्था अन्य संघीय मुलुकमा पनि रहेको र नेपालमा पनि यो व्यवस्थालाई घरेलुकरण गरिएको छ । यस्तो व्यवस्था राख्नु पर्ने कारण प्रदेशमा संकटकाल रहेको अवस्थामा हुन सक्छ । अर्कोतर्फ सिमाना सम्बन्धमा वा परिवर्तन गर्ने विषयसँग अनुसूची ६ सँग सम्बन्धित भएमा त्यस्तो विधेयक संघीय संसदमा पेश भएको ३० दिन भित्र सम्बन्धित सदनको सभामुख वा अध्यक्षले सहमतिका लागि प्रदेशसभामा पठाई कानून बनाउन सक्नेछ ।

वित्तीय संघीयतालाई मजबुत बनाउने हो र संघीयताको संविधानत क्रमशः कार्यान्वयन गर्दै जाने हो भने कर तथा गैरकर लगाउने र राजश्व उठाउने कार्यमा विद्यमान संविधानमा उल्लेखित व्यवस्था, ऐन कानून तथा आर्थिक ऐनमा उल्लेखित अधिकार मात्र प्रयोग गर्ने हो र आफ्नो एकल अधिकार समेत स्थानीयतहलाई प्रयोग गर्न दिने, कर सङ्कलन गर्न दिने, ६० प्रतिशत स्थानीयतहको विभाज्य कोष वा संचित कोषमा जम्मा गर्न पाउने र ४० प्रतिशत मात्र प्रदेशहरूका विभाज्य वा संचित कोषमा जम्मा गर्ने हो भने वित्तीय संघीयताले प्रदेशहरू चलन सक्ने छैनन् । संविधानको अनुसूची ५ का ठुला करहरू संघमै राख्ने, प्रदेश र स्थानीय तहका एकल अधिकारमा बाझिने गरी कर तथा शुल्क राखिरहने हो भने प्रदेशहरू रहनु र नरहनुमा कुनै औचित्य रहने छैन ।

त्यसैले संविधानमा उल्लेखित अन्तःशुल्क र पर्यटन दस्तुर संघको एकल अधिकारबाट प्रदेश सरकारको एकल अधिकारको रूपमा रहेको अनुसूची ६ मा संशोधन गरी ल्याउनु पर्ने देखिन्छ ।

त्यस्तै संविधानमा व्यवस्था भएका प्रदेशका ८ वटा कर तथा दस्तुरहरू प्रदेशकै हुने र प्रदेशसँग बाझिने गरी स्थानीय तहको एकल अधिकार हुने गरी गरिएका व्यवस्थाहरूमा घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, मनोरञ्जन कर, विज्ञापन कर, सेवा शुल्क दस्तुर आदि स्थानीय तहको अनुसूची ८ बाट हटाई संविधान संशोधन गर्नुपर्ने देखिन्छ ।

त्यस्तै प्रदेशको आर्थिक ऐन, २०७९, प्रदेश कर तथा गैरकर सम्बन्धी ऐन, २०७५ लाई पनि संशोधन गरी आफ्ना एकल अधिकार अन्तर्गत रहेका सबै कर तथा दस्तुरहरू प्रदेशकै विभाज्य कोष तथा संचित कोषमा रहने गरी विद्यमान कानून संशोधन

गर्नुपर्ने देखिन्छ । कुनै कानूनले दायरामा नल्याइएका वस्तुहरु जस्तो अन्तर्राष्ट्रिय बजारबाट माग भई आएका निकासीजन्य वस्तुहरु आदि ।

त्यस्तै प्रदेश नं. १ ले प्रदेश कर तथा गैरकर सम्बन्धी ऐन, २०७५ बमोजिम नियमावली बनाउनुपर्नेमा सो आजसम्म पनि बनाएको पाईएन । सो नियमावली समेत बनाई करका दायरा बढाई कर लगाउने तथा उठाउने दायरा फराकिलो बनाउनुपर्ने हुन्छ ।

७.३ संशोधन सम्बन्धी तीन महले ढाँचा

प्रदेश सरकारको राजस्व अधिकारका सम्बन्धमा नेपालको संविधान र संघीय एवं प्रदेश कानूनहरुमा गर्नु पर्ने संशोधन प्रस्तावहरु निम्नानुसार प्रस्तुत गरिएको छ ।

(क) नेपालको संविधान

| क्र.सं. | मुख्य खण्ड र धारा | सम्भाव्य विषय | औचित्य |
|---------|--|---|---|
| १ | भाग ५ राजस्व स्रोतको बाँडफाँट धारा ६०(६) नेपाल सरकारले संघीय सञ्चित कोषबाट प्रदान गर्ने सशर्त अनुदान, समपूरक अनुदान वा अन्य प्रयोजनका लागि दिने विशेष अनुदान वितरण सम्बन्धी व्यवस्था संघीय कानूनबमोजिम हुनेछ । | नेपाल सरकारले संघीय सञ्चित कोषबाट प्रदान गर्ने सशर्त अनुदान, समपूरक अनुदान वा अन्य प्रयोजनका लागि दिने विशेष अनुदान वितरण सम्बन्धी व्यवस्था संघीय कानून बमोजिम सन्तुलित र न्यायोचित रूपमा गर्नु पर्ने छ ” भन्ने शब्द थप गर्नुपर्ने । | संघीय सञ्चित कोषबाट प्रदान गर्ने सशर्त अनुदान, समपूरक अनुदान वा अन्य प्रयोजनका लागि दिने विशेष अनुदान वितरण न्युन भई प्रदेश सरकारको खर्चको आवश्यकता पूरा गर्न नसक्ने भएकोले । |
| २ | अनुसूची ५ धारा ५७ को उपधारा (१) र धारा १०९ सँग सम्बन्धित संघको अधिकारको सूचीको खण्ड ९ मा अन्तःशुल्क | अनुसूची ५ धारा ५७ को उपधारा (१) र धारा १०९ सँग सम्बन्धित संघको अधिकारको सूचीको खण्ड ९ मा रहेको “अन्तःशुल्क” शब्द सो ठाउँमा खारेज गरी अनुसूची ६ प्रदेशको अधिकारको सूची अन्तर्गत खण्ड ४ मा थप गर्नुपर्ने । | अन्तःशुल्क प्रदेश सरकारको अधिकार अन्तर्गत आउँदा प्रदेशहरु आत्मनिर्भर हुने भएकोले । |
| ३ | अनुसूची- ६ को प्रदेशको अधिकार सूची अन्तर्गत खण्ड ४ मा घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, मनोरञ्जन कर, विज्ञापन कर उल्लेख र अनुसूची ८ स्थानीय तहको अधिकार सूची अन्तर्गत पनि घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, मनोरञ्जन कर, विज्ञापन कर उल्लेख भएको । | अनुसूची- ६ को प्रदेशको अधिकार सूची अन्तर्गत खण्ड ४ मा घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, मनोरञ्जन कर, विज्ञापन कर उल्लेख भएकोमा अनुसूची ८ स्थानीय तहको अधिकार सूची अन्तर्गत पनि घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, मनोरञ्जन कर, विज्ञापन कर उल्लेख भई दोहोरिन पुगेकोले उक्त दोहोरिन पुगेको वाक्यांश खारेज गर्नुपर्ने । | घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, मनोरञ्जन कर, विज्ञापन कर उल्लेख भएकोमा अनुसूची ८ स्थानीय तहको अधिकार सूची अन्तर्गत पनि घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सवारी साधन कर, मनोरञ्जन कर, विज्ञापन कर उल्लेख भई दोहोरिन पुगेकोले कर तथा गैरकर लगाउन र उठाउन दुई सरकार बीच द्वन्द्व सिर्जना हुन गएकोले एकरूपता प्रदान गर्न आवश्यक भएकोले । |

(ख) अन्तर-सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४

| क्र.सं. | मुख्य खण्ड र दफा | सम्भाव्य विषय | कैफियत |
|---------|--|---|---|
| १ | (२) उपदफा (१) बमोजिम संघीय विभाज्य कोषमा जम्मा भएको रकम मध्ये सत्तरी प्रतिशत नेपाल सरकारलाई, पन्ध्र प्रतिशत प्रदेशलाई र पन्ध्र प्रतिशत स्थानीय तहलाई बाँडफाँट गरिनेछ | संघीय विभाज्य कोषमा जम्मा भएको रकममध्ये ५० प्रतिशत नेपाल सरकारलाई, २५ प्रतिशत प्रदेश सरकारलाई र २५ प्रतिशत स्थानीय तहलाई बाँडफाँट गरिने छ भन्ने बाक्यांश थप गर्नुपर्ने | राजश्व बाँडफाँट संविधान बमोजिम सन्तुलित र प्रदेशको खर्चको आवश्यकता पूरा गर्न नसक्ने भएको । |
| २ | वित्तीय समानीकरण अनुदान | नेपाल सरकारले संघीय प्रदेश तथा स्थानीय तहको खर्चको आवश्यकता र राजश्वको क्षमताको आधारमा आयोगको सिफारिसमा प्रदेश र स्थानीय तहलाई वित्तीय समानीकरण अनुदान वितरण गर्नेछ । सन्तुलित र पारदर्शी रूपमा गर्नुपर्ने छ” भन्ने शब्द थप गर्नुपर्ने । | संघीय सञ्चित कोषबाट प्रदान गर्ने सशर्त अनुदान, समपूरक अनुदान वा अन्य प्रयोजनका लागि दिने विशेष अनुदान वितरण न्यून भई प्रदेश सरकारको खर्चको आवश्यकता पूरा गर्न नसक्ने भएकोले । |

(ग) प्रदेश नं. १ को प्रदेश कर तथा गैरकर राजश्व सम्बन्धी ऐन, २०७५

| क्र.सं. | मुख्य खण्ड र दफा | संशोधन प्रस्ताव (हुनुपर्ने) | औचित्य |
|---------|---|---|---|
| १ | परिच्छेद १ १. संक्षिप्त नाम र प्रारम्भ यस ऐनको नाम प्रदेश नं १ प्रदेश कर तथा गैर कर राजश्व सम्बन्धित ऐन, २०७५ | परिच्छेद १ को दफा १ मा रहेको यस ऐनको नाम प्रदेश नं. १ प्रदेश कर तथा गैर कर राजश्व सम्बन्धित ऐन, २०७५ भन्ने बाक्यांश खारेज गरी २०७९ भन्ने शब्द थप गर्नुपर्ने | २०७९ सालमा प्रथम पटक संशोधन गर्नुपर्ने भएकोले । |
| ३ | दफा १० को उपदफा ६ थप गर्ने | टाँगा, रिक्सा, अटो रिक्सा, विद्युतीय रिक्सा र पावर ट्रेलरमा सम्बन्धित नगरपालिका वा गाउँपालिकाले सवारी साधन कर लगाई असुल गर्नेछ । संकलित रकम प्रदेश विभाज्य कोषमा जम्मा गरी जम्मा भएको कुल रकम मध्ये साठी प्रतिशतले हुन आउने रकम प्रदेश सञ्चित कोषमा र चालीस प्रतिशतले हुन आउने रकम स्थानीय विभाज्य कोषमा दाखिला गरी स्थानीय तहलाई तोकिए बमोजिम बाँडफाँट गरी स्थानीय सञ्चित कोषमा मासिक रूपमा दाखिला गरिने छ भन्ने बाक्यांश थप गर्ने । | प्रदेश आर्थिक ऐनमा समेत यो व्यवस्था भएकोले एकरूपता कायम गर्नुपर्ने भएकोले । |
| ४ | दफा १२ को उपदफा (४) मा उपदफा (३) बमोजिम जम्मा भएको रकम मध्येबाट ६० प्रतिशतले हुन आउने रकम स्थानीय तहले सञ्चित कोषमा राखी बाँकी ४० | दफा १२ को उपदफा (४) मा उपदफा (३) बमोजिम जम्मा भएको रकम मध्येबाट ६० प्रतिशतले हुन आउने रकम स्थानीय तहले सञ्चित कोषमा राखी बाँकी ४० प्रतिशतले | प्रदेश र स्थानीय तह दुवैको संविधानमै एकल अधिकार भएकोले । |

| क्र.सं. | मुख्य खण्ड र दफा | संशोधन प्रस्ताव (हुनुपर्ने) | औचित्य |
|---------|--|---|--------|
| | प्रतिशतले हुने रकम मासिक रूपमा प्रदेश सञ्चित कोषमा जम्मा गर्नुपर्नेछ । | हुने रकम मासिक रूपमा प्रदेश सञ्चित कोषमा जम्मा गर्नुपर्नेछ भन्ने वाक्यांशको सट्टामा “मनोरञ्जन कर बापत संकलित रकमको ५० प्रतिशतले हुन आउने रकम सम्बन्धित स्थानीय तहको सञ्चित कोषमा र ५० प्रतिशतले हुन आउने रकम प्रदेश सञ्चित कोषमा मासिक रूपमा दाखिला गर्नुपर्नेछ” भन्ने वाक्यांश थप गर्नुपर्ने । | |

४ खण्ड आठ: निष्कर्ष, सुझाव तथा सुधार कार्ययोजना

नेपालको संविधान, अन्तर-सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, विषयगत संघीय र प्रदेश कानूनहरू, प्रदेश सरकारको आर्थिक ऐनहरू, प्रदेश सरकारको कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, नेपाल सरकार र प्रदेश सरकारका वार्षिक प्रतिवेदनहरू, आर्थिक सर्वेक्षणहरू, अन्तर्राष्ट्रिय अभ्यासहरू, प्रदेश सरकार, स्थानीय तहका जनप्रतिनिधिहरू, संघीय तथा प्रदेश तहका विभिन्न निकायका प्रतिनिधिहरू लगायत विभिन्न सरोकारवाला निकाय/संस्थाका पदाधिकारीहरूसँगको छलफल तथा अन्तरक्रिया आदि माध्यमबाट निकालिएको निष्कर्षहरूका आधारमा प्रदेश नं. १ को आन्तरिक राजस्व परिचालनका थप सम्भावनाहरूलाई मूर्तरूप दिन चाल्नु पर्ने कदमका सम्बन्धमा निम्नानुसारका निष्कर्ष तथा सुझावहरू, रणनीति तथा कार्यनीति र तदनुरूप गर्नुपर्ने कार्यहरूको योजना (सुधार कार्ययोजना) निम्नानुसार प्रस्तुत गरिएको छ ।

८.९ निष्कर्ष तथा सुझावहरू

राजस्व लेखाइकन तथा बाँडफाँट

१. अन्तर सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ अनुसार एकल विन्दुबाट सङ्कलन हुने राजस्वका करदाताको राजस्व निर्धारण तथा असुली अभिलेखमा सङ्कलन गर्ने बाहेक अरुको पहुँच तथा अभिलेख आदानप्रदान हुने गरेको छैन । यसबाट राजस्व पाउने अधिकार भए पनि प्रदेशले वास्तविक राजस्व पाए नपाएको वा समयमै पाए नपाएको यकिन गर्न सक्ने अवस्थामा प्रदेश सरकार रहेको छैन । यसका लागि निम्नानुसारको अल्पकालिन सुझावहरू प्रस्ताव गरिएको छ ।
 - राजस्व तिर्ने व्यक्तिको अभिलेख, निर्धारण, असुली, अभिलेख र प्रतिवेदनमा न्युनतम मानवीय क्रियाकलाप रहने गरी हरेक राजस्वका स्रोतको कम्प्युटराइज्ड प्रणाली विकास गर्ने,
 - राजस्व उठाउने कार्यालयले विभाज्य राजस्व उठाउने बित्तिकै सम्बन्धितहरूको बाँडफाँट स्वतः हुने प्रणाली विकास गर्ने,
 - राजस्व अधिकार भएका प्रत्येक शीर्षकको अभिलेखमा सम्बन्धित संघ, प्रदेश वा स्थानीय तहले आवश्यकता अनुसारका डाटा र प्रतिवेदनमा पहुँच पाउने व्यवस्था हुनुपर्ने,
 - राजस्व अभिलेख र असुलीको पटक पटक अभिलेख इन्ट्री गर्ने वर्तमान प्रचलन हट्ने गरी एक पटक भएको कम्प्युटराइज्ड इन्ट्री स्वतः प्रत्येक प्रतिवेदनमा जाने प्रकृया मिलाउने ।
 - हरेक राजस्वका स्रोतहरू अनुसार सम्भाव्य करदाता, कारोबार, राजस्व निर्धारण, तिरेको कर, बक्यौता लगायतका सूचनाहरू दिने गरी कम्प्युटराइज डेटावेस सहितको सफ्टवेयर प्रयोग गर्न मध्यमकालीन सुझाव गरिन्छ ।
२. अन्तर सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ अनुसार संघीय सरकारले सङ्कलन गरी बाँडफाँट गर्ने मूल्य अभिवृद्धि कर र अन्तःशुल्क तथा प्राकृतिक स्रोत जस्तै पर्वतारोहण, वन, विद्युत, खानी, पानी तथा अन्य पदार्थको रोयल्टी सम्बन्धमा तोकिएको हिस्साको समसामयिकता अध्ययन र प्रशासनिक कार्यदक्षताको सिद्धान्त अनुसार यसलाई थप प्रभावकारी बनाउन यी क्षेत्रहरूको राजस्व उठाउने अधिकार एवं दर पुनरावलोकन गरी प्रदेश र स्थानीय तहहरूलाई थप राजस्व रोयल्टी प्राप्त हुने सम्भाव्यताबारे उक्त कानूनमा संशोधन गर्न आवश्यक छ (मध्यमकालीन सुझाव) ।
३. हरेक राजस्वका स्रोतहरू अनुसार संभाव्य करदाता, कारोबार, राजस्व निर्धारण, तिरेको कर, बक्यौता लगायतका सूचनाहरू दिने गरी कम्प्युटराइज डेटावेस सहितको सफ्टवेयर प्रयोग गर्न मध्यमकालिन सुझाव दिइन्छ ।

घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सेवा शुल्क र रोक्का दस्तुर

प्रदेश सरकारको आन्तरिक राजस्वमा प्रदेश र स्थानीय तहबीच हने राजस्व बाँडफाँटमध्ये घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्कको योगदान करिब ४१ प्रतिशतको हाराहारीमा रहेको हुँदा यो एक महत्वपूर्ण स्रोतको रूपमा रहेको छ । त्यसैले प्रदेश अन्तर्गतको जग्गाको अद्यावधिक विवरण राख्ने, आर्थिक क्रियाकलापमा वृद्धि गरी जग्गाको मूल्य अभिवृद्धि हुने रणनीतिक क्षेत्रमा प्रदेश सरकारबाट गर्ने लगानीलाई प्राथमिकता दिने र भू-उपयोग सम्बन्धी ऐन र नियमावलीको कार्यान्वयनका लागि संघ सरकार तथा स्थानीय सरकारसँग हुने अन्तर-सम्बन्धले यस स्रोतको दायरा थप विस्तार हुने देखिन्छ । यसको प्रशासनका लागि उपयोग भएको सूचना व्यवस्थापन प्रणालीको उपयोगका लागि आवश्यक पूर्वाधार र जनशक्तिको व्यवस्थापन गर्न नेपाल सरकारसँग समन्वय गर्ने, नीति तथा कानूनहरूलाई समसामयिक सुधार गर्न र हाल संक्रमण कालका रूपमा रहेका मालपोत कार्यालयलाई स्थायी रूपमा कार्यान्वयन गर्ने अवस्था सिर्जना गर्न नेपाल सरकारसँग आवश्यक समन्वय गर्न आवश्यक देखिन्छ । यस क्षेत्रको विकास र विस्तार गरी थप राजस्व परिचालन गर्नका लागि निम्नानुसारको सुझाव पेश गरिएको छ ।

(क) समन्वय तथा अन्तर सम्बन्ध

घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्कको प्रशासनमा नेपाल सरकारको भूमि व्यवस्था, सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालय, भूमि व्यवस्थापन तथा अभिलेख विभाग, सो अन्तर्गत रहेको भूमिसुधार तथा मालपोत कार्यालय र प्रदेश नं. १ सरकार अन्तर्गत रहेको भूमि व्यवस्था तथा सहकारी मन्त्रालय एवं आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय लगायतको समन्वय तथा अन्तरसम्बन्धको महत्वपूर्ण भूमिका रहने देखिन्छ । त्यसैगरी घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्कको प्रशासनमा नेपाल सरकार, प्रदेश सरकारका सम्बन्धित मन्त्रालयहरू साथै गाउँ वा नगरपालिका गरी तीनवटै पक्षको प्रभावकारी समन्वय र सहकार्यबाट सेवा प्रवाह र राजस्व असुली दुवैमा देहाय अनुसार सुधारका लागि सुझाव गरिएको छ ।

- **सूचना प्रविधिको उपयोग:** पब्लिक एक्सेस मोडेल (पाम), एल.आर.आइ.एम.एस., डि.एम.एस. जस्ता प्रणालीहरू विकास भई आंशिक रूपमा कार्यान्वयनमा रहेको सन्दर्भमा सबै मालपोत कार्यालयका सम्पूर्ण मोठहरूको विद्युतीय रूपमा रूपान्तरण (डिजिटाइज) कार्यलाई पूर्णता दिन, सूचना प्रणालीलाई भरपर्दो र कार्यालयहरूका सूचना प्रणाली तथा सर्भर प्रणाली सञ्चालनका लागि आवश्यक पर्ने गुणस्तरीय इन्टनेट एवं प्रविधिलाई पूर्ण विश्वस्त बनाउन, मालपोत कार्यालयहरूको जनशक्तिलाई कार्यालयमा जडान भएको सूचना प्रविधि प्रणाली अनुरूप अद्यावधिक गर्न, प्रणाली सञ्चालनमा प्राविधिक सहयोग र दक्षता अभिवृद्धि गर्न नेपाल सरकारसँग प्रभावकारी समन्वय हुन आवश्यक देखिन्छ **(मध्यमकालीन सुझाव)** ।
- **नियमित अन्तर्क्रिया र समस्याको समाधान:** प्रदेश नं. १ सरकारका सम्बन्धित मन्त्रालयहरू र मालपोत कार्यालय बीच घर जग्गा रजिष्ट्रेशन लगायतका समस्याहरूमा छलफल तथा अन्तर्क्रिया गर्ने अभ्यास शुरु भएको तर त्यसको नियमितता र निरन्तरता नभएकाले यसमा सुधार गर्न साथै उक्त छलफलमा स्थानीय तहबाट समेत प्रतिनिधित्व हुँदा थप प्रभावकारी हुने हुँदा सरोकारवाला निकायहरूको नियमित अन्तर्क्रिया र निर्णयको कार्यान्वयनको सुनिश्चितता गर्न आवश्यक देखिन्छ **(अल्पकालीन सुझाव)** ।
- **नीतिगत ढाँचामा एकरूपता, कार्यान्वयनमा सरलता:** विद्यमान सूचना व्यवस्थापन प्रणालीले प्रदेश सरकारका आर्थिक ऐनका विविधतालाई सम्बोधन गर्न चुनौती हुने गरेकाले विषयगत समिति मार्फत प्रदेश आर्थिक ऐनको भूमि व्यवस्थापन सम्बन्धी व्यवस्थाको ढाँचामा एकरूपता ल्याउन समन्वय हुन जरुरी देखिन्छ **(मध्यमकालीन सुझाव)** ।
- **नीतिमा दिगोपना:** भूमि सम्बन्धी हुने नीतिगत परिवर्तनबाट राजस्व सङ्कलनमा असर गर्ने गरेको (जस्तै: कित्ताकाट रोकिदा राजस्व घटेको) हुँदा प्रदेश सरकार र स्थानीय सरकारलाई प्राप्त हुने राजस्वको महत्वपूर्ण हिस्सामा असर पर्न

गएको हुनाले, भूमि सम्बन्धी नीतिलाई छिटो छिटो परिवर्तन नहुने व्यवस्थाका लागि सबै तहका सरकारहरूका बीचमा समन्वय हुन आवश्यक देखिन्छ (मध्यमकालीन सुझाव) ।

- कानूनको संशोधन: मालपोत ऐन, २०३४ तथा नियमावली, २०३६ लाई संशोधन गरी समसामयिक बनाउने वा एकीकृत कानूनको तर्जुमा गर्न र जग्गा प्रशासन निर्देशिका, २०५८ नै हाल समेत कार्यान्वयनमा रहेकाले पछिल्ला संशोधनहरूलाई समावेश गरी एकीकृत निर्देशिका तर्जुमाका लागि संघ सरकारसँग समन्वय गर्न सुझाव गरिन्छ (दीर्घकालीन सुझाव) ।

(ख) कानूनमा स्पष्टता, राजस्व सङ्कलनमा सहजता

- कानूनमा स्पष्ट व्यवस्था नहुँदा राजस्व छुट हुन सक्ने अवस्था सिर्जना हुन्छ । जस्तै: कम्पनीको नाममा खरिद गरेको जग्गा कम्पनीका शेयर सदस्यहरू बीच अंशबण्डा हुँदा सोको मूल्याङ्कन जग्गाको वास्तविक मूल्याङ्कनका आधारमा नभई शेयर रकमका आधारमा हुने हुँदा राजस्व असुलीमा प्रभाव पर्ने सम्भावना रहेको हुनाले यस सम्बन्धमा थप अध्ययन गरी यस्ता कारोबारलाई राजस्वको दायरामा ल्याउन सुझाव गरिन्छ (दीर्घकालीन सुझाव) ।

(ग) न्यूनतम मूल्याङ्कन

- घर जग्गा रजिष्ट्रेशन प्रयोजनका लागि न्यूनतम मूल्याङ्कन, मालपोत ऐन बमोजिमको प्रमुख जिल्ला अधिकारीको संयोजकत्वमा रहेको समितिले वार्षिक रूपमा गर्ने गरेको तर उक्त शुल्क प्राप्त गर्ने सरकारहरू (प्रदेश र स्थानीय) को समितिमा सहभागिता हुने व्यवस्था नभएको हुँदा न्यूनतम मूल्याङ्कनमा अपनत्व सिर्जना गर्न र यथार्थपरक बनाउनका लागि विद्यमान कानूनमा संशोधन गरी समितिमा प्रदेश र स्थानीय सरकारको प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हुने प्रावधान व्यवस्था गर्नका लागि पहल गर्न सुझाव गरिन्छ (मध्यमकालीन सुझाव) ।
- सम्पत्ति कर, घर जग्गा रजिष्ट्रेशन, बैंक तथा वित्तीय संस्थामा धितो राख्ने, वैदेशिक अध्ययन तथा भ्रमण आदि जस्ता विभिन्न प्रयोजनका लागि हुने न्यूनतम मूल्याङ्कन प्रायः फरक फरक हुने गरेकाले सबै प्रयोजनका लागि एउटै हुने गरी सूचना प्रणालीको विकास तथा पहुँच र कित्ता नं. अनुसारको मूल्याङ्कन गर्ने व्यवस्था मिलाउन सुझाव गरिन्छ (दीर्घकालीन सुझाव) ।

(घ) आर्थिक ऐन २०७९, अनुसूची ४ घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क अन्तर्गत सेवा शुल्कमा सुझाव

- प्रदेश नं. १ को आर्थिक ऐन २०७९ को अनुसूची ४; घर जग्गा लगायतको रजिष्ट्रेशन शुल्क, सेवा शुल्क र घर जग्गा रोक्का शुल्क अन्तर्गत, ख. सेवा शुल्कको सि.नं. २ मा नेपाल राष्ट्र बैंकबाट वित्तीय कारोबार गर्न स्वीकृति प्राप्त बैंक, वित्तीय तथा सहकारी संस्थाबाट दिने कर्जाको धितोबन्धक वा दृष्टिबन्धक लिखतको दर सम्बन्धी व्यवस्था रहेको छ । जसमा न्यूनतम रु. १०००।- देखि कर्जा कारोबार रकमका आधारमा रु.२,५०,०००।- सम्म सेवा शुल्कको दर निर्धारण गरिएको छ । उक्त दरको प्रति इकाई दर हिसाब गर्दा बढी कारोबार गर्नेलाई तुलनात्मक रूपमा न्यून दरमा सेवा शुल्क लगाइएको वा प्रायः पश्चगामी (Regressive) दर प्रस्ताव गरेको देखिन्छ । साथै दर निर्धारणको आधार पनि समान अन्तरमा नभई फरक फरक रहेको पाइन्छ । तसर्थ, वर्तमान दरहरूको पुनरावलोकन गरी आर्थिक ऐनमा संशोधनको उदाहरण देहाय बमोजिम गर्न सुझाव गरिन्छ ।

न्यूनतम रु.१,००० वा कारोवार रकमका आधारमा ०.१५ प्रतिशतको दरमा जुन बढी हुन्छ सो रकम असुल गर्ने गरी राजस्वको दर निर्धारण गर्दा देहायबमोजिम राजस्व कायम हुन जान्छ (मध्यमकालीन सुझाव) ।

| क्र.सं. | करयोग्य सम्पत्ति | हालको दर राजस्व (रु.) | प्रस्तावित दर अनुसारको राजस्व |
|------------|---|-----------------------|-------------------------------|
| सेवा शुल्क | नेपाल राष्ट्र बैंकबाट वित्तीय कारोबार गर्न स्वीकृति प्राप्त बैंक, वित्तीय तथा सहकारी संस्थाबाट दिने कर्जाको धितोबन्धक वा दृष्टिबन्धक लिखतमा (रु.) | | |
| (क) | रु. १ लाखसम्मको लिखतको थैली अंकमा | १००० | १००० |
| (ख) | रु. १ लाखभन्दा बढी रु. ५ लाखसम्मको थैली अंकमा | १५०० | १००० |
| (ग) | रु. ५ लाखभन्दा बढी रु. १० लाखसम्मको थैली अंकमा | २५०० | १५०० |
| (घ) | रु. १० लाखभन्दा बढी रु. २० लाखसम्मको थैली अंकमा | ३००० | ३००० |
| (ङ) | रु. २० लाखभन्दा बढी रु. ५० लाखसम्मको थैली अंकमा | ५००० | ७५०० |
| (च) | रु. ५० लाखभन्दा बढी रु. १ करोडसम्मको थैली अंकमा | २०००० | १५००० |
| (छ) | रु. १ करोडभन्दा बढी रु. २ करोडसम्मको थैली अंकमा | ३०००० | ३०००० |
| (ज) | रु. २ करोडभन्दा बढी रु. ५ करोड सम्मको थैली अंकमा | ६५००० | ६०००० |
| (झ) | रु. ५ करोडभन्दा बढी रु. २० करोडसम्मको थैली अंकमा | १००००० | ३००००० |
| (ञ) | रु. २० करोडभन्दा बढी रु. १ अर्बसम्मको थैली अंकमा | १५०००० | १५००००० |
| (ट) | रु. १ अर्बभन्दा बढी जतिसुकैको थैली अंकमा | २५०००० | रकम अनुसार |

(ङ) अनुसूची ४ घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क अन्तर्गत (घ) विविध शीर्षकमा सुझाव

- वैदेशिक रोजगारीबाट बैंकिङ प्रणाली मार्फत रेमिट्यान्स प्राप्त भएको बैंकको प्रमाणित कागजातको आधारमा त्यस्तो रेमिट्यान्सबाट खरिद हुने जग्गाको लिखतमा निश्चित प्रतिशत रजिष्ट्रेशन शुल्क छुट दिने तथा एकासगोलको परिवारको नाममा खरिद हुने बाहेक अन्य जग्गाको लिखतको हकमा यो प्रावधान लागू नहुने बुँदा संशोधन मार्फत समावेश गर्न सुझाव गरिन्छ (मध्यमकालीन सुझाव) ।
- मोही बाँडफाँट भई आधा आधा भएमा कुनै राजस्व नलान्ने, जग्गाधनी वा मोहीले मिलापत्रबाट पूरै जग्गा एक नाममा दर्ता गर्दा आधा जग्गाको राजीनामा सरह राजस्व लाग्ने, जग्गा घटीबढी गरी दर्ता हुन आएमा सोही अनुपातमा राजीनामा सरह राजस्व लाग्ने र तीन पुस्ताभित्रमा मोही लगत कट्टा गरेमा राजस्व दस्तुर नलान्ने बुँदा समावेश गर्न सुझाव दिइन्छ (मध्यमकालीन सुझाव) ।
- न्यूनतम मूल्याङ्कन पुस्तिका अनुसार जग्गाको मूल्यांकित रकम वा बैंक तथा वित्तीय संस्था र अन्य लिखतमा उल्लेखित रकम तथा मोही वा जग्गा धनीले मिलापत्र गर्दा लिए दिएको रकम मध्ये जुन बढी हुन्छ, त्यो बराबरको रकममा राजस्व लाग्नेछ भन्ने बुँदा समावेश गर्न उचित देखिन्छ (मध्यमकालीन सुझाव) ।

(च) मानव संसाधन तथा कार्यालय व्यवस्थापन

- मालपोत कार्यालयहरूमा भएको दरबन्दी पूरानै संरचना र कार्यसम्पादन प्रणाली अनुसार रहेको तर हाल सूचना प्रविधिको उपयोगमा व्यापक बढोत्तरी भएको सन्दर्भमा करारमा रहेका प्राविधिक कर्मचारीमार्फत जग्गा प्रशासन हुँदै आएको सुरक्षा जोखिम रहेको हुँदा दरबन्दी पुनरावलोकन गरी प्राविधिक कर्मचारीको स्थायी पदपूर्ति व्यवस्था हुने वातावरण निर्माणका लागि आवश्यक पहल गर्न उपयुक्त देखिन्छ (दीर्घकालीन सुझाव) ।
- संविधानतः मालपोत कार्यालयहरू स्थानीय तहमा हस्तान्तरण हुनु पर्नेमा अझैसम्म त्यो व्यवस्था हुन नसकेको कारण यसको व्यवस्थापन र क्षमता विकासका क्षेत्रमा कुन तहको सरकारले जिम्मेवारी लिने भन्ने विषयमा अन्यौलता देखिएको कारण यसको कार्यसम्पादन अपेक्षित प्रभावकारी हुन सकेको छैन । तसर्थ, मालपोत कार्यालयहरू स्थानीय

तहसम्म हस्तान्तरण नहुञ्जेलसम्मका लागि यसको रेखदेख, अनुगमन, समन्वय र सहजीकरणको जिम्मेवारी प्रदेश सरकारलाई दिन उपयुक्त देखिन्छ (अल्पकालीन सुझाव) ।

सवारी साधन कर तथा यातायात शुल्क

(क) सवारी साधन र यातायात सम्बन्धी छाता ऐनको आवश्यकता

नेपालको संविधानको व्यवस्था अनुसार सवारी साधन कर र यातायातको विषय प्रदेश मातहत पर्ने हुँदा संघ मातहतका सबै कार्यालयहरु प्रदेशमा हस्तान्तरण भएका छन् भने अनुमति पत्रको काम संघीय यातायात व्यवस्था विभागबाट भए तापनि कार्य विस्तृतीकरण प्रतिवेदन अनुरूप यसको राजस्व प्रदेशले प्राप्त गर्ने व्यवस्था मिलाइएको छ । सवारी साधन कर र यातायात सम्बन्धी व्यवस्थाको कानूनी संरचनाको रूपमा प्रदेश सवारी साधन तथा यातायात ऐन/नियमावली एवं आर्थिक ऐनहरु कार्यान्वयनमा रहेका छन् भने संघको सवारी साधन तथा यातायात व्यवस्था ऐन/नियमावली यथावत नै रहेको छ । प्रदेश सवारी साधन तथा यातायात ऐनहरुका कतिपय प्रावधानहरु प्रदेशगत रूपमा भिन्न रहनु, प्रदेशगत राजस्वका दरहरुमा भिन्नता रहनु, लिलाम भएका सवारी साधनको राजस्व, लाइसेन्स, ट्राफिक जरिवाना लगायत कतिपय विषयहरुमा संघ तथा प्रदेशको द्वैध प्रशासन रहनु, सवारी तथा यातायात व्यवस्थापनका लागि सञ्चालनमा रहेको Vehicle Registration System (VRS) मा सबै प्रदेशहरुको परिपालना नरहनु जस्ता विषयहरुबाट मुलुकको सवारी तथा यातायात व्यवस्थापन जटिल बन्दै गएको छ । अतः नेपाल सरकारले यसका साथै विद्यमान सवारी तथा यातायात व्यवस्था ऐन, २०४९ र तदनुरूप बनेको सवारी तथा यातायात व्यवस्था नियमावली, २०५४ लाई पुनर्लेखन गरी संघीयताको मर्म अनुरूप सवारी साधन र यातायात व्यवस्थापन सम्बन्धमा सबै प्रदेशको बीच सूचना आदान प्रदान र समन्वय एवं कार्य प्रक्रियामा एकरूपता कायम गर्नका लागि छाता ऐनको रूपमा छुट्टै संघीय सवारी साधन तथा यातायात व्यवस्था ऐन तर्जुमा गर्न आवश्यक देखिएको छ । यस्तो ऐन बनाउँदा संघीय सरकारमा जम्मा भइरहेको शुल्क र जरिवाना प्रदेश सञ्चित कोषमा जाने व्यवस्था मिलाउनु पर्छ ।

(ख) सवारी साधन तथा यातायात सम्बन्धी कानूनहरु पुनरावलोकन सम्बन्धमा

प्रदेश नं. १ को सवारी तथा यातायात व्यवस्था ऐन, २०७६ र यस बमोजिम बनेको प्रदेश सवारी तथा यातायात व्यवस्था नियमावली, २०७७ कार्यान्वयनमा रहेका छन् । प्रस्तुत नियमावलीको अनुसूचीले सवारी दर्ता, सरुवा दर्ता र लिलाम दर्ता, सवारीको अस्थायी दर्ता, हेरफेर दर्ता, विदेशमा दर्ता भएका सवारी साधनको अनुमति दस्तुर, दर्ताको प्रमाणपत्र, नवीकरण दस्तुर, चालक अनुमति पत्र दरखास्त दस्तुर, बाटो इजाजत दस्तुर, जाँचपास प्रमाणपत्रको दरखास्त दस्तुर, पञ्जीकृत दस्तुर, यातायात सेवा सञ्चालन गर्ने अनुमति दस्तुर, प्रशिक्षण केन्द्र, कारखाना, वर्कशप सञ्चालन अनुमति पत्र दस्तुर, अनुसूची ४ मा इम्बोस्ड गरे वापतको दस्तुर जस्ता दस्तुरहरु तोकेको छ । लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्थामा सामान्यतया राजस्वका दरहरु जनप्रतिनिधिहरुको संगमस्थल संसदबाट तोकिएको उपयुक्त हुने मान्यता अनुरूप यी दरहरु नियमावलीबाट भन्दा ऐनबाटै तोकन मनासिव हुन्छ । राजस्वका दरहरु समयानुकूल परिवर्तन भइरहने हुँदा यस प्रकारका राजस्वका दरहरु विषयगत कानूनबाट तोकन भन्दा प्रदेश आर्थिक ऐनबाट तोकन उपयुक्त देखिन्छ ।

(ग) सवारी साधन करका दर र अन्य शुल्क तथा दस्तुरमा पुनरावलोकन

सवारी साधन करका दरमा प्रदेशगत रूपमा अनेकता देखिदा कार्यान्वयन जटिल भएकाले सबै प्रदेशहरुले एक आपसमा समन्वय गरी समान दर कायम गर्दा प्रशासनिक झन्झट कम हुने देखिन्छ । यस्तो समन्वय गर्नका लागि अन्तरसरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐनको प्रावधान अनुरूप नेपाल सरकारको अर्थमन्त्रीको संयोजकत्वमा गठित अन्तरसरकारी वित्त परिषद्को बजेट तर्जुमा पूर्व बस्ने बैठक उपयुक्त मञ्च बन्न सक्दछ ।

प्रदेशगत रुपमा तुलना गर्दा, प्रदेश नं. १ का सवारी साधनका दरहरु अन्य प्रदेशसँग सवारी साधनको प्रकृति अनुसार केही घटी देखिन्छ अतः अन्य प्रदेशहरूसँग एकरूपता (Compatible) नहुञ्जेल सम्मका लागि अन्य प्रदेशहरूलाई आधार मानी निर्धारित रकमलाई पूर्णाङ्कित (Rounding off) गर्न उपयुक्त हुन्छ । यसो गर्दा, करदातालाई ठूलो व्ययभार पनि नपर्ने, राजस्व असुलीको प्रशासनिक झन्झट कम हुने र थप राजस्व पनि परिचालन हुने अपेक्षा गरिएको छ । यसका अतिरिक्त, एक प्रदेशबाट अर्को प्रदेशमा सरुवा सहमति लिँदा, बिक्री गर्दाका बखत सनाखत गर्दा र विदेशमा रहेका व्यक्तिले लाइसेन्स नवीकरण गर्दा थप शुल्क लगाउन सकिन्छ ।

(घ) दस्तुर/शुल्कका दरमा पुनरावलोकन सम्बन्धमा

अन्य प्रदेशहरूको तुलनामा प्रदेश नं. १ को सवारी तथा यातायात नियमावलीको अनुसूचीमा उल्लिखित दरहरु नियमावलीको तर्जुमाका बखत २०७७ सालमा तोकिँदा नै न्यून रहेको र हालसम्म ती दरहरूमा समय सापेक्ष वृद्धि नभएको हुँदा यस्ता दरहरूलाई अन्य प्रदेशसँग तुलनीय र समय सापेक्ष बनाउन उपयुक्त हुन्छ । मूलतः अनुसूची ६ को जाँचपास प्रमाणपत्रको दरखास्त दस्तुर र प्रतिलिपि दस्तुर (रु. १०० देखि ३०० सम्म), अनुसूची ७ को प्रदुषण परीक्षण गर्दा लाग्ने दस्तुर (सवारीको प्रकृति अनुसार पूँजीको आधारमा रु. १०० देखि २५० सम्म) अत्यन्त न्यून देखिन्छ भने अनुसूची ८ र १० को पञ्जीकृत दस्तुर र यातायात सेवा सञ्चालन गर्ने दस्तुर पनि समय सापेक्ष बनाउन उपयुक्त देखिन्छ । सवारीको प्रकृति अनुसार प्रशिक्षण केन्द्र, कारखाना/वर्कशपको सञ्चालन अनुमति प्रमाणपत्र दस्तुर न्यूनतम रु. ५,००० देखि रु. १३,००० सम्म, यिनीहरूको नवीकरण दस्तुर रु. ३,००० देखि ११,००० सम्म तिनको नामसारी-ठाउँसारी दस्तुर रु. ५०० देखि २,५०० सम्म लगायतमा पुनरावलोकन गर्न उपयुक्त देखिन्छ ।

(ङ) छुटहरु (Exemptions) मा पुनरावलोकन

प्रदेश आर्थिक ऐन, २०७९ को अनुसूची २ ले सवारी साधन कर सम्बन्धी केही छुटहरूको प्रावधान राखेको देखिन्छ । यी छुटहरूको औचित्य र उपादेयताको सम्बन्धमा पुनरावलोकन आवश्यक छ । विशेषतः भाडाका बस, मिनिबस तथा माइक्रोबसका सवारी साधनहरूले विद्यार्थी, जेष्ठ नागरिक र अपाङ्गता भएका व्यक्तिलाई सहूलियतको रुपमा भाडामा छुट दिए वापत त्यस्ता सवारी साधनका धनीले तिर्नुपर्ने सवारी साधन करमा साठी प्रतिशत छुट दिइएको छ । तर यस्तो सवारी साधनले सम्बन्धितलाई छुट दिए कि दिएनन् ? छुट दिएको भए कुनले वर्षमा कति दिए यकिन गर्न सकिने अवस्था नहुँदा कानूनको पालना नगर्नेले पनि छुट पाइरहेको अवस्था हुनसक्ने देखिँदा यस सम्बन्धमा गर्न सकिने विकल्प पत्ता लगाउन आवश्यक छ । त्यस्तैगरी, २० वर्ष आयु पूरा भई सार्वजनिक सवारी साधन स्त्रयापमा गएको वा सञ्चालन गरी जफत गरिएको वा सवारी दुर्घटनामा परी स्त्रयाप गर्न लामो समयसम्म सञ्चालनमा नरहेको अवस्थामा त्यस्ता सवारी साधनले वार्षिक रुपमा तिर्नुपर्ने सवारी कर नतिरेको कारणले दर्ता खारेजी गरेको रहेनछ भने त्यस्ता सवारी साधनमा लाग्ने करमा पछिल्लो एक आर्थिक वर्षको कर २०८० असार मसान्तभित्र बुझाएमा अन्य कर छुट हुने प्रकृतिको योजना प्रत्येक वर्ष ल्याउन उपयुक्त हुँदैन । यसलाई आगामी आर्थिक वर्षदेखि हटाउन उपयुक्त हुन्छ । त्यस्तै कुनै सार्वजनिक सवारी साधनको दश वर्षभन्दा माथि जतिसुकै आर्थिक वर्षको सवारी साधन कर तिर्न बाँकी रहेछ भने पचास प्रतिशत सवारी साधन कर छुट दिई त्यस्तो सवारी साधन सञ्चालन गर्न पाउने व्यवस्थालाई पछिल्ला वर्षहरूमा पनि निरन्तरता दिँदा करको नियमित परिपालना (Compliance) घट्ने हुँदा यो प्रावधानमा पनि पुनरावलोकन आवश्यक छ । यसका साथै छुटमा आयात भएका कृषि ट्र्याक्टरहरु ढुवानी प्रयोजनमा लैजाँदा थप दस्तुर तिर्नुपर्ने हुँदा यसमा प्रभावकारी अनुगमन आवश्यक छ ।

(च) सफ्टवेयरमा एकरूपता र एकीकरण

संघबाट यातायात व्यवस्था कार्यालयहरु प्रदेशमा हस्तान्तरण भएपछि संघीय यातायात व्यवस्था विभागले शुरु गरेको सफ्टवेयर VRS (Vehicle Registration System) मा नै ती कार्यालयहरूले काम गरिरहेको अवस्थामा बागमती प्रदेशले

गत आर्थिक वर्ष २०७८/७९ देखि नयाँ सफ्टवेयर शुरु गरेको र त्यसमा काम गरिरहेको स्थिति छ भने अन्य प्रदेशहरूले VRS मा नै काम गरिरहेका छन् ।

वस्तुतः मुलुकको सवारी साधन तथा यातायातको विषय सबै प्रदेशसँग अन्तर सम्बन्धित हुने र यी विषयलाई प्रदेशगत रूपमा छुट्याएर हेर्दा समस्या पर्ने स्पष्ट छ । यही तथ्यलाई हृदयंगम गरी नेपालको संविधानको धारा २३६ ले प्रदेश भित्र वा अन्तर प्रदेश सेवा तथा वस्तु ढुवानी कुनै अवरोध बिना निर्वाध रूपमा गर्न पाउने व्यवस्था समेत गरेको छ । यस हिसाबले सबै प्रदेशहरूमा सवारी/ढुवानीका साधनको दर्ता, नवीकरण र यातायातको व्यवस्थापनमा एकरूपता हुनुपर्ने र सबै सवारी/ढुवानी साधनको सबै विवरण र यातायात सम्बन्धी अनुमति लगायतका सम्पूर्ण विवरणमा सबै प्रदेशहरूको पहुँच हुनु अनिवार्य छ । यसका लागि सवारी साधन तथा यातायात व्यवस्था सम्बन्धी एउटै सफ्टवेयरमा काम भएमा मात्र जीवन्त रूपमा एक अर्कालाई यस सम्बन्धी सूचनाहरू प्रवाह हुन सक्दछ । यसो भएमा मात्र मुलुक भित्रका कुनैपनि सवारी/ढुवानी साधन र यातायातको व्यवस्थापनमा प्रचलित कानूनको अधिनमा रही सबै प्रदेश यातायात कार्यालयहरूले आवश्यक सेवा प्रदान गर्न सक्दछन् । तसर्थ, हाल अपूर्ण रूपमा रहेको VRS Software लाई VRTMS (Vehicle Registration and Transport Management System) को पूर्णता दिई सातवटै प्रदेशको स्वीकृतिमा एउटै सफ्टवेयरमा कार्य सञ्चालन गर्ने प्रबन्ध गर्न र उक्त VRS को संशोधन/सुधारका बखत राजस्व सम्बन्धी हाल प्रचलनमा रहेको RMIS (Revenue Management Information System) सँग पनि तादात्म्यता रहने व्यवस्था मिलाउन आवश्यक छ ।

(छ) सवारी/ढुवानी साधनको अद्यावधिक तथ्याङ्क विवरण

हाल मुलुक भित्र तीन प्रकारका सवारी तथा ढुवानी साधनहरूका नम्बरहरू प्रचलनमा रहेका छन् । पहिलेदेखि प्रचलनमा रहेका अञ्चल अनुसारका नम्बरहरू पनि छन्, संघीयता पछि शुरु भएका प्रदेशगत नम्बर प्लेटहरू पनि छन् र हाल बागमती प्रदेशमा शुरु भएको इम्बोषड नम्बर पनि प्रचलनमा छन् । मुलुक भित्र एउटै प्रकृतिको नम्बर प्लेट नहुँदा अपराधिक गतिविधिमा बढोत्तरी भएको अवस्था एकातिर छ भने प्रदेशगत रूपमा सवारी साधनको प्रकृति (कार/जीप/भ्यान, ट्रक, कन्टेनर, मोटरसाईकल आदि) अनुसार र सञ्चालन अनुसार (निजी/भाडा आदि) का सवारी/ढुवानी साधनको तथ्याङ्कमा दोहोरोपनाका कारण त्यस्ता साधनको एकिन तथ्याङ्क समेत छैन । यातायात सम्बन्धी विज्ञहरूले हाल मुलुकमा करिब ३७ लाख सवारी साधन रहेको र प्रदेश नं. १ मा मात्र ६ लाख भन्दा बढी सवारी/ढुवानी साधन हुनसक्ने अनुमान गरेका छन् । तर यी सवारी साधनहरूको विस्तृत विवरण आठवटा यातायात कार्यालयहरू र सेवा कार्यालयहरूसँग Manual रूपमा रजिष्टरमा रहे तापनि तिनको स्वचालित प्रणालीमा प्रविष्ट नहुँदा एकीकृत तथ्याङ्क पाउन कठिनाई भएकोले हचुवामा नीतिगत निर्णयहरू लिनु पर्ने अवस्था छ । यसर्थ, प्रदेश अन्तर्गतका सबै सवारी साधनहरूलाई तिनको प्रकृति अनुसार स्वचालित प्रणालीमा प्रविष्ट गर्ने र त्यसलाई अद्यावधिक गर्न अत्यावश्यक देखिएको छ ।

(ज) राजस्व बक्यौताको विवरण एकिन गरी राजस्व असुल गर्ने

अन्य प्रदेशहरूमा जस्तै प्रदेश नं. १ मा पनि सवारी साधनहरूको हस्तचालित (Manual) विवरण मात्र रहेका कारणले वार्षिक रूपमा ब्लुबुक नवीकरणबाट प्राप्त हुनुपर्ने राजस्व करदाताको स्वेच्छिक योगदान (Volunteer Contribution) मा आधारित छ । कुन सवारी साधनले कुन कुन वर्षको सवारी साधन कर बुझाउन बाँकी छ भन्ने एकिन अभिलेख छैन । फलतः राजस्व बक्यौता रकम एकिन पनि छैन र यस्तो विवरण नहुँदा बक्यौता रकम असुली तर्फ कार्यालयको तर्फबाट कुनै प्रयास पनि भएको छैन । प्रदेश नं. १ मै कार्यरत यातायात विज्ञहरू यस्तो बक्यौता नतिर्ने सवारी साधनको संख्या एक लाख भन्दा बढी हुन सक्ने र यस्तो राजस्व बक्यौता रकम करिब एक अर्बको हाराहारी हुनसक्ने अनुमान गर्दछन् ।

यसर्थ, सर्वप्रथम हाल प्रदेश नं. १ मा Manual रूपमा रहेका सवारी साधनको सम्पूर्ण, सवारीधनीको सम्पर्क नम्बर, इमेल लगायतको विवरण र तिनले भुक्तानी गरेको वर्षसमेत देखिने गरी स्वचालित प्रणालीमा प्रविष्ट गर्नु अनिवार्य छ । यस्तो विवरण

तयार भएपछि हालसम्मको बक्यौता रकम भुक्तानीका लागि ताकेता गर्ने, असुल गर्ने र पछिल्ला वर्षहरूमा दिइएको म्यादभित्र कर नतिर्ने सवारी साधनहरूलाई नियमानुसार कर भुक्तानीका लागि पनि समयमै ताकेता गर्ने र नतिरेमा उक्त सवारी साधन गुड्न नदिने सम्मका कारवाही गर्ने परिपाटी शुरु गर्नु आवश्यक छ ।

यसका अतिरिक्त, रुट इजाजत पत्र नलिई सवारी/दुवानी साधन चलाएका, नवीकरण नगरेका, अनुमति बिना सञ्चालनमा रहेका प्रशिक्षण केन्द्र, कारखाना/वर्कशप, प्रदुषण जाँचपास प्रमाण नलिई सञ्चालन भएका सवारी साधन आदिको विवरण पनि एकिन हुनेगरी स्वचालित प्रणालीमा प्रविष्ट गरी राजस्व असुलीको नियमित रूपमा अनुगमन गर्नु अपरिहार्य छ ।

(झ) सरकारी सवारी साधनको राजस्व असुली

२०६४ सालदेखि नै सरकारी सवारी साधनले निजी सवारी साधन सरह सवारी साधन कर तिर्नुपर्ने कानूनी व्यवस्था गरिएको हो । तर विगतमा अधिकांश सवारी साधनले राजस्व भुक्तानी गरेका छैनन् । सडकमा सवारी साधनको छड्के निरीक्षणको क्रममा कर तिरेको नदेखिएता पनि यस्ता सवारी साधनलाई कडाई गरिएको छैन । यसका अतिरिक्त, सरकारी आयोजनाहरूको नाममा अस्थायी पैठारी भएका सवारी-दुवानी साधनहरू पनि त्यस्ता आयोजनाको नाममा दर्ता गरी सञ्चालन गर्नुपर्ने कानूनी व्यवस्था पनि उल्लङ्घन भएको छ ।

यसर्थ, प्रदेश नं. १ मातहतका सबै सरकारी कार्यालयहरूमा सञ्चालनमा रहेका सवारी/दुवानी साधनको सवारी करको बक्यौता रकम सम्बन्धित कार्यालयले बजेट प्रबन्ध गरी अनिवार्य भुक्तानी गर्न/गराउन आवश्यक देखिन्छ । यसका अतिरिक्त, सरकारी आयोजनाहरूलाई विशेष परिपत्र गरी त्यस्ता आयोजनाहरूको नाममा पैठारी भएका सवारी/दुवानी साधनको अस्थायी दर्ता गरी सञ्चालन गराउने र यस्तो गरेको छ/छैन भनी सम्बन्धित यातायात कार्यालयले कम्तीमा वर्षमा २ पटक अनुगमन गर्ने प्रबन्ध गर्नु आवश्यक छ । यसका साथै सडकमा सवारी साधन चेकिङ्गको क्रममा भएको कारवाहीको क्रममा असुल भएको दण्डजरिवाना रकम पनि प्रदेश सञ्चित कोषमा दाखिला गर्ने गरी नेपाल सरकारसँग समन्वय गर्न आवश्यक छ ।

(ज) सवारी साधन अनुमति पत्रको व्यवस्थापनमा सुधार

नेपालको संविधानको अनुसूची ९ बमोजिम सवारी साधन अनुमति पत्रको विषय तीन तहको साझा अधिकारमा रहे तापनि कार्यविस्तृतिकरण प्रतिवेदनको आधारमा यसलाई प्रदेशको कार्यसूचीमा राखिएको छ । लाइसेन्स प्रदान गर्ने सन्दर्भमा हाल संघको VRS मा सबै प्रदेशहरूले काम गरिरहेको अवस्था छ । यस अनुसार लाइसेन्सको दरखास्त लिने, लिखित र ट्रायलको परीक्षा लिने र तिनको नतिजा प्रकाशन गर्ने काम प्रदेश यातायात व्यवस्था कार्यालयहरूले गरिरहेका छन् भने उक्त नतिजाको आधारमा अनुमति पत्रको स्मार्टकार्ड जारी गर्ने काम संघीय यातायात व्यवस्था विभागबाट र वितरण गर्ने काम सम्बन्धित यातायात व्यवस्था कार्यालयबाटै हुने गरेको छ ।

लाइसेन्स प्रदान गर्ने सम्बन्धमा यसका सबै प्रक्रियाहरू पूरा गरी लाइसेन्स प्राप्त गर्न एक वर्षसम्म पनि लाग्ने गरेकोले सेवाग्राहीहरू हैरान छन् । फलतः कतिपय प्रदेशहरूले आ-आफूले छुट्टै सफ्टवेयर बनाई स्मार्टकार्डको रूपमा लाइसेन्स प्रिन्ट गराई यसलाई सहज बनाउन सकिने तर्क सहित आ-आफूले लाइसेन्स जारी गर्न खोजेको देखिन्छ । यसरी हरेक प्रदेशले छुट्टाछुट्टै लाइसेन्स जारी गर्दा यसको गुणस्तर, अनेकता र यसको वैधता परीक्षणमा पनि समस्या पर्ने तर्फ पनि चनाखो हुन आवश्यक छ । तसर्थ, हाललाई एकीकृत सफ्टवेयरमा आवश्यक परिमार्जन गरी हालको प्रक्रिया अनुसार लाइसेन्स जारी गर्ने र सेवा प्रवाहमा भएको ढिलाइलाई कम गर्न संघले स्मार्टकार्ड छपाईमा तदारुकता ल्याउने र ट्रायल परीक्षा उत्तीर्ण गरेको महिना दिनभित्र लाइसेन्स जारी गरिसक्ने प्रबन्ध गर्नु उपयुक्त हुन्छ । वैदेशिक रोजगारीमा रहेका कतिपय व्यक्तिको लाइसेन्स जारी गर्ने वा नवीकरण गर्ने सम्बन्धमा परेको कठिनाई समेतलाई दृष्टिगत गरी पासपोर्ट जारी गर्दाकै प्रक्रिया जस्तै दोब्बर दस्तुर

लिए ७ दिनभित्र जारी गर्ने र थप पचास प्रतिशत दस्तुर लिएर १५ दिनभित्र जारी गर्ने व्यवस्था गर्दा पनि राजस्व परिचालन र सेवा प्रवाहका दृष्टिले उपयुक्त हुन्छ ।

(ट) सडक रुट अनुमतिमा सुधार

हाल प्रदेशभित्रको रुटको अनुमति (Route Permit) संघीय यातायात कानून अनुसार सम्बन्धित जिल्लाको प्रमुख जिल्ला अधिकारीको संयोजकत्वमा गठित समितिले निर्णय गरी प्रदान गरिरहेको अवस्था छ । अन्तर प्रदेश रुटको अनुमति पत्र भने संघीय यातायात व्यवस्था विभागले प्रदान गरिरहेको अवस्था छ । प्रदेश भित्रको रुट अनुमति दिने समितिमा प्रमुख जिल्ला अधिकारीको संयोजकत्व त्यति सान्दर्भिक नरहेकोले यो कार्य प्रदेशको सञ्चार तथा यातायात मन्त्रालयको समन्वयमा प्रदेश यातायात व्यवस्था कार्यालयले जारी गर्न र नवीकरण गर्न उपयुक्त देखिन्छ । यस्तो रुटको अनुमति नलिने र लिएकोमा पनि नवीकरण नगर्ने हुँदा अनुगमन आवश्यक छ । अन्तर प्रदेश संघीय सडकमा गुड्ने सवारी साधनको रुटको अनुमति चाहिँ हालको जस्तै संघीय यातायात व्यवस्था विभागले जारी गर्न/नवीकरण गर्न मनासिव देखिन्छ ।

(ठ) भौतिक पूर्वाधारमा सुधार र दरबन्दीमा पुनरावलोकन

प्रदेश नं. १ मा रहेका ८ वटा यातायात व्यवस्था कार्यालयहरू/यातायात सेवा कार्यालय मध्ये झापा, इलाम, इटहरीमा अवस्थित कार्यालयहरू आफ्नै भवनमा छन् भने ओखलढुङ्गा, उदयपुर, विराटनगर र धनकुटामा अवस्थित कार्यालयहरू भाडामा रहेका छन् । कार्यालयहरू अवस्थित रहेका आफ्नै भवन र भवनमा अवस्थित कार्यालयहरूको विन्यास (Layout) अनुकूल छैनन् । अझ स्पष्टरूपमा भन्दा यी कार्यालयहरूको भवन भित्रको अवस्थिति सेवामैत्री छैनन् ।

यसर्थ, यातायात व्यवस्था कार्यालयहरूको कामको प्रकृति अनुसार हाल भइरहेको भवनलाई सेवामैत्री बनाउन र भाडामा रहेका जिल्लाहरूमा सेवामैत्री आधुनिक कार्यालय भवन निर्माण गरी सञ्चालनमा ल्याउन यथाशीघ्र पहल हुन आवश्यक देखिन्छ । पर्याप्त स्थान र काउन्टर सहितको ग्राहकमैत्री (Customer Friendly) कार्यालय भवन, स्टाफ क्वार्टर, परीक्षाहल, ट्रायल सेन्टर, प्रदूषण जाँचस्थल एउटै परिसर भित्र निर्माण भएमा एकातिर सेवा प्रवाहमा सहजता आउने छ भने अर्कोतिर अभिलेख प्रणाली व्यवस्थित गर्न पनि सहयोग पुग्नेछ । यसका लागि सम्बन्धित स्थानीय तहले जग्गा उपलब्ध गराउने र सूचना तथा यातायात मन्त्रालयले निर्माणका लागि आवश्यक बजेट व्यवस्था गर्ने गरी प्रदेश र स्थानीय तहबीच सहकार्य हुन उपयुक्त हुन्छ ।

यातायात व्यवस्था कार्यालय र यातायात सेवा कार्यालयहरूलाई संयोजन गर्ने काम प्रदेश नं. १ सदरमुकाम स्थित सञ्चार तथा यातायात मन्त्रालयले गरेको छ । अन्य प्रदेशहरूको अभ्यास हेर्दा यातायात सम्बन्धी जिम्मेवारी कतै श्रम मन्त्रालयसँग जोडिएको छ भने कतै भौतिक पूर्वाधार मन्त्रालयसँग जोडिएको देखिन्छ । झट्ट हेर्दा यातायात र सञ्चार एउटा मन्त्रालयमा मिल्दोजुल्दो पनि छैन । तसर्थ, संघमा पनि यातायात र भौतिक पूर्वाधार मन्त्रालय एउटै रहेको समेत सन्दर्भमा संगठन तथा व्यवस्थापन सर्भेक्षण गरी संगठनको स्वरूप र दरबन्दी एकिन गर्न उपयुक्त देखिन्छ ।

प्रदेश नं. १ का जिल्लाहरूमध्ये ७ वटा जिल्लामा ८ वटा कार्यालयहरू स्थापना भइसकेका छन् । भौगोलिक दूरीको हिसाबले उदयपुर, सुनसरी, मोरङ, झापा, इलाम, धनकुटा नजिक नजिक छन् । सोलुखुम्बु, संखुवासभा, ताप्लेजुङ, खोटाङ, भोजपुर, तेह्रथुम, पाँचथरमा कार्यालय नहुँदा सेवाको हिसाबले अर्को जिल्लामा जानुपर्ने अवस्था छ । जिल्लागत हिसाबले यी जिल्लाहरूमा पनि कार्यालय थप्दा सार्वजनिक खर्चमा अझै दबाव/चाप पर्ने अवस्था हुन्छ । यसर्थ, भौगोलिक रूपमा जोडिएको नजिकको जिल्लाबाट सेवा लिन सकिने गरी बाँकी जिल्लाहरूमा संगठन विस्तार गर्न उपयुक्त हुन्छ ।

स्थापित कार्यालयहरूको कार्यबोझको आधारमा दरबन्दी विश्लेषण गर्दा, अपर्याप्त देखिए तापनि यस्तो अपर्याप्ततालाई करारको नियुक्तिले सम्बोधन गरेको देखिँदा उपयुक्त नै देखिन्छ । यातायात व्यवस्था कार्यालयमा नवौं तहको र यातायात सेवा

कार्यालयमा आठौं तहको कार्यालय प्रमुखको व्यवस्था रहे तापनि पदपूर्तिको अभावमा गुणस्तरीय सेवा प्रभावित भएको हुँदा शीघ्र पदपूर्ति गर्न र पदपूर्ति नहुञ्जेल संघको कर्मचारीहरुबाट व्यवस्थापन गर्न आवश्यक छ । जिल्लास्थित यातायात व्यवस्था कार्यालय र यातायात सेवा कार्यालयको संगठनात्मक स्वरूप, कार्य विवरण, कार्यबोझ र दरबन्दी समेतको संगठनात्मक तथा व्यवस्थापन अध्ययन आवश्यक देखिन्छ ।

(ड) स्थानीय तहमा कार्य हस्तान्तरण

प्रदेश नं. १ को सवारी तथा यातायात ऐन एवं आर्थिक ऐनको दफा ३ को उपदफा (२) ले टाँगा, रिक्सा, अटोरिक्सा, विद्युतीय रिक्सा (इ-रिक्सा) र पावर ट्रिलरमा सम्बन्धित नगरपालिका वा गाउँपालिकाले सवारी साधन कर लगाई असुल गर्ने व्यवस्था गरेको हुँदा यो व्यवस्था कार्यान्वयनमा ल्याउन प्रदेश तथा स्थानीय तहहरुबीच समन्वय आवश्यक छ ।

(ढ) दस्तुरमा एकरूपता र आर्थिक ऐनको व्यवस्था

प्रदेशगत रूपमा तुलना गरी हेर्दा, सवारी साधन र यातायात सम्बन्धी दस्तुरमा एकरूपता छैन । यस्ता दरहरु लगाउने कानून पनि फरक-फरक रहेको पाइयो । उदाहरणका लागि, प्रदेश नं. १ मा सवारी साधन कर तथा यातायात व्यवस्था सम्बन्धी नियमावलीले दस्तुर/शुल्क तोकेको छ भने मधेश प्रदेश, बागमती प्रदेश, गण्डकी प्रदेश, लुम्बिनी प्रदेश, कर्णाली प्रदेश र सुदूरपश्चिम प्रदेशमा आर्थिक ऐनबाटै यस्तो दस्तुर/शुल्क लगाएको देखियो । सामान्यतः राजस्वका दायरा र दरहरु व्यवस्थापिका संसदबाट पारित हुने ऐनबाट लगाउनु उपयुक्त हुन्छ । यसो गर्दा जनतालाई लगाउने कर जनप्रतिनिधिहरुबाट अनुमोदन हुने र यस्ता दरहरु विषयगत कानून संशोधनबाट वर्षेनी परिवर्तन/संशोधन गर्न झन्झटिलो हुने हुँदा प्रदेश आर्थिक ऐनबाटै गर्न बढी वैज्ञानिक देखिन्छ ।

मनोरञ्जन कर

प्रदेशभित्र सञ्चालन हुने मनोरञ्जनजन्य क्रियाकलापमा मनोरञ्जन कर लगाई असुल उपर गरिने व्यवस्था गरिएको छ । मनोरञ्जन करको टिकटमा लगाइएको कर स्थानीय तहका गाउँपालिका र नगरपालिकाका प्रशासनले सङ्कलन गर्ने कानूनी व्यवस्था छैन । मनोरञ्जनजन्य क्रियाकलापमा समावेश गरिएका विषयको सूची पनि ज्यादै सानो रहेको छ । यो सूची विस्तार गरी थप मनोरञ्जन कर असुल गर्न सकिन्छ । सङ्कलन गरिएको रकम स्थानीय तहको सञ्चित कोषमा साठी प्रतिशत जम्मा हुने र चालीस प्रतिशत मात्र सम्बन्धित प्रदेशको सञ्चित कोषमा मासिक रूपमा दाखिला गर्नु पर्दछ । अहिलेसम्मको अभ्यास हेर्दा मनोरञ्जन कर सबै स्थानीय तहबाट उठ्न नसकेको अवस्था देखिन्छ । तसर्थ, मनोरञ्जनसँग सम्बन्धित क्रियाकलापहरु जस्तै फन पार्क, वाटर गार्डेन, बाल उद्यान जस्ता मनोरञ्जन स्थलहरु निर्माण र सञ्चालनमा प्रदेश सरकार र स्थानीय सरकारको सहकार्य हुन सकेमा एकातिर राजस्व वृद्धि हुने र अर्कातिर प्राकृतिक सौन्दर्यता कायम गर्न समेत सहयोग पुग्ने हुँदा यसका लागि सम्भाव्यता अध्ययनका आधारमा सहलगानीमा जोड् दिन आवश्यक देखिन्छ ।

प्राकृतिक स्रोत

(क) नदीजन्य पदार्थको उपयोग सम्बन्धमा

- प्रदेशभित्र १७७ नदी खोलामा ३०९ स्थानमा नदीजन्य पदार्थको सम्भाव्यता भए पनि ७४ स्थानमा मात्र वातावरणीय परीक्षण हुन सकेको छ । वातावरणीय परीक्षण भएकैमा पनि पूरै उत्खनन हुन सकेको छैन । वार्षिक परिपूरण हुने यी स्रोतमा ध्यान दिन सके पर्याप्त राजस्व उठ्न सक्दछ ।
- नेपाल सरकारले स्वीकृत गरी जारी गरेको ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा उत्खनन, बिक्री तथा व्यवस्थापन मापदण्ड र स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ बाझिएको हुँदा नदी जन्य पदार्थको व्यवस्थापन, उत्खनन, बिक्री र बिक्रीबाट प्राप्त राजस्वको बाँडफाँट सम्बन्धमा कानूनी स्पष्टता कायम गर्न आवश्यक देखिन्छ ।

- संघीय वन ऐन, २०७६ को दफा ४९ को (झ) अनुसार वनक्षेत्रबाट बग्ने नदीबाट ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा वा माटो झिक्ने, गोल वा चून पोल्ने वा यी वस्तुहरूबाट अरु तयारी माल बनाउने वा सङ्कलन गर्ने र खनिज पदार्थ निकाल्ने वा सङ्कलन गर्ने काम गरेमा यो ऐन बमोजिम कसुर गरेको मानिने र सोही अनुसार जरिवाना हुने व्यवस्था भएकोले वन क्षेत्र भित्रका यस्ता नदीजन्य पदार्थहरू स्थानीय सरकारको क्षेत्राधिकार भित्र नपर्दा ठेक्का लगाई बिक्री गर्न नपाइने तर तस्करीबाट ती पदार्थहरूको अनियमित रूपमा निकासी हुँदै आएको हुँदा अनियमित निकासीलाई रोक्न नियमानुसार घाटगद्दी गर्न सकिने गरी ऐनको उक्त प्रावधानलाई संशोधन गरी राजस्वको दायरामा ल्याउन सकिने सम्भावना रहेको हुँदा संघीय ऐन संशोधनमा सबै सम्बद्ध पक्षबाट पहल गर्न र बिक्री वितरण सम्बन्धमा छुट्टै कार्यविधि बनाई लागू गर्न आवश्यक देखिन्छ । निश्चित मापदण्ड र अध्ययनको आधारमा त्यस्ता वन पैदावार उपयोगको व्यवस्था मिलाउन उपयुक्त देखिन्छ **(मध्यमकालीन सुझाव)** ।
- प्रदेश वन ऐन, ७७ को दफा ६३ (१) अनुसार राष्ट्रिय तथा प्रादेशिक वन क्षेत्रबाट नदीजन्य पदार्थले वातावरण, वस्ती, खेतीपातीमा नकारात्मक प्रभाव पार्ने तत्वहरू पहिचान भएमा वा वन क्षेत्रभित्रको खोलानालाबाट नदीजन्य पदार्थको सङ्कलन एकद्वार प्रणालीबाट गर्नु पर्ने र उपधारा (२) ले नदीजन्य पदार्थको सङ्कलन गर्न तयार पारिएको वातावरणीय अध्ययन प्रतिवेदन डिभिजन वन कार्यालयको सिफारिसमा मन्त्रालय वा मन्त्रालयले तोकेको निकायले स्वीकृत गर्ने र स्वीकृत वातावरणीय अध्ययन प्रतिवेदनमा औँल्याएका सुझावहरू कार्यान्वयन गर्ने गराउने जिम्मेवारी सम्बन्धित स्थानीय तहको हुने व्यवस्था गरेको छ । साथै उपधारा (४) ले संकलित नदीजन्य पदार्थको बिक्री वितरणको लागि लिइने शुल्क तोकिएको बमोजिम हुने र त्यस्तो आय डिभिजन वन कार्यालय मार्फत प्रदेश सञ्चित कोषमा जम्मा गर्नु पर्ने व्यवस्था गरेको छ । ऐनको सो व्यवस्थाको प्रभावकारी कार्यान्वयन हुन सके प्रदेश सरकारको थप राजस्व सङ्कलन हुन सक्ने सम्भावना रहेको छ **(अल्पकालिन सुझाव)** ।
- स्थानीय तहहरूले प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षणका आधारमा नदीजन्य पदार्थको ठेक्का लगाउने र ठेकेदारले प्रत्यक्ष रूपमा खोलाबाटै उत्खनन गर्ने वर्तमान परिपाटीको सही रूपमा नियमन र अनुगमन नहुँदा निकासी परिमाण किटान गर्न कठिन हुने गरेकाले खोलानालाको दोहन बढ्दै गएको देखिन्छ । तसर्थ, यसलाई निरुत्साहित गर्न र दिगो उपयोगको सुनिश्चितता गर्न स्थानीय तहहरूले प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षणका आधारमा आफैं वा ठेक्का मार्फत नदी जन्य पदार्थको घाटगद्दी गर्ने र त्यसपछि मात्र नदीजन्य पदार्थको बिक्री ठेक्का लगाउने व्यवस्था गर्न सकेमात्र खोलानालाको अनियमित दोहन नियन्त्रण भई दीगो उपयोग हुने र यसबाट पर्याप्त राजस्व सङ्कलन गर्न सकिने सम्भावना रहेको हुँदा यस किसिमको कार्य गर्न स्थानीय सरकारहरूलाई प्रदेश सरकारले सहजीकरण गर्न जरूरी देखिन्छ **(अल्पकालीन सुझाव)** ।
- प्राकृतिक स्रोत सबै स्थानमा एकैनासले प्राप्त नहुने हुँदा जुन स्थानमा रहेको छ त्यसै स्थानका स्थानीय तहहरूले बढी उपभोग गर्दा स्रोत नहुने स्थानका लागि न्याय हुँदैन । तसर्थ, प्राकृतिक स्रोतको न्यायोचित वितरण गर्ने सिद्धान्त अनुसार नदीजन्य पदार्थको बिक्रीबाट प्राप्त राजस्व स्थानीय तहका लागि साठी प्रतिशत र प्रदेश सरकारका लागि चालीस प्रतिशत बाँडफाँट गर्ने वर्तमान कानूनी प्रावधानलाई संशोधन गरी प्रदेश सरकारलाई अतिरिक्त हिस्सा प्राप्त हुने व्यवस्था मिलाउन आवश्यक छ । यसबाट प्रदेश सरकारले अन्य स्थानीय तहहरूलाई थप अनुदान प्रदान गर्न सक्ने सामर्थ्य बढ्ने देखिन्छ **(मध्यमकालीन सुझाव)** ।

(ख) जलस्रोत सम्बन्धमा

नेपालमा जलस्रोतको प्रचूर उपलब्धता भएकाले यसको उपयोगबाट ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन गरी पेट्रोलियम पदार्थलाई विस्थापित गर्न सकिने र यसबाट थप राजस्व सङ्कलन गर्न सकिने सम्भावना रहेकाले यस सम्बन्धी अध्ययन तथा अनुसन्धानका लागि संघीय सरकारसँग सहकार्य गर्न आवश्यक देखिन्छ **(दीर्घकालीन सुझाव)** ।

(ग) खानी, खनिज तथा अन्य प्राकृतिक स्रोत

- प्रदेश नं. १ अन्तरगत प्रसस्त मात्रामा प्राकृतिक स्रोतहरूको संभावना रहेकोले संघीय तहका सम्बद्ध निकायहरूसँगको सहकार्यमा प्राकृतिक पुँजी (Natural Capital) को डाटावेश तयार गर्ने र सोको विकास तथा प्रवर्धनमा नीजि क्षेत्रसँगको सहकार्य विस्तार गर्न उपयुक्त हुन्छ (अल्पकालीन सुझाव) ।

वन पैदावार

- प्रदेश वन नियमावली तर्जुमा नभएको कारणले धेरै पुराना, लडे-पडेका काठ, दाउराहरू जङ्गलबाट निकासी गरी बिक्री गर्न नसक्दा प्रशस्त काठ दाउराहरू खेर गइरहेका छन् । कम्तीमा निजी वन सरह वन उपभोग गर्दा पनि ठूलो रकम राजस्व प्राप्त हुने र आयात गर्दाको विदेशी विनिमय वचत हुन जान्छ । यसका लागि वन नियमावलीमा सो सम्बन्धी व्यवस्था गरी लागू गर्न सके प्रदेश सरकारको राजस्व वृद्धि हुन सक्ने देखिन्छ । तसर्थ प्रदेश सरकारले यथाशिघ्र प्रदेश वन नियमावली तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गर्न आवश्यक देखिन्छ (अल्पकालीन सुझाव) ।
- वातावरण संरक्षण र स्थानीय समुदायको हितको प्रतिकूल नहुने गरी वनक्षेत्रमा गरिने प्रकृतिमा आधारित पर्यटन गतिविधिलाई वन नियमावली, २०७९ को नियम २ को (ज) ले “पर्यापर्यटन” को रूपमा परिभाषित गरेको छ । हाल वन क्षेत्रमा सञ्चालन हुने पर्यापर्यटनबाट सङ्कलन हुने रकममध्ये ५ प्रतिशत राजस्व प्रदेश सञ्चित कोषमा दाखिला हुँदै आएको पनि छ । जलथल र तिनजुरे, मिल्के, जलजले लगायतका वन क्षेत्रको संरक्षण गर्दै पर्यापर्यटनको विकास गरी राजस्व आर्जन गर्न सकिने सम्भावना देखिन्छ (मध्यकालीन सुझाव) ।
- झापा र भोजपुर जिल्लामा लाहा खेती शुरुवात भएको तथा भोजपुर, संखुवासभा र धनकुटा जिल्लामा रुद्राक्ष खेतीमा प्रदेश सरकारको लगानी बढ्दै गएको हुँदा यस व्यवसायमा संलग्न कृषकहरूलाई प्रोत्साहित गर्दै उत्पादन वृद्धिमा जोड दिने र बजारसम्मको पहुँचमा सहजीकरण गर्न सकेको अवस्थामा यसलाई करको दायरामा ल्याउन सकिने देखिन्छ । यसबाट प्रदेश सरकारको राजस्वमा थप योगदान पुग्न सक्ने सम्भावना देखिन्छ (दीर्घकालीन सुझाव) ।
- हिमाली तथा पहाडी क्षेत्रमा पाइने लौठ सल्ला, रुद्राक्ष, लाहा, सुपारी, चिराइतो, प्राकृतिक रबर लगायतका जडीबुटीहरूका सम्बन्धमा अनुसन्धान गर्न वनस्पती विभागसँग सहकार्य गरी राजस्वका थप सम्भावनाहरू पहिचान गर्न सके प्रदेश सरकारको आन्तरिक राजस्व बढ्ने सम्भावना रहेकाले अध्ययन अनुसन्धानका क्षेत्रमा सहकार्य गर्न आवश्यक देखिन्छ (मध्यकालीन सुझाव) ।
- संघीय वन ऐन, २०७६ को दफा ३९ ले कसैले आफ्नो हकको प्रमाण नपुऱ्याएसम्म नदी वा खोलाले बगाई ल्याएको, किनारा लागेको, अड्केको वा डुबेको काठ वा बेवारिसी अवस्थामा रहेको काठको स्वामित्व प्रदेश सरकारको हुने व्यवस्था गरेको छ । तर हाल यो प्रावधान कार्यान्वयनमा आउन नसक्दा प्रदेश सरकारले थुप्रै राजस्व गुमाउँदै आएको छ । तसर्थ कानूनी व्यवस्थाको पूर्णरूपमा कार्यान्वयन गर्न सके प्रदेश सरकारले थप राजस्व सङ्कलन गर्न सक्ने सम्भावना रहेको देखिन्छ (अल्पकालीन सुझाव) । पुरातात्विक

पर्यटन शुल्क

नेपाल सरकारबाट हस्तान्तरण भई आएका प्रदेश सरकारले तोकेका प्रदेश अन्तर्गतका वन क्षेत्र भित्र पर्ने पर्यटन स्थल, पर्यटकीय पदमार्ग, पर्यटकीय हवाई चार्टर्ड उडान, तालतलैया, गुफा, धार्मिक स्थल तथा प्रदेश भित्रका पुरातात्विक, ऐतिहासिक, धार्मिक तथा साँस्कृतिक स्थल, संग्रहालय, पार्क, रक क्लाइबिड, बन्जिजम्पीङ्ग, च्यापटिङ्ग, क्यानोनिङ्ग, जिपफ्लाएर, प्याराग्लाइडिङ्ग, केबलकार, पिकनिक स्थल, भ्युटावर, ट्रेकिङ्ग तथा ट्राभल एजेन्सी, क्युरियो तथा पर्यटकीय सामग्रीहरू बिक्री वितरण गर्ने व्यवसाय जस्ता पर्यटकीय स्थल, पर्यटन व्यवसाय र पर्यटकीय क्रियाकलापमा पर्यटन शुल्क

लगाई असुल उपर गर्ने व्यवस्था रहेको छ । पर्यटन शुल्कको नियमन र प्रशासन सम्बन्धित नगरपालिका वा गाउँपालिकाले गर्ने र संकलित रकमको स्थानीय तह र प्रदेश सरकारका बीचमा बाँडफाँट गर्ने प्रावधान प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन हुन सकेको छैन । तसर्थ, यस क्षेत्रबाट राजस्व आर्जन गर्न पर्यटकीय क्षेत्रहरूको विकास र प्रवर्धनमा जोड दिन आवश्यक देखिन्छ ।

विज्ञापन कर

स्थानीय तहले आफ्नो क्षेत्रभित्र केन्द्र लगायत मुख्य-मुख्य बजार तथा व्यापारिक केन्द्रहरूमा विज्ञापन कर लगाउन सक्ने कानूनी व्यवस्था रहेको छ । यस्तो विज्ञापन कर सम्बन्धित गाउँपालिका र नगरपालिकाले लगाउने र असुल गर्ने व्यवस्था प्रदेश आर्थिक ऐनले गरेको छ । यसको अलवा संकलित गरिएको कर स्थानीय विभाज्य कोषमा जम्मा गरी उठेको रकमको साठी प्रतिशतले हुन आउने रकम सम्बन्धित स्थानीय कोषमा र चालीस प्रतिशतले हुन आउने रकम प्रदेश सञ्चित कोषमा मासिक रूपमा दाखिला गर्नुपर्नेछ भन्ने कानूनी व्यवस्था छ । यस शीर्षक अन्तर्गत पनि धेरै स्थानीय तहहरूले राजस्व सङ्कलन गर्न सकेका छैनन् । प्रदेशका राजधानी लगायत मुख्य बजार, व्यापारिक केन्द्रहरूमा यसको सम्भावना पर्याप्त रहेको छ । यस शीर्षक अन्तर्गत प्रदेश सरकारको वार्षिक आम्दानी ज्यादै न्यून रहेको छ । विज्ञापनजन्य क्रियाकलापमा समावेश गरिएका विषयको सूची पनि ज्यादै सानो रहेको छ । यो सूची विस्तार गरी थप विज्ञापन कर असुल गर्न सकिन्छ । तसर्थ, विज्ञापन कर सम्बन्धमा स्थानीय तह र प्रदेश सरकारका बीचमा छलफल, अन्तरक्रिया र आवश्यक नीतिगत व्यवस्था गरी विज्ञापन करलाई पनि आन्तरिक राजस्वको महत्वपूर्ण स्रोतका रूपमा ल्याउन आवश्यक देखिन्छ । प्रदेश सरकारले स्थानीय तहलाई विज्ञापन कर लगाउन र असुल गर्न सहयोग एवम् सहजीकरण गरेमा विज्ञापन कर आन्तरिक राजस्व आयको महत्वपूर्ण स्रोत हुनसक्ने देखिन्छ ।

कृषि आयमा कर

कृषि मन्त्रालय र मातहतका कार्यालयहरूबाट प्रवाह गरिने सेवामा सेवा शुल्क लगाइने र असुल उपर गरिने कानूनी व्यवस्था सबै प्रदेश तहमा रहेको पाइन्छ । सेवा शुल्क प्रशासन प्रदेश सरकारबाट हुने, कृषि कर र सेवा शुल्क कृषि मन्त्रालय अन्तर्गतका निकायहरूले सङ्कलन गरी प्रदेश सञ्चित कोषमा दाखिला गर्नुपर्ने व्यवस्था गरिएको छ । अतः सङ्कलन भएको कर तथा गैरकर राजस्व रकम प्रदेश सञ्चित कोषमा दाखिला गरी सोको विवरण प्रदेश लेखा नियन्त्रण कार्यालय, सम्बन्धित मन्त्रालय र आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालयमा पठाउनु पर्ने गरी आर्थिक ऐनमा व्यवस्था रहेको छ । सातवटै प्रदेशहरूको आर्थिक ऐन, २०७९ को विश्लेषण गर्दा मधेश प्रदेशको आर्थिक ऐनमा कृषि आयमा कर सम्बन्धी व्यवस्था भएको पाइदैन भने प्रदेश नं. १ मा कृषि आयमा करको सट्टा कृषि सेवा शुल्कको कानूनी प्रावधान गरिएको छ । बाँकी अन्य प्रदेशमा स्वयम् घोषणा गरी आफ्नो कृषि आय प्रस्तुत गर्ने कृषकलाई तोकिएको दरमा कृषि आयमा कर लगाउने कानूनी प्रावधान गरिएको छ । जस अनुसार बागमती प्रदेशले रु. ५ लाख सम्मको आयमा शुन्य कर; गण्डकी, लुम्बिनी र सुदूरपश्चिम प्रदेशले वार्षिक रु. १० लाखसम्मको आयमा शुन्य कर लगाउने र सोभन्दा माथिको आयमा कर लगाउने नीति लिएका छन् । सुदूरपश्चिम प्रदेशले चालु आ.व. २०७९/८० मा कृषि आयमा लाग्ने कर पूर्णरूपमा छुट दिने कानूनी व्यवस्था गरेको छ । यसरी समग्रमा सातवटै प्रदेशको आर्थिक ऐनको विश्लेषण गर्दा प्रदेश सरकारहरू कृषि आयमा कर लगाउने विषयलाई प्राथमिकतामा राखेको देखिदैन । तसर्थ, आगामी दिनमा प्रदेश सरकारको एकल अधिकारका रूपमा रहेको कृषि आयमा कर सम्बन्धमा छुट्टै कानून बनाई कृषि व्यवसायमा संलग्न कृषकहरूलाई करको दायरामा ल्याई राजस्व वृद्धि गर्न आवश्यक देखिन्छ ।

छुट्टै कृषि आयमा कर सम्बन्धी कानून नबनेसम्म संघीय आय कर ऐन, २०५८ संशोधन गरी हटाएको कृषि आयमा कर आ.व. २०७९/८० देखि नै प्राप्त हुने गरी प्रदेश नं. १ को कर तथा गैरकर सम्बन्धी ऐन, २०७५ मा संशोधन गर्ने । संशोधन ऐनको

विधेयकको खाका अनुसूची ९ मा प्रस्तुत गरिएको छ । प्रदेश नं. १ सरकारले कृषि आयमा कर सम्बन्धी छुट्टै कानून बनाउनु पर्ने । स्थानीय तहमा कृषि आयमा लागेका करहरू प्रदेश सरकारको दायरामा ल्याउनु पर्ने ।

संगठित रूपमा कृषि व्यवसाय गर्ने परिपाटीको विकासका लागि कृषि उत्पादनमा आधारित सहकारीहरूको प्रवर्धन गर्दै सहकारीमा रहेको वचतलाई कृषि उत्पादन र भण्डारण जस्ता क्षेत्रमा लगानी गर्न प्रदेश सरकारले सहकारीहरूलाई आवश्यक सहजीकरण गर्ने र उत्पादित बस्तुको बजारीकरणको सुनिश्चितता प्रदान गर्न विशेष कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्न सके संगठित कृषि व्यवसायबाट प्रदेशले राजस्व प्राप्त गर्न सक्दछ ।

प्राकृतिक स्रोत उपयोग शुल्क

प्रदेश आर्थिक ऐन, २०७९ को दफा ६ मा प्राकृतिक स्रोत सङ्कलन तथा बिक्री शुल्क अन्तर्गत अनुसूची ४ मा प्रदेशभित्र उत्पादन हुने सिमेण्टको हकमा उद्योगबाट उत्पादित सिमेण्ट उद्योगभन्दा बाहिर पठाउँदा प्रति बोरा एक रुपैयाँका दरले प्राकृतिक स्रोत उपयोग वापतको शुल्क लगाउने र स्थानीय तहले सङ्कलन गरी संकलित रकमको चालीस प्रतिशत रकम प्रदेश सञ्चित कोषमा दाखिला गर्ने व्यवस्था गरेको छ । तर हाल यो व्यवस्था प्रयोगमा आउन सकेको देखिँदैन । खानी खनिजको उपयोग वापत त्यस्ता उद्योगहरूले संघीय सरकारलाई तोकिएको कर बुझाउँदै आएको कारण यो कर दोहोरो पर्न गएकोले प्रदेश सरकारले यसको सट्टा नेपालको संविधानको अनुसूची ६ को बुँदा १९ अनुसार प्रदेश सरकारले वातावरण व्यवस्थापन सम्बन्धी काम गर्नु पर्ने हुँदा प्रदुषण शुल्कको नाममा राजस्व उठाउन सक्ने देखिन्छ । यसका लागि प्रदेश आर्थिक ऐनमा सो व्यवस्था गर्न उपयुक्त हुन्छ ।

आवश्यक संयन्त्रको गठन सम्बन्धमा

प्रदेश राजस्वका वर्तमान र भविष्यमा पर्न सक्ने समस्याहरूको स्थायी व्यवस्थापन गर्न निम्नानुसारका संयन्त्र हुनु उपयुक्त हुन्छः

- ✓ प्रदेश स्तरीय राजस्व चुहावट नियन्त्रण अनुगमन समिति गठन गरी यसले राजस्व चुहावट नियन्त्रण सम्बन्धी अध्ययन, अनुसन्धान र नियन्त्रणमा जोड् दिन सके प्रदेश सरकारको राजस्वमा वृद्धि हुन सक्दछ । तसर्थ, राजस्वमा हुने गरेको चुहावट नियन्त्रण गर्न एक उच्च स्तरको अनुगमन समिति गठन गर्न आवश्यक देखिन्छ ।
- ✓ प्रदेश सरकारको खर्च गर्ने क्षमता वृद्धिमा पूँजीगत बजेट खर्चको योगदान बढाउने उपायहरू पहिचान गरी सोही बमोजिम आन्तरिक राजस्व वृद्धि मिलान गर्ने गरी अनुगमन गर्न स्थायी संयन्त्र क्रियाशिल गर्दछ ।
- ✓ आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालयका सचिवको संयोजकत्वमा रहेको राजस्व परामर्श समितिले अध्ययन प्रतिवेदनले सिफारिस गरेको कार्ययोजनाको कार्यान्वयनमा आवश्यक समन्वय र सहजीकरण गर्नु पर्दछ ।
- ✓ स्थानीय तहसँग राजस्वका सम्भाव्य विवाद सिर्जना नहुने व्यवस्था मिलाउन तथा बाँडफाँड हुने राजस्व सम्बन्धी प्रदेश आर्थिक ऐनका व्यवस्था स्थानीय आर्थिक ऐनमा समेत संबोधन हुने व्यवस्थाका लागि प्रदेश समन्वय परिषद् अन्तर्गत राजस्व समिति बनाई निम्न काम गर्ने व्यवस्था मिलाउनु उपयुक्त हुन्छः

- प्रदेश आर्थिक विधेयक पेश भए लगत्तै आषाढ तीन गतेभित्र प्रदेश आर्थिक ऐनका राजस्वहरू मध्ये स्थानीय तहबाट उठाउनु पर्ने राजस्वका शीर्षकका दर तथा तरीकाबारे स्थानीय आर्थिक ऐनमा समावेश हुनुपर्ने मस्यौदा सहित जानकारी गराउने ।
- प्रत्येक महिना सकिए पछिको पहिलो हप्ताभित्र बाँडफाँट हुने राजस्व वितरणबारे छलफल गर्ने ।
- सम्भाव्य विवाद पहिचान गरी विवाद सिर्जना हुन नदिने व्यवस्था मिलाउने ।

लैङ्गिक समानता तथा सामाजिक समावेशीकरण

- ✓ आवधिक योजना तथा वार्षिक कार्यक्रम बनाउँदा राजस्वको लैङ्गिक विश्लेषणको आधारमा समावेश गर्नुपर्ने नीति तथा कार्यक्रमहरू राजस्व परामर्श समितिलाई सिफारिस गर्ने ।
- ✓ आर्थिक नीति तथा अरु विकास नीतिहरूको विश्लेषण गरी लैङ्गिक समानता प्रवर्द्धनका लागि आवश्यक नीतिगत तथा कार्यगत सुझाव प्रदेश राजस्व परामर्श समितिलाई सिफारिस गर्ने ।
- ✓ राजस्वको लैससास विश्लेषणको लागि दक्ष जनशक्तिको परिचालन गरी प्रदेश अन्तर्गतका मन्त्रालयहरू र राजस्व सङ्कलन गर्ने कार्यालयहरूमा लैससासको राजस्व सङ्कलन दायराको सूचकाङ्क निर्धारण गरी सबै तोकिएका राजस्वको शीर्षकहरूमा लैससासको प्रत्याभूति गराउने ।
- ✓ प्रदेशस्तरीय राजस्वको लैङ्गिक विश्लेषणको लागि पैरवी, क्षमता विकास, अनुसन्धान र अनौपचारिक क्षेत्रमा महिलाले गरेको राजस्वको योगदानको उत्तरदायित्व बोध गराउनको लागि संयन्त्र तयार गर्नको लागि सहकार्य गर्ने ।
- ✓ मनोरञ्जन करमा महिला र अल्प संख्यकको योगदान बढी भएको अनुमान गरिएता पनि तथ्यांकीय आधार नभएकाले उनीहरूको योगदान देखिने गरी सूचकहरू तयार गर्ने ।
- ✓ ढुङ्गा, गिटी, बालुवा, वन पैदावर र पर्यटन व्यवसायमा महिला र अल्प संख्यकहरूबाट संकलित राजस्वको परिमाणको आधारमा उनीहरूलाई कर छुट दिने वा सामाजिक सुरक्षाको व्यवस्था मिलाउने ।

समन्वय र सहकार्य

नेपालको संविधानको धारा २३५ (१) र (२) बमोजिम प्रदेश र स्थानीय तहहरूबीच समन्वय कायम गर्न र कुनै विवाद उत्पन्न भएमा त्यसको समाधान गर्न कानून बनाउने उद्देश्यले प्रदेश एवं स्थानीय तहहरूले आपसमा सञ्चार तथा समन्वय गर्ने संस्थागत संरचनाको परिकल्पना गरेको छ । संविधानप्रदत्त यस प्रकारको जिम्मेवारीले गर्दा संघीय कानूनको कुनै व्यवस्थालाई आधार बनाउनु पर्दा स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन २०७४ ले दफा १०५ मा **प्रदेश समन्वय परिषद्को** गठन र सञ्चालनसम्बन्धी व्यवस्था गरेको छ । तत्कालीन अवस्थामा यस्तो परिषद् प्रदेश सरकारका मुख्यमन्त्रीको अध्यक्षतामा प्रदेश सरकारका मन्त्री, प्रदेशसभाका सदस्यहरू, जिल्ला समन्वय समितिका प्रमुख/उपप्रमुखहरू र गाउँ तथा नगरपालिकाका प्रमुख/उपप्रमुखहरू सदस्य रहने ठूलो संरचनाको परिकल्पना गरेको थियो । तर संघ, प्रदेश र स्थानीय तह समन्वय तथा अन्तर-सम्बन्ध ऐन २०७७ ले प्रदेश समन्वय परिषद्को गठनलाई सीमित संख्या निर्धारण गरेको छ । यस ऐनको दफा २४ ले **प्रदेश समन्वय परिषद्का** सदस्यहरूको प्रतिनिधित्वलाई परिभाषित गरेको छ भने दफा २४ ले यसको काम कर्तव्य र अधिकारलाई प्रष्ट पारेको छ । यस सन्दर्भमा स्थानीय तह र प्रदेश सरकारको राजस्वका साझा अधिकारहरूको प्रयोगलाई थप प्रभावकारी बनाउन यस परिषद्को नियमित बैठक गरी राजस्व परिचालनमा देखिएका समस्या समाधानका विषयमा छलफल गरी निष्कर्षमा पुग्न आवश्यक हुन्छ । साथै, प्रदेश समन्वय परिषद्लाई प्राविधिक सहयोग गर्ने गरी उक्त परिषद् अन्तर्गत राजस्व हेर्ने उपसमितिको व्यवस्था गर्न सकिन्छ ।

नेपाल सरकार, प्रदेश र स्थानीय तहबीच अन्तर-सरकारी वित्त व्यवस्थापनका विषयमा आवश्यक परामर्श तथा समन्वय गर्नका लागि अन्तर-सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ को दफा ३३ को अनुसार **अन्तर-सरकारी वित्त परिषद्को** व्यवस्था गरिएको छ । प्रदेश नं. १ को राजस्व सम्भाव्यता अध्ययन प्रतिवेदनले सुझाव गरेका वर्तमान कानूनमा गर्नु पर्ने संशोधन, नयाँ कानूनको निर्माण र राजस्व परिचालनका सम्बन्धमा तीन तहका सरकारकाहरूका बीचमा गर्नु पर्ने समन्वय र सहकार्यका विषयमा अन्तर-सरकारी वित्त परिषदमा छलफल गरी निर्णयमा पुग्न आवश्यक हुन्छ ।

विशेषगरी, वन, खानी तथा जलस्रोतको उपयोग, वातावरण प्रदूषण, निर्माणजन्य सामग्री ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा उत्खनन तथा व्यापार जस्ता कुरामा सावधानीपूर्वक व्यवस्थापन र सदुपयोगमा सबै तहका सरकारहरूका बीचमा सहकार्य, समन्वय र

सहयोगको महत्वपूर्ण भूमिका हुन्छ । यसरी नै, ढुङ्गा, गिट्टी तथा बालुवा सम्बन्धी स्रोतको परिचालन, व्यवस्थापन र नियमन सम्बन्धमा संघीय संरचना बमोजिमका तीनै तहका सरकारको स्पष्ट भूमिका सहित यसको सञ्चालन, व्यवस्थापन र नियमन गर्ने गरी कानूनी बन्दोवस्त गर्ने र यसको कार्यान्वयनमा सबै पक्षको समन्वय हुन सकेको अवस्थामा नदी जन्य पदार्थको दीगो उपयोग गर्दै पर्याप्त राजस्व सङ्कलन गर्न सकिने अवस्था छ ।

संघ, प्रदेश र स्थानीय तहवीचको सरोकारका क्षेत्रहरू जस्तै प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण वा वातावरणीय प्रभाव मूल्याङ्कन जस्ता प्रतिवेदन प्रदेश डाटावेशमार्फत विशेष प्रकारको नम्बर (Unique Document Identification Number) जारी गरी डाटावेश तयारी, अद्यावधिक, सूचना आदानप्रदान, नियन्त्रण र अनुगमनलाई सहजता बनाउन सकिन्छ ।

संगठन संरचना

हालको संगठन संरचनामा परिवर्तन गरी निम्न बमोजिमको संगठन संरचना बनाउन उपयुक्त हुने देखिन्छ:

मन्त्रालयमा अर्थ सचिव र राजस्व सचिव गरी दुई सचिवको व्यवस्था गर्ने । प्रत्येक सचिव अन्तर्गत दुईवटा महाशाखाहरूको व्यवस्था गर्ने।सचिव (अर्थ) अन्तर्गत बजेट, योजना, कार्यक्रम तथा अनुगमन महाशाखा र प्रशासन महाशाखा रहने । सचिव (राजस्व) अन्तर्गत राजस्व महाशाखा र वित्तीय क्षेत्र व्यवस्थापन महाशाखा रहने । यसरी मन्त्रालयमा चारवटा महाशाखाहरूको व्यवस्था गरी संगठन पुनर्संरचना गर्न उपयुक्त हुनेछ ।

सचिव (अर्थ) अन्तर्गत राखिने बजेट, योजना, कार्यक्रम तथा अनुगमन महाशाखामा बजेट तथा कार्यक्रम शाखा, योजना तथा अनुगमन शाखा र आर्थिक विश्लेषण शाखा गरी तीन वटा शाखाहरू राख्ने र प्रशासन महाशाखामा कर्मचारी प्रशासन, कानून तथा फैसला शाखा, आर्थिक प्रशासन र सूचना प्रविधि शाखा गरी चारवटा शाखा रहने । महाशाखाको प्रमुख उपसचिव तहको कर्मचारी हुने व्यवस्था गरी शाखाको प्रमुख भने अधिकृत आठौं राख्ने व्यवस्था गर्ने । यसरी दुई महाशाखा अन्तर्गत कूल सात शाखाहरूको व्यवस्था गर्ने ।

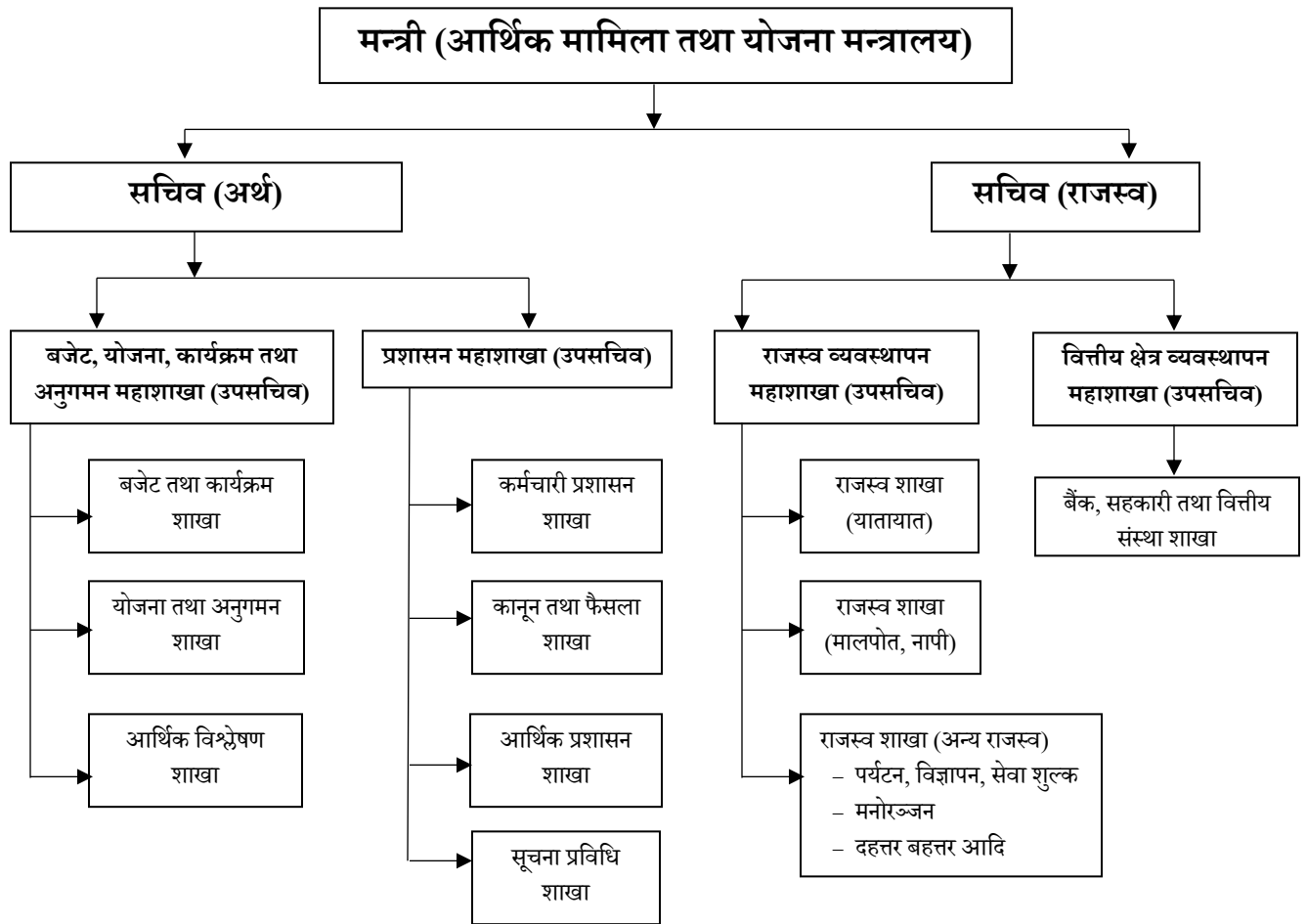
सचिव (राजस्व) अन्तर्गत राजस्व महाशाखा र वित्तीय क्षेत्र व्यवस्थापन महाशाखा गरी दुई महाशाखाहरू रहने । राजस्व महाशाखामा यातायात राजस्व, मालपोत राजस्व र अन्य राजस्व गरी तीनवटा विषयक्षेत्र हेर्ने गरी तीनवटा शाखा राख्ने र वित्तीय क्षेत्र व्यवस्थापन महाशाखामा एक सचिव (राजस्व) अन्तर्गत कूल चार वटा शाखाहरू राख्ने । यातायातबाट प्राप्त हुने सवारी साधन कर राजस्व प्रदेश राजस्वको प्रमुख स्रोत भएकाले यसमा जोड दिनु पर्छ । जिल्ला स्तरमा पनि यातायात कार्यालय हुने भएकाले यो शाखाले जिल्लास्तरका कार्यालयहरूसँग समन्वय गर्न सक्ने व्यवस्था गर्नुपर्छ । जिल्ला कार्यालयहरूमा अधिकृत सातौं वा छैटौं तहको कर्मचारी राख्दा उपयुक्त हुनेछ । प्राविधिक कर्मचारी पनि जिल्ला कार्यालयहरूमा कार्यरत हुने भएकाले तह मिलानमा यो विषयमा ध्यान दिनु पर्छ ।

मालपोत शाखाले मालपोत राजस्वका विषय क्षेत्रमा कार्य गर्नेछ । अन्य राजस्व शाखाले भने सवारी साधन कर वा यातायात राजस्व र मालपोत राजस्व बाहेकका अन्य सबै राजस्वहरू (कृषि आय कर, पर्यटन शुल्क, रोयल्टी, विज्ञापन कर, मनोरञ्जन कर, सेवा शुल्क, उपभोक्ता शुल्क आदि विषयका) को प्रशासन गर्नेछ ।

वित्तीय व्यवस्थापन महाशाखा अन्तर्गत हाललाई बैंक तथा वित्तीय संस्था नामको एक शाखा मात्र राख्ने । पछि कार्यवोझ वढ्दै गएमा यो शाखालाई बैंक र वित्तीय शाखा गरी टुक्र्याउन पनि सकिन्छ । दुवै महाशाखाको प्रमुख उपसचिवतहको कर्मचारी हुने व्यवस्था गरी शाखाको प्रमुख भने अधिकृत आठौं राख्ने व्यवस्था गर्ने । आवश्यकता अनुसारका अन्य कर्मचारीहरूको व्यवस्था गर्ने ।

परम्परागत रूपमा खटाइएका प्रशासनिक कर्मचारीको अलावा अर्थशास्त्री, तथ्याङ्कशास्त्री, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट र सूचना प्रविधि विज्ञ जस्ता प्रविधिक ज्ञान भएका कर्मचारीहरूको दरवन्दी सिर्जनामा जोड दिनु पर्छ । कर्मचारीहरूलाई नियमित रूपमा

तालिम दिने व्यवस्था मिलाउनु पर्छ । प्रदेश नं. १ को राजस्व प्रशासनलाई चुस्त, दुरुस्त र व्यवहारिक बनाउने आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय अन्तरगतको संगठन संरचना निम्नानुसार प्रस्ताव गरिएको छ ।



८.२ रणनीति तथा कार्यनीति

माथि उल्लेखित सुझावहरूको आधारमा राजस्व सुधारको लागि निम्नानुसारको रणनीति तथा कार्यनीतिहरू तय गरिएका छन् ।

तालिका ४४ : रणनीति तथा कार्यनीति

| विषय क्षेत्र | रणनीति | कार्य नीतिहरू |
|----------------|-----------------------------------|---|
| नीति तथा कानून | आवश्यक कानूनहरूको निर्माण गर्ने । | १. प्रतिवेदनमा सुझाइए अनुसार प्रदेश आर्थिक ऐनमा सुधार गरिनेछ । २. प्रदेश आफैले बनाउने सक्ने पेशागत बिषयगत कानूनहरू मध्ये २० प्रतिशत कानून यसै आर्थिक वर्ष भित्र र बाँकी आगामी वर्षहरूमा क्रमशः निर्माण गरिनेछ । ३. संघले बनाएपछि मात्र बनाउन सकिने कानूनहरूको निर्माणको लागि संघीय सरकारसँग समन्वय गरिनेछ । |
| राजस्व प्रशासन | राजस्व प्रशासनको पुनरावलोकन गर्ने | १. आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालयको हालको संगठन संरचनामा परिमार्जन गरी राजस्व प्रशासन अन्तरगत राजस्व सचिवको नेतृत्वमा राजस्व प्रशासनको व्यवस्था गरिनेछ । |

| विषय क्षेत्र | रणनीति | कार्य नीतिहरू |
|-----------------------|---|--|
| | | <p>२. संगठन संरचना तयार गरी आवश्यक स्थानमा उपयुक्त पूर्वाधार र आवश्यक जनशक्ति सहितको कर कार्यालयहरू स्थापना गरिनेछ ।</p> <p>३. राजस्व प्रशासनको लागि आवश्यक थप दरबन्दी, राजस्व कार्यालयहरूको निर्माण गर्न, जग्गाको स्रेस्ता सुधारको लागि संघीय सरकारको सहयोग लिइनेछ ।</p> |
| अनुगमन तथा मूल्याङ्कन | अनुगमन तथा मूल्याङ्कनलाई भरपर्दो र नतिजामूलक बनाउने । | <p>१. आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालयमा रहेको प्रदेश राजस्व परामर्श समितिलाई अनुगमन तथा मूल्याङ्कनको भूमिका निर्वाह गर्न सक्नेगरी आवश्यक कानूनी प्रवन्ध र साधन स्रोतको व्यवस्था गरिनेछ ।</p> <p>२. अनुगमन कार्यमा स्थानीय तह तथा सम्बन्धित सङ्घीय निकायहरूको भूमिका सुनिश्चित गरिनेछ ।</p> |
| कृषि आयमा कर | आवश्यक कानूनी प्रवन्ध गर्ने । | <p>१. प्रदेश कर तथा गैर कर ऐन, २०७५ संसोधन गरी कृषि आयमा कर लगाउने प्रक्रिया थप गरिनेछ ।</p> <p>२. कृषि आयमा कर सम्बन्धी छुट्टै विषयगत कानूनको तर्जुमा गरिनेछ ।</p> |
| सवारी साधन कर | १. यातायात व्यवस्थालाई करदातामैत्री बनाउने । | १. कार्यालय भवन, प्रदुषण जाँचस्थल, ट्रायलसेन्टर, परीक्षाहल र कर्मचारी आवास सहितको कार्यालय परिसरको निर्माण गरिनेछ । |
| | | २. विद्युतीय भुक्तानीको व्यवस्था गरिनेछ । |
| | | ३. कर तथा शुल्क तिर्ने बारेमा एप्स मार्फत सूचना दिने व्यवस्था मिलाईनेछ । |
| | २. राजस्व सङ्कलनमा रहेका अस्पष्टताहरू हटाई समाधान गरी राजस्व असुलीमा सुधार गर्ने | १. संघ देखिकै राजस्व बक्यौता असुलीलाई पहिलो प्राथमिकतामा राखी कार्यान्वयन गरिनेछ । |
| | | २. राजस्व छुटको औचित्य पुनरावलोकन गरिनेछ । |
| | | ३. संघमा जम्मा भइरहेको ट्राफिक जरिवाना जस्ता रकम प्रदेश सञ्चित कोषमा जम्मा हुने व्यवस्था मिलाइनेछ । |
| | ४. सवारी साधन सम्बन्धी कर तथा शुल्कमा अन्तर प्रदेश प्रतिष्पर्धा कम गर्न प्रदेशगत समन्वय गरिनेछ । | |
| | ५. सवारी साधन करका सवालका बारेमा संघीय सरकार, अन्य प्रदेश सरकारहरू र स्थानीय तहसँग आवश्यक छलफल र अन्तरक्रिया गरिनेछ । | |
| घरजग्गा रजिष्ट्रेशन | १. घर जग्गा रजिष्ट्रेशन सम्बन्धी मौजुदा कानूनमा सुधार र आवश्यक कानून तर्जुमा गर्ने । | १. राजस्वका दरलाई समसामयिक तथा दायरालाई विस्तार गर्न प्रदेश आर्थिक ऐनलाई परिमार्जन गरिनेछ । |
| | | २. प्रदेश नं. १ सरकारको कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ बमोजिम नियमावली तथा कार्यविधि तर्जुमा गरी घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क असुलीलाई व्यवस्थित गरिनेछ । |
| | | ३. मालपोत कार्यालयसँग नियमित समन्वय गरिनेछ । |
| | २. घरजग्गाको न्यूनतम मूल्याङ्कन निर्धारण सम्बन्धमा व्यवस्थापकीय र कानूनी सुधार गर्ने । | १. न्यूनतम मूल्याङ्कन समितिमा प्रदेश सरकारको सहभागिताका लागि मालपोत नियमावली, २०३६ मा संशोधन गर्न नेपाल सरकारसँग आवश्यक समन्वय गरिनेछ । |
| | | २. घर जग्गाको न्यूनतम मूल्याङ्कनलाई यथार्थपरक बनाउन स्थानीय तहसँग समन्वय र सहकार्य गरिनेछ । |
| | | ३. बैंक, वित्तीय संस्थाबाट हुने धितो मूल्याङ्कन, गाउँ तथा नगरपालिकाबाट हुने सम्पत्ति मूल्याङ्कन र मालपोत कार्यालयबाट हुने न्यूनतम मूल्याङ्कन जस्ता |

| विषय क्षेत्र | रणनीति | कार्य नीतिहरू |
|----------------------|---|--|
| | | सबै प्रयोजनका लागि एउटै मूल्याङ्कन प्रयोग हुने व्यवस्थाका लागि व्यवस्थापन सूचना प्रणालीको विकास गरिनेछ । |
| ढुङ्गा, गिटी, बालुवा | नदी तथा खानीजन्य पदार्थको दिगो उपयोगको व्यवस्था गर्ने । | १. प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण (IEE) को गुणस्तर कायम गर्न सम्बन्धित स्थानीय तहहरूलाई सहजिकरण गरिनेछ । |
| | | २. प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षणको प्रतिवेदन अनुसार ढुङ्गा, गिटी, बालुवाको उत्खनन गर्न सहजिकरण गरिनेछ । |
| | | ३. ढुङ्गा, गिटी, बालुवाको उपयोगसम्बन्धी तराई, पहाड र हिमाल तथा शहरी र ग्रामीण क्षेत्रको लागि फरक फरक मापदण्ड र मूल्य सहितको कानूनी व्यवस्था गरिनेछ । |
| | | ४. ढुङ्गा गिटी बालुवाको प्रयोगका सम्बन्धमा रहेका सवालहरूको बारेमा संघीय सरकार, प्रदेशहरू र स्थानीय तहसँग आवश्यक छलफल र अन्तरक्रिया गरिनेछ । |
| प्राकृतिक स्रोत | वन पैदावरको उपयोग गर्ने । | १. वन पैदावरको उपयोगको लागि आवश्यक कानूनी प्रबन्ध गरिनेछ । |
| | | २. कानूनी प्रावधानको कार्यान्वयनको लागि सङ्घीय सरकारसँग आवश्यक समन्वय गरिनेछ । |
| प्राकृतिक स्रोत | प्राकृतिक स्रोतको अध्ययन र उपयोगमा जोड दिने | ३. अनुगमन संयन्त्रको परिचालन गरिनेछ । |
| | | ४. वनका सम्बन्धमा रहेका सवालहरूको बारेमा संघीय सरकार, अन्य प्रदेश सरकारहरू र स्थानीय तहसँग आवश्यक छलफल र अन्तरक्रिया गरिनेछ । |
| | | १. प्रदेश भित्र सम्भावना रहेका तालतलैया, जलविद्वुत, लोठ सल्लो, रुद्राक्ष, लाह, सुपारीको पात, जडिवुटी, अल्लो आदिको प्रवर्द्धन तथा उपयोगका लागि व्यवसायिक कृषकहरूलाई प्रोत्साहन गरिनेछ । |
| | | २. आवश्यक अध्ययन र अनुसन्धानका लागि संघीय सरकारसँग सहकार्य गरिनेछ । |
| विज्ञापन कर | विज्ञापन कर प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन गर्ने । | १. विज्ञापन करका थप क्षेत्रहरू पहिचान गरी कर लगाउन स्थानीय तहलाई सहजिकरण गरिनेछ । |
| मनोरञ्जन कर | मनोरञ्जनजन्य क्रियाकलापहरूको प्रवर्द्धन गर्ने | १. मनोरञ्जन करका थप क्षेत्रहरू पहिचान गरी कर लगाउन स्थानीय तहलाई सहजिकरण गरिनेछ । |
| | | २. मनोरञ्जन करका सम्बन्धमा रहेका सवालहरूको बारेमा स्थानीय तहसँग आवश्यक छलफल र अन्तरक्रिया गरिनेछ । |
| | | ३. मनोरञ्जन स्थलहरूको संभावना रहेका क्षेत्रहरूमा सार्वजनिक निजी साझेदारीको अवधारणा अनुसार लगानी गरी करको दायरा बृद्धि गरिनेछ । |
| पर्यटन शुल्क | पर्यटन स्थलहरूको विकास गर्ने | १. पर्यटन क्षेत्रका सम्बन्धमा रहेका सवालहरूको बारेमा संघीय सरकार, अन्य प्रदेश सरकारहरू र स्थानीय तहसँग आवश्यक छलफल र अन्तरक्रिया गरिनेछ । |
| | | २. पर्यटकीय सम्भावना भएका ठाउँहरूको पहिचान गरिनेछ र गुरुयोजना निर्माण र कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ । |

८.३ सुधार कार्ययोजना

प्रदेन नं. १ को राजस्व सभाव्यता अध्ययनका आधारमा राजस्व प्रशासनलाई चुस्तदुरुस्त राखी राजस्व परिचालनलाई थप प्रभावकारी बनाउन तहगत सरकारहरूको महत्वपूर्ण भूमिका रहने हुँदा यसलाई सम्बोधन गर्न निम्नानुसार कार्ययोजना प्रस्ताव गरिएको छ ।

(क) समग्र कार्ययोजना

प्रदेश नं. १ को राजस्व सम्भाव्यता अध्ययनको कार्यान्वयनका लागि निम्नानुसार वृहत क्षेत्रगत कार्ययोजना प्रस्ताव गरिएको छ ।

तालिका ४५ : राजस्व सुधार कार्ययोजना खाका

| क्र. सं. | सुधारको क्षेत्र | क्रियाकलाप | समयावधि | जिम्मेवारी |
|---|-----------------|--|--------------------------------------|---|
| १ | कानून तथा नीति | प्रतिवेदनको अनुसूची १३ बमोजिमका विषयहरू समावेश गरी कानूनको तर्जुमा गर्ने | २०८१ असार भित्र | प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय र आन्तरिक मामिला तथा कानून मन्त्रालय |
| | | कृषि आयमा कर लगाउने प्रक्रिया सम्बन्धी प्रदेश कर तथा गैर कर ऐन, २०७५ को दफा ८ मा संशोधन गर्ने (संशोधनको ढाँचा अनुसूची ९ मा प्रस्तुत गरिएको छ) | २०७९ चैत्र भित्र | प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | कृषि आयमा कर सम्बन्धी छुट्टै ऐन तर्जुमा गर्ने | २०८० असार भित्र | प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | प्रदेश नं. १ को प्रदेश कर तथा गैरकर ऐन, प्रदेश आर्थिक ऐन, प्रदेश वित्त व्यवस्थापन ऐन, प्रदेश सवारी तथा यातायात व्यवस्थापन ऐन लयायतका ऐन तथा नियमहरूको संशोधन गर्ने | २०८१ असार भित्र | प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नीति तथा योजना आयोग |
| | | प्रदेश सरकारले स्थानीय तहको लागि बनाउनु पर्ने कानून जस्तै ढुङ्गा, गिटी, बालुवा, माटो र दहतर बहतर सङ्कलन कार्यविधि निर्माण गर्ने | २०८० असार भित्र | प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | मनोरञ्जन कर, विज्ञापन कर र पर्यटन शुल्क सङ्कलन कार्यविधि निर्माण गर्ने | २०८० असार भित्र | प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | संघीय अन्तरसरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ को संशोधनका लागि संघीय तहमा पहल गर्ने | २०८० असार भित्र | प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय र आन्तरिक मामिला तथा कानून मन्त्रालय |
| | | लौठसल्ला लगायत प्राकृतिक स्रोतको परिचालनका सम्बन्धमा सम्भाव्यता अध्ययनका लागि नेपाल सरकार वनस्पती विभागसँग समन्वय र सहकार्य गर्ने | २०८० असार भित्र | प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | २ | संघ र स्थानीय तहसँग समन्वय र सहकार्य | स्थानीय तहले प्रशासन गर्ने मनोरञ्जन कर र विज्ञापन कर कार्यान्वयनको लागि स्थानीय तहसँग आवश्यक समन्वय गर्ने । |
| मनोरञ्जन कर र विज्ञापनको सम्भाव्यता भएका गाउँपालिका र | नियमित रुपमा | | | प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय प्रदेश राजस्व परामर्श समिति |

| क्र. सं. | सुधारको क्षेत्र | क्रियाकलाप | समयावधि | जिम्मेवारी |
|----------|-----------------|--|-----------------|---|
| | | नगरपालिकाहरूसँग आवश्यक समन्वय र सहजीकरण गर्ने | | |
| | | संघले बनाईदिनु पर्ने कानूनहरू निर्माणको लागि संघसँग समन्वय र पहल गर्ने । | नियमित | मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषदको कार्यालय र प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | संघीय निकायहरू जस्तै संघीय कानूनमा सुधारको लागि वन मन्त्रालय, यातायात व्यवस्था विभागसँग समन्वय गर्ने | २०८० असार भित्र | मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषदको कार्यालय र प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | राजस्व परिचालन र बाँडफाँटमा रहेका समस्याहरूको समाधानका लागि प्रदेश समन्वय परिषद् छलफल गर्ने | २०८० असार भित्र | मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषदको कार्यालय र प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | निम्न विषयहरूमा संघीय निकायहरूसँग समन्वय गर्ने | २०८० असार भित्र | मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषदको कार्यालय र प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | <ul style="list-style-type: none"> नेपालको संविधानको अनुसूची ७ र ९ का साझा अधिकारको बाँडफाँटको विषयमा, तीनतहको राजस्व करारोपणको दोहोरोपना हटाउने विषयमा, प्राकृतिक स्रोतको परिचालनका लागि एकीकृत कानून बनाउने विषयमा, अन्तर सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐनको दफा ५ मा संशोधन गरी स्थानीय विभाज्य कोष बनाउने विषयमा, अन्तर सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ मा र आयकर ऐन, २०५८ मा संशोधन विषयमा, | २०८१ असार भित्र | |
| | | करदाताहरूको पहिचान र अभिलेखीकरण (कर तथा गैर कर ऐन, दफा १४ बमोजिम) | नियमित रुपमा | प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| ३ | राजस्व प्रशासन | आर्थिक ऐन लगायत बनेका/परिमार्जन भएका कानूनहरूको सम्बन्धमा सरोकारवालाहरूलाई अभिमूखीकरण र छलफल | वार्षिक रुपमा | प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | करारमा रहेका प्राविधिक कर्मचारीहरूको दरवन्दी पुनरावलोकन गरी स्थायी पदपूर्तिको व्यवस्था गर्न आवश्यक समन्वय गर्ने | २०८१ असोज भित्र | मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषदको कार्यालय र प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |

| क्र. सं. | सुधारको क्षेत्र | क्रियाकलाप | समयावधि | जिम्मेवारी |
|----------|---------------------|--|------------------|---|
| | | कर प्रशासनको संगठन संरचनाको पुनरावलोकन (कर तथा गैर कर ऐन दफा ४ बमोजिम) | २०८० असोज भित्र | मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषदको कार्यालय र प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | प्रदेश सरकारबाट स्वीकृत दरबन्दी अनुसारको कर्मचारीको व्यवस्था गर्ने (कर तथा गैर कर ऐन दफा ५ (१) बमोजिम) | २०८० असार भित्र | मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषदको कार्यालय र प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | राजस्व तिर्ने व्यक्तिको अभिलेख, निर्धारण, असुली, अभिलेख र प्रतिवेदनमा न्यूनतम मानवीय क्रियाकलाप रहने गरी हरेक राजस्वका स्रोतको कम्प्युटराइज्ड प्रणाली विकास गर्ने, | २०८० असार भित्र | प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | संघीय वन ऐन, २०७६ को दफा ३९ मा भएको व्यवस्थाको कार्यान्वयन (नदीले बगाई ल्याएको, किनारा लागेको, अड्केको, डुबेको र कसैको हकको प्रमाण नपुगेको बेवारिसे काठ) | २०७९ चैत्र भित्र | मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषदको कार्यालय र प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| ४ | अनुगमन र मूल्याङ्कन | राजस्व सम्बन्धी अनुगमन तथा मूल्याङ्कन समिति परिचालन सम्बन्धी कार्यविधि तर्जुमा | २०७९ चैत्र भित्र | प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| ५ | आर्थिक विकास | पर्यापर्यटनको विकासको लागि नीति योजना र कार्यान्वयन शुरू गर्ने | २०८१ असार भित्र | प्रदेश नीति तथा योजना आयोग |
| | | रुद्राक्ष, लाहा तथा लौठ सल्लो, जडिबुटी प्रवर्द्धनको लागि आवश्यक नीतिगत व्यवस्था गर्ने र कार्यान्वयन शुरू गर्ने | २०८५ असार भित्र | प्रदेश वन मन्त्रालय, प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | पर्यटकीय सम्भावना रहेका ठाउँहरूको पहिचान र गुरुयोजना निर्माण गर्ने पूर्वाधार निर्माण गर्नको लागि लगानी गर्ने । | २०८२ असार भित्र | प्रदेश नीति तथा योजना आयोग |
| | | इलाम, मोरङ्ग, झापा र सुनसरी जिल्लामा व्यवसायिक सुपारीको सम्भावना रहेकोले थप अध्ययन गर्ने | २०८१ असार भित्र | प्रदेश नीति तथा योजना आयोग |

(ख) शीर्षकगत कार्ययोजना

राजस्वका शीर्षकगत कार्ययोजना निम्नानुसार प्रस्ताव गरिएको छः-

(१) घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क

| क्र. सं. | क्रियाकलापको क्षेत्र | क्रियाकलापहरू | समयावधि | जिम्मेवारी |
|----------|-----------------------------------|--|------------------------|--|
| १ | मालपोत कार्यालयको पूर्वाधार विकास | सबै मालपोत कार्यालयमा करदाताहरूलाई पर्याप्त हुने गरी शौचालय, खानेपानी र फ्रि वाईफाई सहित आरामदायी प्रतिकालयको व्यवस्थाका लागि संघीय मन्त्रालयसँग समन्वय गर्ने | २०८१ असार मसान्त भित्र | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | कित्ताका आधारमा जग्गाको न्यूनतम मूल्याङ्कन गरी उक्त मूल्यांकलाई सबै प्रयोजनमा प्रयोग हुने व्यवस्थाका लागि स्थानीय तह, बैंक तथा वित्तीय संस्था र मालपोत कार्यालयमा हुने गरी सूचना व्यवस्थापन प्रणालीको विकास गर्न आवश्यक समन्वय तथा पहल गर्ने । | २०८२ असार मसान्त भित्र | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| २ | ऐन कानूनमा संशोधन | घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क नियमनका लागि कार्यविधि तर्जुमा गरी कार्यान्वयनमा ल्याउने | २०८१ असार मसान्त भित्र | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | मालपोत ऐन, २०३४ तथा नियमावली, २०३६ मा संशोधन गरी समसायधिक बनाउन आवश्यक समन्वय गर्ने | २०८१ असार मसान्त भित्र | मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय |
| | | जग्गा प्रशासन निर्देशिका, २०५८ मा संशोधन गरी समसामयिक बनाउन आवश्यक समन्वय गर्ने | २०८१ असार मसान्त भित्र | मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय |
| | | मालपोत ऐन बमोजिम प्रमुख जिल्ला अधिकारीको संयोजकत्वमा रहेको घरजग्गा रजिष्ट्रेशन प्रयोजनका लागि न्यूनतम मूल्यांकन समितिमा प्रदेश र स्थानीय तहको प्रतिनिधित्व हुने व्यवस्था मिलाउन पहल गर्ने | २०८२ असार सम्म | प्रदेश सरकारको पहलमा संघीय सरकार |
| | | अध्ययन प्रतिवेदनले गरेको सुझाव अनुसार आर्थिक ऐनमा घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सेवा शुल्कमा संशोधन गर्ने | आर्थिक ऐन, २०८० मा | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | भूउपयोग क्षेत्र वर्गीकरण सम्बन्धमा प्रदेश सरकारले स्थानीय तहहरूलाई आवश्यक समन्वय र सहजीकरण गर्ने | २०८० भित्र | मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय र प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | मालपोत नियमावली अनुरूपको घरजग्गा मूल्याङ्कन समितिको पुनर्गठनको सम्बन्धमा | २०७९ चैत्र भित्र | |
| ३ | सूचना प्रविधिमा सुधार | हाल प्रचलनमा आएको PAM मोडल र LRIMS, DMS जस्ता प्रणालीलाई सबै | २०८० असार मसान्त भित्र | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |

| क्र. सं. | क्रियाकलापको क्षेत्र | क्रियाकलापहरू | समयावधि | जिम्मेवारी |
|----------|----------------------|--|----------------------------|---|
| | | मालपोत कार्यालयमा जडान तथा प्रभावकारी कार्यान्वयनका लागि समन्वय तथा सहजीकरण गर्ने | | |
| | | मालपोत कार्यालयका सबै मोडहरू विद्युतीय रूपमा (डिजिटाइज) रूपान्तरण गर्न समन्वय गर्ने | २०८१ असार मसान्त भित्र | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| ४ | कर्मचारी व्यवस्थापन | मालपोत कार्यालयको कार्यवोझका आधारमा नयाँ संगठन संरचना बनाई आवश्यक प्रशासनिक तथा प्राविधिक कर्मचारी व्यवस्थापनका लागि आवश्यक समन्वय गर्ने | २०८० असार मसान्त भित्र | मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय |
| | | मालपोत कार्यालयमा कार्यरत कर्मचारीहरूको क्षमता विकाससँग सम्बन्धित तालिम तथा अभिमुखीकरण कार्यक्रम गर्ने | कम्तिमा वार्षिक एक पटक | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| ५ | समन्वय र सहकार्य | मालपोत कार्यालय र नापी कार्यालयको क्रियाकलापहरूको नियमित अनुगमन र नियमनका लागि प्रदेश र स्थानीय तहका बीचमा अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक गर्ने | कम्तिमा वार्षिक दुई पटक | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | संघीय ऐन र नियमावलीमा संशोधनका लागि संघीय सरकारसँग आवश्यक छलफल तथा समन्वय गर्ने | कम्तिमा वार्षिक एक पटक | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| ६ | करदाता शिक्षा | राजस्व छुली गर्ने उद्देश्यले न्यून मूल्याङ्कन गर्दा आफ्नो घर जग्गा धितो मूल्याङ्कन गर्दा पनि न्यून मूल्याङ्कन हुने तथा नागरिकले तिरेको राजस्व सोही ठाउँको विकासका लागि हो भन्ने सन्देश प्रवाहका लागि करदाता शिक्षा कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने | नियमित रूपमा | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |

(२) सवारी साधन कर

| क्र. सं. | क्रियाकलापको क्षेत्र | क्रियाकलापहरू | समयावधि | जिम्मेवारी |
|----------|------------------------------------|---|-------------------------------------|-----------------------------------|
| १ | यातायात कार्यालयको पूर्वाधार विकास | पार्किङ्ग सुविधा र ट्रायल दिन मिल्ने गरी पर्याप्त स्थान सहितको यातायात कार्यालयहरूको आफ्नै भवन निर्माण गर्ने | २०८५ असार मसान्त भित्र | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | सबै यातायात कार्यालयमा करदाताहरूलाई पर्याप्त हुने गरी शौचालय, खानेपानी र फ्रि वाईफाई सहित आरामदायी प्रतिकालयको व्यवस्था गर्ने | २०८१ असार मसान्त भित्र | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| २ | ऐन कानूनमा संशोधन | अन्य प्रदेशको तुलनामा सेवा/शुल्क दस्तुरको दर न्यून भएकोले यसमा पुनरावलोकन गर्ने | आर्थिक ऐन, २०८० तर्जुमा गर्दा | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | छाता ऐनको रूपमा नयाँ संघीय सवारी साधन तथा यातायात व्यवस्था ऐन तर्जुमा गर्ने | आर्थिक ऐन, २०८० तर्जुमा गर्दा | संघीय सरकार |

| क्र. सं. | क्रियाकलापको क्षेत्र | क्रियाकलापहरू | समयावधि | जिम्मेवारी |
|----------|-----------------------|--|------------------------|-----------------------------------|
| | | प्रदेश नं. १ को प्रदेश सवारी तथा यातायात व्यवस्था नियमावली, २०७७ मा सेवाशुल्क दस्तुरको दर निर्धारण गरिएकोमा यसलाई संशोधन गरी आर्थिक ऐनमा राख्ने व्यवस्था मिलाउने | आर्थिक ऐन, २०८० राख्ने | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | सवारी अनुमति पत्रको लागि ट्रायल दिने व्यवस्थालाई थप छिटो र छरितो बनाउन आवश्यक नीतिगत व्यवस्था गर्ने | २०८० असार मसान्त भित्र | यातायात हेर्ने मन्त्रालय |
| ३ | सूचना प्रविधिमा सुधार | हालको हस्तचालित अभिलेख प्रणालीलाई स्वचालित प्रणालीमा लैजाने र प्रदेश भित्रको सवारी साधनको लगत एकिन गर्ने | २०८१ असार मसान्त भित्र | यातायात हेर्ने मन्त्रालय |
| | | आर्थिक वर्ष समाप्त हुना साथ सवारी धनीलाई मोवाईलमा Alert Message पठाउने प्रणाली आरम्भ गर्ने | २०८१ असार भित्र | यातायात हेर्ने मन्त्रालय |
| | | हाल प्रयोगमा रहेको VRS सफ्टवेयरलाई अद्यावधिक गरी VRTMS सफ्टवेयर कार्यान्वयनमा ल्याउने | २०८० असार मसान्त भित्र | यातायात हेर्ने मन्त्रालय |
| | | सवारी अनुमति पत्रका लागि प्रयोगमा आएको EDL-VRS सफ्टवेयरलाई स्वचालित बनाउने | २०८१ असार मसान्त भित्र | यातायात हेर्ने मन्त्रालय |
| | | सबै सवारी साधनको नम्बरमा एकरूपता कायम गर्न इम्बोस्ड नम्बर (Embossed Number) राख्ने | २०८१ असार मसान्त भित्र | यातायात हेर्ने मन्त्रालय |
| ४ | कर्मचारी व्यवस्थापन | यातायात कार्यालयमा हाल कार्यरत कर्मचारीको संख्या न्यून रहेकोले नयाँ संगठन संरचना बनाई आवश्यक कर्मचारीको व्यवस्था गर्ने | २०८० असार मसान्त भित्र | यातायात हेर्ने मन्त्रालय |
| | | यातायात कार्यालयमा कार्यरत कर्मचारीहरूको क्षमता विकाससँग सम्बन्धित तालिम तथा अभिमुखीकरण कार्यक्रम गर्ने | कम्तिमा वार्षिक एक पटक | यातायात हेर्ने मन्त्रालय |
| | | यातायात व्यवस्था कार्यालयका लागि कम्तिमा पनि एक जना अधिकृत स्तरको आईटी अधिकृत, दुईजना कम्प्युटर अपरेटर र दुई सुरक्षा गार्डको व्यवस्था गर्ने | २०८१ असार मसान्त भित्र | यातायात हेर्ने मन्त्रालय |
| ५ | समन्वय र सहकार्य | सवारी साधनकरको व्यवस्थापनका सन्दर्भमा सातवटै प्रदेशका यातायात मन्त्रालयका मन्त्रीज्यूहरूको संयुक्त बैठक बस्ने | कम्तिमा वार्षिक एक पटक | यातायात हेर्ने मन्त्रालय |
| | | सवारी साधन करको व्यवस्थापनका सन्दर्भमा सातवटै प्रदेशका यातायात मन्त्रालयका सचिवज्यूहरूको संयुक्त बैठक बस्ने | कम्तिमा वार्षिक एक पटक | यातायात हेर्ने मन्त्रालय |

(३) नदीजन्य पदार्थ (ढुङ्गा, गिटी, बालुवा)

| क्र. सं. | क्रिया कलापको क्षेत्र | क्रियाकलापहरू | समयावधि | जिम्मेवारी |
|----------|-----------------------|---|-----------------------------------|--|
| १ | कानून तर्जुमा/संशोधन | राष्ट्रिय वन भित्रको ढुङ्गा, गिटी, बालुवा उत्खननको लागि वन ऐन, २०७६ मा आवश्यक संशोधन गर्ने | आ. व. २०८०/८१ भित्र | संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय |
| | | यस अध्ययले पहिचान गरे अनुसार ढुङ्गा, गिटी, बालुवाको उपयोगको लागि रणनीति तयार गर्ने | २०८० असार भित्र | प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | ढुङ्गा, गिटी, बालुवा, माटो तथा दहत्तर बहत्तर सङ्कलन तथा बिक्री कार्यविधि तयार गर्ने | आ. व. २०८०/८१ भित्र | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | हिमाल, पहाड, तराईको लागि फरक फरक दर कायम गर्न जिल्ला दर रेटका आधारमा ढुङ्गा, गिटी, बालुवाको दर कायम गर्न वर्तमान दरमा संशोधन गर्ने | आ. व. २०८०/८१ को आर्थिक ऐन मार्फत | प्रदेश सभा |
| | | स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ को दफा ६२क. मा भएको व्यवस्था र नेपाल सरकारले जारी गरेको ढुङ्गा, गिटी, बालुवा उत्खनन, बिक्री तथा व्यवस्थापन सम्बन्धी मापदण्ड २०७७ फरक परेकोले ती दुई कानूनमा एकरूपताको लागि आवश्यक संशोधन गर्ने | आ. व. २०८०/८१ भित्र | संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय |
| २ | समन्वय र सहकार्य | ढुङ्गा, गिटी, बालुवाको उत्खनन तथा बिक्री सम्बन्धमा रहेका समस्या समाधानको लागि स्थानीय तहहरूसँग छलफल गर्ने | नियमित | प्रदेश राजस्व परामर्श समिति |
| | | प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण भएपनि उत्खनन नभएका १८ वटा स्थानीय तहहरूको समस्या समाधानको लागि पहल गर्ने । | आ. व. २०८०/८१ भित्र | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण भएजति उत्खनन नभएका ३० वटा स्थानीय तहहरूको समस्या समाधानको लागि पहल गर्ने । | आ. व. २०८०/८१ भित्र | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | नदीजन्य पदार्थ उपभोगमा समस्या रहेका ११ वटा स्थानीय तहहरूको समस्या समाधानको लागि पहल गर्ने । | आ. व. २०८०/८१ भित्र | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | नदीजन्य पदार्थको दिगो उपयोगको सुनिश्चित गर्न र दुरुपयोगलाई शुन्य बनाउन घाटगद्दी गरेर मात्र ठेक्का लगाउने नीति तर्जुमा गर्ने । | आ. व. २०८०/८१ भित्र | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| ३ | अनुगमन तथा मूल्याङ्कन | ढुङ्गा, गिटी बालुवाको उत्खननको सबै चरणहरूमा स्थानीय तह र जिल्ला समन्वय समितिसँग मिली अनुगमन गर्ने । | नियमित | प्रदेश राजस्व परामर्श समिति |

(४) मनोरञ्जन कर र विज्ञापन कर

| क्र. सं. | क्रिया कलापको क्षेत्र | क्रियाकलापहरू | समयावधि | जिम्मेवारी |
|----------|-----------------------|---|---------------------|--|
| १ | दायरा बृद्धि | १. मनोरञ्जन करका थप क्षेत्रहरू पहिचान गरी कर लगाउन स्थानीय तहलाई सहजीकरण गर्ने । | २०८० असार भित्र | प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | २. विज्ञापन करका थप क्षेत्रहरू पहिचान गरी कर लगाउन स्थानीय तहलाई सहजीकरण गर्ने । | २०८० असार भित्र | प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | ३. मनोरञ्जन करका सम्बन्धमा रहेका सवालहरूको बारेमा स्थानीय तहसँग वर्षको कम्तिमा एकपटक छलफल र अन्तरक्रिया गर्ने । | आ. व. २०८०/८१ भित्र | संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय |
| | | ४. मनोरञ्जन स्थलहरूको संभावना रहेका क्षेत्रहरूमा सार्वजनिक निजी साझेदारीको अवधारणा अनुसार लगानी गरी करको दायरा बृद्धि गर्ने । | आ. व. २०८०/८१ भित्र | संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय |

(५) पर्यटन शुल्क

| क्र. सं. | क्रिया कलापको क्षेत्र | क्रियाकलापहरू | समयावधि | जिम्मेवारी |
|----------|---------------------------------|--|---------------------|--|
| १ | पर्यटन क्षेत्रको पहिचान र विकास | १. पर्यटन क्षेत्रका सम्बन्धमा रहेका सवालहरूको बारेमा संघीय सरकार, अन्य प्रदेश सरकारहरू र स्थानीय तहसँग वर्षको कम्तिमा एकपटक छलफल र अन्तरक्रिया गर्ने । | २०८० असार भित्र | प्रदेश आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय |
| | | २. पर्यटकीय सम्भावना भएका ठाउँहरूको पहिचान गरि गुरुयोजना निर्माण गर्ने । | आ. व. २०८०/८१ भित्र | संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय |

माथिको कार्ययोजना कार्यान्वयनको सन्दर्भमा प्रदेश नं. १ सरकारले निम्न विषयहरूलाई समेत ध्यान दिन उपयुक्त देखिन्छ ।

- गाउँपालिका तथा नगरपालिकाहरूको राजस्व सुधार कार्ययोजना बनाउन सहयोग गर्ने र त्यसको कार्यान्वयनको लागि अनुगमन गर्ने ।
- ढुङ्गा, गिटी, बालुवाको दर तराई र पहाडको लागि फरक फरक तोक्नु पर्ने; यस्तो अभ्यास अन्य प्रदेशमा रहेको (जस्तै: लुम्बिनी प्रदेशमा ढुङ्गा, गिटी, बालुवाको दर तराईको लागि प्रति क्यू फि. रू. ८ र पहाडको लागि रू. ६ निर्धारण गरिएको छ) ।
- वार्षिक बजेट र आर्थिक ऐन तर्जुमा गर्दा प्रदेश राजस्व परामर्श समितिलाई थप जिम्मेवार वा सक्रिय बनाउने ।
- पर्यटकीय सम्भावनाको पहिचान भएका ठाउँहरूमा पूर्वाधार निर्माण गर्नको लागि सार्वजनिक निजी साझेदारीको अवधारणा अनुसार निजी क्षेत्रलाई परिचालन गर्ने ।

खण्ड नौ: अनुगमन तथा मूल्याङ्कन

९.१ पृष्ठभूमि

कुनै पनि योजना अपेक्षित गति, गुणस्तर र दिशामा लक्ष्य अनुसार अघि बढी भइरहेको छ भन्ने कुरा योजना कार्यान्वयनकै अवधिमा थाहा पाउन आवश्यक हुन्छ। यसो हुँदा कार्यक्रमहरूलाई आवश्यकता अनुसार परिमार्जन गरी सही दिशा दिन सकिन्छ। यही भूमिकाका कारण योजना चक्रमा अनुगमनको भूमिका महत्वपूर्ण हुन्छ। प्रदेश नं. १ सरकारले आफ्नो राजस्व अभिवृद्धिको लागि यस अध्ययन प्रतिवेदनको आधारमा तयार गरिएको यस राजस्व सुधार कार्ययोजना तथा अन्य सुझावहरूको प्रभावकारी कार्यान्वयन मार्फत निर्दिष्ट लक्ष्य, उद्देश्य तथा अपेक्षित प्रतिफल हासिल गर्न सघाउ पुऱ्याउन यो अनुगमन ढाँचा तयार गरिएको छ।

मूल्याङ्कन कुनै पनि योजनाको चक्रको अन्तिम क्रियाकलाप हो। यो योजना सम्पन्न भएको सामान्यतया दुई वर्षपछि गरिन्छ र योजनाको मध्य अवधिमा पनि गर्ने चलन छ। मूल्याङ्कनले सञ्चालित योजना तथा कार्यक्रमहरू समय सान्दर्भिक/औचित्यपूर्ण थिए वा थिएनन्, समयानुकूल थिए वा थिएनन्, ती योजना कार्यक्रम आफैँमा आवश्यक थिए वा थिएनन् भन्ने विषयमा तथ्यमा आधारित रही जानकारी गराउँदछ। यस अनुगमन मूल्याङ्कन ढाँचाले निर्माण गरिने राजस्व सुधार योजनाको मूल्याङ्कनका लागि विधि तथा पद्धति स्थापित गर्दछ।

अनुगमन, मूल्याङ्कनको उपरोक्त सैद्धान्तिक पृष्ठभूमिमा यस अनुगमन, मूल्याङ्कन पद्धतिले प्रस्तुत राजस्व सुधार कार्ययोजनाको अपेक्षित प्रतिफलको नतिजा मापन तथा सञ्चालित कार्यक्रमको प्रक्रिया अनुगमन गरिनेछ। आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालयले अनुगमन तथा मूल्याङ्कन समितिलाई परिचालन गरी यस कार्य योजनाको कार्यान्वयन प्रक्रिया अनुगमन तथा प्राप्त नतिजाको मापन गर्नेछ। यस कार्य योजनाको अनुगमन तथा मूल्याङ्कनको जिम्मेवारी तथा विधि तपशिल बमोजिम प्रस्ताव गरिएको छ:

९.२ अनुगमन संयन्त्र

वित्त व्यवस्थापन महाशाखाले कार्ययोजनामा समावेश भएका क्रियाकलापहरूको विषयमा कम्तीमा प्रत्येक चौमासिक अवधिमा प्रगति विवरण तयार गरी अनुगमन तथा मूल्याङ्कन निर्देशक समितिको बैठकमा प्रस्तुत गरी छलफल गर्ने व्यवस्था मिलाउन आवश्यक हुन्छ। यसरी छलफल गर्दा समितिको तहबाटै समाधान हुने विषय तत्काल समाधान गर्ने र समाधान हुन नसकेका विषयहरू सहितको प्रतिवेदन मन्त्रिपरिषद् बैठकमा प्रस्तुत गरी छलफल गर्ने र समाधानका उपायहरू खोजी गर्ने प्रकृयाको अवलम्बनले योजनाको कार्यान्वयनलाई सहज बनाउन सक्दछ।

राजस्व सम्भाव्यता प्रतिवेदनले सुझाएको राजस्व सुधार कार्ययोजनाको नियमिति अनुगमनको व्यवस्थासँगै कार्ययोजनालाई वर्ष भरिको कार्यान्वयनको अनुभवको आधारमा वार्षिक रुपमा परिमार्जन तथा अद्यावधिक गर्नु आवश्यक हुन्छ। खासगरी योजनामा प्रक्षेपण गरिएको आयलाई विभिन्न बाह्य तत्वहरूले प्रभाव पार्न सक्ने हुँदा त्यस्ता तथ्याङ्कलाई वार्षिक रुपमा अद्यावधिक गर्न आवश्यक छ। कर तथा गैर करका दरहरूमा आउने परिवर्तन र कतिपय राजस्वको आधारमा आउने परिवर्तनले पनि प्रक्षेपित राजस्वमा प्रभाव पर्न सक्दछ।

त्यसबाहेक कतिपय प्रस्तावित क्रियाकलापहरू सम्पन्न गर्न नसकिने र कतिपय क्रियाकलाप थप कार्यान्वयन गर्न सकिने अवस्था पनि उत्पन्न हुन सक्दछ। राजस्वका नयाँ क्षेत्र थप हुने वा भइरहेका क्षेत्रमा संघीय वा प्रदेश कानून वा नीतिहरूमा आएको परिवर्तनको कारण राजस्व कानून, नीति र आधारहरूमा प्रभाव पर्ने अवस्थामा पनि राजस्व सुधार कार्ययोजनामा परिमार्जन जरूरी हुन सक्दछ। प्रतिवेदन कार्यान्वयनका चरणहरूमा यी सबै विषयहरूलाई ध्यान दिनु पर्दछ।

प्रदेश नं. १ को यस राजस्व सम्भाव्यता अध्ययन मार्फत तय गरिएको राजस्व सुधार कार्ययोजनाले निर्धारण गरेको अपेक्षित उपलब्धि हासिल गर्न अध्ययन प्रतिवेदनमा भएका सिफारिस तथा सुझावहरूको कार्यान्वयन कार्ययोजनामा तय गरिएका कार्यनीति र कार्यक्रमहरूको प्रभावकारी कार्यान्वयनका लागि आर्थिक तथा योजना मन्त्रालय अन्तर्गतको वित्त व्यवस्थापन महाशाखालाई जिम्मेवार बनाईनेछ । सो प्रतिवेदन कार्यान्वयनको लागि आवश्यक निर्देशन तथा सहजीकरण गर्न माननीय आर्थिक तथा योजना मामिला मन्त्रीको अध्यक्षतामा रहेको एक अनुगमन तथा मूल्याङ्कन निर्देशक समिति गठन रहनेछ । साथै निर्देशक समितिको मातहतमा रहनेगरी मन्त्रालयको सचिवको अध्यक्षतामा एक अनुगमन तथा मूल्याङ्कन समिति रहने छ । यो समिति नै अनुगमन तथा मूल्याङ्कन कार्यको कार्यान्वयन तहको समिति हुनेछ । यस सम्बन्धी विवरण तल प्रस्तुत गरिएको छ ।

(क) अनुगमन तथा मूल्याङ्कन निर्देशक समिति

अनुगमन तथा मूल्याङ्कन निर्देशक समितिको संरचना देहाय अनुसारको हुनेछ ।

| | | |
|---|---|------------|
| १) माननीय मन्त्री, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय | : | अध्यक्ष |
| २) माननीय उपाध्यक्ष, प्रदेश योजना आयोग | : | सदस्य |
| ३) सचिव, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय | : | सदस्य |
| ४) सचिव, यातायात व्यवस्था तथा सञ्चार मन्त्रालय | : | सदस्य |
| ५) सचिव भूमि व्यवस्था, सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालय | : | सदस्य |
| ६) सचिव, कृषि मन्त्रालय | : | सदस्य |
| ७) सचिव, वन, वातावरण तथा भू संरक्षण मन्त्रालय | : | सदस्य |
| ८) सचिव, उद्योग, श्रम तथा रोजगार मन्त्रालय | : | सदस्य |
| ९) प्रमुख, प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालय | : | सदस्य |
| १०) प्रतिनिधि, नेपाल उद्योग वाणिज्य महासंघ-प्रदेश नं. १ | : | सदस्य |
| ११) आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, वित्तीय क्षेत्र व्यवस्थापन तथा आर्थिक महाशाखा प्रमुख | : | सदस्य सचिव |

आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालयले आवश्यक ठानेमा अन्य विषय विज्ञहरूलाई पनि आमन्त्रित सदस्यका रूपमा समितिमा राख्न वा समितिको बैठकमा बोलाई आवश्यक सल्लाह सुझाव लिन सक्नेछ ।

अनुगमन तथा मूल्याङ्कन निर्देशक समितिको जिम्मेवारी

- राजस्व सुधार कार्ययोजनामा समावेश भएका क्रियाकलापहरूका लागि आवश्यक पर्ने बजेटको व्यवस्थाका लागि आवश्यक कार्य गर्ने ।
- स्वीकृत कार्ययोजनामा समावेश भएका क्रियाकलाप छुट्याई जिम्मेवार सम्बद्ध शाखा/उपशाखाका कर्मचारीलाई जिम्मेवारी तोक्ने ।
- जिम्मेवार शाखा/उपशाखा, कार्यालय वा पदाधिकारीहरूबाट उनीहरूको जिम्मेवारी भित्रका क्रियाकलाप सम्बन्धी अनुगमन तथा मूल्याङ्कन समितिले चौमासिक रूपमा पेश गर्ने प्रगति विवरणको समीक्षा गरी आवश्यक निर्णय गर्ने र निर्देशक दिने ।
- प्रक्षेपित राजस्व असुलीमा देखिएका समस्याहरूको समाधानका लागि आवश्यक कार्यको लागि मन्त्रिपरिषदमा प्रस्ताव पेश गर्नको लागि सिफारिस गर्ने ।

- जिम्मेवार शाखा वा कर्मचारीहरूलाई उनीहरूसँग सम्बन्धित क्रियाकलापको समयसीमा सहितको कार्यजिम्मेवारी तोक्ने र त्यसको समिक्षा गर्ने ।
- अनुगमन तथा मूल्याङ्कन समितिबाट प्राप्त सुझावहरूलाई मन्त्रिपरिषद्को बैठकमा पेश गरी आवश्यक कारवाही गराउने ।

(ख) अनुगमन तथा मूल्याङ्कन समिति

प्रदेशस्तरीय योजना र बजेट तथा कार्यक्रम तर्जुमा दिग्दर्शन, २०७६ मा व्यवस्था भएको हालको राजस्व परामर्श समितिलाई नै यस राजस्व सुधार कार्ययोजनाको अनुगमन तथा मूल्याङ्कन समितिको रूपमा काम गर्न उपयुक्त देखिएकोले सो बमोजिम प्रस्ताव गरिएको छ । अनुगमन तथा मूल्याङ्कन समितिको संरचनाको खाका निम्न अनुसार प्रस्तुत गरिएको छ ।

तालिका ४६ : अनुगमन तथा मूल्याङ्कन समितिको संरचना खाका

| क्र.सं. | पद | निकाय | जिम्मेवारी |
|---------|--------------------------|---|------------|
| १ | सचिव | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय | संयोजक |
| २ | प्रदेश लेखा नियन्त्रक | प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालय | सदस्य |
| ३. | महाशाखा प्रमुख | बजेट तथा कार्यक्रम महाशाखा, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय | सदस्य |
| ४ | प्रतिनिधि (उप सचिव स्तर) | विषयगत मन्त्रालय (उद्योग, पर्यटन, वन तथा वातावरण मन्त्रालय, भूमि व्यवस्था, कृषि तथा सहकारी मन्त्रालय, सहरी विकास/भौतिक पूर्वाधार विकास मन्त्रालय) | सदस्य |
| ५ | प्रमुख/ प्रतिनिधि | नेपाल राष्ट्र बैंक, प्रदेश कार्यालय विराटनगर | सदस्य |
| ६ | निर्देशक | यातायात व्यवस्था निर्देशनालय | सदस्य |
| ७ | अध्यक्ष | प्रदेश उद्योग वाणिज्य महासंघ | सदस्य |
| ८ | प्रतिनिधि | प्रदेश स्तरीय विषय तथा वस्तुगत संगठनहरू (यातायात व्यवसायी महासंघ, सहकारी महासंघ, वन पैदावार महासंघ, घरेलु उद्योग महासंघ, क्रसर उद्योग महासंघ) | सदस्य |
| ९ | अध्यक्ष/ प्रतिनिधि | गाउँपालिका महासंघको प्रदेश समिति र नगरपालिका संघ प्रदेश समेतबाट १-१ जना | सदस्य |
| १० | अध्यक्ष | उद्योग संगठन, मोरङ | सदस्य |
| ११ | अध्यक्ष | मोरङ व्यापार संघ | सदस्य |
| १२ | महाशाखा प्रमुख | राजस्व व्यवस्थापन महाशाखा, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय | सदस्य सचिव |

समितिले अनुगमन मूल्याङ्कन कार्यको लागि आवश्यकता अनुसार विज्ञहरूको परिचालन गर्न सक्नेछ । अनुगमन तथा मूल्याङ्कन समितिको बैठक कम्तिमा अर्धवार्षिक रूपमा बस्नेछ तर समितिले आवश्यकता ठानेमा आवश्यकता अनुसार जतिपटक पनि बैठक बस्न सक्नेछ । समितिले अनुगमन तथा मूल्याङ्कन सम्बन्धी कार्यविधि तय गरी सोही अनुसार कार्य गर्नेछ । अनुगमन तथा मूल्याङ्कन समितिले निम्नानुसारको कार्यहरू गर्नेछ ।

- राजस्व सम्भाव्यता अध्ययन प्रतिवेदनलाई अध्ययन गरी कार्यान्वयनको खाका तयार गर्ने ।
- राजस्व सुधार कार्ययोजना कार्यान्वयनका लागि जिम्मेवार निकाय तथा पदाधिकारी/कर्मचारीलाई आवश्यक निर्देशन र सहजीकरण गर्ने ।

- राजस्व सुधार कार्ययोजनामा भएको क्रियाकलापहरूको कार्यान्वयनको अवस्थाको आवधिक समिक्षा गरी कार्यान्वयनलाई थप प्रभावकारी बनाउने ।
- तोकिएको कार्यजिम्मेवारी समय सीमाभित्र पूरा गर्न कुनै समस्या देखापरेमा त्यसको समाधान गर्ने ।

१.३ अनुगमन विधि

अनुगमनका विभिन्न विधि तथा प्रक्रियाहरू प्रचलनमा रहेका छन् । यस राजस्व सुधार कार्ययोजनाको अनुगमनका विधिहरू देहायअनुसार हुनेछन् ।

- स्थलगत अनुगमन
- दुई आर्थिक वर्षको राजस्वको तुलना
- नागरिक अनुगमन
- कार्यान्वयन योजनामा आधारित क्रियाकलाप अनुगमन
- कार्यान्वयन योजनामा आधाति मध्यावधि समीक्षा
- सहभागितामूलक अन्तिम समीक्षा (तेस्रो पक्षबाट मूल्याङ्कन)
- सरोकारवाला निकायहरूसँगको समन्वय र सहकार्य

१०.१ राजस्व प्रक्षेपणका आधार

राजस्व, खर्च, सम्पत्ति, दायित्व, कोष जस्ता सार्वजनिक वित्त व्यवस्थापनमा केही साझा आधारभूत चरित्र रहेका हुन्छन् भने राजस्वतर्फ विशेष चरित्र पनि रहन्छन् । वर्तमान स्रोत, नीतिगत सुधार (नयाँ कानूनको तर्जुमा, वर्तमान समस्याको समाधान, कम्प्युटराईज प्रणालीको स्थापना), प्रशासनिक सुधार र मुद्रास्थितिलाई आधार मानी शीर्षकगत राजस्व प्रक्षेपण गरिएको छ । राजस्वको वित्त व्यवस्थापनमा न्युनतम आधार हुन्छन् । प्रदेश नं. १ को राजस्व प्रक्षेपण गर्दा निम्नानुसारका आधारहरू लिइएको छ ।

वर्तमान स्रोत

संवैधानिक रूपमा नयाँ संरचना भएकाले प्रदेशले राजस्वका लागि शुन्य विन्दुबाट काम शुरु गरेको हो । प्रदेश सरकारले संवैधानिक अधिकार पाए तापनि सम्भाव्य राजस्वका स्रोतहरू पहिचान गरी कर नीति तय गर्न, कानून बनाउन र सक्ने जति राजस्व सङ्कलन गर्न सकेको छैन । प्रदेशले हाल पहिचान गरी राजस्व असुल गरिरहेका स्रोतहरू आउँदा वर्षका लागि पनि सम्भाव्य स्रोतकै रूपमा रहन्छन् । वर्तमान कानूनी परिवेश र प्रशासनिक संयन्त्रको प्रयोगबाटै प्राप्त हुने राजस्व यस समूहको सम्भाव्य राजस्वमा समावेश गरिएको छ । वर्तमान स्रोतको गणना गर्दा निम्न आधार लिइएको छः

- वर्तमान स्रोतको सम्भाव्यतामा विगत ४ वर्षको औसत वृद्धिदरलाई आधार लिइएको छ । औसत वृद्धिदर गणना गर्दा मूल्य सूचकाङ्कको वृद्धि दर हटाइ गणना गरिएको छ ।
- संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबिच कुन राजस्व स्रोत कुन तहको सरकारको हुने भन्ने विषयमा विगत ५ वर्षमा पुनर्वर्गीकरण भएका कारण वर्तमान स्रोतका वर्ष-वर्षमा धेरै फरक परेका शीर्षकहरूमा निम्नानुसार गरिएको छः
 - ✓ चार वर्षको कूल राजस्वको औसत वृद्धि दरभन्दा दश प्रतिशतसम्मको बढी दर भए सोही शीर्षकको वृद्धिदरले
 - ✓ चार वर्षको कूल राजस्वको औसत दरको तुलनामा दश प्रतिशतभन्दा बढी दर भए सोही शीर्षकमा दश प्रतिशतसम्म मात्र वृद्धि मानी कायम हुने दरले
 - ✓ चार वर्षको कूल राजस्वको औसत दरभन्दा घटी दर भएकामा कूल राजस्वको औसत वृद्धिदरले
- प्राकृतिक स्रोत उपयोग शुल्क लिने गरी आर्थिक ऐनमा भएको व्यवस्था अनुसार २४ सिमेन्ट उद्योगबाट उठ्न बाँकी राजस्व वर्तमान स्रोतमा थप नगरी प्रक्षेपण गरिएको छ ।
- प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण भएका तर कम उत्पादन भएका २२ वटा स्थानीय तहबाट प्राप्त हुन सक्ने राजस्वलाई प्रक्षेपणमा समावेश गरिएको छ ।

नीतिगत सुधार

राजस्वका लागि सम्भाव्य स्रोतहरूको पहिचान गरी ती स्रोतहरूबाट राजस्व असुल गर्न आवश्यक पर्ने नीति तय गरेर नयाँ कराधार सिर्जना गरी राजस्वको स्रोत बढाउनु नीतिगत सुधारका आधारमा हुने सम्भाव्य राजस्व हो । प्रचलित प्रदेश कानूनमा सामान्य संशोधन गरेर सिर्जना हुनसक्ने कराधार वा विस्तार हुनसक्ने दायरा पनि यस समूहमा राखिएको छ । यस प्रक्षेपणमा नीतिगत सुधारमा निम्न आधार लिइएका छन्ः

- स्थानीय तहमा असुली देखिएका (जलस्रोत, कृषिमा आयकर, विज्ञापन, मनोरञ्जन) तर प्रदेशमा सो अनुपातमा प्राप्ति नदेखिएका राजस्वहरू प्रत्येक वर्ष २० प्रतिशतका दरले प्राप्त हुने नीतिगत तथा संरचनात्मक आधार बन्ने मान्यता लिइएको छ ।

- नेपालको संविधान लागू हुनु अगावैका कानून बमोजिम लागेका शुल्क दस्तुर जरिवानाहरूको संघीय निरन्तरतालाई संविधान बमोजिम प्रदेशमा स्थानान्तरण भएमा प्राप्त हुने सम्भाव्य राजस्वमध्ये २४ पेशागत विषयका कानूनहरू प्रतिवर्ष २० प्रतिशतका दरले कानून निर्माण भइ प्रति वडाबाट एक जना पेशागत व्यक्तिको सदस्यता हुने र वार्षिक नवीकरण शुल्क एक हजार रुपैयाँ हुने अनुमानका आधारमा प्रक्षेपण गरिएको छ ।
- प्रदेश स्तरीय सहकारीहरू (२०७८ असारसम्म १०५८ वटा) प्रतिवर्ष १० प्रतिशतका दरले वृद्धि हुने र नवीकरण रकम वार्षिक दुई हजार रुपैयाँ हुने आधारमा प्रक्षेपण गरिएको छ । संघीय मन्त्रालयले नियमन गरिरहेकाले प्रदेशभित्रका ८२३ उद्योग, कारखाना तथा व्यवसायको सम्भाव्य दर्ता वा नवीकरण प्रक्षेपणमा समावेश छैन ।
- पर्यटन, खेलकुद र मनोरञ्जनका क्रियाकलापहरू एक आपसमा उस्तै जस्ता देखिन्छन् । यी तीन क्षेत्रका केही विषयहरूमा वर्तमानमा पनि राजस्व आर्जन भइरहेको र केही विषयहरू राजस्वका दृष्टिले सम्बन्धित राजस्व बाहिर रहेका देखिन्छन् । प्रदेश सरकारले आफ्नो प्रशासनिक क्षमता अनुसार यी क्रियाकलापलाई राजस्वका सम्भाव्यताका आधारमा उचित समूहिकरण र राजस्व कानूनमा समावेश गर्दछ भन्ने आधारमा यो प्रक्षेपण गरिएको छ । प्रदेशभित्रका ८० ताल तलैयाहरूमध्ये वार्षिक १० प्रतिशत तालतलैयामा व्यवसायिक क्रियाकलाप थप हुने र वर्षको ६ महिना प्रति महिना १००० जनाले पर्यटन, खेलकुद वा मनोरञ्जनका रूपमा प्रतिव्यक्ति एक सय रुपैयाँ राजस्व योगदान गर्ने आधारमा प्रक्षेपण गरिएको छ ।
- खेलकुद र मनोरञ्जनका क्षेत्रहरूमा सम्भावित राजस्वका क्षेत्र पहिचान गरिएको छ । नयाँ नयाँ क्षेत्रहरूको विकास पनि गर्नुपर्ने र करको दायरामा ल्याउन भौतिक तथा प्रशासकीय कार्य गर्नुपर्ने ती क्षेत्रबाट भविष्यमा प्राप्त हुन सक्ने सम्भावित राजस्वलाई प्रक्षेपणमा समावेश गरिएको छैन ।
- प्रदेश संरचना नयाँ भएकाले संवैधानिक अधिकार अनुसार राजस्व वा अन्य विषयगत नयाँ कानूनहरू बनाए पछि मात्र वास्तविक राजस्व प्राप्त हुन्छ । नयाँ कानून बनाउँदा प्रचलित संघीय कानूनहरू र संविधानसङ्गत हुनु अनिवार्य हुन्छ । कानूनको अभावमा राजस्व असुल गर्न नसिकने हुनाले यो प्रक्षेपणमा नयाँ कानूनबाट असुल हुन सक्ने सम्भाव्य राजस्व समावेश गरिएको छैन । सम्भाव्य राजस्वका दृष्टिले बन्नुपर्ने नयाँ कानूनहरूको विस्तृत सूचि प्रतिवेदनको खण्ड चारमा दिएको छ । यसबाट भविष्यमा प्राप्त हुन सक्ने राजस्वको स्रोतको नाम समावेश गर्ने प्रयोजनका लागि प्रति नयाँ कानून रु. १ हजारका दरले प्रक्षेपणमा समावेश गरिएको छ ।
- प्रदेश नं. १ को कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐनको दफा ८ मा हुने संशोधनबाट प्राप्त हुने सक्ने कृषि आयको करलाई चालु आर्थिक वर्षको प्रक्षेपणमा समावेश गरिएको छैन भने त्यस पछिका वर्षहरूमा राजस्व प्रक्षेपण गरिएको छ ।

प्रशासनिक सुधार

राजस्व प्रशासनको सांगठनिक संरचना, भौगोलिक उपस्थिति, अधिकार प्रत्यायोजन एवं जवाफदेही उपर अनुगमनले राजस्व असुलीमा प्रत्यक्ष प्रभाव पार्दछ । आगामी वर्षमा प्रदेश सरकारले उचित स्थानमा उचित क्षमताका कर्मचारी राखेर राजस्व प्रशासन गर्दछ भन्ने आधारमा यो प्रक्षेपण गरिएको छ । प्रशासनिक सुधारमा निम्न थप आधार लिइ राजस्व प्रक्षेपण गरिएको छ:

- विज्ञापनको बजारको आकार र प्रदेश विज्ञापन करको विगतको असुलीमा तादम्यता देखिँदैन । केन्द्रिय तथ्याङ्क विभागको २०७१/७२ को अध्ययन अनुसारको विज्ञापन व्यवसायको आकार लाई मूल्य सूचकाङ्कले गणना गरी वार्षिक २० प्रतिशतका दरले विज्ञापन बजारबाट राजस्व असुल गर्ने गरी राजस्व प्रशासन सक्षम हुने आधारमा यो प्रक्षेपण गरिएको छ ।

- विज्ञापनको बजारको आकार र प्रदेश विज्ञापन करको विगतको असुलीमा तादम्यता देखिदैन । केन्द्रिय तथ्याङ्क विभागको २०७१/७२ को अध्ययन अनुसारको देशभरको विज्ञापन बजार रु. ७ अर्ब बराबरको रहेको अनुमानमा उक्त मध्ये प्रदेश नं. १ मा रु. १ अर्ब बराबरको बजार छ भन्ने अनुमान गरी उक्त बजारको २० प्रतिशत बजार (रु. २० करोड) प्रदेशको करको दायरामा आउन सक्ने र पहिलो वर्ष उक्त बजारमध्ये ५ प्रतिशत (रु. एक करोड) बजार करको दायरा आउने अनुमान गरी राजस्व प्रक्षेपण गरिएको छ ।
- प्रदेश भित्र २३५ स्थानबाट उत्पादन हुन सक्ने ढुङ्गा गिटी दहत्तर बहत्तरको प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण हुन बाँकी रहेकोमध्ये पहिलो वर्ष २० प्रतिशत स्थानमा नयाँ प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण हुने र दोश्रो वर्ष देखि सो २० प्रतिशतले हुने संख्यामा वार्षिक २० प्रतिशतका दरले नयाँ प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण भई उत्पादन हुन सक्ने आधार लिइएको छ ।
- वातावरणीय परीक्षण भएका तर अन्य कारणले उत्पादन हुन नसकेका स्रोतहरूका समस्या समाधानका लागि राजस्व प्रशासन र अन्य निकायहरूसँगको समन्वय र सहकार्य मार्फत वार्षिक २० प्रतिशतका दरले असुल गर्न सक्ने आधार लिइएको छ । यसका लागि हाल उत्पादन भएको स्थानको औसत दरलाई आधार मानी प्रक्षेपण गरिएको छ ।
- जलविद्युतको उत्पादनमा लाग्ने रोयल्टी उत्पादन मितिले पहिलो दश वर्षसम्म र सो पछाडि फरक फरक रहेकाले हाल निर्माणमा रहेका र सञ्चालनमा रहेका विद्युत आयोजनाको रोयल्टी निम्नानुसार समावेश गरिएकोछः
 १. निर्माणाधीन आयोजनाहरू २०६० देखि २०७९ सम्म उत्पादन मिति भएका आयोजनाको औसत निर्माण अवधिमा सम्पन्न हुने अनुमान गरिएको छ । यो औसत अवधि पूरा भएसकेका आयोजना चाहिँ आयकर सुविधाको आधारमा २०८० चैत्रसम्म उत्पादन शुरु गर्ने अनुमान गरिएको छ ।
 २. हाल उत्पादनमा रहेका विद्युत आयोजनाहरूको दश वर्ष पछि बढ्ने विद्युत रोयल्टी दश वर्ष पूरा भएको वर्षदेखि नै बढ्ने गरी प्रक्षेपणमा समावेश गरिएको छ ।

सूचना प्रविधि

धेरै संख्यामा करदाता रहेका वा थरी थरीका करका दर रहेका राजस्वका स्रोतहरूलाई सूचना प्रविधिको प्रयोग गरी डाटावेस पद्धतिमा राख्न सकेमा त्यस्ता करधारबाट सरल र सहज तरिकाले तोकिएको समयमा प्रभावकारी ढङ्गले राजस्व असुली गर्न सकिन्छ । विभाज्य राजस्व उठाउने अधिकार भएको निकायमा रहेको डाटावेसमा राजस्व पाउने सरकारले पहुँच प्राप्त गर्दा उसको खास अधिकारको राजस्व कति हुन्छ र कहिले प्राप्त हुन्छ अनुगमन गर्न पनि सहज हुन्छ । त्यसकारणले सूचना प्रविधिको प्रयोगले राजस्व असुलीमा सकारात्मक प्रभाव पार्दछ । भौगोलिक रूपले उचित स्थानमा राजस्वको उचित संरचना सहितको सांगठनिक विस्तार, स्थान र परिवेश अनुरूपको अधिकार प्रत्यायोजन तथा अनुगमन जस्ता सांगठनिक संरचनाको सुदृढीकरण सहितको

सूचना प्रविधिको प्रयोगका सम्बन्धमा यस प्रक्षेपणमा देहायका आधार लिइएको छः

- राजस्व अधिकार संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा बाँडिएकाले एक तहले उठाएको राजस्व अर्को तहमा बाँडफाँट हुन्छ । प्रदेशले पाउने राजस्वमा प्रदेश राजस्व प्रशासनको पहुँच र परस्पर सूचना आदानप्रदान हुने प्रणाली विकास हुन सकेमा एक शीर्षकको राजस्व अर्को शीर्षकमा जम्मा भइ वास्तविक बाँडफाँटको रकम फरक पर्ने समस्या समाधान हुन्छ । यस्तो सूचना आदानप्रदान हुने प्रणालीले जतिखेर राजस्व उठेको हो, त्यतिखेरै राजस्व बाँडफाँट गर्न तथा अन्तर तहका सम्भाव्य असहजता घटाउन पनि सघाउँछ ।
- करदाताले कर तिर्न लाग्ने लागत, श्रम, सम्मान, व्यवहारले राजस्व असुलीमा असर गर्दछ । कर संकलकसँगको भौतिक भेटघाट घट्ने अवस्था सिर्जना गर्न सकेमा कर तिर्न करदाता अभिप्रेरित हुन्छ । अव्यवस्थित रूपमा राखिएका अभिलेख नभेटिने र भेट्नका लागि अतिरिक्त स्रोत साधन खर्च गर्नुपर्ने अवस्था रहेसम्म करदाता राजस्व तिर्न अनिच्छुक

रहन्छ । यसका लागि कम्प्युटराइज्ड विधि आजकल उपलब्ध सबैभन्दा उत्तम प्रशासकीय उपाय हो । राजस्वका सबै स्रोतहरू कम्प्युटराइज्ड हुने अनुमानमा यो प्रक्षेपण गरिएको छ ।

- कम्प्युटराइज्ड प्रणालीमा हुने सुधारले वर्तमान स्रोतका राजस्वमा १० प्रतिशत वृद्धि हुने अनुमान गरिएको छ ।
- संघीय सरकारबाट प्रदेश सरकारलाई प्राप्त हुने राजस्व तथा रोयल्टी बाँडफाँटमा संघीय डाटावेस भरपर्दो रहेको भन्ने मान्यतामा ऐतिहासिक वृद्धिलाई आधार मानिएको छ ।

राजस्व समूह वर्गीकरण

प्रदेश नं. १ को राजस्व प्रक्षेपण प्रयोजनका लागि विभिन्न राजस्वका शीर्षकहरूलाई समूहीकरण गरी मुख्य मुख्य राजस्वको समूह निम्नानुसार तालिका ४७ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

तालिका ४७ : समूहीकरण गरिएका राजस्व उपशीर्षकहरू

| क्र.सं. | समूह | उपशीर्षकहरू |
|---------|--|---|
| १. | अन्तःशुल्क | बाँडफाँट भई प्राप्त हुने अन्तःशुल्क (११४२१) |
| २. | उद्योग व्यापार | व्यवसायले भुक्तानी गर्ने (११६११), एजेन्सी रजिष्ट्रेशन दस्तुर (११६१२), व्यवसाय रजिष्ट्रेशन दस्तुर तथा व्यवसाय कर (११६१३), व्यवसाय बाहेक अन्यले भुक्तानी गर्ने (११६२१), व्यवसाय रजिष्ट्रेशन (१४२५३) |
| ३. | कृषि आयकर | कृषि आयमा लाग्ने कर (११११४) |
| ४. | खानी खनिज | बाँडफाँट भई प्राप्त हुने खानी तथा खनिज सम्बन्धी रोयल्टी (१४१५४) |
| ५. | घरजग्गा रजिष्ट्रेशन | बाँडफाँटबाट प्राप्त हुने घरजग्गा रजिष्ट्रेशन दस्तुर (११३१५), घरजग्गा रजिष्ट्रेशन (१४१७७) |
| ६. | जलस्रोत | नहर तथा कुलो उपयोग वापतको शुल्क (१४२१७) |
| ७. | दहत्तर बहत्तर | बाँडफाँट भई प्राप्त हुने दहत्तर बहत्तरको बिक्रीबाट प्राप्त हुने आय (१४१५७) |
| ८. | पर्वतारोहण | बाँडफाँट भई प्राप्त हुने पर्वतारोहणको रोयल्टी (१४१५८) |
| ९. | मनोरञ्जन | बाँडफाँट बाट प्राप्त हुने मनोरञ्जन कर (११४७१), अन्य मनोरञ्जन कर (११४७३) |
| १०. | मूल्य अभिवृद्धि कर | बाँडफाँट भई प्राप्त हुने मूल्य अभिवृद्धि कर (११४११) |
| ११. | यातायात क्षेत्र | यातायात क्षेत्रको आमदानी (१४२२५), चालक अनुमति पत्र, सवारी दर्ता किताव (ब्लु बुक) सम्बन्धी दस्तुर (१४२५६) |
| १२. | वन | बाँडफाँट भई प्राप्त हुने वन रोयल्टी (१४१५३), वनरोयल्टी (१४१७१), |
| १३. | विक्री, सेवा शुल्क, दस्तुर, दण्ड जरिवाना | अन्य कर (११६११), अन्यस्रोतबाट प्राप्त बाँडफाँट नहुने रोयल्टी (१४१५९), अन्य क्षेत्रको आय (१४२६५), अन्य राजस्व (१४२२९), सरकारी सम्पत्तिको वहालबाट प्राप्त आय (१४१५१), कृषि उत्पादनको बिक्रीबाट प्राप्त रकम (१४२११), सरकारी सम्पत्तिको बिक्रीबाट प्राप्त रकम (१४२१२), अन्य बिक्रीबाट प्राप्त रकम (१४२१३), अन्य सेवा शुल्क तथा बिक्री (१४२१९), बीमा दावी प्राप्ति (१४२११), शिक्षा क्षेत्रको आमदानी (१४२२३), परीक्षा शुल्क (१४२२४), रेडियो/एफएम सञ्चालन दस्तुर (१४२५४), टेलिभिजन सञ्चालन दस्तुर (१४२५५), अन्य प्रशासनिक दस्तुर (१४२२९), प्रशासनिक दण्ड जरिवाना र जफत (१४३१२), धरौटी सदरस्याह (१४३१३), वन क्षेत्रको अन्य आमदानी (१४२६४) |
| १४. | विज्ञापन | बाँडफाँटबाट प्राप्त हुने विज्ञापन कर (११४७२) |
| १५. | विद्युत | बाँडफाँट भई प्राप्त हुने विद्युत रोयल्टी (१४१५६) |
| १६. | सवारी साधन | सवारी साधन कर (साना) (११४५१), सवारी साधन कर (११४५६) |

१०.२ राजस्व प्रक्षेपण

माथि उल्लेखित आधारहरु अनुसार आगामी पाँच वर्षको राजस्व प्रक्षेपण निम्नानुसार छः

(रु. हजारमा)

| क्र.सं. | राजस्व स्रोत | २०७८/७९ यथार्थ | २०७९/८० अनुमान | राजस्व प्रक्षेपण | | | | | |
|---------|--|-------------------|-------------------|-------------------|-------------------|-------------------|-------------------|-------------------|-------------------|
| | | | | २०७९/८० | २०८०/८१ | २०८१/८२ | २०८२/८३ | २०८३/८४ | २०८४/८५ |
| १ | घरजग्गा रजिस्ट्रेसन शुल्क | १६५०८७२ | १५००००० | २,०६२,५१८ | २,८३४,४८९ | ३,५४१,२७२ | ४,४२४,२९१ | ५,५२७,४९१ | ६,९०५,७७६ |
| २ | सवारी साधन कर | ११९३१९० | १३२०००० | १,३७५,०८५ | १,७४३,१८० | २,००८,९१८ | २,३१५,१६६ | २,६६८,१०० | ३,०७४,८३७ |
| ३ | विज्ञापन कर | ४४९७ | ९५४० | ९,८५८ | १७,०७६ | २३,९३३ | ३१,५१९ | ३९,९६७ | ४९,४४२ |
| ४ | मनोरञ्जन कर | ५ | २५०० | ४१७ | ६,८३५ | १३,८७० | २१,६१४ | ३०,१२३ | ३९,४५४ |
| ५ | ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा (दहतर बहतर) | २८०४०० | १५०००० | ४६२,३८३ | ७८५,६८९ | ९३५,०४९ | १,११६,६९६ | १,३३७,९८७ | १,६०८,००१ |
| ६ | कृषि आयमा कर | ० | ० | १ | ४,३८७ | ९,२२६ | १४,५५४ | २०,४०९ | २६,८३१ |
| ७ | उद्योग व्यापार | ९५१५८ | ९३०५० | १०९,०२९ | १३७,४१३ | १५७,४४३ | १८०,३९३ | २०६,६८७ | २३६,८१५ |
| ८ | जलस्रोत | ५७ | १०० | ७४९ | १,६४५ | २,६३२ | ३,७१७ | ४,९०७ | ६,२१० |
| ९ | यातायात क्षेत्र | ६७४०१८ | ८००००० | ८४९,४९३ | १,१७७,७१५ | १,४८४,३२२ | १,८७०,७५२ | २,३५७,७८५ | २,९७१,६१२ |
| १० | विक्री, सेवा शुल्क, दस्तुर, दण्ड जरिवाना | १३६५०६ | २८३७०० | १६६,७४६ | २२६,६१६ | २७८,३१४ | ५४२,१५६ | ४१४,९८० | ५०५,००८ |
| ११ | अन्तःशुल्क | २४७०३८० | ३१४०८०० | २,८३०,४७३ | ३,२४३,०५५ | ३,७१५,७७७ | ४,२५७,४०४ | ४,८७७,९८२ | ५,५८९,०१७ |
| १२ | मूल्य अभिवृद्धि कर | ७३०४४३९ | ८४९१६०० | ८,३६९,१६६ | ९,५८९,०९१ | १०,९८६,८३८ | १२,५८८,३२७ | १४,४२३,२५६ | १६,५२५,६५२ |
| १३ | पर्वतारोहण रोयल्टी | ११०२१७ | १३७५०० | १२६,२८३ | १४४,६९१ | १६५,७८१ | १८९,९४६ | २१७,६३४ | २४९,३५७ |
| १४ | विद्युत रोयल्टी | ५९६९२ | ४७५०० | ८७,९२५ | १३५,८७४ | २४७,१०७ | २९९,४३३ | ३८७,७०६ | ५०२,०३० |
| १५ | खानी खनिज रोयल्टी | १०७७६ | २५००० | १२,३५० | १४,१४९ | १६,२१२ | १८,५७४ | २१,२८१ | २४,३८३ |
| १६ | वन रोयल्टी | ६८०५५ | ४०००० | ८४,९९६ | १०५,५३१ | १३०,४५५ | १६०,७३० | १९७,५२८ | २४२,२८२ |
| | जम्मा रकम (रु. हजारमा) | १४,०५८,२६२ | १६,०४१,२९० | १६,५४७,४६९ | २०,१६७,४३६ | २३,७१७,१४९ | २८,०३५,२७४ | ३२,७३३,८२३ | ३८,५५६,७०८ |

नोटः (१) राजस्व प्रक्षेपणमा संघीय सरकारको अनुदानलाई समावेश गरिएको छैन ।

(२) पर्यटन शुल्क र पदयात्रा शुल्क शीर्षकमा चालु वर्षका लागि अनुमान गरिएको रु. ३५ लाख रकम पर्वतारोहण शीर्षकमा राखिएको छ ।

(३) यस प्रतिवेदनमा दिएका सुझावहरुमध्ये केही क्रियाकलाप चालु आर्थिक वर्षमा पनि शुरु वा पूरा गर्न सम्भव भएकाले आव २०७९/८० पनि प्रक्षेपणमा समावेश छ ।

उक्त राजस्व सम्भाव्यताको आधारगत रकम निम्नानुसार हुने अनुमान गरिएको छः

(रु. हजारमा)

| आधारहरू | २०७९।८० | २०८०।८१ | २०८१।८२ | २०८२।८३ | २०८३।८४ | २०८४।८५ |
|-----------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|
| वर्तमान स्रोत | १६,३९७,२०० | १९,१४७,३५६ | २२,३८७,४६३ | २६,२११,१३५ | ३०,७३१,१८७ | ३६,०८३,८३३ |
| नीतिगत सुधार | १३१,९६४ | ९६२,२३५ | १,१७३,२१२ | १,६३३,४१८ | १,७४८,८१३ | २,१३९,०४५ |
| प्रशासनिक सुधार | १८,३०५ | ५७,८४६ | १५६,४७३ | १९०,७२० | २५३,८२२ | ३३३,८३० |
| सम्भाव्य राजस्व | १६,५४७,४६९ | २०,१६७,४३६ | २३,७१७,१४९ | २८,०३५,२७४ | ३२,७३३,८२३ | ३८,५५६,७०८ |

अनुसूचीहरु

अनुसूची १: छलफल गरिएका पदाधिकारीको नामावली

| क्र.सं. | नाम, पद र कार्यालय |
|---------|---|
| १. | माननीय इन्द्रबहादुर आङ्गो, मन्त्री, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नं. १ |
| २. | माननीय डा. खिमलाल देवकोटा, सदस्य, राष्ट्रिय सभा |
| ३. | माननीय बालानन्द पौडेल, अध्यक्ष, राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोग |
| ४. | माननीय डा. पूर्णकुमार लोकसोम, उपाध्यक्ष, प्रदेश योजना आयोग, प्रदेश नं. १ |
| ५. | माननीय सदस्य, श्री जुद्धबहादुर गुरुङ्ग, राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोग, सिंहदरबार, काठमाडौं |
| ६. | श्री कृष्ण प्रसाद सापकोटा, संविधानसभा सदस्य |
| ७. | मा. नारायण कोईराला, सदस्य, प्रदेश योजना आयोग, प्रदेश नं. १ |
| ८. | मा. प्रकाश राई सदस्य, प्रदेश योजना आयोग, प्रदेश नं. १ |
| ९. | डा. गणेशप्रसाद पाण्डेय, सचिव, सामाजिक विकास तथा प्रादेशिक समन्वय महाशाखा, प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबार, काठमाडौं |
| १०. | श्री शिवकुमार खत्री, सचिव, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नं. १ |
| ११. | श्री मेघनाथ, तिमिल्सेना, सचिव, कृषि मन्त्रालय, प्रदेश नं. १ |
| १२. | श्री राजेश गौतम, उपसचिव, संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय |
| १३. | श्री सुमन दहाल, सहसचिव, वित्तीय संघीयता समन्वय महाशाखा, अर्थमन्त्रालय, सिंहदरवार, काठमाडौं |
| १४. | श्री दामोदर खत्री, प्रमुख, प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालय, प्रदेश नं. १ |
| १५. | श्री खगेन्द्र खड्का, राजस्व उपसचिव, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नं. १ |
| १६. | श्री विदुर पौडेल, शाखा अधिकृत, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नं. १ |
| १७. | श्री दुर्गा ढकाल, राजस्व अधिकृत, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नं. १ |
| १८. | श्री लोकबहादुर भण्डारी, प्रमुख, भूमिसुधार तथा मालपोत कार्यालय विराटनगर |
| १९. | श्री कुमार सिंह खत्री, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नं. १ |
| २०. | श्री सार्थक घिमिरे, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नं. १ |
| २१. | श्री अनिरुद्र कुमार साह, प्रमुख, डिभिजन वन कार्यालय, विराटनगर |
| २२. | श्री रमेश नेपाल, कानून अधिकृत, वन वातावरण तथा भूसंरक्षण मन्त्रालय, प्रदेश नं. १ |
| २३. | श्री कमल बहादुर थापा, प्रमुख प्रशासकीय अधिकृत, रामधुनी नगरपालिका, सुनसरी |
| २४. | श्री दशरथ राई, प्रमुख प्रशासकीय अधिकृत, इनरुवा नगरपालिका, सुनसरी |
| २५. | श्री प्रकाश रेग्मी, वरिष्ठ संघीयता विज्ञ, स्वीस विकास नियोग, ललितपुर, नेपाल |
| २६. | श्री विनोदप्रसाद उपाध्याय, टिम लिडर, प्रदेश सहयोग कार्यक्रम, प्रदेश नं. १ |
| २७. | श्री गोपाल दाहाल, कार्यालय प्रमुख, यातायात व्यवस्था कार्यालय, रुम्जाटार, ओखलढुङ्गा |
| २८. | श्री श्याम लिम्बु, कार्यालय प्रमुख, यातायात व्यवस्था सेवा कार्यालय, गाईघाट, उदयपुर |
| २९. | श्री पाक्रम खाँ, कार्यालय प्रमुख, यातायात व्यवस्था कार्यालय (स.चा.अ.प), ईटहरी, सुनसरी |
| ३०. | श्री रामकुमार गुप्ता, कार्यालय प्रमुख, यातायात व्यवस्था कार्यालय (सवारी), ईटहरी, सुनसरी |
| ३१. | श्री बाबुराम लुईटेल, कार्यालय प्रमुख, यातायात व्यवस्था सेवा कार्यालय, धनकुटा |
| ३२. | श्री छविलाल खतिवडा, कार्यालय प्रमुख, यातायात व्यवस्था सेवा कार्यालय, इलाम |

अनुसूची २: घरजग्गा लगायतको रजिष्ट्रेशन शुल्क, सेवा शुल्क र घरजग्गा रोक्का शुल्क

(क) घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क

| सि.नं. | लिखतको प्रकार | आर्थिक वर्ष | रजिष्ट्रेशन शुल्कको दर अन्यथा उल्लेख भएकोमा बाहेक थैली अंकमा | | | |
|---|---|-------------|--|---------------------|--------------|--------------|
| | | | महा नगरपालिका | उप- महानगरपालिका | नगरपालिका | गाउँपालिका |
| १ | राजिनामा, सट्टापट्टा, सगोलनामा र छोडपत्रको लिखतः | | | | | |
| | (क) राजिनामा, सट्टापट्टा, सगोलनामा र छोडपत्र (हस्तान्तरण गरिने जग्गाको थैली अंकमा मात्र) | २०७७/७८ | ५% | ४.५% | ४% | २% |
| | | २०७८/७९ | ४% | ४.५% | ४% | २% |
| | | २०७९/८० | ५% | ४.५% | ४% | २% |
| | (ख) सामुहिक आवास योजना अन्तर्गत निर्मित भवन आवास इकाईको लिखतको थैली अंकमा | २०७७/७८ | ३% | २% | १% | ०.५% |
| | | २०७८/७९ | ३% | २% | १% | ०.५% |
| | | २०७९/८० | ३% | २% | १% | ०.५% |
| | (ग) सामुहिक आवास योजना अन्तर्गत निर्मित भवन हितको घर जग्गाको लिखतको थैली अंकमा | २०७७/७८ | ४% | ३.५% | ३% | १.५% |
| | | २०७८/७९ | ४% | ३.५% | ३% | १.५% |
| | | २०७९/८० | ४% | ३.५% | ३% | १.५% |
| २ | छोडपत्र दर्ताफारी: (छोडपत्रको हकमा आफ्नो हक हिस्सा बराबरको थैली अंकमा र दर्ताफारीको हकमा संयुक्त दर्तावाला बीचको कुल जग्गा थैली अंकमा) | | | | | |
| | (क) तीन पुस्ताभित्र | | बकसपत्र सरह | बकसपत्र सरह | बकसपत्र सरह | बकसपत्र सरह |
| | (ख) तीन पुस्ता बाहिर | | राजिनामा सरह | राजिनामा सरह | राजिनामा सरह | राजिनामा सरह |
| ३ | हालै देखिको बकसपत्रको लिखत:- हालैदेखिको बकसपत्रको लिखतको थैली अंकमा) | | | | | |
| | (क) बाजे, बज्ये, आमा, बाबु, पति, पत्नी, दाजु, भाउजू, भाई, भाइबुहारी, दिदी, बहिनी, छोरा, छोरा-बुहारी, छोरी, छोरी ज्वाईं, सासु ससुरा, जेठान, जेठानु, जेठानी, देवर, देउरानी, भतिजा, भतिजी, नाति, नातिनी, बुहारी, काका, काकी, मामा, माईजु, भान्जा भान्जी, ठूलो-बुवा, ठूली-आमा (बाबु तर्फका), आमाजु, नन्द, सौता-सौता र एकै दाजु भाईको छोरा, छोरी, फुपु र भदा भदै बीच । | | | | | |
| | (अ) रु. १ लाखसम्मको थैली अंकमा | २०७७/७८ | १.५% | १% | १% | ०.५% |
| | | २०७८/७९ | १.५% | १% | १% | ०.५% |
| | | २०७९/८० | १.५% | १% | १% | ०.५% |
| | (आ) रु. १ लाखभन्दा माथि जतिसुकै थैली अंकमा | २०७७/७८ | २.५% | २% | २% | १% |
| | | २०७८/७९ | २.५% | २% | २% | १% |
| | | २०७९/८० | २.५% | २% | २% | १% |
| | (ख) अन्य बकसपत्र र दानपत्रको थैली अंकमा | २०७७/७८ | १५% | १५% | १५% | १०% |
| | | २०७८/७९ | १५% | १५% | १५% | १०% |
| २०७९/८० | | १५% | १५% | १५% | १०% | |
| स्पष्टीकरण: सरकारी विश्वविद्यालय, सरकारी क्याम्पस/कलेज, सामुदायिक विद्यालय, सामुदायिक अस्पताल, नेपाल सरकार, प्रदेश सरकार र स्थानीय तहका कार्यालय, तीन तहकै सरकारको नाममा प्राप्त हुने जुनसुकै प्रकारको दानपत्रको लिखतमा कुनै शुल्क लाग्ने छैन | | | | | | |
| ४ | अंशवण्डा तथा अंश भर्पाईको लिखतः | | | | | |
| | (क) रु. ३० लाखसम्मको थैली अंकमा | २०७७/७८ | ०.२% | ०.२% | ०.२% | ०.२% |
| | | २०७८/७९ | ०.२% | ०.२% | ०.२% | ०.२% |
| | | २०७९/८० | ०.२% | ०.२% | ०.२% | ०.२% |
| | (ख) रु. ३० लाख भन्दा बढी रु. २ करोडसम्मको थैली अंकमा | २०७७/७८ | ०.३% | ०.३% | ०.३% | ०.३% |
| | | २०७८/७९ | ०.३% | ०.३% | ०.३% | ०.३% |
| | | २०७९/८० | ०.३% | ०.३% | ०.३% | ०.३% |
| | (ग) रु. २ करोड भन्दा माथिको थैली अंकमा | २०७७/७८ | ०.५% | ०.५% | ०.५% | ०.५% |
| | | २०७८/७९ | ०.५% | ०.५% | ०.५% | ०.५% |
| | | २०७९/८० | ०.५% | ०.५% | ०.५% | ०.५% |

| सि.नं. | लिखतको प्रकार | आर्थिक वर्ष | रजिष्ट्रेशन शुल्कको दर अन्यथा उल्लेख भएकोमा बाहेक थैली अंकमा | | | |
|---------|---|-------------|--|---------------------|-----------|------------|
| | | | महा नगरपालिका | उप- महानगरपालिका | नगरपालिका | गाउँपालिका |
| ५ | मानो छुट्टिएको र मानो जोडिएको लिखत (रु.): | | | | | |
| | (क) मानो छुट्टी प्रति लिखत | २०७७/७८ | १२,००० | ११,००० | १०,००० | ५,००० |
| | | २०७८/७९ | १५,००० | १२,००० | १०,००० | ५,००० |
| | | २०७९/८० | १५,००० | १२,००० | १०,००० | ५,००० |
| | (ख) मानो जोडिएको प्रति लिखत | २०७७/७८ | १५,००० | १२,००० | १०,००० | ५,००० |
| | | २०७८/७९ | २५,००० | २०,००० | १५,००० | १२,००० |
| २०७९/८० | | २५,००० | २०,००० | १५,००० | १२,००० | |
| ६ | शेषपछिको बकसपत्र/अष्टलोहको लिखत: | | | | | |
| | शेषपछिको बकसपत्रको प्रति लिखत (रु.) | | | | | |
| | (क) तीन पुस्ता भित्रको | २०७७/७८ | १०,००० | ९,००० | ८,००० | ३,००० |
| | | २०७८/७९ | १०,००० | ९,००० | ८,००० | ३,००० |
| | | २०७९/८० | १२,००० | ११,००० | १०,००० | ४,००० |
| | (ख) तीन पुस्ता बाहिरको | २०७७/७८ | १२,००० | ११,००० | १०,००० | ४,००० |
| | | २०७८/७९ | १२,००० | ११,००० | १०,००० | ४,००० |
| | | २०७९/८० | १५,००० | १३,००० | ११,००० | ६,००० |
| | अष्टलोहको प्रति लिखत (रु.) | | | | | |
| | (क) तीन पुस्ताभित्रको | २०७७/७८ | १२,००० | ८,००० | ७,००० | ५,००० |
| | | २०७८/७९ | १२,००० | ८,००० | ७,००० | ५,००० |
| | | २०७९/८० | १४,००० | १०,००० | ९,००० | ७,००० |
| | (ख) तीन पुस्ताबाहिरको | २०७७/७८ | १५,००० | १३,००० | ११,००० | ८,००० |
| | | २०७८/७९ | १५,००० | १३,००० | ११,००० | ८,००० |
| | | २०७९/८० | १७,००० | १५,००० | १३,००० | १०,००० |
| ७ | बन्धकीको लिखत: | | | | | |
| | (क) रु. ३० लाखसम्मको दृष्टिबन्धकी, भोगबन्धकी र लख बन्धकीको लिखतको थैली अंकमा | २०७७/७८ | १% | १% | १% | १% |
| | | २०७८/७९ | १% | १% | १% | १% |
| | | २०७९/८० | १% | १% | १% | १% |
| | (ख) रु. ३० लाख भन्दा माथिको दृष्टिबन्धकी, भोगबन्धकी र लख बन्धकीको लिखतको थैली अंकमा | २०७७/७८ | १% | १% | १% | १% |
| | | २०७८/७९ | १.५% | १.५% | १.५% | १.५% |
| २०७९/८० | | १.५% | १.५% | १.५% | १.५% | |
| ८ | अचल सम्पत्ती फलोपभोग (युजफुक्ती) लिखत (प्रतिलिखत थैली अंकमा) रु. | २०७७/७८ | १,२०० | ८०० | ७०० | ५०० |
| | | २०७८/७९ | १,२०० | ८०० | ७०० | ५०० |
| | | २०७९/८० | १,२०० | ८०० | ७०० | ५०० |
| ९ | शेषपछिको बकसपत्र र अष्टलोह लिखत (रु.): | | | | | |
| | (क) संशोधन गर्दा | २०७७/७८ | २,५०० | २,००० | १,५०० | १,००० |
| | | २०७८/७९ | २,५०० | २,००० | १,५०० | १,००० |
| | | २०७९/८० | २,५०० | २,००० | १,५०० | १,००० |
| | (ख) बदर वा रद्द गर्दा | २०७७/७८ | १,००० | ८०० | ७०० | ५०० |
| | | २०७८/७९ | १,००० | ८०० | ७०० | ५०० |
| २०७९/८० | | १,००० | ८०० | ७०० | ५०० | |
| १० | गुठी स्थापना (गुठी दर्ता) लिखत रु. | २०७७/७८ | ७०० | ६०० | ५०० | ४०० |
| | | २०७८/७९ | ७०० | ६०० | ५०० | ४०० |
| | | २०७९/८० | ७०० | ६०० | ५०० | ४०० |
| ११ | घरबहाल लिखत (रु.): घरबहाल लिखत बापत पहिलो महिनाको बहाल रकमको | २०७७/७८ | ६% | ५% | ४% | ३% |
| | | २०७८/७९ | ६% | ५% | ४% | ३% |
| | | २०७९/८० | ६% | ५% | ४% | ३% |
| १२ | अन्य जुनसुकै प्रकारको लिखत: | | | | | |
| | (क) रकम खुलेकोमा (रकमको प्रतिशत) | २०७७/७८ | ४% | ३% | २% | १% |
| | | २०७८/७९ | ४% | ३% | २% | १% |
| २०७९/८० | | ५% | ४.५% | ४% | २% | |

| सि.नं. | लिखतको प्रकार | आर्थिक वर्ष | रजिष्ट्रेशन शुल्कको दर अन्यथा उल्लेख भएकोमा बाहेक थैली अंकमा | | | |
|--------|--|-------------|--|---------------------|-----------|------------|
| | | | महा नगरपालिका | उप- महानगरपालिका | नगरपालिका | गाउँपालिका |
| | (ख) रकम नखुलेकोमा (प्रति लिखत रु.) | २०७७/७८ | ८,००० | ७,००० | ५,००० | ३,००० |
| | | २०७८/७९ | ८,००० | ७,००० | ५,००० | ३,००० |
| | | २०७९/८० | ८,००० | ७,००० | ५,००० | ३,००० |
| १३ | अधिकारनामा, मञ्जुरीनामा र अख्तियारनामाको लिखत | २०७७/७८ | २,००० | २,००० | २,००० | २,००० |
| | | २०७८/७९ | २,००० | २,००० | २,००० | २,००० |
| | | २०७९/८० | ३,००० | ३,००० | ३,००० | ३,००० |
| १४ | कपाली तमसुक र करारनामाको लिखत दाखिल खारेज नहुने कपाली नमसुक र करारनामाको प्रति लिखत (लिखत अंकमा) | २०७७/७८ | १% | १% | १% | १% |
| | | २०७८/७९ | १.५% | १.५% | १% | १% |
| | | २०७९/८० | १.५% | १.५% | १% | १% |
| १५ | सि.नं. ४ को अंशबण्डा तथा अंक भर्पाईको लिखत घर जग्गा भएको जिल्ला/इलाकाको कुनै मालपोत कार्यालयबाट पारित गर्न सकिनेछ। सो बाहेकका अन्य सि.नं. १ देखि १२ सम्ममा घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क लामे लिखतहरू घरजग्गा भएको इलाकाको कार्यालय बाहेक अन्य कार्यालयबाट पारित गर्न सकिने छैन। | | | | | |

(ख) सेवा शुल्क

| सि.नं. | विवरण | आर्थिक वर्ष | सेवा शुल्कको दर अन्यथा उल्लेख भएकोमा बाहेक थैली अंकमा | | | |
|---------|---|-------------|---|---------------------|-----------|------------|
| | | | महानगरपालिका | उप- महानगरपालिका | नगरपालिका | गाउँपालिका |
| १ | लिखत रजिष्ट्रेशनको लागि डोर माग गर्ने निवेदनमा डोर शुल्क (रु.): | | | | | |
| | (क) तराई क्षेत्रमा | २०७७/७८ | १५,००० | १०,००० | ७,००० | ३,००० |
| | | २०७८/७९ | १५,००० | १०,००० | ७,००० | ३,००० |
| | | २०७९/८० | १५,००० | १०,००० | ७,००० | ३,००० |
| | (ख) अन्य क्षेत्रमा | २०७७/७८ | १५,००० | ७,००० | ५,००० | २,००० |
| | | २०७८/७९ | १५,००० | ७,००० | ५,००० | २,००० |
| २०७९/८० | | १५,००० | ७,००० | ५,००० | २,००० | |
| २ | वित्तीय धितो: नेपाल राष्ट्र बैंकबाट वित्तीय कारोबार गर्न स्वीकृति प्राप्त बैंक, वित्तीय तथा सहकारी संस्थाबाट दिने कर्जाको धितोबन्धक वा दृष्टिबन्धक लिखतमा (रु.) | | | | | |
| | (क) रु. १ लाखसम्मको लिखतको थैली अंकमा | २०७७/७८ | १,००० | १,००० | १,००० | १,००० |
| | | २०७८/७९ | १,००० | १,००० | १,००० | १,००० |
| | | २०७९/८० | १,००० | १,००० | १,००० | १,००० |
| | (ख) रु. १ लाखभन्दा बढी रु. ५ लाखसम्मको थैली अंकमा | २०७७/७८ | १,५०० | १,५०० | १,५०० | १,५०० |
| | | २०७८/७९ | १,५०० | १,५०० | १,५०० | १,५०० |
| | | २०७९/८० | १,५०० | १,५०० | १,५०० | १,५०० |
| | (ग) रु. ५ लाखभन्दा बढी रु. १० लाखसम्मको थैली अंकमा | २०७७/७८ | २,५०० | २,५०० | २,५०० | २,५०० |
| | | २०७८/७९ | २,५०० | २,५०० | २,५०० | २,५०० |
| | | २०७९/८० | २,५०० | २,५०० | २,५०० | २,५०० |
| | (घ) रु. १० लाखभन्दा बढी रु. २० लाखसम्मको थैली अंकमा | २०७७/७८ | ३,००० | ३,००० | ३,००० | ३,००० |
| | | २०७८/७९ | ३,००० | ३,००० | ३,००० | ३,००० |
| | | २०७९/८० | ३,००० | ३,००० | ३,००० | ३,००० |
| | (ङ) रु. २० लाखभन्दा बढी रु. ५० लाखसम्मको थैली अंकमा | २०७७/७८ | ५,००० | ५,००० | ५,००० | ५,००० |
| | | २०७८/७९ | ५,००० | ५,००० | ५,००० | ५,००० |
| | | २०७९/८० | ५,००० | ५,००० | ५,००० | ५,००० |
| | (च) रु. ५० लाखभन्दा बढी रु. १ करोडसम्मको थैली अंकमा | २०७७/७८ | २०,००० | २०,००० | २०,००० | २०,००० |
| | | २०७८/७९ | २०,००० | २०,००० | २०,००० | २०,००० |
| | | २०७९/८० | २०,००० | २०,००० | २०,००० | २०,००० |

| सि.नं. | विवरण | आर्थिक वर्ष | सेवा शुल्कको दर अन्यथा उल्लेख भएकोमा बाहेक थैली अंकमा | | | | |
|--|--|---|---|---------------------|-----------|------------|-----|
| | | | महानगरपालिका | उप- महानगरपालिका | नगरपालिका | गाउँपालिका | |
| | (छ) रु. १ करोडभन्दा बढी रु. २ करोडसम्मको थैली अंकमा | २०७७/७८ | ३०,००० | ३०,००० | ३०,००० | ३०,००० | |
| | | २०७८/७९ | ३०,००० | ३०,००० | ३०,००० | ३०,००० | |
| | | २०७९/८० | ३०,००० | ३०,००० | ३०,००० | ३०,००० | |
| | (ज) रु. २ करोडभन्दा बढी रु. ५ करोडसम्मको थैली अंकमा | २०७७/७८ | ६५,००० | ६५,००० | ६५,००० | ६५,००० | |
| | | २०७८/७९ | ६५,००० | ६५,००० | ६५,००० | ६५,००० | |
| | | २०७९/८० | ६५,००० | ६५,००० | ६५,००० | ६५,००० | |
| | (झ) रु. ५ करोडभन्दा बढी रु. २० करोडसम्मको थैली अंकमा | २०७७/७८ | १,००,००० | १,००,००० | १,००,००० | १,००,००० | |
| | | २०७८/७९ | १,००,००० | १,००,००० | १,००,००० | १,००,००० | |
| | | २०७९/८० | १,००,००० | १,००,००० | १,००,००० | १,००,००० | |
| | (ञ) रु. २० करोडभन्दा बढी रु. १ अर्बसम्मको थैली अंकमा | २०७८/७९ | १,५०,००० | १,५०,००० | १,५०,००० | १,५०,००० | |
| | | २०७९/८० | १,५०,००० | १,५०,००० | १,५०,००० | १,५०,००० | |
| | (ट) रु. १ अर्बभन्दा बढी जतिसुकैको थैली अंकमा | २०७८/७९ | २,५०,००० | २,५०,००० | २,५०,००० | २,५०,००० | |
| | | २०७९/८० | २,५०,००० | २,५०,००० | २,५०,००० | २,५०,००० | |
| | ३ | लिज: सरकारी जग्गा लिजमा उपलब्ध गराउने | सरकारी जग्गा दर्ता तथा लिजमा उपलब्ध गराउने सम्बन्धी कार्यविधि, २०७१ को अनुसूची-१ अनुसारको शुल्क लाग्नेछ। | | | | |
| | ४ | जग्गाधनी दर्ता श्रेस्ताको प्रतिलिपिको लागि (टिकट बाहेक) प्रति पुर्जा (रु.): | | | | | |
| | | (क) तराई क्षेत्र | २०७७/७८ | १,००० | ७०० | ५०० | २०० |
| | | | २०७८/७९ | १,००० | ७०० | ५०० | २०० |
| | | | २०७९/८० | १,००० | ७०० | ५०० | २०० |
| (ख) अन्य क्षेत्र | | २०७७/७८ | १,००० | ५०० | ३०० | १०० | |
| | | २०७८/७९ | १,००० | ५०० | ३०० | १०० | |
| | | २०७९/८० | १,००० | ५०० | ३०० | १०० | |
| नोट: जुनसुकै प्रयोजनको लागि प्रतिलिपि लिँदा समेत लागू हुनेछ। | | | | | | | |
| ५ | दाखिल खारेज शुल्क: | | | | | | |
| | (क) करार अनुसार लिखत पारित गर्न ठहर्‍याएको फैसला वा मिलापत्र अनुसारको दाखिल खारेज गर्दा | २०७७/७८ | ५% | ४.५% | ४% | २% | |
| | | २०७८/७९ | ५% | ४.५% | ४% | २% | |
| | | २०७९/८० | ५% | ४.५% | ४% | २% | |
| | (ख) अन्य फैसला र मिलापत्र (अंश र अपुताली बाहेक) को दाखिल खारेज गर्दा | २०७७/७८ | ३% | २.५% | २% | १% | |
| | | २०७८/७९ | ३% | २.५% | २% | १% | |
| | | २०७९/८० | ३% | २.५% | २% | १% | |
| | (ग) बैंक वित्तीय संस्था वा सहकारी संस्थाबाट कर्जा प्रवाह गर्दा लिएको धितो लिलाम गर्दा व्यक्तिले सकार गरी बैंक तथा वित्तीय संस्थाको पत्रानुसार व्यक्तिको नाममा दाखिल खारेज गर्दाको थैली अंकमा | २०७७/७८ | ५% | ४.५% | ४% | २% | |
| | | २०७८/७९ | ५% | ४.५% | ४% | २% | |
| | | २०७९/८० | ५% | ४.५% | ४% | २% | |

| सि.नं. | विवरण | आर्थिक वर्ष | सेवा शुल्कको दर अन्यथा उल्लेख भएकोमा बाहेक थैली अंकमा | | | |
|---|---|-------------|---|---------------------|-----------|------------|
| | | | महानगरपालिका | उप- महानगरपालिका | नगरपालिका | गाउँपालिका |
| | (घ) बैंक तथा वित्तीय संस्था वा सहकारी संस्थाबाट कर्जा प्रवाह गर्दा लिएको धितो लिलाम गर्दा व्यक्तिले सकार नगरी ऋणीकै नामबाट बैंक वित्तीय तथा संस्था वा सहकारी संस्थाले आफ्नो नाममा दाखिल खारेज गर्दा प्रति मिसिल (रु.) | २०७७/७८ | ७,००० | ६,००० | ५,००० | २,००० |
| | | २०७८/७९ | १०,००० | ८,००० | ६,००० | ३,००० |
| | | २०७९/८० | १०,००० | ८,००० | ६,००० | ३,००० |
| | (ङ) बैंक तथा वित्तीय संस्था वा सहकारी संस्थाले कर्जा प्रवाह गर्दा लिएको धितो लिलाममा बैंक वा संस्था आफैँले सकार गरेपछि सम्बन्धित ऋणीलाई नै फिर्ता गर्दा पारित गर्ने लिखतको थैली अंकमा | २०७७/७८ | २.५% | २% | २% | १% |
| | | २०७८/७९ | २.५% | २% | २% | १% |
| | | २०७९/८० | २.५% | २% | २% | १% |
| | (च) भूमिसुधार कार्यालयबाट जग्गा बाँडफाँट भई दाखिल खारेज हुन आउँदा प्रति मिसिल (रु.) | २०७७/७८ | ५०० | ४०० | ३०० | २०० |
| | | २०७८/७९ | ५०० | ४०० | ३०० | २०० |
| | | २०७९/८० | ५०० | ४०० | ३०० | २०० |
| | (छ) अदालत वा न्यायिक निकायको फैसला बमोजिम लिलाम बढाबढ गरी दाखिल खारेज गर्दा प्रति मिसिल | २०७७/७८ | ५,००० | ३,००० | १,००० | ५०० |
| | | २०७८/७९ | २,००० | १,५०० | १,००० | ५०० |
| | | २०७९/८० | २,००० | १,५०० | १,००० | ५०० |
| (ज) शेषपछिको बकसपत्रको दाखिल खारेज (चालु मूल्याङ्कनको थैली अंक र लिखतको मूल्या जुन बढी हुन्छ बढीमा असुल हुने) | | | | | | |
| | (अ) तीनपुस्ता भित्रको भए | २०७७/७८ | ०.५% | ०.४% | ०.३% | ०.२% |
| | | २०७८/७९ | ०.५% | ०.४% | ०.३% | ०.२% |
| | | २०७९/८० | ०.५% | ०.४% | ०.३% | ०.२% |
| | (आ) तीनपुस्ता बाहिरको भए | २०७७/७८ | ५% | ४% | ३% | २% |
| | | २०७८/७९ | ५% | ४% | ३% | २% |
| | | २०७९/८० | ५% | ४% | ३% | २% |
| ६ | नामसारी: | | | | | |
| | (क) तीनपुस्ता भित्रको नामसारी (रु.) | २०७७/७८ | ५०० | ३०० | २०० | १०० |
| | | २०७९/८० | १,५०० | १,२०० | १,००० | ६०० |
| | (अ) रु. १ करोडसम्म भए | २०७८/७९ | ५०० | ३०० | २०० | १०० |
| | (आ) रु. १ करोडभन्दा माथि | २०७८/७९ | १,००० | ८०० | ६०० | ४०० |
| | २०७७/७८ | १,५०० | १,२०० | १,००० | ७०० | |

| सि.नं. | विवरण | आर्थिक वर्ष | सेवा शुल्कको दर अन्यथा उल्लेख भएकोमा बाहेक थैली अंकमा | | | | |
|--------------------------|---|-------------|---|---------------------|-----------|------------|--|
| | | | महानगरपालिका | उप- महानगरपालिका | नगरपालिका | गाउँपालिका | |
| | (ख) तीनपुस्ता भन्दा बाहिरको नामसारी | २०७९/८० | ५,००० | ४,००० | ३,००० | २,००० | |
| | (अ) रु. १ करोडसम्म भए | | १,५०० | १,२०० | १,००० | ७०० | |
| | (आ) रु. १ करोडभन्दा माथि | २०७८/७९ | ३,००० | २,५०० | २,००० | १,००० | |
| ७ | हाल साविक: पुनः नापजाँच पछिको श्रेस्ता | २०७७/७८ | ४०० | ३०० | २०० | १०० | |
| | | २०७८/७९ | ४०० | ३०० | २०० | १०० | |
| | हाल साविक तथा अध्यावधिक गर्दा प्रति मिसिल | २०७९/८० | १,५०० | १,००० | ८०० | ५०० | |
| ८ | घर कायम: | | | | | | |
| | (क) श्रेस्ता पूर्जामा घर जनाउने प्रति निवेदनमा | २०७७/७८ | २,५०० | २,००० | २,००० | ५०० | |
| | | २०७८/७९ | २,५०० | २,००० | २,००० | ५०० | |
| | | २०७९/८० | ४,००० | ३,००० | २,५०० | १,००० | |
| | (ख) श्रेस्तामा घर पाताल प्रति निवेदन | २०७७/७८ | १,५०० | १,२०० | १,००० | ५०० | |
| | | २०७८/७९ | १,५०० | १,२०० | १,००० | ५०० | |
| २०७९/८० | | १,५०० | १,२०० | १,००० | ५०० | | |
| ९ | संशोधन शुल्क: | २०७७/७८ | ३०० | २०० | १०० | १०० | |
| | मालपोत ऐन, २०३४ को दफा ७(३) अनुसारको | २०७८/७९ | ३०० | २०० | १०० | १०० | |
| | विवरणमा संशोधन गर्नु पर्दा प्रति मिसिल (रु.) | २०७९/८० | ३०० | २०० | १०० | १०० | |
| (ग) रोक्का शुल्क: | | | | | | | |
| १० | रजिष्ट्रेशन रोक्का शुल्क (रु.): | | | | | | |
| | (क) लिखत रजिष्ट्रेशन भएकोमा (थैली अंक जतिसुकै भएपनि) | २०७७/७८ | नलाग्ने | नलाग्ने | नलाग्ने | नलाग्ने | |
| | | २०७८/७९ | नलाग्ने | नलाग्ने | नलाग्ने | नलाग्ने | |
| | | २०७९/८० | नलाग्ने | नलाग्ने | नलाग्ने | नलाग्ने | |
| | (ख) लिखत रजिष्ट्रेशन नहुनेमा | | | | | | |
| | (अ) रु. १ लाखसम्मको ऋण अंकमा | २०७७/७८ | ५०० | ४०० | ३०० | २०० | |
| | | २०७८/७९ | ५०० | ४०० | ३०० | २०० | |
| | | २०७९/८० | ५०० | ४०० | ३०० | २०० | |
| | (आ) रु. १ लाखभन्दा बढी रु. ५ लाखसम्मको ऋण अंकमा | २०७७/७८ | ८०० | ७०० | ५०० | ३०० | |
| | | २०७८/७९ | ८०० | ७०० | ५०० | ३०० | |
| | | २०७९/८० | ८०० | ७०० | ५०० | ३०० | |
| | (इ) रु. ५ लाखभन्दा बढी रु. १५ लाखसम्मको ऋण अंकमा | २०७७/७८ | १,००० | ८०० | ७०० | ५०० | |
| | | २०७८/७९ | १,००० | ८०० | ७०० | ५०० | |
| | | २०७९/८० | १,००० | ८०० | ७०० | ५०० | |
| | (ई) रु. १५ लाख देखि ५० लाखसम्म वित्तीय धितो बमोजिम हुने | २०७७/७८ | नभएको | नभएको | नभएको | नभएको | |
| २०७८/७९ | | ५,००० | ४,००० | ३,००० | २,००० | | |
| २०७९/८० | | ५,००० | ४,००० | ३,००० | २,००० | | |

| सि.नं. | विवरण | आर्थिक वर्ष | सेवा शुल्कको दर अन्यथा उल्लेख भएकोमा बाहेक थैली अंकमा | | | |
|-----------------------------------|-------|-------------|---|---------------------|-----------|------------|
| | | | महानगरपालिका | उप- महानगरपालिका | नगरपालिका | गाउँपालिका |
| (उ) ५० लाखभन्दा बढी जतिसुकै भएपनि | | २०७७/७८ | नभएको | नभएको | नभएको | नभएको |
| | | २०७८/७९ | सि.नं. २ को वित्तीय धितोमा भएको व्यवस्था भएबमोजिम हुने। | | | |
| | | २०७९/८० | ७,००० | ५,००० | ३,००० | २,००० |
| (ऊ) ऋण अंक नखुलेमा | | २०७७/७८ | ५,००० | ४,००० | ३,००० | २,००० |
| | | २०७८/७९ | नभएको | नभएको | नभएको | नभएको |
| | | २०७९/८० | १०,००० | ७,००० | ५,००० | ४,००० |

(ग) विविध

| | | |
|---|---|--|
| १ | जलविद्युत उद्योग, चिया खेती, कफी खेती, कपास खेती, पुष्प व्यवसाय, तरकारी खेती, पशुपंक्षीपालन, अलैंची खेती, जडिबुटी खेती एवं फलफूल उद्योगको नामा खरिद गर्ने जग्गाको लिखत पारित गर्दा उद्योग/फर्म रहेको सम्बन्धित स्थानीय तहको छुट सिफारिसमा सो मा लाग्ने रजिष्ट्रेशन शुल्कमा ७५ प्रतिशत छुट हुनेछ। तर, त्यस्तो जग्गाको प्रयोग उद्देश्य विपरित भएको पाइएमा मालपोत कार्यालयले छुट भएको रजिष्ट्रेशन शुल्क असुल गरी सोही रकम बराबर जरिवाना गर्नुपर्नेछ। | |
| २ | सामुहिक खेती योजना अन्तर्गत कुषि उत्पादन बढाउने उद्देश्यले व्यक्तिहरु मिली जग्गाको चक्ला मिलाई खेती गर्ने उद्योग खोली त्यस्तो उद्योगको नामा लिखत पारित गर्दा उद्योग/फर्म रहेको सम्बन्धित स्थानीय तहको छुट सिफारिसमा लाग्ने रजिष्ट्रेशन शुल्कमा ७५ प्रतिशत छुट हुनेछ। तर त्यस्तो जग्गाको प्रयोग उद्देश्य विपरित भएको पाइएमा मालपोत कार्यालयले छुट भएको रजिष्ट्रेशन शुल्क असुल गरी सोही रकम बराबर जरिवाना गर्नुपर्नेछ। | |
| ३ | प्रदेश भित्र सुर्ती, गुट्टा, पानपराग र मदिराजन्य उद्योग बाहेकका उत्पादनमूलक उद्योग स्थापना तथा सञ्चालन गर्न उद्योगको नाममा खरिद गर्ने जग्गाको लिखत पारित गर्दा सो उद्योग/फर्म रहेको सम्बन्धित स्थानीय तहको छुट सिफारिसमा लाग्ने रजिष्ट्रेशन शुल्कमा ५० प्रतिशत छुट हुनेछ। तर त्यस्तो जग्गाको प्रयोग उद्देश्य विपरित भएको पाइएमा मालपोत कार्यालयले छुट भएको रजिष्ट्रेशन शुल्क असुल गरी सोही रकम बराबर जरिवाना गर्नुपर्नेछ। | |
| ४ | प्रदेशभित्र कृषि ऋण, बीमा संस्थान, बीमा समितिबाट स्वीकृति प्राप्त बीमा कम्पनी, विश्वविद्यालय, बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरुले आफ्ना बहालवाला कर्मचारीहरुलाई सेवा शर्त बमोजिम दिने ऋण सुविधाको धितो बन्धक लिखत पारित गर्दा रजिष्ट्रेशन शुल्क छुट हुनेछ। | |
| ५ | (क) प्रदेशभित्र कर्मचारी सञ्चयकोष तथा नागरिक लगानी कोषले नियमित बचत जम्मा गर्ने आफ्ना सञ्चयकर्ताहरुलाई ऋण सुविधा उपलब्ध गराउँदा लिने धितोको धितोबन्धक लिखत पारित गर्दा रजिष्ट्रेशन शुल्क छुट हुनेछ। | |
| | प्रचलित कानून बमोजिम दर्ता भई सञ्चालनमा रहेका सहकारी संस्थाहरुले आफ्ना शेयर सदस्यहरुबीच ऋण लगानी प्रवाह गर्दा १० लाख रुपैयाँसम्मको थैली अंकमा रोक्का शुल्क बाहेक सेवा शुल्क छुट हुनेछ। सो भन्दा माथिको थैली अंकमा खण्ड (ख) सेवा शुल्क महलको सि.नं. २ बमोजिमको सेवाशुल्क लाग्नेछ। | |
| ६ | (क) प्रदेशभित्र बैकिङ्ग तथा वित्तीय व्यवसाय र बीमा व्यवसाय गर्ने एकै प्रकृतिका निकायहरु एक आपसमा गाभिन चाहेमा गाभिने संस्थाहरुले सो प्रयोजनका लागि घरजग्गाको एकत्रित गर्दा संशोधन शुल्क बाहेक अन्य शुल्क लाग्ने छैन। | |

| | | |
|----|---|--|
| | (ख) पहिलो र दोस्रो जनआन्दोलन, जनयुद्ध र मधेश आन्दोलनमा सहादत प्राप्त गरेका सहिदका आश्रित पति, पत्नी, छोरा र छोरी तथा माता पिताको नाममा स्वामित्व प्राप्त हुनेगरी पारित हुने लिखतमा यस ऐन बमोजिम लाग्ने सबै प्रकारका शुल्क पूर्णरूपमा छुट हुनेछ । छुटका लागि सो खुल्ने प्रमाण/कागजात/परिचय-पत्र पेश गर्नुपर्नेछ । | |
| ७ | अपाङ्गता भएका व्यक्ति, दलित एवं पिछडिएका जाति भनी स्थानीय निकायबाट प्रमाणित भएको सिफारिस वा आधिकारिक प्रमाणको आधारमा निजको नाममा स्वामित्व प्राप्त हुँदा यस ऐन बमोजिम असुल गरिने घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्कमा २५ प्रतिशत छुट हुनेछ । | |
| ८ | महिला, सत्तरी वर्षभन्दा बढी उमेरका ज्येष्ठ नागरिक र नाबालकको नाममा जुनसुकै प्रकारबाट स्वामित्व प्राप्त हुने गरी पारित हुने लिखतमा यस ऐन बमोजिम लगाइएको रजिष्ट्रेशन शुल्कमा २५ प्रतिशत छुट हुनेछ । तर एकल महिलाको हकमा भने ३५ प्रतिशत छुट हुनेछ । छुटका लागि सो खुल्ने प्रमाण/कागजात/परिचयपत्र पेश गर्नुपर्नेछ । | |
| ९ | (क) हाल पति वा पत्नीको नाममा कायम रहेको घर जग्गाको स्वामित्व परिवर्तन गरी पति-पत्नी दुवैको संयुक्त स्वामित्वको रूपमा लिखत गर्न चाहेमा सो सगोलनामाको लिखतमा रु. १००१- मात्र रजिष्ट्रेशन शुल्क लाग्नेछ । | |
| | (ख) ३०० जनाभन्दा बढी व्यक्तिलाई प्रत्यक्ष रोजगारी दिने उत्पादनमूलक उद्योग स्थापना गर्न वा विस्तार गर्नका लागि जग्गा खरिद गर्दा सो उद्योग-फर्म दर्ता हुने सम्बन्धित निकायको छुट सिफारिसमा लाग्ने रजिष्ट्रेशन शुल्कको लिखत ५० प्रतिशत छुट दिइनेछ । तर त्यस्तो जग्गाको प्रयोग उद्देश्य विपरीत भएको पाइएमा मालपोत कार्यालयले छुट भएको रजिष्ट्रेशन शुल्क असुल गरी सोही रकम बराबर जरिवाना गर्नुपर्नेछ । | |
| | (ग) भूमिहिन, मुक्तकमैया र मुक्तहलिया परिवारले सहूलियत ऋण र अनुदान प्राप्त गरी खरिद गरेको जग्गाको लिखत पारित गर्दा लाग्ने रजिष्ट्रेशन शुल्क, सेवाशुल्क र रोक्काशुल्क पूर्णरूपमा छुट हुनेछ । छुटका लागि सो खुल्ने प्रमाण/कागजात/परिचयपत्र पेश गर्नुपर्नेछ । | |
| १० | बैंक तथा वित्तीय संस्था एवं सहकारी संघ वा संस्था र अदालतबाट भई आएको मिलापत्र अनुसार दाखिल खारेज गर्नुपर्दा सेवा शुल्क असुल गर्ने प्रयोजनको लागि सम्बन्धित गाउँपालिका वा नगरपालिका क्षेत्रको रजिष्ट्रेशन प्रयोजनको लागि तोकिएको न्यूनतम मूल्य र मिलापत्र वा बैंक तथा वित्तीय संस्था एवं सहकारी संघ वा संस्थाको पत्रमा उल्लेख भएको मूल्य मध्ये जुन बढी हुन्छ सोहीलाई कायम गर्नुपर्नेछ । | |
| ११ | संघ, संस्था वा निकायको विधानमा उल्लेखित धार्मिक तथा सामाजिक हितका निमित्त स्थापित नेपालमा दर्ता भएका संघ संस्था वा निकायले आफ्नो नाममा निःशुल्क रूपमा प्राप्त गर्ने जग्गाको लिखत पारित गर्दा ५० प्रतिशत रजिष्ट्रेशन शुल्क छुट दिइनेछ । तर, कुनै खास जात, जाति वा थरसँग सम्बन्धित वा कुनै एउटै जात वा थरका व्यक्ति वा समुदायको लागि मात्र कार्य गर्ने संघ, संस्था वा निकायलाई त्यस्तो छुट दिइने छैन । | |
| १२ | प्रदेश भित्र यो ऐन लागू हुँदाका बखत नेपाल सरकारबाट घोषणा भएका वा यस पछि घोषणा हुने नगरपालिकाको हकमा त्यस्ता नगरपालिकाको नाम र क्षेत्र निर्धारण गरी नेपाल सरकारले नेपाल राजपत्रमा सूचना प्रकाशित गरेको मिति देखि यस अनुसूची बमोजिमको घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क र सेवा शुल्क लाग्नेछ । | |

| | | |
|----|--|--|
| १३ | प्रचलित कानून बमोजिम दर्ता भएका सहकारी संस्थाहरूले संस्थाको प्रयोजनको लागि मात्र पहाडी क्षेत्रमा २ रोपनी, तराई र भित्री मधेशमा ३ कठ्ठासम्म जग्गा र भवन खरिद गर्दा लाग्ने रजिष्ट्रेशन शुल्क सहकारी विभाग, प्रदेशको सहकारी सम्बन्धी नियमन गर्ने निकाय-स्थानीय तहको सिफारिसमा लाग्ने रजिष्ट्रेशन शुल्क पूर्णरूपमा छुट हुनेछ। तर, त्यस्ता सहकारी संस्थाले रजिष्ट्रेशन शुल्क छुट सुविधामा खरिद गरेको जग्गा तथा भवन संस्था गाभिएको वा विघटन भएको अवस्थामा बाहेक बिक्रि गरेमा पहिले छुट दिएको रजिष्ट्रेशन शुल्क असुल उपर गरिनेछ। | |
| १४ | विविधको क्रम संख्या ६, ७, ८ र ९ बमोजिम छुट दिँदा एकै व्यक्तिलाई एकभन्दा बढी आधारमा छुट पाउने भएमा सबैभन्दा बढी कुनै एकमात्र छुट दिईनेछ। | |
| १५ | एउटै कारोबारबाट १० लाख रुपैयाँ वा सो भन्दा माथिको घर वा जग्गा खरिद बिक्रि गर्दा क्रेताले बैंकबाट भुक्तानीको लागि योग्य (गुड फर पेमेण्ट) भनी छाप लागेको चेकको छायाँ प्रति पेश गरेपछि वा बिक्रेताका नाममा बैंकमा रहेको खातामा रकम जम्मा गरेको बैंक भौचरको छायाँप्रति पेश गरेपछि मात्र लिखत पारित हुनेछ। | आ.व. २०७७/७८ एउटै कारोबारबाट ५० लाख रुपैयाँ वा सोभन्दा माथिको घर वा जग्गा खरीद बिक्रि गर्दा क्रेताले बैंकबाट भुक्तानीको लागि योग्य (गुड फर पेमेण्ट) भनी छाप लागेको चेकको छायाँप्रति पेश गरेपछि वा बिक्रेताका नाममा बैंकमा रहेको खातामा रकम जम्मा गरेको बैंक भौचरको छायाँप्रति पेश गरेपछि मात्र सम्बन्धित गाउँपालिका वा नगरपालिकाले लिखत पारित गर्नेछ। |
| १६ | पति पत्नीको संयुक्त नाममा पारित हुने लिखतमा महिला सरह रजिष्ट्रेशन शुल्क छुट दिईनेछ। | |
| १७ | तीन पुस्ता भित्र छोरी वा नातिनीहरूमा संयुक्त नामसारी भई दर्ताफारी गर्दा क्रमसंख्या (२) मा उल्लेखित छोडपत्रको दररेटको आधा शुल्क लाग्नेछ। | |
| १८ | नेपाल सरकार, प्रदेश सरकार र स्थानीय तह अन्तर्गत कुनै एक निकायको नाममा रहेको जग्गा नेपाल सरकार, प्रदेश सरकार र स्थानीय तह अन्तर्गतको अर्को कुनै निकायको नाममा रजिष्ट्रेशन वा दाखिल खारेज गर्नुपर्दा रजिष्ट्रेशन शुल्क तथा सेवा शुल्क लाग्ने छैन। | |
| १९ | कुनै व्यक्तिको स्वामित्वमा रहेको जग्गा नेपाल सरकार, प्रदेश सरकार र स्थानीय तह अन्तर्गतको कुनै निकायलाई निःशुल्क रूपमा प्राप्त भएमा वा नेपाल सरकार, प्रदेश सरकार र स्थानीय तह अन्तर्गतको कुनै पनि निकायले खरिद गरी लिएमा सोमा रजिष्ट्रेशन शुल्क तथा सेवा शुल्क लाग्ने छैन। | |
| २० | (क) नेपाल सरकारको आर्थिक अध्यादेश, २०७८ को दफा ३४ मा घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्कको अन्तरिम प्रशासन अन्तर्गत “अन्तर-सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ बमोजिमको घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क उठाउन प्रदेश तथा गाउँपालिका वा नगरपालिकामा साधन, स्रोत, प्रविधि जनशक्ति तथा कार्यालय व्यवस्थापन नभएसम्म नेपाल सरकारको सम्बन्धित कार्यालयले प्रदेशले निर्धारण गरे बमोजिमको दर अनुसारको शुल्क उठाई सोही ऐनले व्यवस्था गरे बमोजिमको सम्बन्धित प्रदेश तथा स्थानीय सञ्चित कोषमा दाखिला गर्नेछ।” भन्ने व्यवस्था अनुरूप हुनेछ। | |
| | (ख) बुँदा नं. २० को (क) बमोजिम सङ्कलन भएको घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सेवा शुल्क र रोक्का शुल्क वापतको रकम अन्तर सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ को दफा ५ बमोजिम मालपोत कार्यालयले बाँडफाँट गरी ४० प्रतिशतले हुन आउने रकम प्रदेश सञ्चित कोषमा र ६० प्रतिशतले हुन आउने रकम सम्बन्धित स्थानीय तहको सञ्चित कोषमा मासिक रूपमा दाखिला गर्नुपर्नेछ। | आ.व. २०७७/२०७८ अन्तर सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ को दफा ५ बमोजिम मालपोत कार्यालयले सङ्कलन गरेको घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सेवा शुल्क र रोक्का शुल्क वापतको रकम बाँडफाँट गरी चालीस प्रतिशतले हुन आउने रकम प्रदेश सञ्चित कोषमा र साठी |

| | | |
|----|---|--|
| | | प्रतिशतले हुन आउने रकम सम्बन्धित स्थानीय तहहरूलाई बाँडफाँट गरी सम्बन्धित स्थानीय तहको संचित कोषमा दाखिला गर्नुपर्नेछ । |
| | आ.व. २०७९/८० | |
| २० | भूमी सुधार/मालपोत कार्यालय अन्तर्गतबाट प्रवाह हुने सेवाहरू प्राप्त गर्नका लागि कारागारमा रहेका कैदीबन्दि तथा थुनुवा समेतको निवेदन प्राप्त हुन आएमा सम्बन्धित कारागार प्रमुख वा तोकिएका कर्मचारीले सो निवेदन सम्बन्धित भूमिसुधार/मालपोत कार्यालयमा पठाई त्यहाँबाट प्राप्त अनुरोध सहितको पत्र तथा कागजातमा कारागार रहेको क्षेत्रको भूमिसुधार/मालपोत कार्यालयका कर्मचारीबाट सहि सनाखत गराउन डोर खटाउन सकिनेछ । यसरी सनाखत गराउँदा कारागार प्रमुख वा निजले तोकिएको कर्मचारीको रोहवरमा गर्नुपर्नेछ । | |
| २१ | पहिले कर्जा दिएको लाभग्राहीलाई बैंक तथा वित्तीय संस्थाले पुनः थप कर्जा बढाउन चाहेमा दृष्टिबन्धक/धितोबन्धक वापत् थप कर्जाको मात्र सेवा शुल्क लाग्नेछ । | |
| २२ | (क) अन्तर-सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ बमोजिमको घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क उठाउन प्रदेश तथा गाउँपालिका वा नगरपालिकामा साधन, स्रोत, प्रविधि जनशक्ति तथा कार्यालय व्यवस्थापन नभएसम्म नेपाल सरकारको सम्बन्धित कार्यालयले प्रदेशले निर्धारण गरे बमोजिमको दर अनुसारको शुल्क उठाई सोही ऐनले व्यवस्था गरे बमोजिमको सम्बन्धित प्रदेश तथा स्थानीय सञ्चित कोषमा दाखिला गर्नेछ । | |
| | (ख) बुँदा नं. २१ को (क) बमोजिम सङ्कलन भएको घरजग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क, सेवा शुल्क र रोक्का शुल्क वापतको रकम अन्तर सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ को दफा ५ बमोजिम मालपोत कार्यालयले बाँडफाँट गरी ४० प्रतिशतले हुन आउने रकम प्रदेश सञ्चित कोषमा र ६० प्रतिशतले हुन आउने रकम सम्बन्धित स्थानीय तहको सञ्चित कोषमा मासिक रुपमा दाखिला गर्नुपर्नेछ । | |

अनुसूची ३: प्राकृतिक स्रोत सम्बन्धी प्रदेशगत कानूनी व्यवस्था

| क्र.सं. | प्रदेश | कानूनी व्यवस्था |
|---------|--------------|---|
| १ | प्रदेश नं. १ | <p>दफा १०. प्राकृतिक स्रोत शुल्क: (१) प्राकृतिक स्रोतमध्ये आफ्नो क्षेत्रभित्र ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, चुनढुङ्गा माटो र दहत्तर बहत्तरको सङ्कलन शुल्क प्रदेशले लगाउने छ ।</p> <p>(२) स्थानीयतहले आफ्नो क्षेत्रभित्र ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, चुनढुङ्गा माटो र दहत्तर बहत्तरको सङ्कलन गर्नु अघि प्रचलित संघीय कानूनबमोजिम आवश्यक पर्ने स्वीकृत वातावरणीय अध्ययन प्रतिवेदन र कार्ययोजना प्रदेश सरकार समक्ष पेश गर्नु पर्नेछ । (३) उपदफा (२) बमोजिमको स्वीकृत वातावरणीय अध्ययन तथा मूल्याङ्कन र कार्ययोजना प्राप्त भएमा प्रदेशले नेपाल सरकारको नीतिको अधीनमा रही वातावरणमा प्रतिकूल असर नपर्ने तथा सर्वसाधारण जनताको हित हुने देखेमा स्थानीय तहलाई त्यस्तो क्षेत्रमा ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, चुनढुङ्गा माटो र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गर्न गराउन आवश्यक शर्त तोकी वा नतोकी स्वीकृति दिन सक्नेछ । (४) उपदफा (३) बमोजिम स्वीकृति प्राप्त भएमा गाउँपालिका वा नगरपालिकाले त्यस्तो क्षेत्रमा ढुङ्गा, गिट्टी, माटो, बालुवा र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गर्न गराउन सक्नेछ । (५) प्रदेश सरकारले गाउँपालिका वा नगरपालिकाले रोडा, ढुङ्गा, गिट्टी, चिप्स, माटो, बालुवा र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गर्दा अपनाउनु पर्ने कार्यविधि बनाई जारी गर्नेछ र त्यस्तो कार्यविधि गाउँपालिका वा नगरपालिकाले रोडा, ढुङ्गा, गिट्टी, चिप्स, माटो, बालुवा र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गर्दा वा गराउँदा पालना गर्नु पर्नेछ । (६) रोडा, ढुङ्गा, गिट्टी, चिप्स, माटो, बालुवा र दहत्तर बहत्तर सङ्कलनबाट उठेको शुल्क मध्येबाट साठी प्रतिशतले हुने रकम गाउँपालिका वा नगरपालिकाले स्थानीय सञ्चित कोषमा राखी चालीस प्रतिशतले हुने रकम मासिक रूपमा प्रदेश सञ्चित कोषमा जम्मा गर्नु पर्नेछ ।</p> |
| २ | मधेश | <p>ऐन उपलब्ध हुन नसकेको ।</p> |
| ३ | बागमती | <p>दफा २. परिभाषा: (झ) “दहत्तर बहत्तर” भन्नाले ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा वा नदीले बगाई ल्याएको काठ दाउरा लगायतका दहत्तर बहत्तर सम्झनु पर्छ ।</p> <p>दफा १५. माटो, ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, खरिढुङ्गा, दहत्तर बहत्तर शुल्क: (१) प्रदेश सरकारले प्राकृतिक स्रोतमध्ये आफ्नो क्षेत्रभित्र माटो, ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, स्लेट, चुनढुङ्गा, ग्राभेल, खरिढुङ्गा, अभ्रख र दहत्तर बहत्तरको सङ्कलन, निकासी वा बिक्रीमा तोकिए बमोजिम शुल्क लगाउन सक्नेछ ।</p> <p>(२) गाउँपालिका वा नगरपालिकाले आफ्नो क्षेत्रभित्र माटो, ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, स्लेट, चुनढुङ्गा, ग्राभेल, खरिढुङ्गा, अभ्रख र दहत्तर बहत्तरको सङ्कलन गर्नु अघि प्रचलित कानूनबमोजिम आवश्यक पर्ने स्वीकृत वातावरणीय अध्ययन प्रतिवेदन र कार्ययोजना प्रदेश सरकार समक्ष पेश गर्नु पर्नेछ । (३) उपदफा (२) बमोजिमको स्वीकृत वातावरणीय अध्ययन र कार्ययोजना प्राप्त भएमा प्रदेश सरकार वा प्रदेश सरकारले तोकेको निकायले वातावरणमा प्रतिकूल असर नपर्ने तथा सर्वसाधारण जनताको हित हुने देखेमा गाउँपालिका वा नगरपालिकालाई त्यस्तो क्षेत्रमा माटो, ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, स्लेट, चुनढुङ्गा, ग्राभेल, खरिढुङ्गा, अभ्रख र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गर्न गराउन आवश्यक शर्त तोकी वा नतोकी स्वीकृति दिन सक्नेछ ।</p> <p>(४) उपदफा (३) बमोजिम स्वीकृति प्राप्त भएमा गाउँपालिका वा नगरपालिकाले त्यस्तो क्षेत्रमा माटो, ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, स्लेट, चुनढुङ्गा, ग्राभेल, खरिढुङ्गा, अभ्रख र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गर्न गराउनु पर्नेछ ।</p> <p>(५) प्रदेश सरकारले गाउँपालिका वा नगरपालिकाले माटो, ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, स्लेट, चुनढुङ्गा, ग्राभेल, खरिढुङ्गा, अभ्रख र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन, बिक्री वा निकासी गर्दा अपनाउनु पर्ने कार्यविधि बनाई जारी गर्नेछ र त्यस्तो कार्यविधि गाउँपालिका वा नगरपालिकाले माटो, ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, स्लेट, चुनढुङ्गा, ग्राभेल, खरिढुङ्गा, अभ्रख र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गर्दा वा गराउँदा पालना गर्नु पर्नेछ । (६) माटो, ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, स्लेट, चुनढुङ्गा, ग्राभेल, खरिढुङ्गा, अभ्रख र दहत्तर बहत्तर सङ्कलनबाट उठेको शुल्क मध्येबाट साठी प्रतिशतले हुने रकम गाउँपालिका वा नगरपालिकाले स्थानीय सञ्चित कोषमा राखी चालीस प्रतिशतले हुने रकम मासिक रूपमा प्रदेश सञ्चित कोषमा जम्मा गर्नु पर्नेछ ।</p> |

| क्र.सं. | प्रदेश | कानूनी व्यवस्था |
|---------|----------|--|
| | | <p>दफा १५ क. (१) प्राकृतिक स्रोत शुल्क: प्रदेश भित्र उत्पादन हुने सिमेन्टको हकमा प्राकृतिक स्रोत शुल्क लगाइने र असुल उपर गरिनेछ । (२) उपदफा (१) बमोजिमको शुल्कको सङ्कलन सम्बन्धित स्थानीय तहले गर्नेछ र सो रकम विभाजित कोषमा जम्मा हुनेछ । (३) उपदफा (१) बमोजिमको शुल्क दाखिला गर्नु पर्ने सिमेन्ट उद्योगले आफ्नो उत्पादनको अभिलेख स्वयं निष्काशन प्रणालीको आधारमा राखी बुझाउनु पर्ने रकम महिना समाप्त भएको मितिले पच्चीस दिन भित्र सम्बन्धित स्थानीय तहमा दाखिला गरी सोको विवरण समेत गर्नु पर्नेछ । प्रदेश भित्र उत्पादन हुने सिमेन्टको हकमा प्राकृतिक स्रोत शुल्क लगाइने र असुल उपर गरिनेछ । (४) उपदफा (२) बमोजिमको कार्यालयले यस दफा बमोजिम उठाएको प्राकृतिक स्रोत शुल्क मध्येबाट चालीस प्रतिशतले हुने रकम सम्बन्धित स्थानीय तहको सञ्चित कोषमा र साठी प्रतिशतले हुने रकम मासिक रुपमा प्रदेश सञ्चित कोषमा जम्मा गर्नु पर्नेछ ।</p> |
| ४ | गण्डकी | <p>दफा १५. दहत्तर बहत्तर शुल्क: (१) संघीय कानूनले अन्यथा व्यवस्था गरेकोमा बाहेक प्राकृतिक स्रोतमध्ये आफ्नो क्षेत्रभित्र रोडा, ढुङ्गा, गिट्टी, चिप्स, माटो, बालुवा र दहत्तर बहत्तरको सङ्कलन शुल्क प्रदेशले लगाउनेछ ।</p> <p>(२) गाउँपालिका वा नगरपालिकाले आफ्नो क्षेत्रभित्र रोडा, ढुङ्गा, गिट्टी, चिप्स, माटो, बालुवा र दहत्तर बहत्तरको सङ्कलन गर्नु अघि प्रचलित कानूनबमोजिम आवश्यक पर्ने स्वीकृत वातावरणीय अध्ययन प्रतिवेदन र कार्ययोजना प्रदेश सरकार पेश गर्नु पर्नेछ । (३) उपदफा (२) बमोजिमको स्वीकृत वातावरणीय अध्ययन र कार्ययोजना प्राप्त भएमा प्रदेशले नेपाल सरकारको नीतिको अधीनमा रही वातावरणमा प्रतिकूल असर नपर्ने तथा सर्वसाधारण जनताको हित हुने देखेमा गाउँपालिका वा नगरपालिकालाई त्यस्तो क्षेत्रमा रोडा, ढुङ्गा, गिट्टी, चिप्स, माटो, बालुवा र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गर्न गराउन आवश्यक शर्त तोकी वा नतोकी स्वीकृति दिन सक्नेछ । (४) उपदफा (३) बमोजिम स्वीकृति प्राप्त भएमा गाउँपालिका वा नगरपालिकाले त्यस्तो क्षेत्रमा ढुङ्गा, गिट्टी, माटो, बालुवा र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गर्न गराउन सक्नेछ । (५) प्रदेश सरकारले गाउँपालिका वा नगरपालिकाले रोडा, ढुङ्गा, गिट्टी, चिप्स, माटो, बालुवा र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गर्दा अपनाउनु पर्ने कार्यविधि बनाई जारी गर्नेछ र त्यस्तो कार्यविधि गाउँपालिका वा नगरपालिकाले रोडा, ढुङ्गा, गिट्टी, चिप्स, माटो, बालुवा र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गर्दा वा गराउँदा पालना गर्नु पर्नेछ । (६) रोडा, ढुङ्गा, गिट्टी, चिप्स, माटो, बालुवा र दहत्तर बहत्तर सङ्कलनबाट उठेको शुल्क मध्येबाट साठी प्रतिशतले हुने रकम गाउँपालिका वा नगरपालिकाले स्थानीय सञ्चित कोषमा राखी चालीस प्रतिशतले हुने रकम मासिक रुपमा प्रदेश सञ्चित कोषमा जम्मा गर्नु पर्नेछ ।</p> |
| ५ | लुम्बिनी | <p>दफा १५ प्राकृतिक स्रोत शुल्क: (१) प्राकृतिक स्रोतमध्ये आफ्नो क्षेत्रभित्र ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, माटो र दहत्तर बहत्तरको सङ्कलन शुल्क प्रदेशले लगाउनेछ ।</p> <p>(२) स्थानीय तहले आफ्नो क्षेत्रभित्र ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, माटो र दहत्तर बहत्तरको सङ्कलन गर्नु अघि प्रचलित संघीय कानूनबमोजिम आवश्यक पर्ने स्वीकृत वातावरणीय अध्ययन प्रतिवेदन र कार्ययोजना प्रदेश सरकार पेश गर्नु पर्नेछ ।</p> <p>(३) उपदफा (२) बमोजिमको स्वीकृत वातावरणीय अध्ययन र कार्ययोजना प्राप्त भएमा प्रदेशले नेपाल सरकारको नीतिको अधीनमा रही वातावरणमा प्रतिकूल असर नपर्ने तथा सर्वसाधारण जनताको हित हुने देखेमा स्थानीयलाई त्यस्तो क्षेत्रमा ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, माटो र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गर्न गराउन आवश्यक शर्त तोकी वा नतोकी स्वीकृति दिन सक्नेछ । (४) उपदफा (३) बमोजिम स्वीकृति प्राप्त भएमा स्थानीय तहले त्यस्तो क्षेत्रमा ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, माटो र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गर्न गराउन सक्नेछ । (५) प्रदेश सरकारले स्थानीय तहले ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, माटो र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गर्दा अपनाउनु पर्ने कार्यविधि बनाई जारी गर्नेछ र त्यस्तो कार्यविधि स्थानयि तहले ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, माटो र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गर्दा वा गराउँदा पालना गर्नु पर्नेछ । (६) ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, माटो र दहत्तर बहत्तर सङ्कलनबाट उठेको शुल्क मध्येबाट साठी प्रतिशतले हुने रकम स्थानीय तहको सञ्चित कोषमा राखी चालीस प्रतिशतले हुने रकम मासिक रुपमा प्रदेश सञ्चित कोषमा जम्मा गर्नु पर्नेछ ।</p> |

| क्र.सं. | प्रदेश | कानूनी व्यवस्था |
|---------|-------------|--|
| ६ | कर्णाली | कर्णाली प्रदेशमा कर तथा गैरकर राजस्व लगाउने र उठाउने सम्बन्धमा व्यवस्था गर्न बनेको ऐन, २०७५ मा प्राकृतिक स्रोत सम्बन्धी कुनै कानूनी व्यवस्था नभएको । |
| ७ | सुदूरपश्चिम | दफा १५. प्राकृतिक स्रोत कर: (१) प्रचलित कानूनले अन्यथा व्यवस्था गरेकोमा बाहेक प्राकृतिक स्रोतमध्ये आफ्नो क्षेत्रभित्र ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, माटो र दहत्तर बहत्तरको सङ्कलनमा प्रदेशले कर लगाउनेछ । (२) गाउँपालिका वा नगरपालिकाले आफ्नो क्षेत्रभित्र ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, माटो र दहत्तर बहत्तरको सङ्कलन गर्नु अघि प्रचलित कानूनबमोजिम आवश्यक पर्ने स्वीकृत वातावरणीय अध्ययन प्रतिवेदन र कार्ययोजना प्रदेश सरकारको विषयगत मन्त्रालय समक्ष पेश गर्नु पर्नेछ । (३) उपदफा (२) बमोजिमको स्वीकृत वातावरणीय अध्ययन र कार्ययोजना प्राप्त भएमा प्रदेशको विषयगत मन्त्रालयले नेपाल सरकारको नीतिको अधीनमा रही वातावरणमा प्रतिकूल असर नपर्ने तथा सर्वसाधारण जनताको हित हुने देखेमा गाउँपालिका वा नगरपालिकालाई त्यस्तो क्षेत्रमा ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, माटो र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गर्न गराउन आवश्यक शर्त तोकी वा नतोकी स्वीकृति दिन सक्नेछ । (४) उपदफा (३) बमोजिम स्वीकृति प्राप्त भएमा गाउँपालिका वा नगरपालिकाले त्यस्तो क्षेत्रमा ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, माटो र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गरी गराई कर सङ्कलन गर्नु पर्नेछ । (५) प्रदेश सरकारले गाउँपालिका वा नगरपालिकाले ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, माटो र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गर्दा अपनाउनु पर्ने कार्यविधि बनाई जारी गर्नेछ र त्यस्तो कार्यविधि गाउँपालिका वा नगरपालिकाले ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा, माटो र दहत्तर बहत्तर सङ्कलन गर्दा वा गराउँदा पालना गर्नु पर्नेछ । |

स्रोत: सम्बन्धित प्रदेशको कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ (संशोधन सहित) ।

अनुसूची ४: सिमेण्ट उद्योग सम्बन्धी विवरण

| क्र.सं. | सिमेण्ट उद्योगको नाम | जिल्ला | स्थानीय तह | किसिम | कैफियत |
|---------|-------------------------------------|--------|------------------|-------|--|
| १. | इष्टर्न कसमस सिमेण्ट प्रा.लि. | मोरङ | बूढीगंगा गा.पा. | टुला | हालसम्म गाउँपालिकाले निकासी शुल्क सङ्कलन गर्ने गरेको पाईएन । तर एकमुष्ट वार्षिक रुपमा उद्योगको वार्षिक कारोबार अनुसार व्यवसाय कर लिने गरेको । |
| २. | नेपाल अल्ट्राटेक सिमेण्ट प्रा.लि. | मोरङ | बूढीगंगा गा.पा. | टुला | |
| ३. | अन्नपूर्ण सिमेण्ट कम्पनी प्रा.लि. | मोरङ | बूढीगंगा गा.पा. | टुला | |
| ४. | मोरङ सिमेण्ट इन्डष्ट्री प्रा.लि. | मोरङ | | टुला | |
| ५. | आधुनिक सिमेण्ट प्रा.लि. | मोरङ | | टुला | |
| ६. | सप्तकोशी सिमेण्ट उद्योग प्रा.लि. | मोरङ | कटहरी गा.पा. | टुला | एकमुष्ट वार्षिक ५ लाख गा.पा.ले लिने गरेको छ । |
| ७. | सूर्य सिमेण्ट प्रा.लि. | सुनसरी | | मझौला | |
| ८. | कोशी सिमेण्ट उद्योग प्रा.लि. | सुनसरी | | मझौला | |
| ९. | जानकी सिमेण्ट इन्डष्ट्री प्रा.लि. | सुनसरी | ईनरुवा न.पा. | टुला | नयाँ उद्योग भएकोले नेपाले निकासी शुल्क लिने गरेको छैन । |
| १०. | मित्तल सिमेण्ट प्रा.लि. | झापा | भद्रपुर न.पा | मझौला | हालसम्म नगरपालिकाले निकासी शुल्क सङ्कलन गर्ने गरेको पाईएन । |
| ११. | मनसा सिमेण्ट उद्योग प्रा.लि. | झापा | भद्रपुर न.पा | मझौला | |
| १२. | मेघा सिमेण्ट उद्योग प्रा.लि. | झापा | भद्रपुर न.पा | टुला | |
| १३. | गोरखकाली सिमेण्ट प्रा.लि. | झापा | मेची नपा | मझौला | व्यवसाय कर मात्र सङ्कलन गर्दै आएको । |
| १४. | सनराइज सिमेण्ट प्रा.लि. | झापा | मेची नगर न.पा. | टुला | निकासी शुल्क सङ्कलन गर्ने नगरेको । |
| १५. | श्री कृष्ण सिमेण्ट प्रा.लि. | झापा | | मझौला | |
| १६. | कन्चनजंघा सिमेण्ट उद्योग प्रा.लि. | झापा | बिर्तामोड नपा | मझौला | हालसम्म निकासी शुल्क नलिइएको । |
| १७. | ए प्लस सिमेण्ट प्रा.लि. | झापा | | टुला | |
| १८. | कावेली सिमेण्ट प्रा.लि. | झापा | हल्दीवारी गा.पा. | टुला | हालसम्म गापाले निकासी शुल्क सङ्कलन गर्ने गरेको पाईएन । |
| १९. | उदयपुर सिमेण्ट लि. (खानीमा आधारित) | उदयपुर | त्रियुगा न.पा | टुला | त्रियुगा नेपाले प्रदुषण शुल्क वापत प्रति बोरा रु. १.५ निकासी शुल्क लगाउँदै आएको । सोबाट संकलित रकममध्ये १५ प्रतिशत रौतामाई गापा र ८५ प्रतिशत त्रियुगा नेपाले बाँडफाँट गर्दै आएका छन् । प्रतिबोरा रु. १ सङ्कलन हुँदै आएको तर प्रदेश सरकारलाई पठाउने गरेको छैन । उक्त आम्दानी अन्य क्षेत्रको आय शीर्षकमा राखिदै आएको छ । |
| २०. | सौर्य सिमेण्ट लि. | उदयपुर | कटारी नपा | टुला | कटारी नगरपालिकाबाट कच्चा पदार्थ लगे वापत स्थानीय विकास शुल्क वार्षिक रुपमा २७ लाख २७ हजार सङ्कलन भएको । कारखाना सिरहामा रहेको । |
| २१. | लोत्से सिमेण्ट प्रा.लि. | उदयपुर | | टुला | उद्योग नभएको |
| २२. | रौता उदयपुर सिमेण्ट उद्योग प्रा.लि. | उदयपुर | | टुला | उद्योग नभएको |

| क्र.सं. | सिमेन्ट उद्योगको नाम | जिल्ला | स्थानीय तह | किसिम | कैफियत |
|---------|---|--------|----------------------|-------|---|
| २३. | निगाले सिमेन्ट प्रा.लि. (खानीमा आधारित) | धनकुटा | महालक्ष्मी नपा | ठुला | वार्षिक रु. ५ लाख नगपालिकाले सङ्कलन गर्दै आएको नियमानुसार उद्योगले नदिएको र नगरपालिकाले प्रदेशलाई पठाउने नगरेको |
| २४. | कसमस सिमेन्ट उद्योग | धनुषा | उदयपुरगढी गाउँपालिका | | कच्चा पदार्थ बाट स्थानीय विकास शुल्क वार्षिक रुपमा ६ लाख ४७ हजार सङ्कलन गरेको । |

स्रोत: *The Government of Nepal, Ministry of Industry, Commerce and Supplies, The Department of Industry, Tripureshwar, Kathmandu, Detailed Study of Cement Manufacturing Industry, June 2019.*

अनुसूची ५: प्राकृतिक स्रोत (ढुङ्गा, गिटी, बालुवा) को उपयोग सम्बन्धी विवरण

| क्र.सं. | स्थानीय तह | नदीजन्य पदार्थ उपयोग गर्न सकिने नदी तथा खोला | प्रतिवेदन अनुसार उत्खनन गर्न सकिने परिमाण (घन फिट) | हालको वार्षिक उत्खनन परिमाण घन फिट |
|-----------|--|--|--|------------------------------------|
| क. | प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण (IEE) भए पनि उत्खनन नभएका (जम्मा १८ वटा स्थानीय तहहरू) | | | |
| १. | अर्जुनधारा नगरपालिका | ताडतिड, बिटिड, सुखानी, ठूलो मेते | ० | ० |
| २. | इलाम नगरपालिका | माई, पुवा | ८३,९०८ | ० |
| ३. | कटहरी गाउँपालिका | लोहन्द्रा | ० | ० |
| ४. | कन्काई नगरपालिका | बिरिड र कन्काई | ० | ० |
| ५. | कमल गाउँपालिका | रतुवा, कमल | | |
| ६. | कानेपोखरी गाउँपालिका | चिसाड, डाँस | ० | ० |
| ७. | चिशंखुगढी गाउँपालिका | खार्ने, ठोट्ने, खानी खोला, दूधकोशी, बाङ्गेखोला, ढाँटी खोला | ० | ० |
| ८. | दिप्रुङ चुइचुम्मा गाउँपालिका | सुनकोशी, खरुवा खोला | ० | ० |
| ९. | पाथिबरा याडवरक गाउँपालिका | कावेली खोला, तमोर खोला | २४५,२७३ | ० |
| १०. | बराहपोखरी गाउँपालिका | सुनकोशी | ० | ० |
| ११. | बाह्रदशी गाउँपालिका | बिटिड | ० | ० |
| १२. | भद्रपुर नगरपालिका | ठेउनिया, हडिया, मेची, निन्दा | ० | ० |
| १३. | मेन्छयायेम गाउँपालिका | खोरुङ्गा, इवा र ताडमाय | १८५,४०२ | ० |
| १४. | रतुवामाई नगरपालिका | रतुवा, बक्राह | ० | ० |
| १५. | रामप्रसाद राई गाउँपालिका | पिखुवा | ० | ० |
| १६. | रावावेसी लामिडाँडा गाउँपालिका | रावा खोला र दूधकोशी | ० | ० |
| १७. | सोलुदुधकुण्ड नगरपालिका | सोलु खोला, सिसा खोला | ० | ० |
| १८. | हिलिहाड गाउँपालिका | तमोर, कावेली, हेवा | १९३,२४२ | ० |
| ख. | प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण (IEE) भएजति उत्पादन भएका (जम्मा ३० वटा स्थानीय तहहरू) | | | |
| १. | आठराई गाउँपालिका | तमोर | ७०७,७०७ | ७०७,७०७ |
| २. | आठराई त्रिवेणी गाउँपालिका | तमोर नदी | १,९५३,२४९ | १,९५३,२४९ |
| ३. | इटहरी उपमहानगरपालिका | सेहेरा खोला, बूढी खोला | २,७१५,९१२ | २,७१५,९१२ |
| ४. | उर्लाबारी नगरपालिका | सुनकोडा, सोहटी, बक्राह, मावा | ७,०६४,७०६ | ७,०६४,७०६ |
| ५. | केराबारी गाउँपालिका | खदम खोला, हुरहुरे, मुगु, भलुवा | ७००,००० | ७००,००० |
| ६. | ग्रामथान गाउँपालिका | लोहन्द्रा | १,६७९,३५५ | १,६७९,३५५ |

| क्र.सं. | स्थानीय तह | नदीजन्य पदार्थ उपयोग गर्न सकिने नदी तथा खोला | प्रतिवेदन अनुसार उत्खनन गर्न सकिने परिमाण (घन फिट) | हालको वार्षिक उत्खनन परिमाण घन फिट |
|---------|-------------------------|---|--|------------------------------------|
| ७. | चुलाचुली गाउँपालिका | रतुवा | ९८८,८१२ | ९८८,८१२ |
| ८. | चौदण्डीगढी नगरपालिका | माडीबास, लामा, दुवार, त्रियुगा, घेर र चप्लेटी | ४,४८२,४६० | ४,४८२,४६० |
| ९. | चौबिसे गाउँपालिका | छरुपा | १३७,५१५ | १३७,५१५ |
| १०. | त्रियुगा नगरपालिका | त्रियुगा, बरुवा, सुनकोशी | ३,५३३,२७१ | ३,५३३,२७१ |
| ११. | दमक नगरपालिका | मावा र रतुवा | ९,२९६,५९५ | ९,२९६,५९५ |
| १२. | दुहवी नगरपालिका | बूढी खोला | ९९७,१८१ | ९९७,१८१ |
| १३. | देउमाई नगरपालिका | देउमाई, पुवा, माई | ८५६,१८१ | ८५६,१८१ |
| १४. | धनपालथान गाउँपालिका | लोहन्द्रा | ९४५,६२२ | ९४५,६२२ |
| १५. | धरान उपमहानगरपालिका | सर्दु खोला, सेउती खोला, अँधेरी खोला, सेरा खोला, पटनाली खोला | ७,०६२,९४० | ७,०६२,९४० |
| १६. | फिदिम नगरपालिका | माभितार, थापाटार | ४३४,३७१ | ४३४,३७१ |
| १७. | फुडलिङ नगरपालिका | तमोर नदी | ४९४,४०६ | ४९४,४०६ |
| १८. | बूढीगंगा गाउँपालिका | बूढीखोला, सिंधिया खोला | १,१५५,९५६ | १,१५५,९५६ |
| १९. | भोजपुर नगरपालिका | सोराड खोला, याङगुवा खोला, घट्टे खोला | ८,४७२,८२४ | ८,४७२,८२४ |
| २०. | माई नगरपालिका | गरुवा, लोदिया, माई | ५,५५८,५३४ | ५,५५८,५३४ |
| २१. | मेरिङदेन गाउँपालिका | मेवा खोला, तमोर खोला, लडवा खोला, मैवा खोला | १०७,७२७ | १०७,७२७ |
| २२. | म्याङलुङ नगरपालिका | लम्बु दोभान, पिङगुवा लम्बु, खोरुङ्गा | ३०६,६७३ | ३०६,६७३ |
| २३. | याङवरङ गाउँपालिका | साल्बोटे, आम्बोटे, सिलसिले, मेवा, दोभान, मोरुङ्गा, | ३०२,४७० | ३०२,४७० |
| २४. | रामधुनी नगरपालिका | सिउती खोला | १,९९०,४५५ | १,९९०,४५५ |
| २५. | रौतामाई गाउँपालिका | राकुली, छउडिया, त्रियुगा, पुवारे, रसुवा, खाडी | ७३७,५३० | ७३७,५३० |
| २६. | लेटाङ नगरपालिका | चिसाङ, तेली, मोरडी | १४,८३२,१७४ | १४,८३२,१७४ |
| २७. | शिवसताक्षी नगरपालिका | कन्काई, कमल | ३,०६५,३१६ | ३,०६५,३१६ |
| २८. | सुन्दरहरैँचा नगरपालिका | गछिया, लोहोन्द्रा, बढी, खदन | ९,६३५,६१६ | ९,६३५,६१६ |
| २९. | हलेसी तुवाचुङ नगरपालिका | दुधकोशी, सुनकोशी | ८८,८८८ | ८८,८८८ |

| क्र.सं. | स्थानीय तह | नदीजन्य पदार्थ उपयोग गर्न सकिने नदी तथा खोला | प्रतिवेदन अनुसार उत्खनन गर्न सकिने परिमाण (घन फिट) | हालको वार्षिक उत्खनन परिमाण घन फिट |
|---------|---|--|--|------------------------------------|
| ३०. | हल्दीबारी गाउँपालिका | ठेउनिया | ७,९५० | ७,९५० |
| ग. | प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण (IEE) भएभन्दा कम उत्पादन भएका (जम्मा २२ वटा स्थानीय तहहरू) | | | |
| १. | अरुण गाउँपालिका | अरुण नदी | १,९१२,३८० | ४८४,९०१ |
| २. | उदयपुरगढी गाउँपालिका | वैधनाथ, पौया, बलान | ८०१,६३२ | १६६,४५१ |
| ३. | कटारी नगरपालिका | तावा, ककुर, मरुवा, वैदनाथ, कमला, बादुरा | ५,६५८,३८६ | ५६१,३७३ |
| ४. | कुम्मायक गाउँपालिका | तमोर | ४२८,९६८ | ३३५,४९० |
| ५. | खाँदबारी नगरपालिका | सभा, अरुण | ९,८६७,६६९ | २,३३६,९५० |
| ६. | चैनपुर नगरपालिका | अरुण, सभा, हेवा, पिलुवा | २,६५४,४२९ | २,६४८,६०३ |
| ७. | दिक्तेल रुपाकोटा मझुवागढी नपा | नेर्पा | २,४७२,०२९ | १२३,६०१ |
| ८. | धनकुटा नगरपालिका | फोडसुवा | ६३५,६६५ | ३०८,३३३ |
| ९. | धर्मदेवी नगरपालिका | केवा, माया, पिलुवा, अरुण | १,५३३,७१७ | ५२,९७२ |
| १०. | पाँचखपन नगरपालिका | हिवा खोला | ५६५,०३५ | ३३९,०२१ |
| ११. | फेदाप गाउँपालिका | तोमर, खोरुङ्गा | ७०१,४५६ | ५९५,५१२ |
| १२. | बेलका नगरपालिका | गोगिनी, आँप, सेती | ७४१,०५६ | ५१७,१७५ |
| १३. | बेलबारी नगरपालिका | लोहन्द्रा, चिसाड | १२,४०७,१८४ | ४,८१४,५२४ |
| १४. | माङसेबुङ गाउँपालिका | देउमाई, फेवा, लम्फेवा, रतुवा र मावा | २,१०२,६८८ | १,३४२,५०० |
| १५. | मादी नगरपालिका | माया, पिलुवा, चवारा, लखुवा | ६०३,२८८ | ४८,०७२ |
| १६. | मानेभञ्ज्याङ गाउँपालिका | सुनकोशी, दुधकोशी, मोलुङ | ४,८६२,३०४ | २,९१७,३८३ |
| १७. | मिक्लाजुङ गाउँपालिका | झिक्लु, आँप, मगर, मुगु, सकेवा, सानो बक्राह, मावा, तेली | १२,९७०,७३६ | २६८,४८८ |
| १८. | रंगेली नगरपालिका | लोहन्द्रा, चिसाड, डाँस | २२८,००१ | २०५,२०१ |
| १९. | लिखु गाउँपालिका | जुके, लिखु | २८,२५२ | १७,६५७ |
| २०. | षडानन्द नगरपालिका | अरुण नदी | ५,०१४,६८७ | २४६,४७६ |
| २१. | साँगुरीगढी गाउँपालिका | लेउटी खोला | २,३२७,५९२ | १८१,५०० |
| २२. | सिद्धिचरण नगरपालिका | लिवै, बोगने, सिस्ने, ठोटेने, दूधकोशी, चारुवु | ४६६,१५४ | ३३५,५९६ |
| घ. | उपयोगमा समस्या रहेकाकाले उत्खनन हुन नसकेका (जम्मा ११ वटा स्थानीय तहहरू) | | | |
| १. | कोशी गाउँपालिका | सप्तकोशी | ० | ० |

| क्र.सं. | स्थानीय तह | नदीजन्य पदार्थ उपयोग गर्न सकिने नदी तथा खोला | प्रतिवेदन अनुसार उत्खनन गर्न सकिने परिमाण (घन फिट) | हालको वार्षिक उत्खनन परिमाण घन फिट |
|-----------|--|--|--|------------------------------------|
| २. | खुम्बु पासाङल्हामु गाउँपालिका | दूधकोशी | ० | ० |
| ३. | गढी गाउँपालिका | ट्याङगा खोला, बूढी खोला | ० | ० |
| ४. | थुलुङ दुधकोशी गाउँपालिका | दूधकोशी, सोलु खोला | ० | ० |
| ५. | फत्ताङलुङ गाउँपालिका | थासा खोला, घुन्सा खोला | ० | ० |
| ६. | मैवाखोला गाउँपालिका | बाढी पहिरोको जोखिम, यातायातको समस्या | ० | ० |
| ७. | रोङ गाउँपालिका | विरिङ | ० | ० |
| ८. | लिखुपिके गाउँपालिका | लिखु र मार्बु खोला | ० | ० |
| ९. | सिदिङवा गाउँपालिका | कावेली र इन्द्रावती | ० | ० |
| १०. | सिरिजङ्घा गाउँपालिका | कावेली र फावा खोला | ० | ० |
| ११. | हतुवागढी गाउँपालिका | दूधकोशी, एकुवा खोला, कावा खोला | ० | ० |
| ड. | ढुङ्गा, गिटी, बालुवा नभएका स्थानीय तहहरू (जम्मा १४ वटा स्थानीय तहहरू) | | | |
| १. | कचनकवल गाउँपालिका | छैन | | |
| २. | खोटेहाङ गाउँपालिका | छैन | | |
| ३. | गौरादह नगरपालिका | छैन | | |
| ४. | गौरीगञ्ज गाउँपालिका | छैन | | |
| ५. | चम्पादेवी गाउँपालिका | छैन | | |
| ६. | छथर गाउँपालिका | छैन | | |
| ७. | बिर्तामोड नगरपालिका | छैन | | |
| ८. | भोक्राहा नरसिं गाउँपालिका | छैन | | |
| ९. | लालीगुराँस नगरपालिका | छैन | | |
| १०. | विराटनगर महानगरपालिका | छैन | | |
| ११. | सन्दकपुर गाउँपालिका | छैन | | |
| १२. | साकेला गाउँपालिका | छैन | | |
| १३. | सिलीचोङ गाउँपालिका | छैन | | |
| १४. | सुनवर्षी नगरपालिका | छैन | | |
| च. | स्रोत भएर पनि प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण (IEE) नभएका (जम्मा ३७ वटा स्थानीय तहहरू) | | | |
| १. | इनरुवा नगरपालिका | सुनसरी खोला | | |

| क्र.सं. | स्थानीय तह | नदीजन्य पदार्थ उपयोग गर्न सकिने नदी तथा खोला | प्रतिवेदन अनुसार उत्खनन गर्न सकिने परिमाण (घन फिट) | हालको वार्षिक उत्खनन परिमाण घन फिट |
|---------|--------------------------|---|--|------------------------------------|
| २. | ऐँसेलुखर्क गाउँपालिका | रावा खोला, लिदिड खोला, दुधकोशी | ० | ० |
| ३. | केपिलासगढी गाउँपालिका | ताप खोला, रावा खोला | ० | ० |
| ४. | खिजिदेम्बा गाउँपालिका | लिखु | ० | ० |
| ५. | चिचिला गाउँपालिका | अरुण | ० | ० |
| ६. | छथर जोरपाटी गाउँपालिका | तेलिया, ताड्कुवा, तमोर | ० | ० |
| ७. | जन्तेढुङ्गा गाउँपालिका | सावा खोला, बक्रा खोला | ० | ० |
| ८. | जहदा गाउँपालिका | लोहन्द्रा, सिंधिया | ० | ० |
| ९. | झापा गाउँपालिका | बिटिड, कन्काई | ० | ० |
| १०. | ट्याम्केमैयुम गाउँपालिका | गोगने | ० | ० |
| ११. | ताप्ली गाउँपालिका | यारी, धारी, राकुला | ० | ० |
| १२. | तुम्बेवा गाउँपालिका | नावा, तावा, तमोर | ० | ० |
| १३. | देवानगञ्ज गाउँपालिका | बूढी खोला, मरिया खोला | ० | ० |
| १४. | नेचासल्यान गाउँपालिका | दूधकोशी | ० | ० |
| १५. | पथरीशनिश्चरे नगरपालिका | डाँस | ० | ० |
| १६. | पौवादुङ्गा गाउँपालिका | पिखुवा, अरुण, खेसाड | ० | ० |
| १७. | फालेलुङ गाउँपालिका | नवमी खोला, हेवा खोला, मुवा खोला | ० | ० |
| १८. | फाल्गुनन्द गाउँपालिका | निकु खोला | ० | ० |
| १९. | बराहक्षेत्र नगरपालिका | कोकाह खोला, बाघ खोला, सर्दु खोला, पटनाली खोला | ० | ० |
| २०. | बर्जु गाउँपालिका | बूढी खोला, केसलिया खोला, ट्याङ्गा खोला | ० | ० |
| २१. | बुद्धशान्ति गाउँपालिका | टिमाई, बिटिड, हडिया | ० | ० |
| २२. | भोटखोला गाउँपालिका | वरुण खोला, लेगुवा | ० | ३,३५५ |
| २३. | महालक्ष्मी नगरपालिका | अरुण नदी | ० | ० |
| २४. | माईजोगमाई गाउँपालिका | जोगमाई, माई | ० | ० |
| २५. | माप्यदुधकोशी गाउँपालिका | दूधकोशी, सालु खोला, मौरी खोला, चेल्सी खोला | ० | ० |
| २६. | माहाकुलुङ गाउँपालिका | फुलवाती, कोलाम, हुँगा | ० | ० |
| २७. | मिक्लाजुङ गाउँपालिका | नावा खोला | ० | ० |

| क्र.सं. | स्थानीय तह | नदीजन्य पदार्थ उपयोग गर्न सकिने नदी तथा खोला | प्रतिवेदन अनुसार उत्खनन गर्न सकिने परिमाण (घन फिट) | हालको वार्षिक उत्खनन परिमाण घन फिट |
|-----------|---|--|--|------------------------------------|
| २८. | मिक्वाखोला गाउँपालिका | मेवा खोला | ० | ० |
| २९. | मोलुङ गाउँपालिका | मोलुङ, योक्लिङ, सोलुङ, यलुङ | ० | ० |
| ३०. | लिम्चुङबुङ गाउँपालिका | सुनकोशी | ० | ० |
| ३१. | शहिदभूमि गाउँपालिका | फङ्सुवा र मुगा | ० | ० |
| ३२. | सभापोखरी गाउँपालिका | सभा खोला | ० | ० |
| ३३. | साल्पासिलिछो गाउँपालिका | अरुण, इर्खुवा, नेङ्खुवा | ० | ० |
| ३४. | सुनकोशी गाउँपालिका | सोलुङ, मोलुङ, सुनकोशी | ० | ० |
| ३५. | सूर्योदय नगरपालिका | मेची, सिद्धि | ० | ० |
| ३६. | सोताङ गाउँपालिका | हुँगा | ० | ० |
| ३७. | हरिनगरा गाउँपालिका | मरिया खोला | ० | ० |
| छ. | विवरण उपलब्ध नभएका (जम्मा ५ वटा स्थानीय तहहरू) | | | |
| १. | आमचोक गाउँपालिका | विवरण प्राप्त नभएको | | |
| २. | पाख्रिबास नगरपालिका | विवरण प्राप्त नभएको | | |
| ३. | फाकफोकथुम गाउँपालिका | विवरण प्राप्त नभएको | | |
| ४. | मकालु गाउँपालिका | विवरण प्राप्त नभएको | | |
| ५. | मेचीनगर नगरपालिका | विवरण प्राप्त नभएको | | |

अनुसूची ६: स्थानीय तहबाट सूचना सङ्कलन गर्न प्रयोग गरिएको प्रश्नावली

प्रदेश नं. १ को राजस्व सम्भाव्यता अध्ययन

मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय

प्रदेश सहयोग कार्यक्रम

विराटनगर, नेपाल

स्थानीय सहजकर्ताबाट गाउँपालिका तथा नगरपालिकाको प्राकृतिक स्रोतसँग सम्बन्धित सूचना सङ्कलन गर्ने प्रयोजनको लागि तयार पारिएको सूचना सङ्कलन फारम

| | |
|-------------------------------|--|
| जिल्ला: | |
| पालिकाको नाम: | |
| सूचना संकलकको इमेल | |
| सूचना उपलब्ध गराउनेको नाम/पद | |
| सूचना उपलब्ध गराउनेको फोन नं. | |

(१) प्राकृतिक स्रोत (नदीजन्य पदार्थ)

| प्राकृतिक स्रोत | भएको स्थान (खोलाको नाम) | छ भने IEE अध्ययन भएको छ/छैन ? | अध्ययन प्रतिवेदन अनुसार वार्षिक कति क्यू.फिट/घ.मि. उत्खनन् गर्न सकिन्छ ? | हाल वार्षिक कति क्यू.फिट/घ.मि. उत्खनन् गरिएको छ ? | दर (प्रति क्यू.फिट/घ.मि.) रु. | कैफियत |
|--------------------|-------------------------|-------------------------------|--|---|-------------------------------|--------|
| ढुङ्गा | | | | | | |
| गिट्टी | | | | | | |
| रोडा | | | | | | |
| बालुवा | | | | | | |
| माटो (भरौट र बलौट) | | | | | | |
| कटिड ढुङ्गा | | | | | | |
| खरी ढुङ्गा | | | | | | |
| स्लेट | | | | | | |
| अन्य | | | | | | |

स्रोत: सम्बन्धित स्थानीय तह

नोट: उपलब्ध भएसम्म प्राकृतिक स्रोतको छुट्टा छुट्टै विवरण सङ्कलन गर्ने। यदि छुट्टा छुट्टै विवरण उपलब्ध नभएमा एकमुष्ट विवरण सङ्कलन गर्ने।

क. प्राकृतिक स्रोतको संरक्षण र उत्खनन् कार्यमा मुख्य समस्याहरू (कम्तिमा पाँचवटा) के के रहेका छन् ?

- (१)
- (२)
- (३)
- (४)
- (५)

(ख) नदी जन्य पदार्थको उत्खनन कार्यमा महिला र पिछडावर्गका मजदुरहरूको संलग्नता अनुमानित प्रतिशतमा कति छ ?

(ग) महिला र पिछडावर्गले सञ्चालन गरेको प्राकृतिक स्रोत सम्बन्धी व्यवसायबाट प्राप्त राजस्व कति (प्रतिशतमा) छ ?

(घ) माथि बुँदा नं. १ को नदी जन्य पदार्थबाट प्राप्त राजस्वमध्ये मध्ये ४० प्रतिशत प्रदेश सरकारसँग बाँडफाँट भएको छ वा छैन ?
छ भने कसरी र छैन भने किन ?

१.

२.

३.

(२) मनोरञ्जन कर

| क्र.स. | शीर्षक | छ/छैन? | इकाइ (कति वटा/पटक) | दर (प्रतिशत वा रु.) | महिलाको स्वामित्व छ वा छैन? |
|--------|--|--------|--------------------|---------------------|-----------------------------|
| १ | चलचित्र घरमा चलचित्र प्रदर्शन गर्दा दर्शकहरूबाट प्राप्त वार्षिक राजस्व (आम्दानी) | | | | |
| २ | भिडियो घर | | | | |
| ३ | साँस्कृतिक प्रदर्शन हल | | | | |
| ४ | कन्सर्ट, थिएटर | | | | |
| ५ | नाटक घर (टिकटको मूल्यको) | | | | |
| ६ | दोहोरी साँझ, डान्स बार | | | | |
| ७ | फन पार्क | | | | |
| ८ | वाटर गार्डेन | | | | |
| ९ | बाल उद्यान | | | | |
| १० | अन्य मनोरञ्जनात्मक स्थलहरू | | | | |
| ११ | एक महिनासम्म जादु, सर्कस तथा मेला मनोरञ्जनात्मक कार्यक्रम सञ्चालन | | | | |
| १२ | एक महिनाभन्दा बढी जादु, सर्कस तथा मेला मनोरञ्जनात्मक कार्यक्रम संचालन | | | | |
| १३ | चिया बगान | | | | |
| १४ | दृश्यावलोकन स्थल | | | | |
| १५ | प्रख्यात धार्मिक स्थल | | | | |

स्रोत: सम्बन्धित स्थानीय तह

क. माथि बुँदा नं २ को मनोरञ्जन करबाट प्राप्त आम्दानी मध्ये ४० प्रतिशत प्रदेश सरकारलाई बाँडफाँट गर्ने गरिएको छ वा छैन ? छ भने कसरी र छैन भने किन ?

१.

२.

३.

(३) विज्ञापन कर

| क्र.सं. | शीर्षक | इकाइ (वर्गफिट) | दर प्रति वर्गफिट | सरदर वार्षिक आम्दानी (रु.) |
|---------|----------------------------|----------------|------------------|----------------------------|
| १ | होडिङ्ग बोर्ड | | | |
| २ | वालपेन्ट | | | |
| ३ | फ्लेक्स बोर्ड | | | |
| ४ | एलइडी डिजिटल होडिङ्ग बोर्ड | | | |

| क्र.सं. | शीर्षक | इकाइ (वर्गफिट) | दर प्रति वर्गफिट | सरदर वार्षिक आमदानी (रु.) |
|---------|----------------------|----------------|------------------|---------------------------|
| ५ | मेला महोत्सव | | | |
| ६ | सार्वजनिक सवारी साधन | | | |
| ७ | विद्युत पोल | | | |
| ८ | अन्य | | | |

स्रोत: सम्बन्धित स्थानीय तह

क. विज्ञापन करको थप सम्भावनाहरू के कस्ता छन् ?

ख. महिलाहरूबाट सञ्चालित विज्ञापन एजेन्सी मार्फत वार्षिक कति राजस्व सङ्कलन भएको छ ?

४. वार्षिक राजस्व सङ्कलनको अवस्था (रु. मा)

| क्र.सं. | आमदानी शीर्षक | आ.व. २०७५/७६ | आ.व. २०७६/७७ | आ.व. २०७७/७८ | आ.व. २०७८/७९ | आ.व. २०७९/८० को अनुमानित |
|---------|---|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------------------|
| १ | नदीजन्य पदार्थ (ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा) | | | | | |
| २ | मनोरञ्जन कर | | | | | |
| ३ | विज्ञापन कर | | | | | |

स्रोत: सम्बन्धित स्थानीय तह

(क) वार्षिक राजस्व सङ्कलनमा महिलाहरूको योगदान (अनुमानित प्रतिशत) कति छ ?

(५) स्थानीय तह र प्रदेश सरकार बीचको राजस्व बाँडफाँट सम्बन्धी विषयलाई थप सहज र प्रभावकारी बनाउन के गर्नु पर्ला ?

(६) पर्यटन शुल्कसँग सम्बन्धित

नेपाल सरकारबाट हस्तान्तरण भई आएका र प्रदेश सरकारले तोकेको प्रदेश अन्तर्गतका वनक्षेत्रभित्र पर्ने ।

| क्र.सं. | विवरण | छ/छैन? छ भने नाम र स्थान | इकाइ (वटा/क्षेत्रफल/आदि) | पर्यटन शुल्क असुली गर्ने गरेको छ वा छैन? |
|---------|--|--------------------------|--------------------------|--|
| १ | पर्यटकीय पदमार्ग | | | |
| २ | तालतलैया | | | |
| ३ | गुफा | | | |
| ४ | प्राचीन स्मारक तथा पूरातात्विक, धार्मिक ऐतिहासिक, साँस्कृतिक सम्पदा र सङ्ग्रहालय | | | |
| ५ | सङ्ग्रहालय | | | |
| ६ | पार्क | | | |
| ७ | रक क्लाइम्बिङ | | | |
| ८ | बञ्जी जम्पिङ | | | |
| ९ | च्यापिटिङ | | | |
| १० | क्यानोनिङ | | | |
| ११ | जीपफ्लायर, अल्ट्रालाईट | | | |
| १२ | प्याराग्लाइडिङ | | | |
| १३ | केवल कार | | | |

| क्र.सं. | विवरण | छ/छैन? छ भने नाम र स्थान | इकाइ (वटा/क्षेत्रफल/आदि) | पर्यटन शुल्क असुली गर्ने गरेको छ वा छैन? |
|---------|---|--------------------------|--------------------------|--|
| १४ | पिकनिक स्थल | | | |
| १५ | भ्यूटावर | | | |
| १६ | ट्रेकिङ तथा ट्राभल एजेन्सी, क्यूरियो तथा पर्यटकीय सामग्री विक्री वितरण गर्ने पसलहरु | | | |
| १७ | प्रदेश सरकारको पर्यटन सूचना केन्द्र | | | |

७. महिलाहरुले सञ्चालन गरेको पर्यटन व्यवसाय के कति छन् र त्यसबाट वार्षिक कति राजस्व सङ्कलन भएको छ ?

८. प्रदेश सरकारलाई राजस्व सम्बन्धी थप वित्तीय अधिकारको आवश्यकता छ वा छैन? छ भने के अधिकार दिन उपयुक्त होला ? (प्रमुख तथा अध्यक्ष र उपप्रमुख तथा उपाध्यक्षलाई सोध्ने) ।

९. राजस्व सङ्कलन र बाँडफाँट सम्बन्धी विषयमा प्रदेश सरकार र स्थानीय तह बीचको सहकार्यलाई थप बलियो बनाउन के गर्नु पर्ला ?

तयार गर्ने गणक:

दस्तखत:

नाम:

सम्पर्क नं.

प्रमाणित गर्ने पदाधिकारी:

दस्तखत:

नाम:

पद:

सम्पर्क नं.

अनुसूची ७: स्थानीय तहहरूमा ढुङ्गा, गिटी, बालुवा बिक्री वापतको रकम

| क्र.सं. | जिल्ला | स्थानीय तह | नदीजन्य पदार्थको यथार्थ सङ्कलन (रु.) | | | | अनुमानित(रु.) |
|---------|-----------|---------------------|--------------------------------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|
| | | | आ.व. २०७५/७६ | आ.व. २०७६/७७ | आ.व. २०७७/७८ | आ.व. २०७८/७९ | आ.व. २०७९/८० |
| १ | ताप्लेजुड | ताप्लेजुड नपा | १९००००० | १७००००० | १७५७५८० | ४०६९४५० | ४०००००० |
| २ | ताप्लेजुड | मिक्वाखोला गापा | २५०००० | ३००००० | ३४०००० | ४००००० | ५००००० |
| ३ | ताप्लेजुड | मेरिडडेन गापा | ० | १५०००० | ९००००० | ६३७००० | ९५०००० |
| ४ | ताप्लेजुड | पाथिवरा याडवरक गापा | ० | ० | ४७५६३२ | १९५०० | २००००० |
| ५ | ताप्लेजुड | सिरिजङ्घा गापा | ० | ० | ४०३२०० | ० | ५००००० |
| ६ | पाँचथर | फिदिम नपा | १६६३५ | ३१००००० | १७५१५८० | २९०७०९० | २५६५००० |
| ७ | पाँचथर | फालेलुङ गापा | ० | ० | ० | ० | ३००००० |
| ८ | पाँचथर | हिलिहाङ गापा | ० | ० | ७००००० | ३५०००० | १५००००० |
| ९ | पाँचथर | कुम्मायक गापा | ० | ० | ० | १५०५००० | १२५०००० |
| १० | पाँचथर | याडवरङ गापा | ० | २५२००० | ५५००० | १३४७००० | ५००००० |
| ११ | इलाम | इलाम नपा | ७७६१६० | ० | १०४४००० | १४६०००० | २२६७००० |
| १२ | इलाम | माई नपा | ० | ० | ५९००००० | ० | १०००००० |
| १३ | इलाम | चुलाचुली गापा | ० | ० | ६८००००० | २०००००० | २१५००००० |
| १४ | इलाम | माडसेबुङ गापा | ० | ० | ० | ५८१७४०० | ५०००००० |
| १५ | इलाम | रोङ गापा | ० | ० | ७५००० | ० | ० |
| १६ | झापा | दमक नपा | ८२३००००० | ४६८९०००० | १७९९२५०० | ४६८५१००० | ० |
| १७ | झापा | कन्काई नपा | ० | ० | २००८४४२० | २८८९०४५० | १९१९१९९१ |
| १८ | झापा | भद्रपुर नपा | ५२११००० | ६३००००० | ९६००००० | १२९००००० | ८०००००० |
| १९ | झापा | अर्जुनधारा नपा | ० | ० | ० | ७९४००००० | ३६५००००० |
| २० | झापा | शिवसताक्षी नपा | ० | ३७००००० | १८३००००० | १५३४५४०० | ० |
| २१ | झापा | कमल गापा | ० | ० | ० | ३२१४८६७ | ५०००००० |
| २२ | झापा | बाह्रदशी गापा | १५८०००० | ० | १४५१००५ | २४६६७४४ | ३०२१००० |
| २३ | झापा | बुद्धशान्ति गापा | ११९५८६८ | २०००००० | ४७७५४०० | ७५००००० | ७५००००० |
| २४ | झापा | हल्दीबारी गापा | ० | ० | १३४८८७७ | २४०१२५० | १५००००० |
| २५ | तेह्रथुम | म्याङलुङ नपा | ० | ० | १०५०००० | १७५६८८९ | ५०००००० |
| २६ | तेह्रथुम | आठराई गापा | ० | ५५०००० | १२२५००० | २३२००० | १५००००० |
| २७ | तेह्रथुम | फेदाप गापा | ० | ० | ० | ६१५००० | ७००००० |
| २८ | धनकुटा | धनकुटा नपा | २०६००० | १४१५००० | १८५०००० | ७५५००० | २२००००० |
| २९ | धनकुटा | महालक्ष्मी नपा | ० | ० | ३३१९५१७६ | ३८५५६४५ | १५००००० |
| ३० | धनकुटा | साँगुरीगढी गापा | ० | ७२००००० | १२००००० | ८८००००० | १००००००० |
| ३१ | धनकुटा | चौबिसे गापा | ० | ० | ६७०००० | ६८६२०५ | ० |
| ३२ | मोरङ | बेलबारी नपा | ० | २९०००००० | ४००००००० | ३००००००० | १८०००००० |
| ३३ | मोरङ | लेटाङ नपा | ० | ११५२९७९७५ | ८६६७४०९४ | १११६५९२९५ | ० |
| ३४ | मोरङ | रंगेली नपा | ० | ३०५६१०० | २९७५४०० | २१९२९०० | १७००००० |
| ३५ | मोरङ | रतुवामाई नपा | ० | ० | ५५०००० | ५५०००० | ६००००० |
| ३६ | मोरङ | उर्लाबारी नपा | ० | ० | २५९३०५६६ | ६२४५४५४३ | ० |
| ३७ | मोरङ | सुन्दरहरैँचा नपा | ३३३३३३३३ | ३५१५११५० | ३४७००००० | ६२१००००० | ५७८१३६४१ |
| ३८ | मोरङ | बुढीगंगा गापा | १८६६२२५ | ३२८२००० | ० | ७९१८१५० | ० |
| ३९ | मोरङ | धनपालथान गापा | ० | ६९००००० | ७५००००० | १११३७३३७ | ३०००००० |

| क्र.सं. | जिल्ला | स्थानीय तह | नदीजन्य पदार्थको यथार्थ सङ्कलन (रु.) | | | | अनुमानित(रु.) |
|---------|------------|-------------------------------|--------------------------------------|------------------|-----------------|------------------|------------------|
| | | | आ.व. २०७५/७६ | आ.व. २०७६/७७ | आ.व. २०७७/७८ | आ.व. २०७८/७९ | आ.व. २०७९/८० |
| ४० | मोरङ | ग्रामथान गापा | २०१००००० | २९०००००० | २५८४२५३ | २४५८५४०० | २९५००००० |
| ४१ | मोरङ | कानेपोखरी गापा | ० | २९०००००० | ४००००००० | ३००००००० | १८०००००० |
| ४२ | मोरङ | कटहरी गापा | ० | ४६०००००० | ५००००००० | १७८९१७४ | २००००००० |
| ४३ | मोरङ | केराबारी गापा | ० | ९०१७८४५० | १२०७४४४०१ | ४००००००० | ४००००००० |
| ४४ | मोरङ | मिक्लाजुङ गापा | ० | ६४१०००००० | ८३६९६५३९ | ० | ६७००००००० |
| ४५ | सुनसरी | इटहरी उमनपा | ९६४४४४४ | १५८२७५५० | १७३८५४९३ | ० | ११००००००० |
| ४६ | सुनसरी | धरान उमनपा | १९९६०६४० | ० | ४२९४२५०४ | ० | १००००००० |
| ४७ | सुनसरी | दुहवी नपा | २३२३९२७ | २२६६९१८ | ६२०१००० | १०४५१००० | १०५०००००० |
| ४८ | सुनसरी | रामधुनी नपा | ० | ९००००००० | ० | ० | १००००००० |
| ४९ | सुनसरी | बराहक्षेत्र नपा | ५६३००० | ३५१००० | १३७९९१९९ | ० | ० |
| ५० | सुनसरी | कोशी गापा | ५००००००० | ६००००००० | १००००००० | १५००००००० | १५००००००० |
| ५१ | संखुवासभा | चैनपुर नपा | ७६००६६७ | ५००००० | १५०००००० | ५००००० | २५०००००० |
| ५२ | संखुवासभा | धर्मदेवी नपा | ३०००००० | ३५०००० | ३८०००० | ७००००० | १००००००० |
| ५३ | संखुवासभा | खाँदबारी नपा | १२०००००० | १४०००००० | २८२५००० | २१०००००० | ५९२००९३ |
| ५४ | संखुवासभा | मादी नपा | २५००० | ९१७०० | ७६७५० | ५७२०० | ६०००० |
| ५५ | संखुवासभा | पाँचखपन नपा | ० | ० | ० | ३००००० | ३००००० |
| ५६ | संखुवासभा | भोटखोला गापा | ० | ० | ० | ० | ६००००० |
| ५७ | सोलुखुम्बु | सोताङ गापा | | १४७५०० | १९९००० | ११०००००० | ० |
| ५८ | भोजपुर | भोजपुर नपा | ० | ८८६८६२ | १३३९३० | ८८६४३१ | ५००००० |
| ५९ | भोजपुर | षडानन्द नपा | ० | ० | ११४१०१७ | १४७८८५५ | ३३००००० |
| ६० | भोजपुर | ट्याम्केमैयुम गापा | ० | ० | २००००० | २००००० | २००००० |
| ६१ | भोजपुर | रामप्रसाद राई गापा | ० | ० | ० | १५०००० | १५०००० |
| ६२ | भोजपुर | अरुण गापा | ० | ० | ६५०००० | ६३५७६० | ७००००० |
| ६३ | भोजपुर | पौवादुङ्गा गापा | ० | ० | ० | ० | ५००००० |
| ६४ | भोजपुर | हतुवागढी गापा | ० | ० | १४१४६२ | ६०५०० | ० |
| ६५ | खोटाङ | हलेसी तुवाचुङ नपा | ० | ० | ८९९७४५ | ८००००० | ९००००० |
| ६६ | खोटाङ | दिक्तेल रुपाकोटा मझुवागढी नपा | ० | ० | ० | ३०००० | ० |
| ६७ | खोटाङ | ऐसेलुखर्क गापा | ८०००० | ० | ० | ० | ० |
| ६८ | खोटाङ | रावावेसी लामिडाँडा गापा | ० | ६००००० | ९००००० | १२००००० | १५००००० |
| ६९ | उदयपुर | कटारी नपा | ८४८०७४८ | ४४००७५५ | ३६९३७५० | १३००००० | २५०००० |
| ७० | उदयपुर | चौदण्डीगढी नपा | २४७५२३३५ | २७०३८०६२ | १७०४५६६८ | ० | २०२७५२५१ |
| ७१ | उदयपुर | त्रियुगा नपा | १५६९४६८८ | ९७७४३९ | १२०२३८७४ | ११०७४२५२ | |
| ७२ | उदयपुर | बेलका नपा | ० | ० | ० | ३१३०१७० | ० |
| ७३ | उदयपुर | उदयपुरगढी गापा | ० | ० | ० | १६६४५१ | ३००६१२ |
| ७४ | उदयपुर | रौतामाई गापा | ० | १३५५००० | १३८५०४० | १२०९७९ | ० |
| ७५ | ओखलढुङ्गा | सिद्धिचरण नपा | ० | ० | ० | ० | २२६६२० |
| ७६ | ओखलढुङ्गा | चिशंखुगढी गापा | ० | २५००००० | १५००००० | २३००००० | २५००००० |
| ७७ | ओखलढुङ्गा | मानेभञ्ज्याङ गापा | ० | ० | २०००००० | २१०४०७५ | ० |
| | | जम्मा | २४४३६०६७० | ५५६८१५०६१ | ७१९५८६५५ | ६९४४०८१६२ | ४६१५४१२०८ |

अनुसूची ८: कृषि आय कर सम्बन्धी कानूनी व्यवस्था तथा अन्तर्राष्ट्रिय अभ्यास

१. नेपालमा कृषि आयमा कर सम्बन्धी कानूनी व्यवस्था

नेपालको सन्दर्भमा आयकर ऐन, ५०५८ को दफा २ को “ज” अनुसार “आय” भन्नाले कुनै व्यक्तिले रोजगारी, व्यवसाय वा लगानीबाट प्राप्त गरेको आय र यस ऐन बमोजिम गणना गरिएको सो आयको कूल रकम सम्झनु पर्दछ। ऐनको दफा ११ (१) अनुसार कुनै फर्म, कम्पनी, साझेदारी तथा संगठित संस्थाको रूपमा दर्ता गरी कृषि व्यवसाय गरी प्राप्त गरेको आयमा र भूमि सम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा १२ को खण्ड (घ) नेपाल सरकारले सूचित आदेशद्वारा तोकिदिएको औद्योगिक काममा तोकिएको शर्त अनुसार लगाइएको सोही आदेशमा तोकिएको हदसम्मको जग्गा, त्यस्तो काममा रहेसम्म, र (ङ) अनुसार नेपाल सरकारले सूचित आदेशद्वारा तोकिदिएको कृषि उद्योगको काममा तोकिएको शर्त अनुसार लगाइएको सोही आदेशमा तोकिएको हदसम्मको जग्गा, त्यस्तो शर्त अनुसार सो काममा रहेसम्मको जग्गामा कृषि व्यवसायबाट प्राप्त भएकोमा बाहेक अन्य कृषि आमदानीमा कर लाग्ने छैन।

सोही ऐनको दफा ११ (२) ले सहकारी ऐन, २०४८ बमोजिम दर्ता भई सञ्चालन भएको कृषि वा वन पैदावारमा आधारित रेशम खेती तथा रेशम उत्पादन, फलफूल खेती तथा फलफूल प्रशोधन, पशुपालन, डेरी उद्योग, कुखुरा पालन, मत्स्यपालन, चिया खेती तथा प्रशोधन, कफी खेती तथा प्रशोधन, जडिबुटी खेती तथा प्रशोधन, तरकारी बीउ-विजन उत्पादन, मौरीपालन, मह उत्पादन, रवर खेती, फलफूल खेती तथा उत्पादन, कवुलियति वन, एग्रोफरेष्ट्री आदि व्यावसायिक वन सम्बन्धी व्यवसायहरू जस्ता कृषि तथा वनजन्य उद्योगहरू, तरकारी भण्डारका लागि स्थापित शीत भण्डार, कृषि सम्बन्धी बीउ-विजन, कीटनाशक औषधि, मल तथा कृषि औजार (यान्त्रिक शक्तिबाट चल्ने बाहेक) को कारोवार गर्ने सहकारी संस्था तथा ग्रामीण समुदायमा आधारित बचत तथा ऋण सहकारी संस्था वा संघको आयमा कर नलाग्ने र यस्तो संस्था वा संघले वितरण गर्ने लाभांशमा समेत कर नलाग्ने व्यवस्था छ। सोही ऐनको दफा ११ (६) को “क” अनुसार “कृषि व्यवसाय” भन्नाले सार्वजनिक वा निजी जमिनबाट बालीनाली उत्पादन गर्ने वा जमिन प्रयोग गर्ने मोहीबाट कुत वा बाली प्राप्त गर्ने व्यवसाय सम्झनु पर्छ भनिएको छ। कृषि आयमा कर सम्बन्धमा विभिन्न प्रदेशगत कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ (संशोधन सहित) मा निम्नानुसारको कानूनी व्यवस्था छ।

| क्र.सं. | प्रदेश | कानूनी व्यवस्था |
|---------|--------------|--|
| १ | प्रदेश नं. १ | प्रदेश कृषि व्यवसाय प्रवर्द्धन अनुदान ऐन, २०७७ अनुसार “कृषि” भन्नाले विभिन्न खाद्यान्न, तरकारी, फलफूल, औद्योगिक बाली, च्याउ, मह, पशुपन्छी तथा मत्स्य उत्पादन, बजारीकरण तथा प्रशोधन सम्बद्ध व्यवसाय सम्झनुपर्छ। दफा ८ : कृषि आयमा कर: (१) प्रदेशले आफ्नो क्षेत्र भित्रको कृषि आयमा कर लगाउनेछ। (२) यो कर स्वयंकर निर्धारण प्रणालीमा आधारित हुनेछ। (३) कृषि आयमा कर लगाउने प्रक्रिया प्रदेश सरकारले तोके बमोजिम हुनेछ। |
| २ | मधेश | कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन उपलब्ध हुन नसकेको। |
| ३ | बागमती | दफा १३. कृषि आयमा कर : (उपदफा १) प्रदेश सरकारले आफ्नो क्षेत्र भित्रको कृषि आयमा प्रचलित कानून बमोजिम कर लगाउन सक्नेछ। स्पष्टीकरण: यस दफाको प्रयोजनको लागि “कृषि आय” भन्नाले अन्नबाली, नगदेवाली, मासुजन्य पदार्थ, माछा, दूधजन्य पदार्थ, तेलहन जस्ता खाद्य वस्तु उत्पादनको विक्रीबाट हुने व्यवसायिक आयलाई सम्झनु पर्छ। (२) स्वयम् घोषणा गरी आफ्नो कृषि आय प्रस्तुत गर्ने कृषकहरूका लागि कृषि आयमा तोकिए बमोजिम कर लगाईने र असुल उपर गरिनेछ। (३) कृषि आयमा कर प्रदेश सरकारले तोकेको कार्यालयले सङ्कलन गरी प्रदेश सञ्चित कोषमा जम्मा गर्नु पर्नेछ। (४) कृषि आयमा लाग्ने कर सम्बन्धी कार्यविधि प्रदेश सरकारले निर्धारण गरे बमोजिम हुनेछ। |
| ४ | गण्डकी | दफा १३. कृषि आयमा कर : (उपदफा १) प्रदेशले आफ्नो क्षेत्र भित्रको कृषि आयमा कर लगाउने छ। (२) कृषि आयमा कर कृषि उपजको बिक्री गरेको बखत लगाइने छ। स्पष्टीकरण: यस दफाको प्रयोजनका लागि “कृषि उपज” भन्नाले धान, गहुँ, कोदो, फापर, मकै, फलफूल, तरकारी, आलु, अण्डा, मासु, माछा, दुध, दलहन, तेलहन |

| क्र.सं. | प्रदेश | कानूनी व्यवस्था |
|---------|-------------|---|
| | | जस्ता खाद्य वस्तु र प्रारम्भिक प्रशोधन तथा प्याकेजिङ भएको खाद्यवस्तु समेतलाई सम्झनु पर्छ । (३) कृषि उपजको प्रारम्भिक रूप भन्नाले कृषिको उत्पादन देखि प्रशोधन भई बिक्री वितरणका लागि तयार भएको कृषि उपज सम्झनु पर्छ । |
| ५ | लुम्बिनी | दफा १३. कृषि आयमा कर : (१) प्रदेशले आफ्नो क्षेत्रभित्रको कृषि आयमा कर लगाउनेछ । (२) यो कर स्वयंकर निर्धारण प्रणालीमा आधारित हुनेछ । (३) कृषि आयमा कर लगाउने प्रक्रिया प्रदेश सरकारले तोके बमोजिम हुनेछ । |
| ६ | कर्णाली | दफा २. परिभाषा: (ण) “कृषि आय” भन्नाले कर्णाली प्रदेशभित्रको कृषिजन्य कार्यमा प्रयोग भएको जमिनबाट प्राप्त भएको देहायको रकम सम्झनुपर्दछ । (अ) कृषियोग्य जमिनको प्रयोगबाट उत्पादित कृषि उपजको आमदानी, (आ) कृषियोग्य जमिनलाई लिजमा वा भाडामा लगाएवापत प्राप्त हुने रकम, (इ) कुत, अधिया आदिमा लगाए वापत प्राप्त हुने रकम र (ई) कृषियोग्य जमिनमा हुने फलफूल, तरकारी, मत्स्यपालन, पशुपालन आदिबाट प्राप्त हुने रकम (त) “कृषियोग्य जमिन” भन्नाले कृषि कार्यमा प्रयोग भएको जमिनलाई सम्झनुपर्छ । तर यो शब्दले दर्ता भएको वा नभएको निजी वन, नर्सरी वा खरवारीलाई जनाउने छैन । (थ) “कुल कृषि आय” भन्नाले यस ऐन बमोजिम निर्धारण गरिएको कूल कृषि आयलाई सम्झनुपर्दछ । दफा १४. कृषि आयमा कर लाग्ने: (१) कृषियोग्य जमिनलाई कृषि कार्यमा उपयोग नगरी बाँझो राखेमा अनुमानित आय कायम गरी कर लगाउन सकिनेछ । |
| ७ | सुदूरपश्चिम | दफा २. परिभाषा: (झ) “कृषि आय” भन्नाले प्रदेश भित्रको कृषियोग्य जमिनको प्रयोगबाट उत्पादित कृषि उपजको आमदानीलाई सम्झनु पर्छ । (ञ) “कृषियोग्य जमिन” भन्नाले निजी वन र नर्सरी वा खरवारी बाहेकका कृषि कार्यमा प्रयोग भएको जमिनलाई सम्झनु पर्छ । दफा १३. कृषि आयमा कर : (उपदफा १) प्रदेशले आफ्नो क्षेत्र भित्रको कृषि उपजको बिक्रीबाट प्राप्त हुने आयमा आर्थिक ऐन बमोजिम कृषि आयकर लगाउनेछ । स्पष्टीकरण: यस दफाको प्रयोजनको लागि “कृषि उपज” भन्नाले धान, गहुँ, कोदो, फापर, मकै, फलफूल, तरकारी, आलु, मासुजन्य पदार्थ, माछा, दूध, तेलहन, दलहन जस्ता अन्य खाद्य वस्तु तथा नगदे बालीको उपज सम्झनु पर्छ । (२) यस दफा बमोजिमको कर, कर कार्यालय वा प्रदेश सरकारले तोकेको कार्यालयले सङ्कलन गरी प्रदेश सञ्चित कोषमा जम्मा गर्नेछ । (३) उपदफा (१) बमोजिमको कर स्वयम् कर विवरणको आधारमा वार्षिक रूपमा आर्थिक वर्ष समाप्त भएको तीन महिनाभित्र बुझाउनु पर्नेछ । (४) कृषि योग्य जमिनलाई कृषि कार्यमा उपयोग नगरी एक वर्षभन्दा बढी बाँझो राखेको पाइएमा जमिन बाँझो राख्ने प्रवृत्तिलाई निरुत्साहन गर्नका लागि ऐन बमोजिम कर लगाइनेछ । (५) कृषियोग्य जमिनलाई कृषि कार्यमा उपयोग नगरी अन्य प्रयोगमा ल्याइएको पाइएमा अनुमानित आय कायम गरी कर लगाइनेछ । (६) यस दफामा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि कुनै विपद्को अवस्थामा प्रदेश सरकारले आफ्नो क्षेत्र भित्रको सबै किसिमको वा कुनै खास किसिमको कृषि आयमा लाग्ने कर पूर्ण वा आंशिक रूपमा छुट दिन सक्नेछ । |

स्रोत : सम्बन्धित प्रदेशको कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ (संशोधन सहित) ।

२. प्रदेशगत कृषि आयमा करको दर सम्बन्धी कानूनी व्यवस्था

नेपालको संविधानले प्रदेश सरकारको राजस्व सम्बन्धी एकल अधिकारको रूपमा कृषि आयमा कर लगाउने र असुल गर्ने अधिकार प्रदान गरेको छ । सोही संवैधानिक अधिकार बमोजिम प्रत्येक प्रदेश सरकारले आर्थिक ऐनमा सो सम्बन्धी व्यवस्था गरी कर सङ्कलन गर्नु पर्ने हुन्छ । प्रदेश सरकारको आर्थिक ऐनले तय गरेको कृषि आयमा करको दर सम्बन्धी निम्नानुसारको कानूनी व्यवस्था छ ।

| क्र.सं. | प्रदेश | कानूनी प्रावधान | दर |
|---------|--------------|--|---|
| १ | प्रदेश नं. १ | दफा १०. कृषि सेवा शुल्क: (१) कृषि मन्त्रालय र मातहतका कार्यालयहरुबाट प्रवाह गरिने सेवामा अनुसूची ७ बमोजिम सेवा शुल्क लगाइने र असुर उपर गरिनेछ । (२) उपदफा (१) बमोजिमको सेवा शुल्क प्रशासन प्रदेश सरकारबाट हुनेछ । (३) उपदफा (१) बमोजिमको कर र सेवा शुल्क कृषि मन्त्रालय अन्तर्गतका निकायहरुले सङ्कलन गरी प्रदेश सञ्चित कोषमा दाखिला गर्नु पर्नेछ । | <p>कृषि सेवा शुल्क: आर्थिक ऐन, २०७९ को दफा १० को उपदफा (१) अनुसार सम्बन्धित कृषि मन्त्रालय र मातहतका कार्यालयहरुबाट प्रवाह हुने विभिन्न सेवाहरु जस्तै पशुपंक्षी उपचार सेवा, पशुपंक्षी प्रयोगशाला सेवा, पशु प्रजनन सेवा, सामान्य सर्जरी सेवा, विशेष सर्जरी सेवा, बाली संरक्षण प्रयोगशाला, रेशम खेती सम्बन्धी उत्पादित वस्तुको बिक्री, माटो तथा मल परिक्षण प्रयोगशाला सेवा तथा कृषि ज्ञान केन्द्र फाप्लुमा उत्पादित कृषि उपजको बिक्री, अनुदानको लागि आवेदन दस्तुर, तालिम कक्ष प्रयोग वापतको भाडा आदि जस्ता सेवा उपलब्ध गराए वापत कृषि सेवा शुल्क लिने व्यवस्था रहेको छ ।</p> <ul style="list-style-type: none"> • |
| २ | मधेश | आर्थिक ऐनमा कृषि आयमा कर सम्बन्धी व्यवस्था नरहेको | |
| ३ | बागमती | आ.व. २०७९/८० मा स्वयम् घोषणा गरी आफ्नो कृषि आय प्रस्तुत गर्ने कृषकहरुका लागि कृषि आयमा कर लगाइने र असुल गरिने व्यवस्था आर्थिक ऐनको दफा ६ मा व्यवस्था छ । | <ul style="list-style-type: none"> • रु. ५ लाखसम्मको आयमा शुन्य कर • रु. ५ लाखदेखि ५० लाखसम्म १.५ प्रतिशत • रु. ५० लाखदेखि १ करोडसम्म १.७५ प्रतिशत, र • रु. १ करोडभन्दा बढी जति भएपनि २ प्रतिशत कर लाग्नेछ । |
| ४ | गण्डकी | प्रदेशभित्र उत्पादित कृषि उपजको बिक्रीबाट प्राप्त हुने आयमा अनुसूची ४ बमोजिम कर लगाइने व्यवस्था आर्थिक ऐनको दफा ६ मा छ । | <ul style="list-style-type: none"> • वार्षिक रु. १० लाखसम्मको आयमा कर लाने छैन । • रु. १० लाखदेखि २० लाखसम्म १.५ प्रतिशत • रु. २० लाखभन्दा जतिसुकै आय भए पनि २ प्रतिशतका दरले कर लगाइनेछ । |
| ५ | लुम्बिनी | प्रदेशभित्र अनुसूची ४ बमोजिम कृषि आयमा कर लगाई असुल उपर गरिने व्यवस्था आर्थिक ऐनको दफा ६ मा छ । | <ul style="list-style-type: none"> • रु. दश लाखसम्मको आयमा शुन्य कर • रु. दशलाख देखि पन्ध्र लाखसम्म २ प्रतिशत • रु. १५ लाखदेखि २० लाखसम्म ५ प्रतिशत, र • २० लाख भन्दा माथि पहिला थप २० लाखमा ५ प्रतिशत, दोश्रो २० लाखमा ३ प्रतिशत र सोभन्दा माथि जतिसुकै भएपनि ३ प्रतिशत कर लगाइने छ । |
| ६ | कर्णाली | आर्थिक ऐनमा कृषि आयमा कर सम्बन्धी व्यवस्था नरहेको | |
| ७ | सुदूरपश्चिम | आर्थिक ऐनको दफा ६ (१) प्रदेशले आफ्नो क्षेत्रभित्रको कृषि आयमा अनुसूची ४ बमोजिम कर लगाउने व्यवस्था छ । (२) उप दफा (१) बमोजिमको कर प्रदेश सरकारले तोकेको कार्यालयले सङ्कलन गरी प्रदेश सञ्चित कोषमा जम्मा गर्नेछ । (३) उपदफा (२) मा जुनसुकै कुरा उल्लेख गरिएको | <p>(१) कृषि क्षेत्रबाट प्राप्त आयमा लाने कर</p> <ul style="list-style-type: none"> • कुल आय रु. १० लाखसम्म कर नलाग्ने • कुल आय रु. १० लाख १ देखि २० लाखसम्म रु. ५ हजार • कुल आय रु. २० लाख १ देखि ४० लाखसम्म रु. १० हजार |

| क्र.सं. | प्रदेश | कानूनी प्रावधान | दर |
|---------|--------|--|---|
| | | <p>भएता पनि अर्को व्यवस्था नभएसम्म स्थानीय तहले उपदफा (१) बमोजिम जम्मा भएको रकम गाउँपालिका वा नगरपालिका वा उपमहानगरपालिकाले विभाज्य कोषमा राखी उक्त विभाज्य कोष मध्येबाट चालीस प्रतिशतले हुने रकम गाउँपालिका वा नगरपालिका वा उपमहानगरपालिकाले सम्बन्धित स्थानीय सञ्चित कोषमा राखी साठी प्रतिशतले हुने रकम मासिक रूपमा प्रदेश सञ्चित कोषमा जम्मा गरी सोको विवरण सहितको जानकारी आर्थिक मामिला मन्त्रालयमा पठाउनु पर्नेछ।</p> <p>(४) उपदफा (१) बमोजिमको करको प्रशासन सम्बन्धी कार्यविधि आर्थिक मामिला मन्त्रालयले निर्धारण गरे बमोजिम हुनेछ।</p> <p>ऐनको दफा १६ मा कृषि आयमा कर छुट सम्बन्धी विशेष व्यवस्था गर्दै यस ऐनमा जुनसुकै कुरा लेखिएको भएता पनि आर्थिक वर्ष २०७९/८० मा ऐनको दफा ६ बमोजिमको कृषि आयमा लाग्ने कर पूर्ण छुट गरिएको छ भनिएको छ।</p> | <ul style="list-style-type: none"> कुल आय रु. ४० लाख १ देखि १ करोडसम्म रु २५ हजार कुल आय रु. १ करोड १ देखि ५ करोडसम्म कुल आयको १ प्रतिशत कुल आय रु. ५ करोडभन्दा माथि जति भए पनि २ प्रतिशत <p>(२) बाँझो रहेको खेतीयोग्य जमिनमा लाग्ने कर (अब्वल र दोयम जग्गामा मात्र)</p> <p>(क) तराईमा</p> <ul style="list-style-type: none"> १० कठ्ठादेखि १ विगाहा सम्म रु. १,०००।- १ विगाहादेखि २ विगाहासम्म रु. २०००।- २ विगाहादेखि ५ विगाहासम्म रु. १०,०००।- ५ विगाहाभन्दा माथि रु. २५,०००।- <p>(ख) अन्य क्षेत्रमा</p> <ul style="list-style-type: none"> १० रोपनीदेखि २० रोपनीसम्म रु. ५,००।- २० रोपनीदेखि ३० रोपनीसम्म रु. १,०००।- ३० रोपनी माथि रु. २,०००।- |

स्रोत: सम्बन्धित प्रदेशहरूको आर्थिक ऐन, २०७९

३. कृषि कर सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय अभ्यास

कृषिमा आय कर सम्बन्धी केही मुलुकहरूको कानूनी प्रावधान र यसको अभ्यास सम्बन्धी व्यवस्था निम्नानुसार प्रस्तुत गरिएको छ।

(१) भारत

कृषि आयमा कर लगाउने जिम्मेवारी भारतमा राज्य सरकारहरूलाई छ। आय कर ऐन, १९६१ को दफा १० (१) अनुसार संघीय सरकारले कृषि आयको करलाई करको दायराबाट अलग गरेको छ। भारतको संविधानले राज्य सरकारहरूलाई कानून बनाएर कृषि आयमा कर लगाउने अधिकार प्रदान गरेको छ। उक्त ऐनको दफा २ (१क) अनुसार कृषि आयमा करलाई निम्नानुसार परिभाषित गरेको छ।

(<https://www.bankbazaar.com/tax/tax-on-agricultural-income.html>).

- कृषि प्रयोजनका लागि जमिन भाडामा दिएर आर्जन गरेको आय
- कृषियोग्य जमिनबाट उत्पादित वस्तुको व्यवसायिक बिक्रीबाट प्राप्त आय
- कृषियोग्य जमिनमा बनेको भवन/घरको निम्नानुसारको शर्तमा भाडामा दिएवापत आर्जन भएको आय

(क) उक्त भवन किसानले प्रयोग गरेको हुनु पर्ने।

(ख) उक्त भवन आवासिय वा भण्डारको रूपमा प्रयोग भएको हुनु पर्ने।

(ग) कृषियोग्य भूमि तथा भवन भएको जमिनलाई भूमि करको रूपमा लेखाजोखा गरिने।

निम्नानुसारको अवस्थामा प्राप्त आम्दानीलाई कृषि आयमा गणना गरिने छैन।

- वास्तविक कृषि क्रियाकलाप विना कृषि प्रकृतिको प्रशोधित उत्पादनको बिक्रीबाट प्राप्त आय
- अति प्रज्वलनशील प्रशोधित उत्पादनको बिक्रीबाट प्राप्त आय

(ग) दाउराको रुपमा बिक्री गरिएको वनपैदावारको बिक्रीबाट प्राप्त आय

कृषि आयमा करको गणना गर्दा ध्यान दिनुपर्ने मुख्य कुराहरु

- (क) जमिनबाट भएको आय ।
- (ख) कृषि प्रयोजनका लागि प्रयोग भएको जमिनबाट प्राप्त आय ।
- (ग) कृषि भूमिमा उत्पादन भएको उपज/वस्तुबाट प्राप्त आय ।
- (घ) एसेसीको (Assessee's Ownership) स्वामित्वमा नरहेको जमिनबाट प्राप्त भएको आय ।

तसर्थ, असाम, विहार, केरला, ओडिसा, तामिलनाडु र पश्चिम बंगाल राज्यले रवर, कफी र चियाको उत्पादनबाट निश्चित आय गर्ने किसानहरुलाई कर लगाउँदै आएको छ (समृद्धि फाउण्डेशन) । निम्नानुसारको अवस्थाका कृषि आयमा लाग्ने करमा छुटको व्यवस्था गरिएको छ ।

- (क) कुल आय रु. पाँच हजार भन्दा कम भएमा ।
- (ख) यदि कृषि बाहेक अन्य स्रोतबाट कुनै किसिमको आमदानी नभएमा ।
- (ग) कृषि तथा गैर-कृषि दुवै क्षेत्रबाट आमदानी छ, तथापि कृषिको आय घटाएर कर छुटको सीमाभन्दा कम छ भने ।

(२) पाकिस्तान

पाकिस्तानको संविधान, १९७३ अनुसार कृषि क्षेत्रको विकास र कृषिमा कर लगाउने अधिकार प्रदेश सरकारलाई प्रदान गरेको छ । संवैधानिक व्यवस्था अनुसार प्रदेश सरकारहरुले कृषि आयमा कर सम्बन्धी कानून १९९६/९७ लागू गरे तापनि राजनीतिक र सामाजिक कारण लामो समयसम्म उक्त ऐन कार्यान्वयनमा आउन सकेको थिएन । तर, २००९/१० देखि प्रदेश सरकारहरुले कृषि आयमा कर सडकलन गर्न थालेका छन् । किसानहरुले उत्पादन र यसको बिक्रीबाट प्राप्त गर्ने आमदानी (आय) को हिसाब किताव नराख्ने हुँदा कृषि आयको गणना गर्न कठिन हुने भएका कारण कृषि आयमा कर लगाउनुको सट्टा भूमि कर लगाई असुल उपर गर्ने गरिएको छ । यस क्षेत्रबाट प्राप्त हुने राजस्वबाट सरकारले किसानहरुलाई विभिन्न किसिमका सहुलियतहरु, जस्तै: कम ब्याजमा ऋण लगानी, विउविजन र मलखादमा सहुलियत, ट्रयाक्टर लगायत अन्य कृषि उपकरण खरिदमा लाग्ने कर छुटको व्यवस्था, सस्तो दरमा विद्युत सुविधा, बालीनाली र पशुपंक्षीको बीमा शुल्कमा सहुलियत जस्ता सुविधाहरु प्रदान गर्दछ ।

(३) ताजिकिस्तान

यस मुलकको अर्थतन्त्र कृषिमा आधारित छ । करिब ४८ प्रतिशत रोजगारी कृषि क्षेत्रले उपलब्ध गराएको छ । कृषिमा संलग्न सबै किसानहरुमध्ये ९० प्रतिशत किसानहरुले निर्वाहमुखी (सानो मात्रामा) कृषि पेशा अँगालेका छन् । कृषि क्षेत्रले कुल गार्हस्थ उत्पादनमा करिब २३ प्रतिशत योगदान गरेको छ (विश्व बैंक, २०१९) । कुल राजस्वको ३५ प्रतिशत राजस्व कृषि आयमा लगाउने करले ओगटेको छ । मुख्यतः कपास निकासी कर, सबै कृषि भूमिमा एकीकृत कर, सिँचाईको लागि पानीपोत, कृषि व्यवसाय र प्रशोधन उद्योगका लागि संस्थागत (कर्पोरेट) कर, कृषि आय अन्तर्गत लाने करहरु हुन् (विश्व बैंक, २०१२) । यहाँ केन्द्रीय सरकारले कर सडकलन गरी स्थानीय तहलाई खर्च गर्न अनुदान उपलब्ध गराउँदछ (Azizov, 2007) ।

ताजिकिस्तान सरकारले निकासीकर्ताले तिर्ने गरी कपासको रेशा निकासीमा १० प्रतिशत कर लगाउँदछ । यसले कपाल खेती गर्ने किसानहरुलाई हतोत्साही बनाएको र यसबाट कपासको उत्पादन घट्दो क्रममा रहेको छ । जमिनको भौगोलिक अवस्थिति, स्थान, गुणस्तर र मूल्यका आधारमा एकीकृत कृषि कर लगाउने र उत्पादकले उक्त कर तिर्ने व्यवस्था रहेको छ । एकीकृत कृषि कर तिर्ने करदातालाई मूल्य अभिवृद्धि कर, सडक उपयोग कर, संस्थागत आयकर, साना व्यवसाय/उद्यम कर, न्यूनतम आयकर, भूमि तथा व्यक्तिगत आयकरहरु छुट हुन्छ । यस किसिमको कर नीतिले गर्दा कृषि भूमिको अधिकतम उपयोगमार्फत प्रभावकारीता वृद्धि गर्न सहयोग गर्नुका साथै कम उत्पादन हुने जग्गालाई भाडामा दिएर बढी उत्पादन गर्न साना किसानहरुलाई प्रोत्साहन गरेको छ (विश्व बैंक, २०१२) । कृषिमा आधारित व्यवसाय र प्रशोधन उद्योगहरुले संस्थागत कर तिर्दछन् । ठूला उद्योगहरुले २५ प्रतिशत कर (घाटामा परेका उद्योगहरुले न्यूनतम एक प्रतिशत), मूल्य अभिवृद्धि कर, सडक उपयोग कर र भूमिकर तिर्नु पर्छ । साना उद्योगहरुले कुल

आम्दानीको १२ प्रतिशत कर तिर्नु पर्दछ (कुल आम्दानीमा सञ्चालन खर्च घटाएर, जसमा श्रमिकको ज्याला समावेश हुँदैन) । ताजिकिस्तान सरकारले किसानहरूलाई सहूलियत ऋण, बीउविजन, आवश्यक सामग्री तथा प्राविधिक सहयोग लगायत अनुदानहरू उपलब्ध गराउँदछ । यसैगरी राज्य सरकारले पनि पुनर्वास, मर्मतसंभार, बाली संरक्षण, क्वारेण्टीन, पशु महामारीबाट बचाउन र निरीक्षण गर्ने जस्ता क्षेत्रमा सहयोग गर्छ ।

(४) अष्ट्रेलिया

प्राथमिक उत्पादकहरू (Primary producers) लाई कर लगाउनुको सट्टा अष्ट्रेलियन सरकारले कर व्यवस्थापन प्रयोजनका लागि फार्म व्यवस्थापन सञ्चय (Farm Management Deposit-FMD) को अभ्यास गरेको छ । यस किसिमको व्यवस्थाले प्राथमिक उत्पादकहरूको वित्तीय जोखिम व्यवस्थापन औजारको रूपमा काम गरेको छ । यस किसिमको व्यवस्थाबाट प्राथमिक उत्पादकहरूलाई कम आम्दानी भएको वर्ष उनीहरूले जम्मा गरेको रकम झिकने गरी बढी आम्दानी भएको वर्ष पूर्व-कर आय (Pre-tax income) को रूपमा रकम जम्मा गर्न सक्षम बनाउँदछ । यसरी जम्मा भएको रकमबाट कर कट्टा हुन्छ । कर दायित्वलाई सहज बनाउने आशयले प्राथमिक उत्पादनहरूलाई गत पाँच वर्षको औसत आम्दानीको आधारमा कर तिर्न सक्ने गरिएको छ । यस किसिमको व्यवस्थाले प्राथमिक उत्पादकहरूलाई नगद मौज्जात, तरलतामा सुधार र उनीहरूको कर प्रगतिमा न्यूनता आदिका कारणले नगद प्रवाहमा पार्ने घटबढलाई प्रभावकारी रूपमा व्यवस्थापन गर्न सहयोग गर्दछ ।

खडेरी, सुख्खा, प्राकृतिक प्रकोप तथा अन्य विविध कठिनाईहरूबाट प्रभावित प्राथमिक उत्पादकहरूलाई अष्ट्रेलियन सरकारले व्याज मिनाह, कर तिर्ने तथा ऋणको किस्ता तिर्ने अवधिमा वृद्धि जस्ता योजना तथा सुविधाहरू उपलब्ध गराउँछ । किसानहरूले जम्मा गरेको रकम ऋणको रूपमा प्रयोग गरी बैंकको ब्याज तिर्न सक्दछन् । साथै, किसानहरूले विभिन्न किसिमका पूँजीगत खर्चहरू जस्तै पानीको सुविधा, स्टकको प्राकृतिक वृद्धिको मूल्याङ्कन, टेलिफोन सेवा, विद्युत सेवा जस्ता सुविधाहरूमा छुटको दावी गर्न सक्छन् । यस किसिमको सुविधा अष्ट्रेलियन किसानहरूमा निकै नै प्रख्यात रहेको छ ।

(५) जर्मनी

जर्मन सरकारले सामाजिक सुरक्षा र विशेष कर प्रणाली मार्फत किसानहरूलाई उदार किसिमको सहयोग प्रदान गर्दछ । जर्मनमा लेखाप्रणाली (वहीखाता), सूची प्रणाली, एकमुष्ट र वित्तीय संस्थाहरू मार्फत आम्दानीको मूल्याङ्कन जस्ता विधिहरूको प्रयोग गरी कृषि करको गणना गरिन्छ । करिब ६६ प्रतिशत फार्महरूले एकमुष्ट विधिको प्रयोग गरी कृषि करको गणना गर्दछन् । २० हेक्टरभन्दा कम जमिन र ५० वटा भन्दा कम पशुपंक्षी हुने किसानहरूले एकमुष्ट कृषि कर तिर्ने गरी निवेदन गर्न सक्दछन् । यस किसिमको विधि प्रयोग गर्दा भूमिको मुनाफामा आधारित मूल्य (Economic value of land) लाई आधार मानिन्छ । कर प्रशासकले अन्य विधिबाट कर गणना गरेको भन्दा एकमुष्ट विधिबाट करको कम गणना हुने कुरा सुनिश्चित गर्दछ । यस विधिको प्रयोगले गर्दा साना किसानहरूले कारोवारको हिसाब किताब राख्नु पर्ने कुनै बाध्यात्मक परिस्थिति हुँदैन । वार्षिक ६० हजार यूरो भन्दा बढी आम्दानी र छ लाख यूरोभन्दा बढी कारोवार गर्ने व्यवसायी वा २५ हजार यूरोभन्दा बढी मुनाफा गर्ने किसानहरूले आम्दानी खर्च (आय व्ययको कारोवार) को हिसाब किताब राखी संस्थागत कर तिर्नु पर्दछ । एकमुष्ट र तोकिएको ढाँचामा हिसाब किताब राख्न नपर्ने किसानहरूले सूची विधि (Inventory method) का आधारमा कृषि आयको गणना गर्नु पर्दछ । माथि उल्लेखित विभिन्न विधिका आधारमा कृषि आयमा कर तिर्ने सबै कृषकहरू सरकारको सामाजिक सुरक्षा प्रणालीमा समावेश गरिन्छन् । यस सुविधा अन्तर्गत ज्येष्ठ किसान पेन्सन (निवृत्तिभरण) र स्वास्थ्य तथा दुर्घटना बीमा पर्दछ । यस किसिमको सुविधा अन्तर्गत कामदार र किसानको घरपरिवार सदस्यहरू पनि पर्दछन् । यसका अतिरिक्त सरकारले इन्धनमा लाने कर र हरितगृह (Greenhouse) मा प्रयोग हुने ग्यासको प्रयोगमा समेत विशेष सहूलियत प्रदान गर्दछ ।

(६) संयुक्त राज्य अमेरिका

कृषि व्यवसाय (फर्म) ले संघीय सरकारलाई व्यक्तिगत आयकर अथवा संस्थागत आयकर बुझाउनु पर्दछ । अधिकांश कृषिमा आधारित ठूला व्यवसायीहरूले संस्थागत आयकर अन्तर्गत राज्यलाई कर बुझाउँछन् । तर ९७ प्रतिशत जति कृषि व्यवसायीहरू व्यक्तिगत आयकरको दायरामा पर्दछन् । किसानहरूले सबै करदाताको लागि उपलब्ध हुने करको लाभ र खासगरी किसानहरूका

लागि तयार गरिएका सुविधाहरू दुवैबाट फाईदा लिन्छन्। फर्ममा प्रयोग भएको सम्पत्ति बिक्री गर्दाको पूँजी लाभ, पूँजी लगानी खर्च कटौती, माटो र पानी संरक्षण खर्च कटौती आदि सुविधाहरू किसानहरूका लागि उपलब्ध हुन्छ। यसका साथै, फर्मको आमदानीको औसत आकलन गर्ने, व्यक्तिगत करदाताका लागि नगद विधि र व्यवसायीहरूका लागि अक्रुअल विधिको प्रयोग गर्ने जस्ता सुविधाहरू छन्।

४. कृषि आयकरको स्वरूप

विश्वका केही मुलुकहरूमा अभ्यासमा रहेको कृषि आयमा कर सम्बन्धी केही स्वरूपहरू तल तालिकामा प्रस्तुत गरिएको छ।

| क्र.सं. | देश | कुल गार्हस्थ उत्पादनमा कृषिको योगदान (प्रतिशत) | कार्यान्वयन गर्ने निकाय (तह) | कर लागू गर्ने विधि | लेखा विधि |
|---------|-----------------------|--|--|--|---|
| १ | भारत | १८.० | राज्य/प्रदेश | अप्रत्यक्ष कर, भूमिकर, खास खास खेतीबाट प्राप्त आयमा कर | कारोबार विधि (कारोबारको नाफा नोक्सानको आधारमा) |
| २ | पाकिस्तान | १८.८ | प्रदेश | भूमि कर (मालपोत) | आवश्यक नपर्ने |
| ३ | ताजिकिस्तान | १९.२ | संघ | निकासी कर, एकीकृत कृषि कर (मालपोत), पानीपोत, कर्पोरेट कर | संस्थागत (कर्पोरेट कर बाहेक अन्यमा आवश्यक नपर्ने) |
| ४ | अष्ट्रेलिया | २.४६ | संघ | फर्म व्यवस्थापन डिपोजिट | आवश्यक नपर्ने |
| ५ | जर्मनी | ०.७६ | ल्याण्डर (राज्य/प्रदेश) | एकमुष्ठ कर र संस्थागत आय | एकमुष्ठ करमा आवश्यक नपर्ने तर कर्पोरेट करको लागि मानक अनुसारको लेखा प्रणाली |
| ६ | संयुक्त राज्य अमेरिका | ५.४ | संघीय संस्थागत कर र राज्यको व्यक्तिगत कर | व्यक्तिगत कर र संस्थागत कर | नगद र अक्रुअल दुवै विधि |

स्रोत : Study of Agricultural Income Tax in Federal Nepal, Ankshita Chaudhary and Ayushma Maharjan, Sambriidhi Foundation, Table 1, pp. 8

५. नेपालको सन्दर्भ

विगतदेखि नै कुल गार्हस्थ उत्पादनमा कृषि क्षेत्रको योगदान घट्दै गएको छ भने सेवा क्षेत्रको योगदान बढेको छ र उद्योग क्षेत्रको योगदान करीब स्थिर अवस्थामा रहेको छ। दुई दशक अघि कुल गार्हस्थ उत्पादनमा कृषि, उद्योग र सेवा क्षेत्रको योगदान क्रमशः ३७.४ प्रतिशत, १७.५ प्रतिशत र ४५.१ प्रतिशत रहेकोमा चालु आर्थिक वर्षमा यस्तो योगदान क्रमशः २३.९ प्रतिशत, १४.३ प्रतिशत र ६१.८ प्रतिशत रहेको छ। यसले अर्थतन्त्रको संरचनामा परिवर्तन भई नेपालको अर्थतन्त्र क्रमशः कृषिप्रधान अर्थतन्त्रबाट सेवाप्रधान अर्थतन्त्रमा रुपान्तरण हुँदै गएको छ। नेपाल श्रमशक्ति सर्वेक्षण अनुसार कृषि क्षेत्रमा आवद्ध जनसंख्या सन् २००८ मा ७३.९ प्रतिशत रहेकोमा सन् २०१८ मा ६०.४ प्रतिशत रहेको छ (आर्थिक सर्वेक्षण, २०७८/७९)।

कृषिलाई उत्थानशील अर्थतन्त्रको प्रमुख आधारको रूपमा विकास गर्न नेपाल सरकारले भू-उपयोग नीतिको कार्यान्वयन र वैज्ञानिक भूमिसुधारबाट उपलब्ध कृषियोग्य जमिनको अधिकतम उपयोग गर्ने नीति लिएको छ। यसैगरी पशुपालन क्षेत्रको समग्र विकासका लागि कृषि विकास रणनीति तथा राष्ट्रिय कृषि नीति २०६१, पन्छी पालन नीति २०६८, खर्क नीति २०६८, कृषि व्यवसाय प्रवर्द्धन

नीति २०६३, कृषि जैविक विविधता नीति २०६३, एक स्वास्थ्य रणनीति २०७६, राष्ट्रिय दुध विकास नीति २०७८, राष्ट्रिय पशु प्रजनन नीति २०७८, राष्ट्रिय पशु स्वास्थ्य नीति २०७८ कार्यान्वयनमा रहेका छन्। कृषि व्यवसायप्रति आम नागरिकको आकर्षण बढाउन कृषकलाई उत्पादन लागतको आधारमा कृषि उपजको उचित मूल्य प्राप्त गर्ने सुनिश्चित गरिएको छ। प्रमुख खाद्यान्न तथा नगदे बालीमध्ये धान, गहुँ र उखुको न्यूनतम समर्थन मूल्य तोकिँदै आएको छ। बालीमा अपेक्षाकृत प्रगति हुन नसकेतापनि पशुपन्छी तथा मत्स्य बीमातर्फ बीमा प्रिमियमको ८० प्रतिशत अनुदान उपलब्ध गराइएको छ (आर्थिक सर्भेक्षण, २०७८/७९)।

कृषि क्षेत्रको विकासका लागि प्रशस्त कार्यक्रमहरु सञ्चालन गरिएका छन्। प्रधानमन्त्री कृषि आधुनिकीकरण परियोजना अन्तर्गत ७७ जिल्लामा १७७ जोन र १६ सुपर जोन सञ्चालनमा रहेका छन्। पकेट विकास कार्यक्रम स्थानीय तह र ब्लक विकास कार्यक्रम प्रदेश सरकार अन्तर्गत सञ्चालनमा रहेका छन्। यस परियोजना मार्फत कृषि यान्त्रिकीकरण प्रवर्द्धनका लागि सुपर जोन तथा जोनहरुमा कष्टम हायरिड सेन्टर स्थापना भएका छन्। यसबाट कृषि पेशामा लाग्ने लागत न्यूनीकरण, श्रमिकको अभाव पूर्ति, लैङ्गिकमैत्री र युवाहरुलाई कृषि पेशातर्फ आकर्षित गर्न उत्प्रेरित गरेको छ। यसैगरी साना सिँचाई सुविधा र सौर्य सिँचाईहरु उपलब्ध भएका छन्। मत्स्य पोखरी निर्माण, हाईटेक फलफूल नर्सरी र सेमी हाईटेक ग्रिन हाउसहरु निर्माणमा सहयोग पुगेको छ। पशुपन्छीको सङ्क्रामक रोग विरुद्ध विभिन्न किसिमका खोप उत्पादन गरी सबै प्रदेशमा निःशुल्क वितरण भइरहेको छ। स्थानीय तहहरुमा साना किसान वित्तीय संस्थाहरुको सेवा पुगेको छ। ग्रामीण स्वावलम्बन कोष र साना किसान तर्फका सहकारी संस्थाहरु आबद्ध रहेका छन् (आर्थिक सर्भेक्षण, २०७८/७९)।

मुलुकको समग्र अर्थतन्त्रको विकासका लागि कृषि र पशुपन्छी क्षेत्रको विकास गर्नु अपरिहार्य छ। यसका लागि व्यवसायिक एवं प्रतिष्पर्धात्मक कृषि प्रणालीबाट उच्च एवं दीगो आर्थिक वृद्धि हासिल गरी खाद्य सुरक्षा तथा गरिबी निवारणमा योगदान पुऱ्याउन त्यक्तिकै आवश्यक छ। यस क्षेत्रको विकासका लागि संघीय तहमा कृषि तथा पशुपन्छी विकास मन्त्रालय रहेको छ। यस मन्त्रालय अन्तर्गत प्रशासन महाशाखा, कृषि विकास महाशाखा, खाद्य सुरक्षा तथा खाद्य प्रविधि महाशाखा, योजना तथा विकास सहायता समन्वय महाशाखा, कृषि तथा पशुपन्छी व्यवसाय प्रवर्द्धन महाशाखा, पशुपन्छी तथा मत्स्य विकास महाशाखा र पशु स्वास्थ्य महाशाखाहरु रहेका छन्। यसैगरी प्रदेश नं. १ मा कृषि मन्त्रालय रहेको छ भने यस अन्तर्गत प्रशासन तथा सहकारी विकास महाशाखा, योजना तथा अनुगमन महाशाखा, खाद्य सुरक्षा तथा कृषि व्यवसाय प्रवर्द्धन महाशाखा, पशुपन्छी विकास महाशाखा, भूमि व्यवस्था महाशाखा र भूमिस्रोत नक्साङ्कन महाशाखा रहेका छन्।

नेपालमा मुख्य खाद्यान्न बालीहरुमा धान, मकै, गहुँ, कोदो, फापर, जौ आदि पर्दछन्। ताजा तरकारी बालीमा काउली, बन्दा, ब्रोकाउली, गोलभेडा, तथा मुला बढी क्षेत्रफलमा उत्पादन हुने तरकारी बालीमा पर्दछन्। फलफूल बालीमा हिउँदे, बर्षे तथा सुन्तला जात फलफूल गरी तीन भागमा विभाजन गर्ने गरिएको छ। हिउँदे फलफूलमा स्याउ, नासपाती, ओखर, आरु, आरुवखडा, खुर्पानी, किवी, हलुवावेद, अनार लबसी आदि पर्दछन्। बर्षे फलफूलमा आँप, लिची, केरा, रुखकटहर, भुइँकटहर, मेवा, अम्बा, नरिवल, सुपारी आदि पर्दछन् भने सुन्तला जात फलफूलमा सुन्तला, कागती, निवुवा, जुनार आदि पर्दछन्। यसैगरी दलहन बाली अन्तर्गत मुसुरो, मास, चना, रहर, भटमास, खेसरी, गहत, सिमी आदि पर्दछन्। यसरी नै तेलहन बालीमा तोरी, सस्युँ, रायो, बदाम, सुर्यमुखी, झुसेतिल आदि पर्दछन्। मसला बाली अन्तर्गत अलैंची, अदुवा, बेसार, खुर्सानी तथा लसुन, प्याज आदि पर्दछन्। नगदेबालीमा उखु, जुट, कपास, आलु र तेलहनबाली पर्दछन्। पशुपन्छी तर्फ मुख्यतः गाई, भैँसी, बाख्रा, सुँगुर/बंगुर, हाँस, खरायो, भेडा आदि पर्दछन्।

संघीय सशर्त अनुदान अन्तर्गत प्रदेश नं. १ मा प्रधानमन्त्री कृषि आधुनिकीकरण परियोजना, धान/मकै उत्पादन प्रवर्द्धन कार्यक्रम र प्राङ्गारिक कृषि प्रवर्द्धन कार्यक्रमहरु सञ्चालनमा रहेका छन्। आ.व. २०७७/७८ मा संघीय सशर्त अनुदान अन्तर्गत रु. ३३ करोड ९९ लाख ६९ हजार बराबरको अनुदान सहयोग विभिन्न किसिमका कृषक समूहहरुलाई प्रदान भएको छ। त्यसैगरी सोही अवधिमा प्रदेश सरकारको बजेटबाट रु. ८९ करोड ६९ लाख ९० हजार अनुदान खर्च गरेको छ। यसरी आ.व. २०७७/७८ मा विभिन्न किसिमका कृषक तथा पशुपालन समूह तथा व्यक्तिहरुलाई कुल रु. १ अर्ब २३ करोड ६९ लाख ५९ हजार अनुदान खर्च भएको छ।

नेपालको सन्दर्भमा कृषि पेशा निर्वाहमुखी र सानो परिमाणमा गर्ने परिपाटी, न्यून उत्पादकत्व, परम्परागत पद्धतीको प्रयोग हुनु र आधुनिक प्रविधिको न्यून प्रयोग, सरकारी तथा गैरसरकारी निकायबाट न्यूनतम मात्रामा मात्रै आवश्यक सहयोग (प्राविधिक तथा नगद अनुदान आदि) हरू उपलब्ध हुने र बढी अनौपचारिक रूपमा हुने गरेका छन्। यसैगरी कृषि क्षेत्रबाट उत्पादन हुने गरेका वस्तु तथा सेवाको खरीद-बिक्री नगद तथा उधारोमा कारोवार हुने र यसको लेखा राख्ने प्रणाली स्थापित हुन नसक्ने जस्ता समस्या रहेका छन्। तसर्थ कृषि क्षेत्रको विकास र विस्तारका लागि आवश्यक मापदण्ड अनुसारको पूर्वाधार, सडक सञ्जाल, सिँचाई, भण्डारण, चिस्यान केन्द्रको स्थापना, अनुसन्धान, अनुभव र ज्ञानको प्रचारप्रसार, कृषकहरूको क्षमता विकास र बजार सुनिश्चितताका क्षेत्रमा काम गर्न अति आवश्यक छ।

प्रदेश नं. १ मा मुख्य खाद्यान्न बालीहरूले ओगटेको क्षेत्रफल र उत्पादन

प्रदेश नं. १ अन्तर्गतका जिल्लाहरूको आर्थिक वर्ष २०७७/७८ मा धान, मकै, गहुँ, कोदो, फापर र जौ जस्ता मुख्य खाद्यान्न बालीहरूले ओगटेको क्षेत्रफल र उत्पादन सम्बन्धी विवरण तल तालिकामा देखाइएको छ।

| क्र.सं. | जिल्ला | क्षेत्रफल (हेक्टर) | उत्पादन (मे.ट.) | उत्पादकत्व (प्रति हेक्टर मे.ट.) |
|---------|--------------|-----------------------|--------------------|------------------------------------|
| १ | ताप्लेजुङ्ग | २२११८ | ५७३७३ | २.५९ |
| २ | संखुवासभा | ३०८३१ | ७११२६ | २.३१ |
| ३ | सोलुखुम्बु | २०४६६ | ४८६६३ | २.३८ |
| ४ | पाँचथर | ३५४८२ | ७९११० | २.२३ |
| ५ | इलाम | ५१६३१ | १८४३८७ | ३.५७ |
| ६ | तेह्रथुम | २४४३३ | ६२७०७ | २.५७ |
| ७ | धनकुटा | २९१९१ | ८१६३१ | २.८० |
| ८ | भोजपुर | ५६१७२ | १३७९०७ | २.४६ |
| ९ | खोटाङ्ग | ८४३८३ | १६९१८८ | २.०० |
| १० | ओखलढुङ्गा | २५३३५ | ६६५१२ | २.६३ |
| ११ | उदयपुर | ४०२१९ | ११७३३६ | २.९२ |
| १२ | झापा | १४१९३५ | ५८९७७९ | ४.१६ |
| १३ | मोरङ्ग | ११८८५१ | ४७८७९५ | ४.०३ |
| १४ | सुनसरी | ७६१२५ | २९००१७ | ३.८१ |
| | जम्मा | ७५७१७२ | २४३४५३१ | २.८९ |

स्रोत : Government of Nepal Ministry of Agriculture & Livestock Development (2022). Statistical Information on Nepalese Agriculture 2077/78 (2020/21), Table 1.3, pp. 14.

अनुसूची ९: कृषि आयमा कर सम्बन्धी व्यवस्थामा संशोधन

प्रदेश नं. १ को प्रदेश कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ मा संशोधन

सम्बत् २०७९ को ऐन नं

प्रदेश नं १ प्रदेश कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ लाई संशोधन गर्न बनेको ऐन

प्रस्तावना: कृषि आयमा लाग्ने कर लगाउने, असुल गर्ने अधिकार प्रदेशमा रहेको र साविकको आयकर कानून बमोजिम कृषि आयमा संघद्वारा आयकर ऐन, २०५८ बमोजिम आयकर लागि रहेकोमा २०५८ श्रावण १ गतेदेखि लागू हुने गरी आयकर ऐन, २०५८ को दफा ११ मा संशोधन भई कृषि आयलाई संघीय आयकरबाट हटाएकोले साविकमा आयकर लागि रहेका व्यक्तिलाई प्रदेश कृषि आयकरको दायरामा ल्याउन आवश्यक देखिएकाले प्रदेशसभाले यो कानून बनाएको छ ।

१. **संक्षिप्त नाम र प्रारम्भ:** (१) यो ऐनको नाम “प्रदेश नं १ प्रदेश कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी संशोधन ऐन, २०७९” रहेको छ ।

(२) यो ऐन तत्काल लागू हुनेछ ।

२. **प्रदेश नं १ प्रदेश कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ मा संशोधन:** (१) प्रदेश नं १ प्रदेश कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ (यस पछाडि मूल ऐन भनिएको) को दफा ८ पछि देहायको दफा ८क थपिएको छ:

८ क. **कृषि आयको गणना:** (१) आयकर ऐन, २०५८ बमोजिम २०७९ आषाढ मसान्तसम्म आयकर लागि रहेका व्यक्तिलाई २०७९ श्रावण १ देखि कृषि आयकर लाग्नेछ । २०७९ श्रावण १ देखि कृषि व्यवसायमा संलग्न हुने व्यक्तिलाई पनि सोही बमोजिम कृषि आयकर लाग्नेछ ।

(२) प्रदेशमा करदाता दर्ता नम्बर सम्बन्धी व्यवस्था लागू नभएसम्मका लागि उपदफा (१) बमोजिम कृषि आयकर लाग्ने व्यक्तिको पहिचानका लागि साविकको स्थायी लेखा नम्बरलाई आवश्यकता अनुसार प्रदेश सरकारले समायोजन गर्न सक्नेछ ।

(३) उपदफा (१) बमोजिमको कृषि आयमा कुनै फर्म, कम्पनी, साझेदारी फर्म तथा संगठित संस्थाको रूपमा दर्ता गरी कृषि व्यवसाय गरी प्राप्त गरेको आय र संघीय भूमि सम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा १२ को खण्ड (घ) र (ङ) मा उल्लेख भए बमोजिमको जग्गामा गरेको कृषि व्यवसायको आयलाई समावेश गरी सो व्यक्तिको कृषि आयको गणना आयकर ऐन, २०५८ बमोजिम हुनेछ ।

तर यस्तो गणनामा सो ऐनको दफा ११ को उपदफा (१) लागू हुने छैन ।

(४) उपदफा (१) बमोजिमको व्यक्तिलाई आयकर ऐन, २०५८ को विशेष उद्योगलाई लागू हुने तरीका तथा दरबाट कर गणना गरिनेछ । यस्तो कर गणना गर्दा साविकको कुनै सहूलियत पाउने अवधि बाँकी भएमा सो अवधिसम्मका लागि त्यस्तो सहूलियतको निरन्तरता रहनेछ ।

नोट: आव २०७९।८० मा नै लागू हुने गरी आउनु पर्ने व्यवस्था (२०७९।८० मा लागू नभए त्यस पछिका वर्षमा शुरु हुन नसक्ने)

अनुसूची १०: प्रदेश नं. १ को राजस्व तथा अनुदान प्राप्ति (यथार्थ)

| क्र.सं. | संकेत नं. | शीर्षक | आ.व. २०७५/७६ | आ.व. २०७५/७६ | आ.व. २०७५/७६ | आ.व. २०७५/७६ | चार आ.व. को औसत | चार आ.व.को औसत वृद्धि |
|--|-------------|--|-------------------|-------------------|-------------------|-------------------|-----------------------|--------------------------------|
| क. प्रदेश र स्थानीय तहबीच राजस्व बाँडफाँट | | | | | | | | |
| १ | ११३१५ | बाँडफाँटबाट प्राप्त हुने घरजग्गा रजिष्ट्रेशन दस्तुर | ८४६५६४५३७ | ९४५०९२६७६ | १३८९७३२२७६ | १६५०८७९६४० | १२०८०६५२८२ | २५% |
| २ | ११४५६ | सवारी साधन कर | ७७९५६००७० | ७८७९८५४४९ | ११२५३३२०८३ | ११९३१८९७९६ | ९७५९६८५० | १५% |
| ३ | ११४७१+१४४७३ | बाँडफाँट बाट प्राप्त हुने मनोरञ्जन कर | १६४९५ | ० | १८२५२ | ५४६६ | १००५३ | -३१% |
| ४ | ११४७२ | बाँडफाँटबाट प्राप्त हुने विज्ञापन कर | १७५८१८० | २१९९६३० | १७९६९२७ | ४४९७२३२ | २५६२९९२ | ३७% |
| ५ | १४१५७ | बाँडफाँट भई प्राप्त हुने दहत्तर वहत्तरको बिक्रीबाट प्राप्त हुने आय | ० | १९७५६९२८९ | ३३७६३२२८९ | २८०४००१७२ | २०३९००४३७ | १२% |
| जम्मा | | | १६२७८९९२८३ | १९३२८४७०४४ | २८५४५११८२८ | ३१२८९६४३०५ | २३८६०५५६१५ | २४% |
| वार्षिक वृद्धि प्रतिशत | | | | १९ | ४८ | १० | २५ | २५.३४ |
| ख. प्रदेशको आन्तरिक आय | | | | | | | | |
| १ | ११६११ | व्यवसायीले भुक्तानी गर्ने | ५३४०० | ५००० | ५००० | ३७००० | २५१०० | -१२% |
| २ | ११६१२ | एजेन्सी रजिष्ट्रेशन दस्तुर | २९५७२४० | ० | ० | ० | ७३९३१० | -१००% |
| ३ | ११६१३ | व्यवसाय रजिष्ट्रेशन दस्तुर तथा व्यवसाय कर | ८८१५५३९५ | ६०४७६९० | ० | ० | २३५०७७१ | -१००% |
| ४ | ११६२१ | व्यवसायी बाहेक अन्यले भुक्तानी गर्ने | ३९१६१३७३३ | ० | ० | ० | ९७९०३४३३ | -१००% |
| ५ | ११६९१ | अन्य कर | ० | १४१०० | ० | ० | ३५२५ | ०% |
| ६ | १४१५१ | सरकारी सम्पत्तिको वहालबाट प्राप्त आय | ५३७१५० | ४७१५२९ | २४६९३६ | २६३३५७ | ३७९७४३ | -२१% |
| ७ | १४१५९ | अन्यस्रोतबाट प्राप्त बाँडफाँट नहुने रोयल्टी | | | ९४९५०३ | ६५२५७४ | ८०१०३९ | -३१% |
| ८ | १४२११ | कृषि उत्पादनको बिक्रीबाट प्राप्त रकम | १३७७६३३ | २८८०९४१ | ४२३२४१८ | ५१३६९९२ | ३४०६९९६ | ५५% |
| ९ | १४२१२ | सरकारी सम्पत्तिको बिक्रीबाट प्राप्त रकम | ६५१२८१ | २१३३९६ | ४३२९२५ | १७०४६८४ | ७५०५७२ | ३८% |
| १० | १४२१३ | अन्य बिक्रीबाट प्राप्त रकम | ३६०५५४ | २०७७४० | २५१५९ | ३८३२०६ | २४४१६५ | २% |
| ११ | १४२१७ | नहर तथा कुलो उपयोग वापतको शुल्क | १९६६०० | ४५१०० | ३८६०० | ५६८०० | ८४२७५ | -३४% |
| १२ | १४२१९ | अन्य सेवा शुल्क तथा बिक्री | २४६२८२०३५ | ५३००७११ | ९२१३५ | ३६७६७६३१ | ७२११०६२८ | -४७% |
| १३ | १४२२३ | शिक्षा क्षेत्रको आम्दानी | ९६५२७३ | ८३८३५८ | ७३१६७५ | १११८२४५ | ९१३३८८ | ५% |
| १४ | १४२२४ | परीक्षा शुल्क | ७७६५० | १०८४३८० | ५०७७३३० | ५३७९१५२७ | १५००७७२२ | ७८५% |
| १५ | १४२२५ | यातायात क्षेत्रको आम्दानी | ८०२३१८७४ | ७३९६२०४५ | ९००१४३६१ | ८९६१८९९७ | ८३४५६८१९ | ४% |

| क्र.सं. | संकेत नं. | शीर्षक | आ.व. २०७५/७६ | आ.व. २०७५/७६ | आ.व. २०७५/७६ | आ.व. २०७५/७६ | चार आ.व. को औसत | चार आ.व.को औसत वृद्धि |
|---|-----------|---|-------------------|-------------------|-------------------|-------------------|-----------------------|--------------------------------|
| १६ | १४२२९ | अन्य प्रशासनिक दस्तुर | ३३६१०२८६ | ४९०६७४५६ | २४१२८२३४ | २६८७८६७० | ३३४२११६१ | -७% |
| १७ | १४२५३ | व्यवसाय रजिष्ट्रेशन दस्तुर | ० | ८०८३३५१५ | १४२३१३०९८ | ९५१२०९२१ | ७९५६६८८४ | ८% |
| १८ | १४२५४ | रेडियो/एफएम सञ्चालन दस्तुर | | | २२१९० | १८६३७९८ | ९४२९९४ | ८२९९% |
| १९ | १४२५५ | टेलिभिजन सञ्चालन दस्तुर | | | | २१५००० | २१५००० | ०% |
| २० | १४२५६ | चालक अनुमति पत्र, सवारी दर्ता किताब (ब्लु बुक) सम्बन्धी दस्तुर | ० | ३९९१८४४४४ | ३६९१००२३३ | ५८४३९९२३४ | ३१८१७०९७८ | ३५% |
| २१ | १४२६४ | वन क्षेत्रको अन्य आम्दानी | ० | ५३४२२०३ | ७२५२८५ | ९०८५९४ | १७४४०२० | -५९% |
| २२ | १४२६५ | अन्य क्षेत्रको आय | ० | १४१९९२ | | | ७०९९६ | ०% |
| २३ | १४३१२ | प्रशासनिक दण्ड जरिवाना र जफत | ४२६५४९५ | ९५५५२७० | ५१७८५५५ | ६७१५२६९ | ६४२८६४८ | १६% |
| २४ | १४३१३ | धरोटी सदरस्याह | ० | १३८१२० | १४२६६५ | ६१९२६६ | २२५०१३ | ११२% |
| २५ | १४५११ | बीमा दावी प्राप्ति | ० | ८१६५० | | ३०१५७१ | १२७७४० | २६९% |
| २६ | १४५२९ | अन्य राजस्व | ११६९३० | ६१९३५ | ८६२२० | ९४०६५ | ८९७८८ | -७% |
| | | जम्मा | ८५१४५२५२९ | ५५५४७७५७३ | ६४३५४२५२२ | ९०६६४७४०० | ७३९२८०००६ | २% |
| | | वार्षिक वृद्धि प्रतिशत | | -५३ | १४ | २९ | -४ | -३.५३ |
| ग. संघीय सरकारबाट राजस्व बाँडफाँट | | | | | | | | |
| १ | ११४११ | बाँडफाँट भई प्राप्त हुने मूल्य अभिवृद्धि कर | ५२०५९४६३४४ | ५४९५०००७६९ | ६३४२३९६०४४ | ७३०४४३९१०५ | ६०८६९४५५६५ | १२% |
| २ | ११४२१ | बाँडफाँट भई प्राप्त हुने अन्तःशुल्क | १६६१७३६१३५ | १८८४५५७२१६ | २३६५०८९५८४ | २४७०३७९७९३ | २०९५४४०६८२ | १४% |
| | | जम्मा | ६८६७६८२४७९ | ७३७९५५७९८४ | ८७०७४८५६२७ | ९७७४८१८८९८ | ८१८२३६६२४७ | १२% |
| | | वार्षिक वृद्धि प्रतिशत | | ७ | १८ | १२ | १३ | १२.५७ |
| घ. संघीय सरकारबाट रोयल्टी बाँडफाँट | | | | | | | | |
| १ | १४१५३ | बाँडफाँट भई प्राप्त हुने वन रोयल्टी | | ४५३७४५१८ | ३४५०७६१९ | ६८०५५४८३ | ४९३१२५४० | २२% |
| २ | १४१५४ | बाँडफाँट भई प्राप्त हुने खानी तथा खनिज सम्बन्धी रोयल्टी | | १२८०९०१४ | १२४०८७३६ | १०७७५७०१ | ११९९७८१७ | -८% |
| ३ | १४१५६ | बाँडफाँट भई प्राप्त हुने विद्युत रोयल्टी | ० | २५७७९३३९ | ३७४८४०२१ | ५९६९१६४५ | ३०७३८७५१ | ५२% |
| ४ | १४१५८ | बाँडफाँट भई प्राप्त हुने पर्वतारोहणको रोयल्टी | | २७७२२५८४ | १२११४४२२१ | ११०२१७२५५ | ८६३६१३५३ | ९९% |
| | | जम्मा | ० | १११६८५४५५ | २०५५४४५९६ | २४८७४००८४ | १४१४९२५३४ | ४९% |
| | | वार्षिक वृद्धि प्रतिशत | | | ८४ | २१ | ५३ | ५२.५३ |

| क्र.सं. | संकेत नं. | शीर्षक | आ.व. २०७५/७६ | आ.व. २०७५/७६ | आ.व. २०७५/७६ | आ.व. २०७५/७६ | चार आ.व. को औसत | चार आ.व.को औसत वृद्धि |
|------------------------|-----------|-------------------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|-----------------------|--------------------------------|
| ड. संघीय अनुदान | | | | | | | | |
| १ | १३३११ | समानीकरण अनुदान | ६६१०३००००० | ८१६३३००००० | ७९९८४००००० | ८५६७८००००० | ७८३४९५०००० | ९% |
| २ | १३३१२ | सशर्त अनुदान | १०५४७३५६००० | ८५२७८३८००० | ८२३४२२०७०४ | ८१३९६४८१८४ | ८८६२२६५७२२ | -८% |
| ३ | १३३१४ | विशेष अनुदान | ६५७१०६००० | ५४५०००००० | ५३५०००००० | ५९३३००००० | ५८२६०१५०० | -३% |
| ४ | १३३१६ | समपूरक अनुदान | ६८००००००० | ७५३८००००० | ८४२७००००० | ११६४८००००० | ८६०३२५००० | २०% |
| | | जम्मा | १८४९४७६२००० | १७९८९९३८००० | १७६१०३२०७०४ | १८४६५५४८१८४ | १८१४०१४२२२२ | -०.०५% |
| | | वार्षिक वृद्धि प्रतिशत | | -२.७३ | -२.११ | ४.८६ | ० | १.३७ |
| | | अनुदान सहितको कुल आय | २७८४१७९६२९१ | २७९६९५०६०५७ | ३००२१४०५२७८ | ३२५२४७१८८७१ | २९५८९३५६६२४ | ५% |
| | | वार्षिक वृद्धि प्रतिशत | | ०.४६ | ७.३४ | ८.३४ | ५ | ७.८४ |

स्रोत: प्रदेश लेखा नियन्त्रकको कार्यालय, विराटनगर, २०७९

नोट: बेरुजू, निकासी फिर्ता, अनुदान फिर्ता, नगद तथा बैंक मौज्जातलाई समावेश गरिएको छैन ।

अनुसूची ११: आ.व. २०७८/०७९ रोयल्टीको बाँडफाँटमा प्रदेश नं. १ को हिस्सा

क. पर्वतारोहण

| हिमचुली क्र.सं. | हिमचुलीको नाम | जिल्ला | रोयल्टीको हिस्सा बाँडफाँट | अनुमानित रोयल्टी रकम रु. |
|-----------------|------------------------------------|--|---------------------------|--------------------------|
| १ | Ama Dablam (6814 m.) | संखुवासभा, सोलुखुम्बु | ०.९००९९ | ७१७७६२ |
| २ | Chamlang (7319 m.) | ताप्लेजुङ, संखुवासभा, सोलुखुम्बु, खोटाङ र भोजपुर | १ | ० |
| ३ | Everest (8848 m.) | सोलुखुम्बु | ०.९००९९ | १०७६१७६२६ |
| ४ | Imja Tse (Island Peak) (6165 m.) | संखुवासभा, सोलुखुम्बु | ०.९००९९ | १२६९६३८ |
| ५ | Kumbhakarna (7710 m.) | ताप्लेजुङ र संखुवासभा | १ | ० |
| ६ | Kwangde (6086 m.) | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | ०.९००९९ | ० |
| ७ | Lhoste (8516 m.) | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | ०.९००९९ | ४९३३६६७ |
| ८ | Lobuje (6119 m.) (east) | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | ०.९००९९ | २१६५५९७ |
| ९ | Luza Peak (5726 m.) | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | ०.९००९९ | ६७६ |
| १० | Makalu (8463 m.) | ताप्लेजुङ, संखुवासभा र सोलुखुम्बु | १ | १०६९७४१ |
| ११ | Mera Peak (6470 m.) | संखुवासभा, सोलुखुम्बु, खोटाङ र भोजपुर | १ | ९३७७०४ |
| १२ | Mt. Amphu 1 (6740 m.) | संखुवासभा, सोलुखुम्बु, खोटाङ र भोजपुर | ०.९३७३२६ | ० |
| १३ | Mt. Barun Tse (7152 m.) | ताप्लेजुङ, संखुवासभा, सोलुखुम्बु, खोटाङ र भोजपुर | १ | १८४४९८ |
| १४ | Mt. Chukyima Go (6258 m.) | सोलुखुम्बु र ओखलढुङ्गा | ०.१११५५४ | ४५५ |
| १५ | Mt. Hongu (Sura Peak) (6764 m.) | ताप्लेजुङ, संखुवासभा, सोलुखुम्बु, खोटाङ र भोजपुर | १ | ० |
| १६ | Mt. Hunku Chuli (6833 m.) | ताप्लेजुङ, संखुवासभा, सोलुखुम्बु, खोटाङ र भोजपुर | १ | ० |
| १७ | Mt. Khang Karpo (6646 m.) | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | ०.५०१५८३ | ० |
| १८ | Mt. Khangchung (UIAA Peak) 6063 m. | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | ०.९००९९ | ० |
| १९ | Mt. Khangtega (6783 m.) | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | ०.९००९९ | ० |
| २० | Mt. Linku Chuli II (6659 m.) | सोलुखुम्बु र ओखलढुङ्गा | ०.१११५५४ | ० |
| २१ | Mt. Sherson (Peak 3, 6422 m.) | ताप्लेजुङ, संखुवासभा र सोलुखुम्बु | १ | ० |
| २२ | Mt. Tengri Ragi Tau (6938 m.) | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | ०.५१३७९५ | ० |
| २३ | Mr. Teng Kangpoche (6482 m.) | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | ०.९००९९ | १३४९२ |
| २४ | Mr. Tengkoma (6215 m.) | ताप्लेजुङ र संखुवासभा | १ | ० |
| २५ | Mt. Thakar Go East (6152 m.) | सोलुखुम्बु | ०.०९५१०४ | ० |
| २६ | Mt. ABI (6043 m.) | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | ०.९००९९ | १९७६५ |
| २७ | Mt. Bokta (6114 m.) | ताप्लेजुङ र संखुवासभा | १ | ० |
| २८ | Mt. Cholatse (6440 m.) | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | ०.९००९९ | ४४९ |
| २९ | Mt. Kyazo Ri (6186 m.) | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | ०.९००९९ | ० |
| ३० | Mt. Lobuje West (6135 m.) | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | ०.९००९९ | १०३५२४ |
| ३१ | Mt. Nirekha (6159 m.) | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | ०.९००९९ | ३२९२ |
| ३२ | Mt. Ombigaichen (6340 m.) | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | ०.९२६०२७ | ० |

| हिमचुली क्र.सं. | हिमचुलीको नाम | जिल्ला | रोयल्टीको हिस्सा बाँडफाँट | अनुमानित रोयल्टी रकम रु. |
|-----------------|----------------------------|------------------------|---------------------------|--------------------------|
| ३३ | Mt. Phari Lapcha (6017 m.) | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | ०.९००९९ | ० |
| ३४ | Nuptse (7855 m.) | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | ०.९००९९ | ३६९८३८ |
| ३५ | Pabuk Khang (Kangata) | ताप्लेजुङ र संखुवासभा | १ | ० |
| ३६ | Pharchamo (6279 m.) | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | ०.५९३७९५ | ० |
| ३७ | Pumori (7161 m.) | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | ०.९००९९ | ११८८९५ |
| ३८ | Ramdung (5900 m.) | सोलुखुम्बु र ओखलढुङ्गा | ०.१२१००८ | ० |
| | | | जम्मा | ११९५१८६९९ |

ख. विद्युत

| क्र.सं. | आयोजनाको नाम | जिल्ला | क्षमता (मेगावाट) | रोयल्टीको हिस्सा | अनुमानित रोयल्टी रकम रु. |
|---------|--------------------------------|----------------------|------------------|------------------|--------------------------|
| १ | Chatara | सुनसरी र उदयपुर | ३.२ | १ | १०६८६५३ |
| २ | Hewa Khola A | पाँचथर | १४.९ | १ | १५५१९२६ |
| ३ | Hewa Khola | संखुवासभा | ४.४५५ | १ | १०५७५३० |
| ४ | Iwa Khola | ताप्लेजुङ्ग र पाँचथर | ९.९ | १ | २०४८९२१ |
| ५ | Jogmai Khola | इलाम | ७.६ | १ | ११०९१२७ |
| ६ | Kabeli B-1 | ताप्लेजुङ्ग र पाँचथर | २५ | १ | ५४२७७२१ |
| ७ | Lower Hewa | पाँचथर | २१.६ | १ | ५२११६४७ |
| ८ | Mai | इलाम | २२ | १ | ३५७२५२१ |
| ९ | Mai Cascade | इलाम | ७ | १ | ११५५२१४ |
| १० | Mai Cascade HPP | इलाम | ८ | १ | १८२७५४५ |
| ११ | Mai Khola | इलाम | ४.५ | १ | १२८१७९० |
| १२ | Molun Khola SHP | ओखलढुङ्गा | ७ | १ | ८६१९३७ |
| १३ | Phawa Khola Hydropower Project | ताप्लेजुङ्ग र पाँचथर | ५ | १ | ७८१९९१ |
| १४ | Pikhuwa Khola | भोजपुर | ५ | १ | १२१४५३५ |
| १५ | Piluwa Khola | संखुवासभा | ३ | १ | ५४७७७३८ |
| १६ | Puwa | इलाम | ६.२ | १ | ६२६६८९७ |
| १७ | Puwa Khola-1 | इलाम | ४ | १ | ७६७६२१ |
| १८ | Rawa Khola | खोटाङ | ३ | १ | २००००० |
| १९ | Sabha Khola | संखुवासभा | ३.३ | १ | १४७८७८८ |
| २० | Solu Hydropower Project | सोलुखुम्बु | २३.५ | १ | ३९६४४४२ |
| २१ | Super Mai Hydropower Project | इलाम | ७.८ | १ | ६१३८५६ |
| २२ | Super Mai Khola Cascade HPP | इलाम | ३ | १ | ४५०००० |
| २३ | Super Mai-A HPP | इलाम | ९.६ | १ | १३५५००० |
| २४ | Upper Khorunga HPP | तेह्रथुम | ७.५ | १ | ७८९४८२ |
| २५ | Upper Mai-C | इलाम | ६.१ | १ | २११२८३१ |
| २६ | Upper Mai Hydropower Project | इलाम | १२ | १ | २६१९९३० |
| २७ | Upper Puwa-1 | इलाम | ३ | १ | २८४३७६ |
| | | | जम्मा | | ५४५५२०१९ |

ग. वन (राष्ट्रिय वन)

| क्र.सं. | रोयल्टीको हिस्सा | अनुमानित रोयल्टी रकम रु. |
|---------|------------------|--------------------------|
| १ | १ | २६०५८४५४ |

घ. वन (संरक्षित वन)

| क्र.सं. | संरक्षित क्षेत्रको नाम | जिल्लाको नाम | रोयल्टीको हिस्सा | अनुमानित रोयल्टी रकम रु. |
|---------|------------------------|------------------------|------------------|--------------------------|
| १ | KANCHENJUNGA CA | ताप्लेजुङ र संखुवासभा | १ | १२५३७ |
| २ | KOSHI TAPPU WR | सुनसरी र उदयपुर | ०.५५९२२३२ | ४१०२०३ |
| ३ | MAKALU BARUN NP | संखुवासभा र सोलुखुम्बु | १ | २६५७४८ |
| ४ | SAGARMATHA NP | सोलुखुम्बु | १ | १७४७०३७ |
| | | | जम्मा | २४३५५२५ |

ड. खानी तथा खनिज

| क्र.सं. | उत्खनन अनुमति पत्र | खनिज पदार्थ | जिल्ला | रोयल्टीको हिस्सा | अनुमानित रोयल्टी रकम रु. |
|---------|--------------------|-------------|-----------|------------------|--------------------------|
| १ | १/०६२/६३ | चुनढुङ्गा | धनकुटा | १ | ६९९६९९ |
| २ | १३१/०७४/७५ | चुनढुङ्गा | उदयपुर | १ | ६९४३५ |
| ३ | १८२/०६९/७० | क्वार्ज | संखुवासभा | १ | ६२५ |
| ४ | २६/०६९/७० | चुनढुङ्गा | उदयपुर | १ | १६७२२०९ |
| ५ | ३०/०६८/६९ | चुनढुङ्गा | उदयपुर | १ | १६९९६७९ |
| ६ | ३०३/४७९/०४५/४६ | चुनढुङ्गा | उदयपुर | १ | १०४२९२० |
| ७ | ३८/०५५/५६ | चुनढुङ्गा | उदयपुर | १ | ७९६२५०० |
| ८ | ३९/०५९/६० | रातोमाटो | उदयपुर | १ | ७८९८८ |
| ९ | ४०/०५९/६० | रातोमाटो | उदयपुर | १ | ६७३७ |
| | | | | जम्मा | १२२७२७१२ |

स्रोत: राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोग, तेस्रो वार्षिक प्रतिवेदन, २०७८

अनुसूची १२: तालतलैया सम्बन्धी विस्तृत विवरण

| S.N. | Districts | Name of Lake | Type of Lake | Core Area (Ha) | Basin Area (Ha) | Conditions |
|------|---------------|------------------------|--|----------------|-----------------|------------|
| 1 | Tehrathum | Chichiling Pokhari | Freshwater, Palustrine, Emergent | 0.2 | 2 | Degrading |
| 2 | Tehrathum | Marga Pokhari | Freshwater, Emergent, Palustrine, Forest | 0.2 | 4.1 | Good |
| 3 | Tehrathum | Mudke Aahal Panchkanya | Freshwater, Palustrine, Emergent | 0.1 | 5.2 | Degrading |
| 4 | Tehrathum | Chhather Pokhari | Freshwater, Palustrine, Emergent | 0.2 | 13.1 | Degrading |
| 5 | Udaypur | Belha Gavi | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 1.6 | 28.2 | Degrading |
| 6 | Udaypur | Dahar Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.1 | 8.5 | Degrading |
| 7 | Udaypur | Rautamai Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Seasonal | 0.5 | 9.1 | Degrading |
| 8 | Udaypur | Taple Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.6 | 9.7 | Good |
| 9 | Taplejung | Kali Pokhari-I | Freshwater, Palustrine, Emergent | 0.01 | 2.7 | Degrading |
| 10 | Taplejung | Kali Pokhari-II | Freshwater, Palustrine, Emergent, Forest | 0.4 | 6.8 | Degrading |
| 11 | Taplejung | Suke Pokhari | Freshwater, Palustrine, Emergent, Forest | 0.04 | 5.1 | Degrading |
| 12 | Sunsari | Barju Tal | Freshwater, Lacustrine, Seasonal | 37.1 | 499.2 | Degraded |
| 13 | Sunsari | Daita Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Seasonal | 1.2 | 14.8 | Good |
| 14 | Sunsari | Magar Daha | Freshwater, Lacustrine, Seasonal | 3 | 91.1 | Degrading |
| 15 | Sunsari | Savdov Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Seasonal | 4.9 | 75.4 | Degrading |
| 16 | Sunsari | Tal Talaiya | Freshwater, Lacustrine, Seasonal | 3.2 | 242.3 | Degrading |
| 17 | Sankhuwasabha | Gupha Pokhari | Freshwater, Palustrine, Emergent | 0.4 | 41.2 | Good |
| 18 | Sankhuwasabha | Lam Pokhari | Freshwater, Palustrine, Emergent | 0.1 | 9.7 | Good |
| 19 | Solukhumbu | Phurke Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Seasonal | 0.2 | 12.1 | Degrading |
| 20 | Solukhumbu | Suke Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.2 | 18.6 | Degrading |
| 21 | Panchthar | Dabala Pokhari | Freshwater, Palustrine, Emergent, Forest | 0.2 | 6.8 | Degrading |
| 22 | Panchthar | Gunte Pokhari | Freshwater, Palustrine, Emergent | 0.1 | 4.3 | Degrading |
| 23 | Panchthar | Harkote Pokhari | Freshwater, Palustrine, Emergent, Forest | 0.03 | 4.8 | Degrading |

| S.N. | Districts | Name of Lake | Type of Lake | Core Area (Ha) | Basin Area (Ha) | Conditions |
|------|-----------|--------------------------------|--|----------------|-----------------|------------|
| 24 | Panchthar | Hile Pokhari | Freshwater, Palustrine, Emergent, Forest | 0.1 | 4.6 | Good |
| 25 | Panchthar | Jor Pokhari-I (Vale Pokhari) | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.02 | 2.8 | Degrading |
| 26 | Panchthar | Jor Pokhari-II (Pothi Pokhari) | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.1 | 2.8 | Degrading |
| 27 | Panchthar | Lam Pokhari | Freshwater, Palustrine, Emergent, Forest | 0.3 | 14.6 | Good |
| 28 | Panchthar | Suke Pokhari-I | Freshwater, Palustrine, Emergent, Forest | 0.7 | 5.3 | Degrading |
| 29 | Panchthar | Suke Pokhari-II | Freshwater, Palustrine, Emergent | 0.2 | 2.1 | Degrading |
| 30 | Morang | Betini Simsar | Freshwater, Riverine, Perennial | 2.8 | 109.8 | Good |
| 31 | Morang | Betna | Freshwater, Lacustrine, Seasonal | 7.2 | 380.9 | Good |
| 32 | Morang | Bagjhoda | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 1.9 | 69.6 | Degrading |
| 33 | Morang | Dhanpalgadi | Freshwater, Palustrine, Forest | 0.2 | 59.2 | Degraded |
| 34 | Morang | Hasina Simsar Pokhari | Freshwater, Riverine, Perennial | 1.2 | 69.3 | Good |
| 35 | Morang | Rajarani Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 8.4 | 62.1 | Good |
| 36 | Morang | Raja Birat Ko Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Seasonal | 1.1 | 57.6 | Degraded |
| 37 | Morang | Raja Dhanpalthan Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Seasonal | 0.7 | 22.8 | Degrading |
| 38 | Morang | Rani Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Seasonal | 0.7 | 75.3 | Degrading |
| 39 | Morang | Rani Mantha Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Seasonal | 0.3 | ** | Degrading |
| 40 | Morang | Sunbarsi Pokhari | Freshwater, Palustrine, Forest | 1.9 | 56.8 | Good |
| 41 | Jhapa | Arjundhara | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.1 | 9.0 | Degrading |
| 42 | Jhapa | Arna Khadi | Freshwater, Palustrine, Emergent | 1 | 22.8 | Degrading |
| 43 | Jhapa | Banyani Bandh | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.6 | 44.9 | Degrading |
| 44 | Jhapa | Dadagaun Bandh | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.6 | 15.4 | Good |
| 45 | Jhapa | Deunia Khadi | Freshwater, Riverine, Perennial | 1.5 | 58.4 | Degrading |
| 46 | Jhapa | Devi Paini | Freshwater, Palustrine, Emergent | 0.5 | 243.0 | Degraded |
| 47 | Jhapa | Dhamala Bandh | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.2 | * | Degrading |

| S.N. | Districts | Name of Lake | Type of Lake | Core Area (Ha) | Basin Area (Ha) | Conditions |
|------|-----------|---------------------------------------|-----------------------------------|----------------|-----------------|------------|
| 48 | Jhapa | Dhanusha Pokhari | Freshwater, Palustrine, Emergent | 0.9 | 67.1 | Degrading |
| 49 | Jhapa | Dudamari Bandh I | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.7 | 137.7 | Degrading |
| 50 | Jhapa | Dudamari Bandh II | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.8 | 28.6 | Degrading |
| 51 | Jhapa | Indreni Tal | Freshwater, Palustrine, Emergent | 0.6 | 36.4 | Degrading |
| 52 | Jhapa | Jamunkhadi | Freshwater, Palustrine, Emergent | 4.5 | 215.4 | Good |
| 53 | Jhapa | Katahare Bandh | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.2 | * | Degrading |
| 54 | Jhapa | Kechana Rani Pokhari | Freshwater, Palustrine, Emergent | 10.9 | 730.2 | Good |
| 55 | Jhapa | Lahure Bandh | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.2 | 18.1 | Good |
| 56 | Jhapa | Lajeko Bandh | Freshwater, Palustrine, Emergent | 0.9 | 100.8 | Good |
| 57 | Jhapa | Mahadevthan Bandh | Freshwater, Riverine, Perennial | 1 | 25.8 | Degrading |
| 58 | Jhapa | Pagari Bandh | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.1 | 37.8 | Degrading |
| 59 | Jhapa | Pathriya Khadi | Freshwater, Riverine, Perennial | 0.9 | 46.6 | Degrading |
| 60 | Jhapa | Salbari (Budho Holi, Bhimsen Pokhari) | Freshwater, Riverine, Perennial | 1.7 | 158.2 | Good |
| 61 | Khotang | Bahane Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.6 | 5.8 | Good |
| 62 | Khotang | Baraha Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 3.3 | 85.3 | Degrading |
| 63 | Khotang | Chhitta Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.1 | 41.3 | Degrading |
| 64 | Khotang | Homma Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.1 | 5.6 | Degrading |
| 65 | Khotang | Indreni Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Seasonal | 0.1 | 3.8 | Degrading |
| 66 | Khotang | Kaali Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Seasonal | 0.1 | 3.2 | Degrading |
| 67 | Khotang | Laamche Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Seasonal | 0.1 | 1.8 | Degrading |
| 68 | Ilam | Antu Pokhari | Freshwater, Palustrine, Emergent | 1.1 | 13.6 | Degrading |
| 69 | Ilam | Ashok Pokhari | Freshwater, Palustrine, Emergent | 0.2 | 6.3 | Degrading |
| 70 | Ilam | Gore Pokhari (Seti Devi) | Freshwater, Palustrine, Emergent | 0.04 | 9.8 | Good |
| 71 | Ilam | Jor Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.4 | 6.7 | Degrading |

| S.N. | Districts | Name of Lake | Type of Lake | Core Area (Ha) | Basin Area (Ha) | Conditions |
|------|-----------|-------------------|-----------------------------------|----------------|-----------------|------------|
| 72 | Ilam | Mai Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 2.2 | 7.5 | Degrading |
| 73 | Ilam | Suke Pokhari | Freshwater, Palustrine, Emergent | 0.3 | 5 | Degraded |
| 74 | Ilam | Uttare Pokhari | Freshwater, Palustrine, Emergent | 0.4 | 6.6 | Degrading |
| 75 | Dhankuta | Marga Pokhari | Freshwater, Palustrine, Emergent | 0.6 | 3.2 | Degrading |
| 76 | Dhankuta | Rajarani | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 5.8 | 275.4 | Degrading |
| 77 | Bhojpur | Chyangre Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.5 | 6.3 | Degrading |
| 78 | Bhojpur | Haans Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 1.6 | 6 | Degrading |
| 79 | Bhojpur | Manedanda Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Permanent | 0.1 | 2.6 | Degrading |
| 80 | Bhojpur | Nira Pokhari | Freshwater, Lacustrine, Seasonal | 0.1 | 16.7 | Degrading |

स्रोत: Inventory of Lakes in Nepal, Main Report, 2021, retrieved from <https://nepallake.gov.np/map-based-2/province-1/>, January 20, 2023

अनुसूची १३: नदी तथा खोला बहाव हुने स्थानीय तहहरू

| क्र.सं. | नदी खोलाको नाम | बहाव भएका स्थानीय तहको नाम |
|---------|----------------|--|
| १ | अधेरी खोला | धरान उमनपा (स्थानीय तह - १) |
| २ | अरुण | महालक्ष्मी नगरपालिका, चैनपुर नगरपालिका, धर्मदेवी नगरपालिका, खाँदबारी नगरपालिका, चिचिला गाउँपालिका, षडानन्द नगरपालिका, अरुण गाउँपालिका, पौवादुङ्गा गाउँपालिका, साल्पासिलिछो गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ३ | आँप | मिक्लाजुङ गाउँपालिका, बेलका नगरपालिका (स्थानीय तह - २) |
| ४ | आँपे | मिक्लाजुङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ५ | आम्बोटे | याङवरङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ६ | इन्द्रावती | सिदिङ्वा गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ७ | इर्खुवा | साल्पासिलिछो गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ८ | इवा | मेन्छयायेम गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ९ | एकुवा खोला | हतुवागढी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १० | ककुर | कटारी नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ११ | कन्काई | कन्काई नगरपालिका, शिवसताक्षी नगरपालिका, झापा गाउँपालिका (स्थानीय तह - ३) |
| १२ | कमल | शिवसताक्षी नगरपालिका, कमल गाउँपालिका, कटारी नगरपालिका (स्थानीय तह - ३) |
| १३ | कमला | कटारी नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १४ | कावा खोला | हतुवागढी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १५ | कावेली | सिदिङ्वा गाउँपालिका, पाथिबरा याङवरङ गाउँपालिका, सिरिजङ्घा गाउँपालिका, हिलिहाङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - ४) |
| १६ | केवा | मिक्लाजुङ गाउँपालिका, धर्मदेवी नगरपालिका (स्थानीय तह - २) |
| १७ | केसलिया खोला | बर्जु गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १८ | कोकाह खोला | बराहक्षेत्र नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १९ | कोलाम | माहाकुलुङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| २० | खदन | सुन्दरहरैँचा नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| २१ | खदम खोला | केराबारी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| २२ | खरुवा खोला | दिप्रुङ चुइचुम्मा गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| २३ | खाडी | रौतामाई गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| २४ | खानी खोला | चिशंखुगढी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| २५ | खार्ने | चिशंखुगढी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| २६ | खेसाङ | पौवादुङ्गा गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| २७ | खोरुङ्गा | म्याङलुङ नगरपालिका, फेदाप गाउँपालिका, मेन्छयायेम गाउँपालिका (स्थानीय तह - ३) |

| क्र.सं. | नदी खोलाको नाम | बहाव भएका स्थानीय तहको नाम |
|---------|----------------|--|
| २८ | गछिया | सुन्दरहरैँचा नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| २९ | गरुवा | माई नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ३० | गोगने | ट्याम्केमैयुम गाउँपालिका, बेलका नगरपालिका (स्थानीय तह - २) |
| ३१ | घट्टे खोला | भोजपुर नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ३२ | धुन्सा खोला | फत्ताडलुङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ३३ | घेर | चौदण्डीगढी नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ३४ | चप्लेटी | चौदण्डीगढी नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ३५ | चवारा | मादी नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ३६ | चारुँ | सिद्धिचरण नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ३७ | चिसाङ | बेलबारी नगरपालिका, लेटाङ नगरपालिका, रंगेली नगरपालिका, कानेपोखरी गाउँपालिका (स्थानीय तह - ४) |
| ३८ | चेल्सी खोला | माप्यदुधकोशी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ३९ | छउडिया | रौतामाई गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ४० | छरुपा | चौबिसे गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ४१ | जुके | लिखु गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ४२ | जोगमाई | माईजोगमाई गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ४३ | झिक्लु | मिक्लाजुङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ४४ | टिमाई | बुद्धशान्ति गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ४५ | ट्याङगा खोला | गढी गाउँपालिका, बर्जु गाउँपालिका (स्थानीय तह - २) |
| ४६ | ठूलो मेते | अर्जुनधारा नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ४७ | ठेउनिया | भद्रपुर नगरपालिका, हल्दीबारी गाउँपालिका (स्थानीय तह - २) |
| ४८ | ठोट्ने | चिशंखुगढी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ४९ | डाँस | पथरीशनिश्चरे नगरपालिका, रंगेली नगरपालिका, कानेपोखरी गाउँपालिका (स्थानीय तह - ३) |
| ५० | ढाँटी खोला | चिशंखुगढी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ५१ | ढोट्ने | सिद्धिचरण नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ५२ | तमोर | फुङलिङ नगरपालिका, आठराई त्रिवेणी गाउँपालिका, मेरिङदेन गाउँपालिका, पाथिवरा याङवरक गाउँपालिका, हिलिहाङ गाउँपालिका, कुम्मायक गाउँपालिका, तुम्बेवा गाउँपालिका, आठराई गाउँपालिका, छथर जोरपाटी गाउँपालिका (स्थानीय तह - ९) |
| ५३ | तमोर | फुङलिङ नगरपालिका, आठराई त्रिवेणी गाउँपालिका, मेरिङदेन गाउँपालिका, पाथिवरा याङवरक गाउँपालिका, हिलिहाङ गाउँपालिका, कुम्मायक गाउँपालिका, तुम्बेवा गाउँपालिका, आठराई गाउँपालिका, छथर जोरपाटी गाउँपालिका (स्थानीय तह - ९) |

| क्र.सं. | नदी खोलाको नाम | बहाव भएका स्थानीय तहको नाम |
|---------|----------------|--|
| ५४ | ताडतिड | अर्जुनधारा नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ५५ | ताडमाय | मेन्छयायेम गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ५६ | ताङ्कुवा | छथर जोरपाटी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ५७ | ताप खोला | केपिलासगढी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ५८ | तावा | तुम्बेवा गाउँपालिका, कटारी नगरपालिका (स्थानीय तह - २) |
| ५९ | तेलिया | छथर जोरपाटी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ६० | तेली | लेटाड नगरपालिका, मिक्लाजुड गाउँपालिका (स्थानीय तह - २) |
| ६१ | तोमर | फेदाप गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ६२ | त्रियुगा | चौदण्डीगढी नगरपालिका, त्रियुगा नगरपालिका, रौतामाई गाउँपालिका (स्थानीय तह - ३) |
| ६३ | थापाटार | फिदिम नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ६४ | थासा खोला | फत्ताडलुङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ६५ | दूधकोशी | माप्यदुधकोशी गाउँपालिका, खुम्बु पासाडल्हामु गाउँपालिका, थुलुङ दुधकोशी गाउँपालिका, नेचासल्यान गाउँपालिका, हतुवागढी गाउँपालिका, हलेसी तुवाचुङ नगरपालिका, ऐसेलुखर्क गाउँपालिका, रावावेसी लामिडाँडा गाउँपालिका, सिद्धिचरण नगरपालिका, चिशंखुगढी गाउँपालिका, मानेभञ्ज्याङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - ११) |
| ६६ | दुवार | चौदण्डीगढी नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ६७ | देउमाई | देउमाई नगरपालिका, माडसेबुङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - २) |
| ६८ | दोभान | याडवरङ गाउँपालिका, म्याडलुङ नगरपालिका (स्थानीय तह - २) |
| ६९ | धारी | ताप्ली गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ७० | नवमी खोला | फालेलुङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ७१ | नावा | मिक्लाजुड गाउँपालिका, तुम्बेवा गाउँपालिका (स्थानीय तह - २) |
| ७२ | निकु खोला | फाल्गुनन्द गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ७३ | निन्दा | भद्रपुर नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ७४ | नेङ्खुवा | साल्पासिलिछो गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ७५ | नेर्पा | दिक्तेल रुपाकोटा मझुवागढी नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ७६ | पटनाली खोला | धरान उमनपा, बराहक्षेत्र नगरपालिका (स्थानीय तह - २) |
| ७७ | पिखुवा | रामप्रसाद राई गाउँपालिका, पौवादुङ्गा गाउँपालिका (स्थानीय तह - २) |
| ७८ | पिङ्गुवा | म्याडलुङ नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ७९ | पिलुवा | चैनपुर नगरपालिका, धर्मदेवी नगरपालिका, मादी नगरपालिका (स्थानीय तह - ३) |
| ८० | पुवा | इलाम नगरपालिका, देउमाई नगरपालिका, रौतामाई गाउँपालिका (स्थानीय तह - ३) |
| ८१ | पुवारे | रौतामाई गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |

| क्र.सं. | नदी खोलाको नाम | बहाव भएका स्थानीय तहको नाम |
|---------|--------------------|---|
| ८२ | पौया | उदयपुरगढी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ८३ | फड्सुवा | शदिभूमि गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ८४ | फावा खोला | सिरिजङ्घा गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ८५ | फुलवाती | माहाकुलुङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ८६ | फेवा | माडसेबुङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ८७ | फोड्सुवा | धनकुटा नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ८८ | बक्रा खोला | रतुवामाई नगरपालिका, उर्लाबारी नगरपालिका, मिक्लाजुङ गाउँपालिका, जन्तेढुङ्गा गाउँपालिका (स्थानीय तह - ४) |
| ८९ | बढी | सुन्दरहर्षेचा नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ९० | बरुवा | त्रियुगा नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ९१ | बलान | उदयपुरगढी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ९२ | बाघ खोला | बराहक्षेत्र नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ९३ | बाङ्गेखोला | चिशंखुगढी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ९४ | बाढी पहिरोको जोखिम | मैवाखोला गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ९५ | बादुरा | कटारी नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ९६ | बिटिङ | अर्जुनधारा नगरपालिका, बाह्रदशी गाउँपालिका, झापा गाउँपालिका, बुद्धशान्ति गाउँपालिका (स्थानीय तह - ४) |
| ९७ | बिरिङ | कन्काई नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ९८ | बूढीखोला | बुढीगंगा गाउँपालिका, इटहरी उमनपा, दुहवी नगरपालिका, देवानगञ्ज गाउँपालिका, गढी गाउँपालिका, बर्जु गाउँपालिका (स्थानीय तह - ६) |
| ९९ | बूढीखोला | बुढीगंगा गाउँपालिका, इटहरी उमनपा, दुहवी नगरपालिका, देवानगञ्ज गाउँपालिका, गढी गाउँपालिका, बर्जु गाउँपालिका (स्थानीय तह - ६) |
| १०० | बोगने | सिद्धिचरण नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १०१ | भलुवा | केराबारी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १०२ | मगर | मिक्लाजुङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १०३ | मरिया खोला | देवानगञ्ज गाउँपालिका, हरिनगरा गाउँपालिका (स्थानीय तह - २) |
| १०४ | मरुवा | कटारी नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १०५ | माई | इलाम नगरपालिका, देउमाई नगरपालिका, माई नगरपालिका, माईजोगमाई गाउँपालिका, माडसेबुङ गाउँपालिका, बुद्धशान्ति गाउँपालिका (स्थानीय तह - ६) |
| १०६ | माडीबास | चौदण्डीगढी नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १०७ | माभितार | फिदिम नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |

| क्र.सं. | नदी खोलाको नाम | बहाव भएका स्थानीय तहको नाम |
|---------|----------------|--|
| १०८ | माया | धर्मदेवी नगरपालिका, मादी नगरपालिका (स्थानीय तह - २) |
| १०९ | मार्बु खोला | लिखुपिके गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ११० | मावा | माडसेबुङ गाउँपालिका, दमक नगरपालिका, उर्लाबारी नगरपालिका, मिक्लाजुङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - ४) |
| १११ | मुगा | शदिभूमि गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ११२ | मुगु | केराबारी गाउँपालिका, मिक्लाजुङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - २) |
| ११३ | मुवा खोला | फालेलुङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ११४ | मेची | सुर्योदय नगरपालिका, भद्रपुर नगरपालिका (स्थानीय तह - २) |
| ११५ | मेवा | मिक्वाखोला गाउँपालिका, मेरिङदेन गाउँपालिका, याङवरङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - ३) |
| ११६ | मैवा खोला | मेरिङदेन गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ११७ | मोरडी | लेटाङ नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ११८ | मोरुङगा | याङवरङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| ११९ | मोलुङ | मानेभञ्ज्याङ गाउँपालिका, मोलुङ गाउँपालिका, सुनकोशी गाउँपालिका (स्थानीय तह - ३) |
| १२० | मौरी खोला | माप्यदुधकोशी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १२१ | यलुङ | मोलुङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १२२ | याङगुवा खोला | भोजपुर नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १२३ | नभएको | मैवाखोला गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १२४ | योक्लिङ | मोलुङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १२५ | रतुवा | चुलाचुली गाउँपालिका, माडसेबुङ गाउँपालिका, दमक नगरपालिका, कमल गाउँपालिका, रतुवामाई नगरपालिका, रौतामाई गाउँपालिका (स्थानीय तह - ६) |
| १२६ | राकुला | ताप्ली गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १२७ | राकुली | रौतामाई गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १२८ | रावा | ऐसेलुखर्क गाउँपालिका, रावावेसी लामिडाँडा गाउँपालिका, केपिलासगढी गाउँपालिका (स्थानीय तह - ३) |
| १२९ | लखुवा | मादी नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १३० | लडवा खोला | मेरिङदेन गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १३१ | लम्फेवा | माडसेबुङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १३२ | लम्बु | म्याङलुङ नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १३३ | लम्बु दोभान | म्याङलुङ नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १३४ | लामा | चौदण्डीगढी नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १३५ | लिखु | लिखुपिके गाउँपालिका, खिजिदेम्बा गाउँपालिका, लिखु गाउँपालिका (स्थानीय तह - ३) |

| क्र.सं. | नदी खोलाको नाम | बहाव भएका स्थानीय तहको नाम |
|---------|---------------------|---|
| १३६ | लिदिङ खोला | ऐसेलुखर्क गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १३७ | लिवै | सिद्धिचरण नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १३८ | लेउटी खोला | साँगुरीगढी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १३९ | लेगुवा | भोटखोला गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १४० | लोदिया | माई नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १४१ | लोहन्द्रा | बेलबारी नगरपालिका, रंगेली नगरपालिका, सुन्दरहँचा नगरपालिका, धनपालथान गाउँपालिका, ग्रामथान गाउँपालिका, जहदा गाउँपालिका, कटहरी गाउँपालिका (स्थानीय तह - ७) |
| १४२ | वरुण खोला | भोटखोला गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १४३ | विरिङ | रोङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १४४ | विवरण प्राप्त नभएको | फाकफोकथुम गाउँपालिका, मेचीनगर नगरपालिका, पाख्रिबास नगरपालिका, मकालु गाउँपालिका, आमचोक गाउँपालिका (स्थानीय तह - ५) |
| १४५ | वैदनाथ | कटारी नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १४६ | सकेवा | मिक्लाजुङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १४७ | सप्तकोशी | कोशी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १४८ | सभा | चैनपुर नगरपालिका, खाँदबारी नगरपालिका, सभापोखरी गाउँपालिका (स्थानीय तह - ३) |
| १४९ | सर्दु खोला | धरान उमनपा, बराहक्षेत्र नगरपालिका (स्थानीय तह - २) |
| १५० | सानो बक्रा खोला | मिक्लाजुङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १५१ | सालु खोला | माप्यदुधकोशी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १५२ | साल्बोटे | याङवरङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १५३ | सावा खोला | जन्तेदुङ्गा गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १५४ | सोराङ खोला | भोजपुर नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १५५ | सोलु खोला | थुलुङ दुधकोशी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १५६ | सिउती खोला | रामधुनी नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १५७ | सिंधिया | बुढीगंगा गाउँपालिका, जहदा गाउँपालिका (स्थानीय तह - २) |
| १५८ | सिद्धि | सुर्योदय नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १५९ | सिलसिले | याङवरङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १६० | सिसा खोला | सोलुदुधकुण्ड नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १६१ | सिस्ने | सिद्धिचरण नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १६२ | सुखानी | अर्जुनधारा नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १६३ | सुनकोडा | उर्लाबारी नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |

| क्र.सं. | नदी खोलाको नाम | बहाव भएका स्थानीय तहको नाम |
|---------|----------------|--|
| १६४ | सुनकोशी | हलेसी तुवाचुङ नगरपालिका, दिप्रुङ चुइचुम्मा गाउँपालिका, बराहपोखरी गाउँपालिका, त्रियुगा नगरपालिका, लिम्चुङबुङ गाउँपालिका, मानेभञ्ज्याङ गाउँपालिका, सुनकोशी गाउँपालिका (स्थानीय तह - ७) |
| १६५ | सुनसरी खोला | इनरुवा नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १६६ | सेउती खोला | धरान उमनपा (स्थानीय तह - १) |
| १६७ | सेती | बेलका नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १६८ | सेरा खोला | धरान उमनपा (स्थानीय तह - १) |
| १६९ | सेहेरा खोला | इटहरी उमनपा (स्थानीय तह - १) |
| १७० | सोलु खोला | सोलुदुधकुण्ड नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १७१ | सोलुङ | मोलुङ गाउँपालिका, सुनकोशी गाउँपालिका (स्थानीय तह - २) |
| १७२ | सोहटी | उर्लाबारी नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १७३ | हडिया | भद्रपुर नगरपालिका, बुद्धशान्ति गाउँपालिका (स्थानीय तह - २) |
| १७४ | हिवा खोला | पाँचखपन नगरपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १७५ | हुँगा | माहाकुलुङ गाउँपालिका, सोताङ गाउँपालिका (स्थानीय तह - २) |
| १७६ | हुरहुरे | केराबारी गाउँपालिका (स्थानीय तह - १) |
| १७७ | हेवा | फालेलुङ गाउँपालिका, हिलिहाङ गाउँपालिका, चैनपुर नगरपालिका (स्थानीय तह - ३) |

अनुसूची १४: जलविद्युत परियोजना सम्बन्धी विवरण

| SN | District | Project | River | Issue Date | Capacity (MW) |
|----|---------------|-------------------------------------|--------------------------------|------------|---------------|
| 1 | Bhojpur | Upper Chirkhuwa Khola | Chirkhuwa | 2073-11-11 | 4.7 |
| 2 | Bhojpur | Lower Chirkhuwa | Chirkhuwa | 2074-02-22 | 4.06 |
| 3 | Bhojpur | Lower Irkhuwa Khola | Irkhuwa Khola | 2074-10-23 | 14.15 |
| 4 | Bhojpur | Irkhuwa Khola-B HPP | Irkhuwa Khola | 2074-11-03 | 15.524 |
| 5 | Bhojpur | Phedi Khola (Thumlung) Small HPP | Phedi khola (Thumlung) | 2076-11-15 | 3.52 |
| 6 | Bhojpur | Upper Irkhuwa HPP | Irkhuwa, Phedi | 2077-02-23 | 14.5 |
| 7 | Ilam | Siddhi Khola | Siddhi Khola | 2072-06-13 | 10 |
| 8 | Ilam | Puwa II hydropower Project | Puwa | 2075-06-23 | 4.96 |
| 9 | Ilam | Jogmai Cascade | Jogmai Khola | 2076-10-01 | 5.2 |
| 10 | Ilam | Upper Deumai Khola Small HEP | Deumai | 2078-11-06 | 8.3 |
| 11 | Khotang | Rawa Khola HPP | Rawa Khola | 2070-10-28 | 6.5 |
| 12 | Khotang | Mid Rawa Khola HEP | Rawa Khola, Sung Khola | 2077-06-07 | 2.5 |
| 13 | Morang | Chisang Khola -A Small HEP | Chisang | 2076-07-24 | 1.8 |
| 14 | Okhaldhunga | Buku-Kapati Hydropower Project | Buku | 2074-05-08 | 5 |
| 15 | Okhaldhunga | Buku Khola | Buku | 2074-09-25 | 6 |
| 16 | Okhaldhunga | Likhu Khola HPP | Likhu Khola | 2076-02-24 | 30 |
| 17 | Okhaldhunga | Sepli Khola HEP | Sepli Khola | 2078-12-17 | 5 |
| 18 | Okhaldhunga | Aayu Malun Khola HEP | Malun | 2079-08-06 | 21 |
| 19 | Panchthar | Kabeli-A | Kabeli Khola | 2069-05-21 | 37.6 |
| 20 | Panchthar | Hewa A Small HEP | Hewa Khola | 2075-04-14 | 5 |
| 21 | Sankhuwasabha | Down Piluwa | Piluwa Khola | 2070-11-04 | 9.5 |
| 22 | Sankhuwasabha | Maya Khola Hydropower Project | Maya | 2071-02-26 | 14.9 |
| 23 | Sankhuwasabha | Sabha Khola A | Sabha Khola | 2071-06-28 | 8.3 |
| 24 | Sankhuwasabha | Upper Piluwa Khola-2 SHP | Piluwa Khola | 2072-09-03 | 4.72 |
| 25 | Sankhuwasabha | Sabha Khola-B HPP | Sabha Khola | 2073-11-30 | 15.1 |
| 26 | Sankhuwasabha | Lankhuwa Khola | Lankhuwa | 2074-03-28 | 5 |
| 27 | Sankhuwasabha | Kasuwa Khola HPP | Kasuwa | 2074-09-03 | 45 |
| 28 | Sankhuwasabha | Arun 3 | Arun | 2075-01-20 | 900 |
| 29 | Sankhuwasabha | Upper Piluwa Hills Small HP Project | Piluwa, Tupuwa & Chhange Khola | 2075-09-23 | 4.99 |
| 30 | Sankhuwasabha | Super Hewa HPP | Hewa Khola | 2075-12-26 | 5 |
| 31 | Sankhuwasabha | Lower Hewa Khola-A HPP | Hewa Khola | 2076-07-26 | 7.3 |
| 32 | Sankhuwasabha | Isuwa Khola Hydropower Project | Isuwa Khola | 2077-02-27 | 97.2 |
| 33 | Sankhuwasabha | Upper Piluwa 3 HPP | Piluwa Khola | 2077-04-09 | 4.95 |
| 34 | Sankhuwasabha | Upper Piluwa-1 HEP | Piluwa | 2078-07-07 | 7.7 |
| 35 | Sankhuwasabha | Isuwa Khola PRoR Cascade HEP | Isuwa Khola | 2078-09-06 | 37.7 |

| SN | District | Project | River | Issue Date | Capacity (MW) |
|----|------------|--------------------------------|---------------------------|--------------|-----------------|
| 36 | Solukhumbu | Junbeshi | Junbeshi | 2069-09-20 | 5.2 |
| 37 | Solukhumbu | Lower Solu Hydropower Project | Solu Khola | 2070-12-05 | 82 |
| 38 | Solukhumbu | Solu Khola (Dudha Koshi) | Solu Khola | 2071-06-02 | 86 |
| 39 | Solukhumbu | Upper Solu Khola HPP | Solu Khola | 2073-05-16 | 18 |
| 40 | Solukhumbu | Dudhkunda Khola HEP | Solu Khola | 2076-08-18 | 12 |
| 41 | Solukhumbu | Rauje Khola HPP | Rauje Khola | 2077-03-05 | 4.99 |
| 42 | Solukhumbu | Mid Solu Khola HEP | Solu Khola | 2077-04-22 | 9.5 |
| 43 | Solukhumbu | Dudhkoshi-2 (Jaleswar) HPP | Dudh Koshi | 2077-06-07 | 70 |
| 44 | Solukhumbu | Middle Hongu Khola B HEP | Hongu Khola | 2078-10-12 | 22.9 |
| 45 | Solukhumbu | Madhya Hongu Khola -A HPP | Hongu Khola | 2079-03-09 | 22 |
| 46 | Taplejung | Middle Tamor | Tamor | 2074-02-22 | 54 |
| 47 | Taplejung | Mewa Khola Hydropower project | Mewa Khola | 2074-04-15 | 50 |
| 48 | Taplejung | Upper Tamor | Tamor | 2075-02-27 | 285 |
| 49 | Taplejung | Upper Phawa HPP | Phawa Khola | 2075-05-19 | 5.8 |
| 50 | Taplejung | Middle Mewa HPP | Mewa Khola | 2076-10-12 | 49 |
| 51 | Taplejung | Upper Maiwa HPP | Maiwa | 2077-03-03 | 17.85 |
| 52 | Taplejung | Tamor Mewa | Tamor & Mewa | 2077-06-25 | 128 |
| 53 | Taplejung | Mewa khola HEP | Mewa Khola | 2077-10-02 | 23 |
| 54 | Taplejung | Super Kabeli Khola A HEP | Kabeli Khola, Amji Khola | 2078-07-12 | 13.5 |
| 55 | Taplejung | Super Kabeli Khola Cascade HEP | Kabeli Khola | 2078-07-12 | 12 |
| 56 | Taplejung | Kabeli-3 HEP | Kabeli | 2078-08-02 | 21.93 |
| 57 | Taplejung | Sona Khola HEP | Sona Khola, Khahare Khola | 2078-09-28 | 9 |
| 58 | Taplejung | Mathillo Kabeli HEP | Kabeli Khola | 2078-10-05 | 28.1 |
| 59 | Taplejung | Tamor Khola-5 HEP | Tamor | 2078-12-20 | 37.5 |
| 60 | Taplejung | Ghunsa Khola HEP | Ghunsa Khola | 2079-04-08 | 77.5 |
| 61 | Taplejung | Simbuwa Khola HEP | Simbuwa Khola | 2079-04-23 | 70.3 |
| 62 | Taplejung | Upper Kabeli-2 HEP | Kabeli Khola | 2079-08-07 | 15 |
| 63 | Terhathum | Khorunga Khola | Khorunga Khola | 2069-12-29 | 4.8 |
| 64 | Terhathum | Lower Khorunga | Khorunga Khola | 2073-04-12 | 5.5 |
| | | | | Total | 2613.044 |

Source: [Construction License :: Hydro \(More than 1MW\) \(doed.gov.np\)](https://doed.gov.np/), January 20, 2023

अनुसूची १५: प्रदेश सरकारको राजस्व सुधारका लागि आवश्यक कानूनका विषयहरू

| क्र.सं. | राजस्व स्रोत | के गर्नु पर्ने |
|---------|--|---|
| १ | अन्तर प्रादेशिक रुपमा फैलिएको जङ्गल, हिमाल, वन संरक्षण क्षेत्र जल उपयोग [७(२३)] | प्राविधिक अध्ययन गर्ने |
| २ | आम्ची र अन्य पेशा [७(१२)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ३ | आयुर्वेद चिकित्सा [७(१२)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ४ | आवश्यक वस्तु तथा सेवाको आपूर्ति, वितरण, मूल्य नियन्त्रण, गुणस्तर र अनुगमन [७(२)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ५ | इन्जिनियरिङ् [७(१२)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ६ | उद्योग तथा खनिज र भौतिक पूर्वाधार [७(१५)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ७ | एफ् एम् [६(३)] | प्रदेश विषयगत कानूनमा कर गैरकर लाग्ने तरीका, आधार, तोकन मिल्नेमा रकम तोकी सोही ऐनबाट (वा मिल्दोमा आर्थिक ऐनबाट) राजस्व सङ्कलन गर्ने |
| ८ | औद्योगिक विवादको समाधान [७(११)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ९ | औषधि र विषादी [७(९)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| १० | कलकारखाना [६(२०)] | प्रदेश विषयगत कानूनमा कर गैरकर लाग्ने तरीका, आधार, तोकन मिल्नेमा रकम तोकी सोही ऐनबाट (वा मिल्दोमा आर्थिक ऐनबाट) राजस्व सङ्कलन गर्ने |
| ११ | कानून व्यवसाय [७(१२)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| १२ | कृषि आयमा कर [६(४)] | प्रदेश राजस्व कानूनमा कर गैरकर लाग्ने तरीका, कराधार, आय र कर गणना, कर अवधि, राजस्व निर्धारण, तिर्ने विधि, पालना नहुँदाको शुल्क व्याज तोकी (राजस्व चुहावट नियन्त्रण व्यवस्था सहित) प्रदेश राजस्व कानून निर्माण गर्ने |
| १३ | क्यासिनो [७(१६)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| १४ | खानी तथा खनिज [९(८)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| १५ | खेलकूद [७(१९)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| १६ | खेलकूद र पत्रपत्रिका [९(२)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको |

| क्र.सं. | राजस्व स्रोत | के गर्नु पर्ने |
|---------|--|--|
| | | अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| १७ | घर जग्गा रजिष्ट्रेशन शुल्क [६(४)] | प्रदेश राजस्व कानूनमा कर गैरकर लाग्ने तरिका, कराधार, आय र कर गणना, कर अवधि, राजस्व निर्धारण, तिर्ने विधि, पालना नहुँदाको शुल्क व्याज तोकी (राजस्व चुहावट नियन्त्रण व्यवस्था सहित) प्रदेश राजस्व कानून बनाउने |
| १८ | चलचित्र [७(१९)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| १९ | चिकित्सा [७(१२)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| २० | चिह्न [७(१६)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| २१ | जग्गाको अभिलेख [६(१७)] | आर्थिक ऐनबाट सेवा शुल्क सङ्कलन गर्ने |
| २२ | जल उपयोग [९(७)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| २३ | जलमार्ग [७(१३)] | प्राविधिक अध्ययन गर्ने |
| २४ | जैविक विविधता [७(१३)] | प्राविधिक अध्ययन गर्ने |
| २५ | टाट पल्टेको र दामासाही सम्बन्धी [७(८)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| २६ | टेलिभिजन सञ्चालन [६(३)] | प्रदेश विषयगत कानूनमा कर गैरकर लाग्ने तरिका, आधार, तोकन मिल्नेमा रकम तोकी सोही ऐनबाट (वा मिल्दोमा आर्थिक ऐनबाट) राजस्व सङ्कलन गर्ने |
| २७ | दण्ड जरिवाना [६(४)] | प्रदेश विषयगत कानूनमा कर गैरकर लाग्ने तरिका, आधार, तोकन मिल्नेमा रकम तोकी सोही ऐनबाट (वा मिल्दोमा आर्थिक ऐनबाट) राजस्व सङ्कलन गर्ने |
| २८ | दण्ड जरिवाना [९(६)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| २९ | दस्तुर [६(४), ९(६)] | प्रदेश विषयगत कानूनमा कर गैरकर लाग्ने तरिका, आधार, तोकन मिल्नेमा रकम तोकी सोही ऐनबाट (वा मिल्दोमा आर्थिक ऐनबाट) राजस्व सङ्कलन गर्ने |
| ३० | पर्यटन [६(४), ७(१८)] | प्रदेश विषयगत कानूनमा कर गैरकर लाग्ने तरिका, आधार, तोकन मिल्नेमा रकम तोकी सोही ऐनबाट (वा मिल्दोमा आर्थिक ऐनबाट) राजस्व सङ्कलन गर्ने |
| ३१ | पर्यटन शुल्क [९(६)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ३२ | पर्यावरण तथा जैविक विविधता [९(७)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ३३ | पशु चिकित्सा [७(१२)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ३४ | प्रदेश तथ्याङ्क [६(६)] | आर्थिक ऐनबाट सेवा शुल्क लिने |

| क्र.सं. | राजस्व स्रोत | के गर्नु पर्ने |
|---------|--|--|
| ३५ | प्रदेश भित्रको राष्ट्रिय वन, जल उपयोग तथा वातावरण व्यवस्थापन [६(१९)] | प्राविधिक अध्ययन गर्ने |
| ३६ | प्रदेश लोकसेवा आयोग [६(१५)] | प्रदेश विषयगत कानूनमा कर गैरकर लाग्ने तरिका, आधार, तोक्न मिल्नेमा रकम तोकी सोही ऐनबाट (वा मिल्दोमा आर्थिक ऐनबाट) राजस्व सङ्कलन गर्ने |
| ३७ | प्रदेश सीमा नदी [७(१३)] | प्राविधिक अध्ययन गर्ने |
| ३८ | प्रदेश स्तरको विद्युत, सिचाइ र खानेपानी सेवा [६(७)] | प्रदेश विषयगत कानूनमा कर गैरकर लाग्ने तरिका, आधार, तोक्न मिल्नेमा रकम तोकी सोही ऐनबाट (वा मिल्दोमा आर्थिक ऐनबाट) राजस्व सङ्कलन गर्ने |
| ३९ | प्राकृतिक स्रोतबाट प्राप्त रोयल्टी [९(१४)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ४० | प्राकृतिक स्रोतबाट प्राप्त रोयल्टी [९(६)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ४१ | प्राचीन स्मारक र संग्रहालय [९(१२)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ४२ | बीमा व्यवसाय सञ्चालन र व्यवस्थापन [७(२०)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ४३ | भूमि व्यवस्थापन [६(१६)] | प्राविधिक अध्ययन गर्ने |
| ४४ | मनोरञ्जन कर [६(४)] | प्रदेश राजस्व कानूनमा कर गैरकर लाग्ने तरिका, कराधार, आय र कर गणना, कर अवधि, राजस्व निर्धारण, तिर्ने विधि, पालना नहुँदाको शुल्क व्याज तोकी (राजस्व चुहावट नियन्त्रण व्यवस्था सहित) प्रदेश राजस्व कानून बनाउने |
| ४५ | यातायात [६(२०)] | प्रदेश विषयगत कानूनमा कर गैरकर लाग्ने तरिका, आधार, तोक्न मिल्नेमा रकम तोकी सोही ऐनबाट (वा मिल्दोमा आर्थिक ऐनबाट) राजस्व कानून बनाउने |
| ४६ | रेडियो [६(३)] | प्रदेश विषयगत कानूनमा कर गैरकर लाग्ने तरिका, आधार, तोक्न मिल्नेमा रकम तोकी सोही ऐनबाट (वा मिल्दोमा आर्थिक ऐनबाट) राजस्व |
| ४७ | लेखा परीक्षण [७(१२)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ४८ | वन जङ्गल [९(७)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ४९ | वन्यजन्तु [९(७)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ५० | वातावरण [९(७)] | प्राविधिक अध्ययन गर्ने |
| ५१ | विज्ञापन कर [६(४)] | प्रदेश राजस्व कानूनमा कर गैरकर लाग्ने तरिका, कराधार, आय र कर गणना, कर अवधि, राजस्व निर्धारण, तिर्ने विधि, पालना नहुँदाको शुल्क व्याज तोकी (राजस्व चुहावट नियन्त्रण व्यवस्था सहित) प्रदेश राजस्व कानून बनाउने |

| क्र.सं. | राजस्व स्रोत | के गर्नु पर्ने |
|---------|------------------------------------|---|
| ५२ | विषादी [७(९)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ५३ | विद्युत [९(५)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ५४ | विवाह र तथ्याङ्क [९(११)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ५५ | व्यक्तिगत घटना [९(११)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ५६ | संग्रहालय [६(८)] | प्रदेश विषयगत कानूनमा कर गैरकर लाग्ने तरिका, आधार, तोक्न मिल्नेमा रकम तोकी सोही ऐनबाट (वा मिल्दोमा आर्थिक ऐनबाट) राजस्व कानून बनाउने |
| ५७ | सञ्चार माध्यम सम्बन्धी [७(१४)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ५८ | सवारी साधन अनुमति [९(१५)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ५९ | सवारी साधन कर [६(४)] | प्रदेश राजस्व कानूनमा कर गैरकर लाग्ने तरिका, कर आधार, आय र कर गणना, कर अवधी, राजस्व निर्धारण, तिर्ने विधि, पालना नहुँदाको शुल्क व्याज तोकी (राजस्व चुहावट नियन्त्रण व्यवस्था सहित) प्रदेश राजस्व कानून बनाउने |
| ६० | सहकारी [७(७), ९(१)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ६१ | साझेदारी र ऐजेन्सी सम्बन्धी [७(७)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ६२ | सिनेमा हल [७(१९)] | संघीय विषयगत कानूनमा प्रदेशले राजस्व लिन सक्ने अधिकार र काम दिएको अनुसार प्रदेश विषयगत कानून र प्रदेश आर्थिक ऐनबाट गैर-कर लगाउने |
| ६३ | सेवा शुल्क [६(४), ९(६)] | प्रदेश विषयगत कानूनमा कर गैरकर लाग्ने तरिका, आधार, तोक्न मिल्नेमा रकम तोकी सोही ऐनबाट (वा मिल्दोमा आर्थिक ऐनबाट) राजस्व उठाउने |

नोट: कोष्ठ भित्रको अंकले नेपालको संविधानको अनुसूची र बुँदालाई जनाउँछ ।

(ख) मस्यौदा प्रतिवेदन प्रस्तुतीकरण तथा छलफल कार्यक्रम (विराटनगर)

प्रदेश नं. १ को आन्तरिक राजस्व सभाव्यता अध्ययन प्रतिवेदन माथिको छलफल कार्यक्रम
 स्थान: विराट होटल, विराटनगर
 मिति : २०७९ साल माघ २२ गते
सहभागीहरुको उपस्थिति विवरण

| क्र.स. | नाम | संस्था | पद | हस्ताक्षर |
|--------|--------------------------|---|-----------------|-----------|
| १ | मा. हिवमत कुमार कार्की | मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषदको कार्यालय | मुख्यमन्त्री | |
| २ | श्री किशोर कुमार चौधरी | मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषदको कार्यालय | नि. प्रमुख सचिव | |
| ३ | श्री शिव कुमार कार्की | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय | सचिव | |
| ४ | श्री कृष्णप्रसाद सापकोटा | मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषदको कार्यालय | सचिव | |
| ५ | श्री उमेश बस्नेत | आन्तरिक मामिला तथा कानून मन्त्रालय | सचिव | |
| ६ | डा. सञ्जिव कुमार राई | पर्यटन, वन तथा वातावरण मन्त्रालय | सचिव | |
| ७ | श्री अशोककुमार साह | सडक पूर्वाधार तथा शहरी विकास मन्त्रालय | सचिव | |
| ८ | श्री मेघनाथ तिमल्सेना | उद्योग, कृषि तथा सहकारी मन्त्रालय | सचिव | |
| ९ | श्री नविन राज सिंह | खानेपानी, सिंचाइ तथा उर्जा मन्त्रालय | सचिव | |
| १० | श्री वासुदेव दाहाल | सामाजिक विकास मन्त्रालय | सचिव | |
| ११ | श्री अनुज भट्टचन | स्वास्थ्य मन्त्रालय | सचिव | |
| १२ | श्री बावुराम खतिवडा | प्रदेश लोकसेवा आयोग | सचिव | |
| १३ | श्री जयकुमार घिमिरे | खादेश प्रोजेक्ट आयोग | " | |
| १४ | श्री सुब्रह्मण्य | मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद | " | |
| १५ | श्री अजिंक्य प्रसाद | आन्तरिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय प्रदेश नं. १ | उप सचिव | |
| १६ | | | | |
| १७ | श्री दामोदर खत्री | प्रदेश लेखा नियन्त्रणक कार्यालय | प्रमुख | |
| १८ | श्री केशवप्रसाद अर्याल | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय | प्रवक्ता | |

| क्र.स. | नाम | संस्था | पद | दस्तखत |
|--------|---------------------|------------------------------------|---------------------|--------|
| १९ | श्री खगेन्द्र खडका | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय | उपसंचव | |
| २० | विठ्ठल प्र. कोराला | महानगर (पालिका) विराटनगर | प्र.प्र.अ. | |
| २१ | सोनेज कु. गौतम | " " | वि.सू.पु.सू. | |
| २२ | मोला प्र. शिवा | डा.त्रिपोली डा.उ. पालिका | उपाहपडा | |
| २३ | हृदय कुमारे मा | पर्यटन तथा लक्ष्मी विकास मन्त्रालय | नि.सचिव | |
| २४ | प्रद्युम्न पौखरेल | ईसाई धर्म तथा लक्ष्मी मन्त्रालय | अवर सचिव | |
| २५ | गुरुप्रसाद डाहाल | उ.ल.सि.के. | लक्ष्मी | |
| २६ | गोपबन्धु कुमारे | मुख्य मन्त्री कार्यालय | लक्ष्मी | |
| २७ | मकेश्वर ठाकुर | पुस्तक सहायता कार्यक्रम | गो.प्र.सचिव | |
| २८ | जीवन कार्की | मुख्य मन्त्री कार्यालय | प्र.स. सचिव | |
| २९ | राजेश्वर पाण्डे | सु.सं. वि.सू. केन्द्र | संकेत सचिव | |
| ३० | डा. मुकुन्द पौडेल | राज्य सेवा बोर्ड, काठमाडौं | निर्वा | |
| ३१ | भवराज डाहाल | " " | " | |
| ३२ | कोमलिका शिवा | कार्यमन्त्री कार्यालय | जस्टिस | |
| ३३ | किरण कोराला | सी.ता. तथा यो.ता. | का.अ. | |
| ३४ | विदुर पौडेल | " " " | सा.अ. | |
| ३५ | योगेश्वर पौडेल | " " " | क.अ. | |
| ३६ | गुरुप्रसाद डाहाल | " " " | सा.अ. | |
| ३७ | विमलेश्वर पौडेल | प्रदेश सरकार कार्यालय | लि.लि.सू. | |
| ३८ | डा. हेमराज लामिछाने | SBAK | Chairperson | |
| ३९ | विष्णु प्र. नेपाल | SBAK | Program Coordinator | |
| ४० | शंकर ठाकुर | | | |

(ग) मस्यौदा प्रतिवेदन प्रस्तुतीकरण तथा छलफल कार्यक्रम (काठमाडौं)

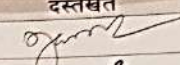
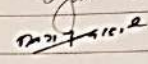










२०७९ साल फागुन १२ गते शुक्रबार ।

सहभागीहरु उपस्थिति विवरण

| क्र.सं. | सहभागीहरुको नामावली | संस्थाको नाम | दस्तखत |
|---------|--------------------------|---|--------|
| १ | मा. बालानन्द पौडेल | अध्यक्ष, राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोग, प्रमुख अतिथि | |
| २ | मा. डा. खिमलाल देवकोटा | राष्ट्रियसभा सदस्य, विशेष अतिथि | |
| ३ | मा. जूदबहादुर गुरुङ | सदस्य, राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोग, विशेष अतिथि | |
| ४ | श्री कृष्णप्रसाद सापकोटा | सविधानसभा सदस्य | |
| ५ | श्री भरतबहादुर खड्का | सविधानसभा सदस्य | |
| ६ | डा. सोमलाल सुवेदी | पूर्व मुख्य सचिव नेपाल सरकार | |
| ७ | श्री कृष्णप्रसाद सापकोटा | सचिव, मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, प्रदेश नं. १, विराटनगर | |
| ८ | श्री सुमन दहाल | सहसचिव, अर्थ मन्त्रालय, सिंहदरवार, काठमाण्डौ | |
| ९ | श्री रितेश कुमार शाक्य | सहसचिव, अर्थ मन्त्रालय, सिंहदरवार, काठमाण्डौ | |
| १० | श्री इश्वरीप्रसाद अवाल | सहसचिव, अर्थ मन्त्रालय, सिंहदरवार, काठमाण्डौ | |
| ११ | श्री शिबकुमार कर्को | सचिव, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नं. १ | |
| १२ | श्री जयकुमार धिमिरे | सचिव, प्रदेश नीति तथा योजना आयोग, प्रदेश नं. १, विराटनगर | |
| १३ | श्री नारायण शीपकोटा | संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय, सिंहदरवार, काठमाण्डौ | |

१

| क्र.सं. | सहभागीहरुको नामावली | संस्थाको नाम | दस्तखत |
|---------|---------------------------|--|--------|
| १४ | श्री | वन तथा वातावरण मन्त्रालय, सिंहदरवार, काठमाण्डौ | |
| १५ | श्री रमेश बस्नेत | वनर्यायन विभाग, धापायत्री | |
| १६ | श्री सुरज अर्याल | सर्कारी, पर्यटन तथा नागरिक उड्डयन मन्त्रालय, सिंहदरवार, काठमाण्डौ | |
| १७ | श्री डी. प्रदीप चन्द | कृषि तथा पशु विकास मन्त्रालय, सिंहदरवार, काठमाण्डौ | |
| १८ | श्री | भौतिक पूर्वाधार तथा यातायात मन्त्रालय, सिंहदरवार, काठमाण्डौ | |
| १९ | श्री तिलक राम पौडेल | सूक्ति व्यवस्था, सहकारी तथा गरिवी निवारण मन्त्रालय | |
| २० | श्री प्रकाश शीपकोटा | कानून, न्याय तथा संसदीय मामिला मन्त्रालय, सिंहदरवार, काठमाण्डौ | |
| २१ | श्री गोविन्द थपलिया | के.स. गाउँपालिका राष्ट्रिय महासंघ, कमलादी, काठमाण्डौ, तथा अध्यक्ष, शिवपुरी गाउँपालिका, नुवाकोट | |
| २२ | श्री विजय अर्याल | नेपाल नगरपालिका संघ, लाजिम्पाट, काठमाण्डौ | |
| २३ | श्री अशोक पुरोहित | जिल्ला समन्वय समिति महासंघ, नेपाल, सिंहदरवार, काठमाण्डौ | |
| २४ | श्री खगेन्द्र खड्का | उपसचिव, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नं. १ | |
| २५ | श्री रामोदर खत्री | प्रमुख, प्रदेश लेखा नियन्त्रण कार्यालय, प्रदेश नं. १ | |
| २६ | श्री पुष्पलता उप्रेती | आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नं. १ | |
| २७ | डा. कृष्णराज पन्त | पूर्व उपाध्यक्ष, प्रदेश नीति तथा योजना आयोग, बागमती प्रदेश | |
| २८ | श्री पुरुषोत्तम नेपाल | पूर्व सहसचिव, नेपाल सरकार | |
| २९ | श्री प्रकाश रेग्मी | वरिष्ठ संघीयता विज्ञ, स्वीस विकास नियोग, ललितपुर | |
| ३० | श्री विनोदप्रसाद उपाध्याय | टिम लिडर, प्रदेश सहयोग कार्यक्रम, विराटनगर | |
| ३१ | | पि. डब्ल्यू. सी. काठमाण्डौ | |
| ३२ | डा. हेमराज लामिछाने | टिम लिडर, अध्ययन टोली | |

| क्र.स. | सहभागीहरूको नामावली | संस्थाको नाम | दस्तखत |
|--------|---------------------------|----------------------------------|---|
| ३३ | डा. मुकुन्द पीडेल | अध्ययन टोली, सदस्य |  |
| ३४ | सि.ए. भवनाथ दाहाल | अध्ययन टोली, सदस्य |  |
| ३५ | श्री निर्मलहरि अधिकारी | अध्ययन टोली, सदस्य |  |
| ३६ | श्री लक्ष्मण पाण्डे | अध्ययन टोली, सदस्य |  |
| ३७ | श्री विष्णुप्रसाद नेपाल | अध्ययन टोली, सदस्य |  |
| ३८ | प्र.सं.देवता डोली | PWC |  |
| ३९ | श्री.मानव पण्डित | PWC |  |
| ४० | प्रतिभा श्यांपात्रे प्रिय | Program Coordinator |  |
| ४१ | किरो चक्र वाजेल | Mott MacDonald. |  |
| ४२ | सुरेन्द्रराज पन्ना | वन तथा वातावरण मन्त्रालय (न.सं.) |  |
| ४३ | शिव देवी | पत्रकार |  |
| ४४ | | |  |

(ग) स्थानीय तहमा गरिएका अन्तक्रिया कार्यक्रमहरु

इलाम नगरपालिका, इलाम

ग्राज मित्रि २०७९।२।२१ गते इलाम नगरपालिका का
 नगर प्रमुख श्री केदार थापा जी को अध्यक्षतामा तथा
 निम्न सदस्यहरु को उपस्थितिमा राजस्व र प्रमुख
 कार्यकारी अधिकृतको संयुक्त बैठक सम्पन्न गरियो ।

उपस्थिति

नगर प्रमुख - श्री केदार थापा जी
 नगर उपप्रमुख - श्री विष्णु कुमारी गहल विष्णु
 प्र.प्र.अ. श्री गणेश कुमार खडका
 नगर प्रवक्ता श्री सुनदेव इनाम
 वडा नं. २ वडाप्रमुख श्री काजी वेदप्रा
 वडा नं. ८ वडाप्रमुख देवप्रा गम्हरे
 ॥ ६ ॥ सुभा श्रेष्ठ
 ॥ ७ ॥ ॥ रेखा श्रेष्ठ
 ॥ ३ ॥ ॥ हसन सुनुवा
 ॥ १० ॥ ॥ अमनाथ प्रधान
 कार्यपालिका सदस्य विवेक वंश
 वडा नं. १२ वडा प्रमुख लालमान लिम्बु
 वडा नं. ९ वडा प्रमुख गिरीराज रिजाल
 प्रशासकीय अधिकृत श्री राजकुमार थापा
 ले.प्र. लालमान रिजाल
 अधिकृत लालमान रिजाल
 राजमाता सामाजिक विकास समिति
 डा. विष्णु श्रेष्ठ
 वडा नं. १ वडा प्रमुख थापा
 सामाजिक परिषदको अध्यक्ष (सम) गणेश प्र. श्रेष्ठ
 राष्ट्रियकृषि-संरक्षण मूल्यांकन
 वडा नं. १ वडा प्रमुख वल्लभ
 श्री श्री सुवेदी जोतिरा
 विष्णु श्रेष्ठपाल सहजकर्ता
 संदर्भ पाठ्य

पाथिभरा याडवरक गाउँपालिका

प्रदेश नं. १ को आन्तरिक राजस्व संभाव्यता अध्ययन सम्बन्धी
स्थानीय तहस्तरीय छलफल तथा अन्तरक्रिया कार्यक्रम

पाथिभरा याडवरक गाउँपालिका, ताप्लेजुङ्ग
२०७९ भाद्र २३ गते

उपस्थिति

| क्र.सं. | नामथर | संस्था | पद | सम्पर्क नं. | हस्ताक्षर |
|---------|-------------------------|--------------|------------------|-------------|-----------|
| १. | श्री डिशर बुढा सुब्बा | पा.थि.गा.पा. | प्रह्वयङ्गा | ९८४९९०११९ | |
| २. | श्री रमाया गुड्ड | " | सुपाह्वयङ्गा | ९८४२९९००८४ | |
| ३. | श्री फिल बुढा सुब्बा | " | वडाह्वयङ्गा. १ | ९८४२९९०३४४ | |
| ४. | श्री वल्लभ लिम्बु | " | " २ | ९८९२००९४४८ | |
| ५. | श्री शो वल्लभ लिम्बु | " | " ३ | ९८४२६९३३२१ | |
| ६. | श्री वल्ल वहादुर लिम्बु | " | " ४ | ९८४२०१२९९२ | |
| ७. | श्री रमेश रणसिंह | " | " ५ | ९६४४५९९३२८ | |
| ८. | श्री जितमान ताम्राङ | " | ६ | ९८९२९०४०८९ | |
| ९. | श्री पद्म वे.वि.डे. | " | कार्यपालिका सहाय | ९९२५०९९५९२ | |
| १०. | श्री इन्द्रप्रकाश | " | कार्यपालिका सहाय | ९८०६९४६०३९ | |

| क्र.सं. | नामथर | संस्था | पद | सम्पर्क नं. | हस्ताक्षर |
|---------|-------------------------|--------|------------------|-------------|-----------|
| ११. | श्री वल्ल वहादुर लिम्बु | " | वडा सहाय | ९८१३९००२२१ | |
| १२. | श्री आर्षा निरीला | " | प्रमुख प्रशासकीय | ९८२९६४००९ | |
| १३. | श्री शो वल्ल | " | लैरपा प्रमुख | ९८४२९९४४८८ | |
| १४. | श्री विष्णु पलाङ नेपाल | SOAK | सहाय | | |
| १५. | लक्ष्मण पाङ्डे | | | | |
| १६. | | | | | |
| १७. | | | | | |
| १८. | | | | | |
| १९. | | | | | |
| २०. | | | | | |
| २१. | | | | | |
| २२. | | | | | |
| २३. | | | | | |
| २४. | | | | | |
| २५. | | | | | |

विराटनगर महानगरपालिका

आजमिति ०६९ ताल आदिन २ गते मुख्य मन्त्रीपरिषदको कार्यालय प्रथम ११ वोटबाट निर्वाचनमा अध्ययन धर्मधर्म कार्यक्रम विराटनगर महानगरपालिकाको प्रमुख श्री नागेश कोइराला पदको कार्यसभामा आनत भयो ।

उपस्थिति

- १) श्री नागेश कोइराला - प्रमुख - *मैयादिनी*
- २) श्री विष्णु प्र कोइराला - प्र. प्र. क. - *विष्णु*
- ३) श्री सुरज लाल शर्मा वडा अध्यक्ष १६-११२ *सुरज*
- ४) श्री खलीव कु. लाह कार्यालयीय सदस्य - १११३ *खलीव*
- ५) श्री श्याम घिमिरे वडा अध्यक्ष-१९ *श्याम*
- ६) स्त्री मिर्चु कु. साह वडा अध्यक्ष-१८ *मिर्चु*
- ७) श्री सुर्य नारायण महर्जन " " १४ *सुर्य*
- ८) श्री बाबु बहादुर बज्रत " " ०३ *बाबु*
- ९) श्री रवि नरुने " " ११ *रवि*
- १०) श्री श्री श्री श्री " " १ *श्री*
- ११) श्री श्री श्री श्री " " ०५ *श्री*
- १२) लक्ष्मी पौड्याल वडा अध्यक्ष - ०१ *लक्ष्मी*
- १३) मन्मता अधिकारी श्री. श्री. शशक महर्जन *मन्मता*
- १४) कोपिला रिजाल - जेरी expert *कोपिला*
- १५) सख्खी विश्वास - १४ कार्यपालिका सदस्य *सख्खी*
- १६) लाला कुमारी राम - ८ कार्यपालिका सदस्य *लाला*
- १७) सुरेश विक - १ कार्यपालिका सदस्य *सुरेश*
- १८) श्री. हिमाल लामिछाने - कार्यपालिका *हिमाल*
- १९) कोपिला रिजाल " " *कोपिला*
- २०) अर्जुन शिरी वडा अध्यक्ष विराटनगर-१० *अर्जुन*
- २१) मीनकुमार नवोदित प्रेस सञ्चारक, विराटनगर महानगर *मीनकुमार*
- २२) सराज कुमार गोहरे वि. प्र. नया *साराज*

ईटहरी उपमहानगरपालिका

आज मिति २०६९ साल कार्तिक २ गते बुधवारका दिन इटहरी उपमहानगरपालिकाका नगर प्रमुख श्री हेमकाजी पौडेलको अध्यक्षतामा प्रदेश नं. १ को आन्तरिक राज्य स्वभाव्यता अध्ययन योजना-धै स्थानीय तहस्तरीय फलफल तथा अन्तरक्रिया कार्यक्रम यस इटहरी उपमहानगरपालिकामा तपस्विलकमोजमडा उपास्थितीमा सम्पन्न भयो ।

उपास्थिती :

१. नगर प्रमुख श्री हेमकाजी पौडेल
२. नगर उपप्रमुख श्री संगिता कु. चौधरी
३. पु. पु. अ. श्री राम चरित्रा मेहता
४. १ नं. वडा अध्यक्ष श्री रतन दाडौं
५. २ नं. वडा अध्यक्ष श्री प्राध्व डोडराला
६. ३ नं. वडा अध्यक्ष श्री उमेश सुवेदी
७. ४ नं. वडा अध्यक्ष श्री भक्त लामा
८. ५ नं. वडा अध्यक्ष श्री विष्णु विमिरे
९. ६ नं. वडा अध्यक्ष श्री दिनेश पोखरेल
१०. ६ नं. वडा अध्यक्ष श्री देवनाथ चौधरी
११. ७ नं. वडा अध्यक्ष श्री रोहित चौधरी
१२. ८ नं. वडा अध्यक्ष श्री जितेन्द्र थापा
१३. १० नं. वडा अध्यक्ष श्री अरुण चौधरी
१४. ११ नं. वडा अध्यक्ष श्री देवान प्रसाद डोडराला
१५. १२ नं. वडा अध्यक्ष श्री भुवनराज पोखरेल
१६. १३ नं. वडा अध्यक्ष श्री ~~देवान प्रसाद डोडराला~~ चन्द्रेश्वर सरदार
१७. १४ नं. " श्री उमेश प्रसाद चौधरी
१८. १५ नं. " श्री जय नारायण चौधरी
१९. १६ नं. " श्री तेज नारायण चौधरी
२०. १६ नं. " श्री प्रमन कुमार आचार्य
२१. १७ नं. " श्री राम कुमार चौधरी
२२. १९ नं. " श्री श्री नारायण चौधरी
२३. २० नं. " श्री मणिराम शौठ
२४. नगर कार्यवाहिका सदस्य श्री अमिता कुमारी तुम्बाहाङ्ग
२५. " श्री शीषा राई
२६. " श्री राधिका विष्णुकाजी पौडेल
२७. " श्री नारायणी ढकाल
२८. " श्री विष्णु दे. खी
२९. " श्री प्रमोद शर्मा

सोलुदुधकुण्ड नगरपालिका

प्रदेश नं. १ को आन्तरिक राजस्व संभाव्यता अध्ययन सम्बन्धी
स्थानीय तहस्तरीय छलफल तथा अन्तरक्रिया कार्यक्रम

सोलुदुधकुण्ड नगरपालिका, सोलुखुम्बु
२०७९ कार्तिक २४ गते

उपस्थिति

| क्र.सं. | नामथर | संस्था | पद | सम्पर्क नं. | हस्ताक्षर |
|---------|------------------------|-----------|------------------------------|-------------|-----------|
| १. | नाम्गेल जाडलु शेर्पा | नगरपालिका | नगरप्रमुख | ९८४९३४४६९० | |
| २. | गान्धी माया तामाङ | " | नगरउपप्रमुख | ९८४२२३२३९२ | |
| ३. | कोपेला राई | " | प्रमुखप्रशासकीय कार्यपालक | ९८४२८२२९९९ | |
| ४. | सोनाम ग्याल्पोन शेर्पा | " | वडा अध्यक्ष वडा नं. - ६ | ९८४९०६६६६८ | |
| ५. | ज्वाडा किले शेर्पा | " | वडा नं. २ | ९८५०६९३७९ | |
| ६. | दुल्लेखन शर्मा | " | कार्यपालक अधिकारी | ९८२९०२४३९९ | |
| ७. | अनुरु शेर्पा | " | कार्यपालकी सदस्य | ९८६२९५४७३१ | |
| ८. | मिना खत्री 'बस्नेत' | " | कार्यपालकी सदस्य | ९८६३८६५१०९ | |
| ९. | पासाङ खत्री | " | वडा अध्यक्ष | ९८६६००६८६० | |
| १०. | | | | | |

| क्र.सं. | नामथर | संस्था | पद | सम्पर्क नं. | हस्ताक्षर |
|---------|---------------------------|---|---------------|-------------|-----------|
| ११. | फुये लामा | सो. ०५०.१० वडा | नेत्रवापाल | | |
| १२. | चामा खत्री | " | अध्यक्ष नि. | | |
| १३. | पेमा कुमारी शर्मा (स्वयं) | " | सह-नेत्रवापाल | | |
| १४. | हेर्गल राई | वडा नं. ५ वडा नं. ६ | वडा अध्यक्ष | ९८५९४६६६६६ | |
| १५. | सुवास तामाङ | वडा नं. ३ वडा नं. ४ वडा नं. ५ वडा नं. ६ वडा नं. ७ | वडा अध्यक्ष | ९८५२९५००५० | |
| १६. | विष्णु प्र. शर्मा | SBAK | सहस्रकर्ता | ९८४१३९०३९४ | |
| १७. | शिवराज तामाङ | वडा नं. १ वडा नं. २ | अध्यक्ष नि. | ९८६२९५२७९५ | |
| १८. | डा. हिमराज लामिदानी | SBAK | अध्यक्ष | ९८५१०२७०७७ | |
| १९. | | | | | |

मानेभञ्ज्याड गाउँपालिका

प्रदेश नं. १ को आन्तरिक राजस्व संभाव्यता अध्ययन सम्बन्धी
स्थानीय तहस्तरीय छलफल तथा अन्तरक्रिया कार्यक्रम

मानेभञ्ज्याड गाउँपालिका, ओखलढुंगा
२०७९ कार्तिक २६ गते

उपस्थिति

| क्र.सं. | नामथर | संस्था | पद | सम्पर्क नं. | हस्ताक्षर |
|---------|------------------------|-----------------|----------------------------|-------------|-----------|
| १. | शान्तिन्द्र शम्शाली | ओखलढुंगा गा.पा. | सदस्य | ९८५२८४०४०० | |
| २. | आशुचन राई | " | उपाध्यक्ष | ९८४२९८१६८९ | |
| ३. | हाकेलाल राई | " | प्रमुख उ.अध्यक्ष | ९८५८२०००२ | |
| ४. | भोग बहादुर राई | " | लक्ष्मी शाखा | ९८४९२९४८४० | |
| ५. | दिलिप कुमार शर्मा | " | आयोजना के.पि. | ९८४४४९९८०४ | |
| ६. | शम्भु कुमारी शर्मा | " | आयोजना | ९८४९५९९५४० | |
| ७. | शोभा कुमारी शम्भुशर्मा | " | " | | |
| ८. | विष्णु कार्की | " | सुचना प्रतिष्ठान आयोजना | ९८५९८४४४०८ | |
| ९. | विष्णु प्रसाद गौतम | वडा अध्यक्ष | वडा अध्यक्ष क्र.सं. ६ | ९८९९९१६०९२ | |
| १०. | राजकुमार शम्शाली | " | वडा सं. १ | ९८६२६२८४९४ | |

| क्र.सं. | नामथर | संस्था | पद | सम्पर्क नं. | हस्ताक्षर |
|---------|-------------------------|---------------------|-------------------------------|-------------|-----------|
| ११. | जितेन्द्र राई | मानेभञ्ज्याड गा.पा. | अध्यक्ष-३ | ९८४३३५८६०४ | |
| १२. | पुर्ण व शर्मा | " | " | ९८५१६८२६९० | |
| १३. | रुकुमा देवी शम्शाली | मानेभञ्ज्याड गा.पा. | की.पि. | ९८६२६६६८६६ | |
| १४. | कृष्ण कुमारी राई | मानेभञ्ज्याड गा.पा. | की.पि. | ९८६२९९९९९९ | |
| १५. | शोभा शर्मा | " | " | ९८६२९९९९९९ | |
| १६. | तन्वी व शर्मा | " | की.पि. वडा अध्यक्ष प्रति-६ | ९८६६२३३४६४ | |
| १७. | विष्णु व शर्मा | " | वडा अध्यक्ष ४ | ९८४४६३९९९४ | |
| १८. | चन्द्रा शर्मा | " | मानिना विकास शाखा | ९८५९८००२६६६ | |
| १९. | शम्भु शर्मा | " | वडा अध्यक्ष २ | ९८५१३२४६१ | |
| २०. | दिलिप कुमार शर्मा | " | " | ९८५६६६६६६६ | |
| २१. | विष्णु शर्मा | " | " | ९८५०६६६६६६ | |
| २२. | विष्णु प्र. शर्मा | SBAK | MD | ९८५१३२०३९४ | |
| २३. | डा. हेम (का.सा.पि.इ.ने) | " | chairperson | ९८२१०२६६९६ | |
| २४. | | | | | |

अनुसूची १७: विभिन्न कार्यक्रमका झलकहरु



सन्दर्भ सामग्री

(क) नेपालीमा

राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोग (२०७८), राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोगको तेस्रो वार्षिक प्रतिवेदन, काठमाडौं, नेपाल ।

आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नं. १ (२०७९), प्रदेश राजस्व परामर्श समिति अन्तर्गत उद्योग तथा वन क्षेत्र हेर्ने उपसमितिको प्रतिवेदन

आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नं. १ (२०७९), प्रदेश राजस्व परामर्श समिति अन्तर्गत स्थानीय तह कर तथा गैरकर उपसमितिको प्रतिवेदन

आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नं. १ (२०७९), प्रदेश राजस्व परामर्श समिति अन्तर्गत राजस्व परामर्श उपसमितिको प्रतिवेदन

आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, प्रदेश नं. १ (२०७९), प्रदेश राजस्व परामर्श समिति अन्तर्गत मालपोत तथा सहकारी हेर्ने उपसमितिको प्रतिवेदन

आर्थिक ऐनहरू, (२०७९, २०७८, २०७७) प्रदेश सरकार, प्रदेश नं. १, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, विराटनगर ।

मालपोत नियमावली, २०३६, नेपाल कानून आयोग, काठमाण्डौ ।

मालपोत ऐन, २०३४, नेपाल कानून आयोग, काठमाण्डौ ।

महालेखा परीक्षकको कार्यालय (२०७९), महालेखा परीक्षकको उनान्साठीऔं वार्षिक प्रतिवेदन, काठमाडौं, नेपाल
नेपाल सरकार (२०४८), सहकारी ऐन, २०४८, काठमाण्डौं, नेपाल ।

नेपाल सरकार (२०५८), आयकर ऐन, २०५८, काठमाण्डौं, नेपाल ।

नेपाल सरकार (२०२१), भूमि सम्बन्धी ऐन, २०२१, काठमाण्डौं, नेपाल ।

नेपाल सरकार, संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय (२०७८), नेपालमा वित्तीय संघीयता, सङ्कलन तथा सम्पादन, गोपीकृष्ण खनाल, काठमाडौं नेपाल ।

नेपाल सरकार, अर्थ मन्त्रालय (२०७९), आर्थिक ऐन, २०७९, काठमाण्डौ, नेपाल ।

नेपाल सरकार, अर्थमन्त्रालय (२०७९), आर्थिक सर्भेक्षण, २०७८/७९

नेपाल सरकार, वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालय, वनस्पति विभाग, (२०७३), नेपालमा लौठसल्ला, राष्ट्रिय हर्वेरियम तथा वनस्पति प्रयोगशाला, गोदावरी, ललितपुर ।

नेपाल सरकार, प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय (२०७७), ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा उत्खनन्, बिक्री तथा व्यवस्थापन सम्बन्धी मापदण्ड, २०७७, काठमाडौं, नेपाल ।

नेपाल सरकार, कानून, न्याय संविधानसभा तथा संसदीय मामिमा मन्त्रालय, कानून किताब व्यवस्था समिति (२०७२), नेपालको संविधान, २०७२, काठमाडौं, नेपाल ।

नेपाल सरकार, कानून, न्याय तथा संसदीय मामिमा मन्त्रालय, कानून किताब व्यवस्था समिति (२०७४), स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४, काठमाडौं, नेपाल ।

नेपाल सरकार, कानून, न्याय तथा संसदीय मामिला मन्त्रालय, कानून किताब व्यवस्था समिति (२०७४), अन्तर-सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४, काठमाडौं, नेपाल ।

नेपाल सरकार, कानून, न्याय तथा संसदीय मामिला मन्त्रालय, कानून किताब व्यवस्था समिति (२०७४), राष्ट्रिय प्राकृतिक स्रोत तथा वित्त आयोग ऐन, २०७४, काठमाडौं, नेपाल ।

जग्गा प्रशासन निर्देशिका, २०५८, नेपाल सरकार, भूमि व्यवस्था, सहकारी तथा गरिवी निवारण मन्त्रालय, भूमि व्यवस्थापन तथा अभिलेख विभाग, बबरमहल काठमाण्डौ, २०७८

वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन, आ.व. २०७७/०७८, नेपाल सरकार, भूमि व्यवस्था, सहकारी तथा गरिवी निवारण मन्त्रालय, भूमि व्यवस्थापन तथा अभिलेख विभाग, बबरमहल काठमाण्डौ, २०७८

प्रदेश नं. १ सरकार (२०७५), कर तथा गैरकर राजस्व सम्बन्धी ऐन, २०७५ (संशोधन सहित) ।

प्रदेश नं. १ सरकार (२०७७), प्रदेश कृषि व्यवसाय प्रवर्द्धन अनुदान ऐन, २०७७, विराटनगर, नेपाल ।

प्रदेश नं. १ सरकार (२०७७); मध्यावधि समीक्षा (२०७४/७५-२०७६/७७), विराटनगर, नेपाल

प्रदेश नं. १ सरकार (२०७९), आर्थिक सर्वेक्षण, आ.व. २०७८/७९ आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, विराटनगर, नेपाल

प्रदेश नं. १ सरकार (२०७९), प्रदेश सरकारको वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन, २०७८/७९, विराटनगर, नेपाल

प्रदेश नं. १ सरकार (२०७९), प्रदेश आर्थिक ऐन, २०७९, विराटनगर, नेपाल ।

प्रदेश योजना आयोग (२०७६/७७), पार्श्वचित्र प्रदेश नं. १, विराटनगर, नेपाल

प्रदेश नं. १ सरकार (२०७६/७७), प्रदेश पार्श्वचित्र, प्रदेश नं. १, विराटनगर, नेपाल ।

प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालय, विराटनगर (२०७९), प्रदेश नं. १ को आय व्यय तथा संचित कोषको वार्षिक आर्थिक विवरण, आ. व. २०७८/७९, आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय

संघीय संसद, राष्ट्रिय सभा (२०७९), संघीयता कार्यान्वयन अध्ययन तथा अनुगमन संसदीय विशेष समितिका सिफारिसहरू, काठमाडौं, नेपाल

(ख) अंग्रेजीमा

Anderson, F. G., Asheim, L. J., Mittenzwei, K., & Veggeland, F. (2002). Taxation of Agriculture in selected countries. Retrieved from Norwegian Agricultural Economics Research Institute website: <https://www.esiweb.org/pdf/bridges/kosovo/4/14.pdf>

Boadway, R., & Shah, A. (2009). Fiscal federalism: Principles and practice of multi-order governance. Cambridge University Press.

Chatterji, M., & Junakar, P. N. (1986). Agricultural Taxation in Less Developed Countries: Effects of a Tax on Inefficiency. In Development Economics (pp. 54-69).

Elazar, D. J., Exploring Federalism (Tuscaloosa, AL: University of Alabama Press, 1987)

Eliot Bulmer (2017). Federalism: International IDEA Constitution-Building Primer 12

<http://molmac.p1.gov.np/ne/node/8>

<http://molmac.p1.gov.np/sites/molmac/files/2021-08/%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A5%81%E0%A4%A6%E0%A4%BE%E0%A4%A8%20%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B5%E0%A4%B0%E0%A4%A3%20%E0>

[A5%A8%E0%A5%A6%E0%A5%AD%E0%A5%AD%20-%20%E0%A5%A6%E0%A5%AD%E0%A5%AE.pdf](https://moald.gov.np/A5%A8%E0%A5%A6%E0%A5%AD%E0%A5%AD%20-%20%E0%A5%A6%E0%A5%AD%E0%A5%AE.pdf)
<https://moald.gov.np/>

IIDS (2020); Fiscal Decentralization in Nepal: Revenue Potential of Province and Local Governments and Recommendations to enhance Own Source Revenue Generations, Kathmandu, Nepal

Irving, H., Gender and the Constitution: Equity and Agency in Comparative Constitutional Design (Cambridge: Cambridge University Press, 2008)

Khan, M. H. (2001). Agricultural taxation in developing countries: A survey of issues and policy. *Agricultural Economics*, 24(3), 315-328. doi:10.1111/j.1574-0862.2001.tb00033.x

Samriddhi Foundation (na). Study of agriculture income tax in federal Nepal, study carried out by Ankshita Chaudhary & Ayushma Maharjan, Kathmandu Nepal

Schoukens, P. (2007). Securing social protection for farmers: Farmers' social protection in Serbia, Albania and Macedonia set off against European best practices. Retrieved from Regional CARDS-SISP Project website: <https://www.coe.int/t/dg3/sscsr/Source/RepSelecTopSchoukens.pdf>

Shah, A. (Ed.). (2007). *The practice of fiscal federalism: Comparative perspectives* (Vol. 4). McGill-Queen's Press-MQUP.

Tiebout, C. M. (1961). An economic theory of fiscal decentralization. In *Public finances: Needs, sources, and utilization* (pp. 79-96). Princeton University Press.

(ग) वेबसाइटबाट संकलित सामग्रीहरू:

http://web.worldbank.org/archive/website01061/WEB/0__CO-11.HTM

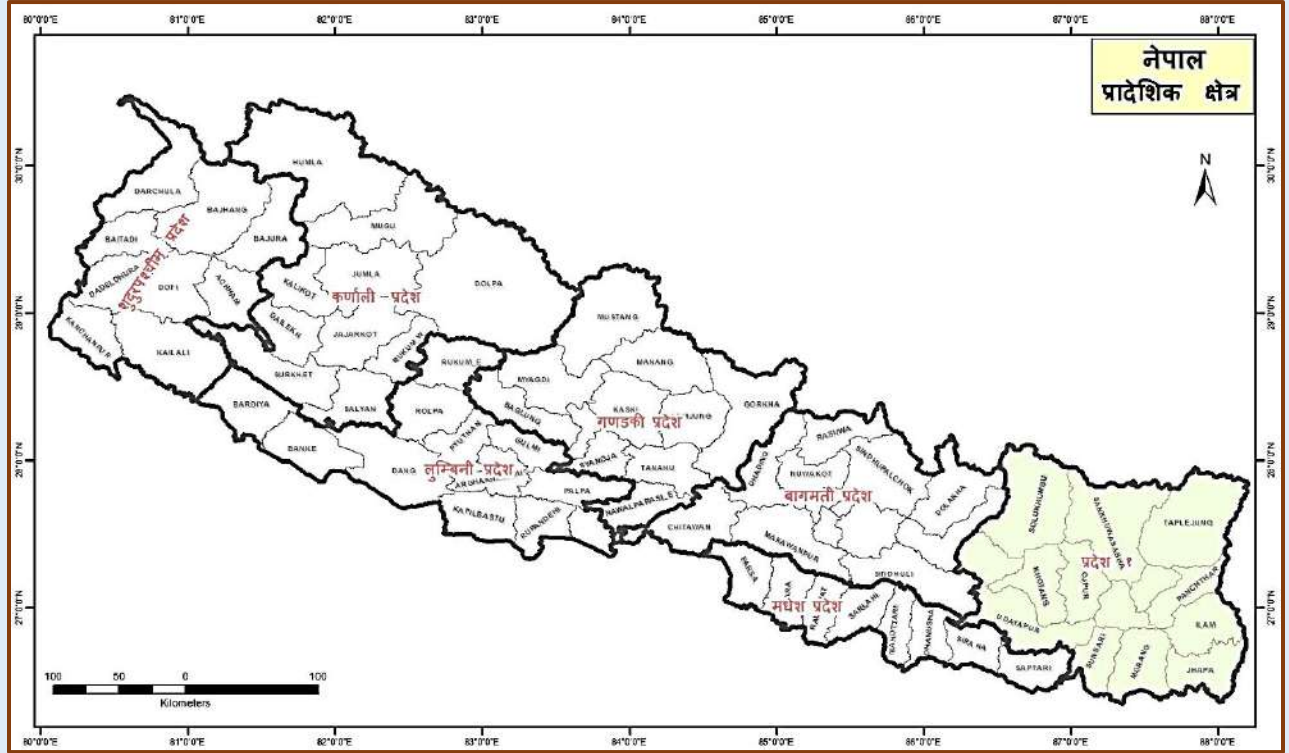
<https://tax2win.in/guide/income-tax-agricultural-income>

<https://www.dolma.gov.np>

<https://www.urban.org/policy-centers/cross-center-initiatives/state-and-local-finance-initiative/state-and-local-backgrounders/state-and-local-revenues#state>; September 1, 2022

www.p1.gov.np

www.ppc.p1.gov.np



प्रदेश सरकार
आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय
 प्रदेश नं. १, विराटनगर, नेपाल
 फोन: (+९७७) ०२१-५७४१६८
 इमेल: info.moeap@p1.gov.np
 वेवपेज: www.moeap.p1.gov.np



प्रदेश सरकार
मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय
 प्रदेश नं. १, विराटनगर, नेपाल
 फोन: (+९७७) ०२१-४७५१६६
 इमेल: info.ocmcm@p1.gov.np
 वेवपेज: www.ocmcm.p1.gov.np